भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास

द्वितीय खंड

(सन् १६४० के बाद से लेकर सन् १६४७ तक की क्रांति-चेष्टाओं का सचित्र विवरण)

लेखक

श्री मन्मथनाथ गुप्त

प्रथम संस्करण] १६४८ [मू० ५॥)

विक्रेता
छात्रहितकारी पुस्तकमा
दारागञ्ज, प्रयाग।

मुद्रक व प्रकाशक
सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग।

भूमिका

जिस समय करीब ६ साल पहले मैंने इस पुस्तक का प्रथम भाग लिखा था, उसी समय मैं इस बात को अच्छी तरह समझता था, और इसका मैंने 'आतकवाद का अवसान' नामक अध्याय में इशारा भी कर दिया था कि यद्यपि वैयक्तिक आंतकवाद के युग का अन्त हो चुका है, पर सशस्त्र क्रान्ति के आगे भी कई अध्याय होंगे। पर मैं भी यह नहीं जानता था, कि जनशक्ति इतनी जल्दी इतनी तेजी से आगे बढेगी, और उसकी लहरें इतनी विचित्र, विभिन्न, विराट तथा उत्तुंग होंगी कि उन्हें इतिहास के नपने में पकड़ना ही असम्भव हो जायेगा।

इस बीच में हमारा देश बहुत आगे बढ़ चुका है और ब्रिटिश सरकार के प्रधान प्रवक्ता ने २० फरवरी को अपनी घोषणा में भारत छोड़ने की बात कही है। मैं यह नहीं मानता कि ब्रिटिश सरकार की यह घोषणा सदाकत से भरी है, अभी से 'भारत छोड़ने' के बाद भारत का जो नक्शा हमारे सामने आता जा रहा है, वह कुछ विशेष उत्साहवर्धक नहीं है। एक तो देश का बटवारा मनमाने तौर पर धार्मिक आधार पर होता ज्ञात होता है, तिसपर रियासतें हैं, जो शायद एक हद तक अपनी अलग खिचड़ी पकाने की कोशिश करें। कम से कम रियासतों की यह पद्धति रह गयी, और वहाँ की जनता

को पूर्ण जिम्मेदारी नहीं दी गई, तो यह किसी भी प्रकार स्वतंत्रता नहीं कही जा सकती।

कुछ भी हो आज जो ब्रिटिश सरकार इस तरह मौखिक रूप से ही सही भारत छोड़ने की एक तारीख बाधने पर मजबूर हुई है, इसका कारण क्या है, वह इस पुस्तक को पढ़ने से ज्ञात होगा। १९४२ में हमारी बहादुर जनता ने बिना कार्यक्रम तथा नेतृत्व के जिस प्रकार इतिहास निर्माण किया, वह एक ऐतिहासिक बात है। जिस जिस प्रकार से इस क्रान्ति की उत्पत्ति हुई, उसका हमने बौद्धिक इतिहास सन्क्षेप में लिख दिया है। हम समझते हैं कि यदि ठीक से तैयारी होती, और जनता को इस प्रकार कार्यक्रमहीन न छोड़ दिया जाता तो भारत से मनहूस ब्रिटिश साम्राज्यवाद का जनाजा कब का उठ गया होता।

मेरे निकट इतना अधिक मसाला, लेख, कटिंग, पत्र, मौखिक ब्यौरे मौजूद थे कि यदि मै ब्यौरे में जाता तो वह एक बड़ा पोथा ही हो जाता। यह सम्भव नहीं कि मैं अलग अलग सब के ऋण को स्वीकार करूँ। बस इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि तथ्य दूसरों के विवरणों पुस्तकों, लेखों, समाचारों, रिपोर्टों से सकलित है। मसाला अधिक था, इसलिये मैंने ऐसी घटनाओं का अलग अलग उल्लेख करना व्यर्थ समझा, जो सब जगह एक ही सी रही है। उदाहरणार्थ अगस्त क्रान्ति में जो हजारों मील तार कटे, केवल उन्हीं का ब्यौरा दिया जाता, तो उसीसे पुस्तक का कलेवर बहुत बढ़ सकता था। पर इस प्रकार के तथ्यों से पाठक के जी ऊबने के अतिरिक्त कोई लाभ न

होता। मैंने इस बात की चेष्टा की है कि अगस्त क्रान्ति सम्बन्धी कोई भी विचित्र घटना छूटने न पावे, साथ ही इकरस बातों की पुनरावृत्ति न हो।

इतिहास केवल एकत्र किये हुए मुर्दा तथ्यों का ढेर नहीं है। जब तक तथ्यों की अन्तर्निहित शक्तियों का उदघाटन नहीं होता, तब तक तथ्य केवल निष्प्राण विवरणमात्र हैं। उससे कोई भी अर्थ सिद्ध नहीं हो सकता। मैं यह साफ कर देता हूँ कि मेरी यह पुस्तक कोई निष्पक्ष विवरण नहीं है, एक तो इसलिये भी कोई निष्पक्ष विवरण हो नहीं सकता, क्योंकि निष्पक्ष विवरण के नाम से जो विवरण प्रकाशित होता है, वह भी निष्पक्ष नहीं है क्योंकि उसमें जिसके साथ पक्षपात करना चाहिये उसके साथ पक्षपात न कर घटनाओं को एक अवास्तविक रूप दिया जाता है। मैंने इस इतिहास में खुल्लम खुल्ला जनता, क्रान्ति तथा आगामी पीढ़ियों के साथ पक्षपात किया है। ऐसा करते समय हमने तथ्यों का गला नहीं घोंटा है क्योंकि इसकी जरूरत नहीं थी।

मैंने अगस्त क्रान्ति पर कई लेखकों की पुस्तकें देखी है, मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इनमे से कई तो इस क्रान्ति को अहिंसा की विजय रूप मे दिखाने की चेष्टा करते हैं। इस पुस्तक को पढने से ज्ञात होगा कि ऐसा केवल पागलों के लिये कहना ही सम्भव है। १९४२ की क्रान्ति सम्पूर्णरूप से अहिंसा के गांधीवादी दायरे से बाहर की चीज थी। १९४२ में हमारे आन्दोलन ने दबाव राजनीति के दायरे को छोड़कर शक्ति पर कब्जे के क्षेत्र में प्रवेश था,कि सुभाष बाबू ने इसी को कहा है कि १९४२ में Passive

resistance के युग का अन्त होकर active resistance का सूत्रपात हुआ। इसी रूप में इसे जब समझा जायेगा तभी इसको सही तरीके से समझा जा सकता है। फिर जैसा कि इस पुस्तक को पढने से ज्ञात होगा कि यह पुस्तक अगस्त क्रान्ति के अतिरिक्त आजाद हिन्द फौज—नौसैनिक विद्रोह आदि सशस्त्र क्रान्ति के सब प्रयासों का इतिहास है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इस पुस्तक में जिन घटनाओं का उल्लेख है, उनके कारण भारतीय जनता तथा फौज की जो हालत हो चुकी है, और वे जिस प्रकार की विस्फोटक स्थिति मे हैं, उसी को समझ कर ब्रिटिश सरकार कहीं इससे खराब हाल न हो जाय, 'अर्द्धं त्यजति पण्डितः' की नीति का अनुसरण कर भारत छोड़ो की आड़ मे अपने साम्राज्यवाद को एक दूसरा रूप देने की चेष्टा कर रही है। इसलिये यदि १६४८ के जून तक ब्रिटिश सरकार ऊपरी तौर पर भारत त्याग कर भी देती है, तो वह क्रातिकारी शक्तियों की विजय है न कि अहिंसा की, जैसा कि बार-बार हमारे कानों में इस नीति का अनुसरण कर कहा जा रहा है कि एक झूठी बात को हजार बार जोर देकर कहने से वह सत्य हो जायगी।

यह कहा जा सकता है कि आज यह प्रश्न अवातर है, भले ही दूसरे लोग उसे छोड़ें, हमें चुप रहना चाहिये, पर यह बात गलत है। इतिहास का अनुशीलन हम इसलिये नहीं करते कि हम मुर्दा तथ्यों की जानकारी प्राप्त करें, बल्कि इतिहास हम इसलिये पढ़ते हैं कि उससे

हमें जीवित सबक प्राप्त हो, और आगे चलने के लिये उत्तेजना प्राप्त हो। हमें क्रांतिकारी शक्तियों से आगे भी काम लेना है, और मैं समझता हूँ कि इस पुस्तक का तीसरा भाग भी यथा समय लिखा जायेगा और वह शायद अन्तिम भाग हो, क्योंकि जिस क्रांति का इतिहास उसमें लिखा जायेगा, उससे भारत में मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का सम्पूर्ण रूप से अन्त हो जायेगा, जैसा रूस में हो गया।

गदर दिवस १० मई, १९४७
हजारी बाग

मन्मथनाथ गुप्त

विषय सूची

द्वितीय महायुद्ध और भारत

पृष्ठ १६ से पृष्ठ ३०

क्रान्ति का जन्म

पृष्ठ ३१ से पृष्ठ ४६

बम्बई ने क्रान्ति का बिगुल फूंका

संयुक्त प्रांत में क्रान्ति

फुटकर स्थानों का आंदोलन

पृष्ठ १७० से पृष्ठ १७४

सारा वर्णन असम्भव—ग्वालियर—कुछ अन्य ब्यौरे—भूपाल—इन्दौर में जेल टूटी—कोटा में जनसरकार—मेवाड़—तालचर में जन-क्रांति—अन्य रियासतें।

१९४२ और कम्युनिस्ट पार्टी

पृष्ठ १७४ से पृष्ठ १९९

जनता ही नेता, कोई दल नेता नहीं—कांग्रेस समाजवादी दल—दल की एक गलती—फारवार्ड ब्लाक और आर० एस० पी—योगेश चटर्जी—जनता का नेतृत्व—रूस के समाजवादी सिद्धान्त पर डटे रहे—पहले नाम सोशल डिमोक्रेट था—कम्युनिस्ट पार्टी नाम पड़ा—नया अन्तर्राष्ट्रीय का नारा—पहली कांग्रेस—कई वर्ष क्रान्तिकारी परिस्थिति—दोनों उद्देश्य सामञ्जस्यपूर्ण—सयुक्त मोर्चे का नारा—कम्युनिस्टों की अजीब नीति—गलत नीति का नतीजा गलत—एकाकी कल्पना कठिन—एका की कोशिश असफल—कम्युनिस्टों ने कांग्रेस समाजवादियों को उल्लू बनाया—६ महीने बाद चेते—जनयुद्ध का नारा—एक नीति असम्भव—१९४२ और मजदूर—लाल बुझक्कड़ी का जोर—सरकार के साथ दोस्ती—वे खुद नहीं लड़े—पैसे कहाँ से आये—फिर भी एका कुछ सम्भव।

अगस्त क्रान्ति में स्त्रियों का बलिदान

पृष्ठ १९९ से पृष्ठ २०५

अगस्त क्रान्ति की नेत्रिया अरुणा और सुचेता—सुचेता जी बाद को अलग—स्त्रियों का त्याग पुरुषों से अधिक—काशीबाई की लज्जा हानि—स्त्री के गुप्तस्थान में मिर्चों की बुकनी—सिन्धु बाला मायती पर बलात्कार—खुदी बाला पर बलात्कार—सुहासिनी पर बलात्कार—विधवा पर बलात्कर—तीन फौजियों द्वारा बलात्कार—रायमणि पर बलात्कार।

नवम्बर प्रदर्शन, फरवरी प्रदर्शन, नौसैनिक विद्रोह

संगठित लड़ाई—लड़ाई फैली—सरकारी फौज पीछे रह गयी–बकायदा लड़ाई—गोरे भागे—गाडफ्रे की धमकी—जनता विद्रोह के साथ—पार्टियों से अपील—हिन्दुस्तान—आत्म-समर्पण—विद्रोह का विस्तार—काठियावाड़ की वीरता—सहानुभूति में प्रदर्शन—सरदार पटेल ने आत्म-समर्पण कराया ।

भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा
का
रोमांचकारी इतिहास

दूसरा भाग

प्रथम भाग का पुनश्च

इस छोटे से अध्याय को प्रथम भाग का Post script याने पुनश्च समझा जाय। यह किसी भी हालत में दूसरे भाग में नहीं आ सकता।

जब किसी आदोलन का अवसान होता है, तो ऐसा एकाएक नहीं हो जाता। किसी आंदोलन के खतम होते होते भी कुछ समय लगता है। आतङ्कवादी क्रान्तिकारी आदोलन के सम्बन्ध मे मोटे तौर पर यह कहा जाना सम्भव होने पर भी कि उत्तर भारत में श्री चन्द्रशेखर आजाद के शहीद होने के साथ तथा बङ्गाल में लेवाङ्ग हत्याकाड के साथ इस धारा का अन्त हो गया, पर फिर भी कुछ छिटफुट आतङ्कवादी गिरोह कायम रहे, और उन्होंने करीब-करीब द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ तक किसी न किसी रूप में अपना अस्तित्व कायम रखा। ऐसे

ही एक छोटे गिरोह के तरफ से १९३७ के अंत में तथा १९३८ के प्रारम्भ में कुछ डकैतियाँ हुईं, जिनमें पीपरीडीह की ट्रेन डकैती उल्लेखनीय है। पीपरीडीह में जिन लोगों ने काम किया था वे बाद को पकड़े गये, और इस षड़यंत्र के सम्बन्ध में जो कुछ बाद को पता लगा उससे यह मालूम होता है कि इन लोगों के हाथ में आकर यह आंदोलन सचमुच बहुत ह्रासशील अवस्था में आ चुका था। ऐसा मालूम हुआ कि इस दल के नेतागण बहुत ईमानदार थे पर उनकी ईमानदारी के बावजूद इस डकैती में प्राप्त धन का एक बहुत बड़ा हिस्सा अक्रान्तिकारी कार्यों में इस्तेमाल हुआ। इसके लिये इसके व्यक्ति नहीं बल्कि आंदोलन की ह्रासशीलता जिम्मेदार थी। यह डकैती कांग्रेस मन्त्रिमंडल के जमाने में हुई थी। कांग्रेस ने इस मुकद्दमें को राजनैतिक मानने से ही इनकार कर दिया, इनमें से जो लोग हैसियत के अनुसार जेल में उच्च श्रेणी के व्यवहार के हकदार थे, उन्हीं को उच्च श्रेणी का व्यवहार दिया गया। यह तो बताने की आवश्यकता है ही नहीं कि पीपरीडीह के कैदियों को कांग्रेस सरकार ने नहीं छोड़ा। इस सम्बन्ध में सबसे मजेदार बात यह है कि कांग्रेस सरकार के खतम होते ही ये कैदी क्रांतिकारी कैदी माने गये, और बाद को जब फिर से कांग्रेस सरकार आयी तब ये तथा अन्य क्रांतिकारी कैदी कांग्रेस सरकार द्वारा छोड़ दिये गये।

जिस समय १९४० में रामगढ़ कांग्रेस होनेवाली थी, उसके ठीक पहले लंदन में उधमसिंह नामक एक नवयुवक ने पंजाब हत्यकांड के लिये जिम्मेदार जेनरल डायर को गोली से मार दी। इस प्रकार कोई २० साल बाद जेनरल को वह सजा मिली जिसे क्रांतिकारी उन्हे बहुत पहले ही देना चाहते थे। उधमसिंह के सम्बन्ध में बहुत ही कम तथ्य अखबारों में निकले, पर यह मालूम हुआ कि वे मदनलाल धींगरा की तरह विलायत मे पढ़ने के लिये गये थे। गिरफ्तारी के बाद उनको बहुत कष्ट दिया गया, और यह चेष्टा की गयी कि वे सिर झुका दें।

कहते हैं इस उद्देश्य के लिये सभ्य कहलाने वाली ब्रिटिश सरकार ने उन पर सब तरह का अत्याचार किया। अंत में उन्हें फांसी दे दी गयी। देश में इस समय तक आतङ्कवादी आदोलन का अंत हो चुका था, पर पंजाब हत्याकाड की बातें लोगों को याद थीं इसलिये यद्यपि सरकार ने उधमसिंह को फांसी दी, रामगढ़ कांग्रेस 'उधमसिंह जिन्दाबाद' के नारे से गूंजता रहा। यह आतंकवाद की प्रसंशा में नहीं था बल्कि पंजाब हत्याकाड की निन्दा तथा उधमसिंह की वीरता के ही कारण ये नारे दिये गये थे।

यद्यपि वैयक्तिक आतंकवाद का युग खतम हो चुका था, पर अब सही मानों में सशस्त्र क्रांतिचेष्टा का आदोलन और आगे बढ़ा। यह कैसे हुआ इसे समझने के लिये हमें राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के महासागर में डुबकी लगानी पड़ेगी।

द्वितीय महायुद्ध और भारत

वर्साई की सन्धि मे ही अगली लड़ाई के बीज

१९३९ में जो महायुद्ध छिड़ा, वह कोई निर्मेघ आकाश से वज्रपात की तरह नहीं था। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के विद्यार्थी बहुत दिनों से इस बात को समझ रहे थे कि भीतर-भीतर जो आंधी सुलग रही है, वह एक विस्फोट के रूप मे फटने के लिये बाध्य है। यदि ध्यान से देखा जाय तो १९१४-१८ के महायुद्ध के बाद जो वर्साई सन्धि हुई थी, उसी में अगला महायुद्ध अन्तर्निहित था। गुन्थर ने लिखा है कि हिटलर पर जिस एक बात का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था, वह शायद वर्साई का संधिपत्र है। केवल हिटलर ही नहीं बहुत से जर्मनों की भावनाओं को इस सधिपत्र से ठेस लगी। यदि १९१४-१८ का महायुद्ध एक साम्राज्यवादी युद्ध था, तो वर्साई का सधिपत्र भी एक साम्राज्यवादी सधिपत्र था।

सर्वहारा क्रान्ति का भय

यदि जर्मनी में समाजवादी क्राति होने दी जाती, जैसा कि १६१६ और उसके बाद १६२३ मे होने जा रही थी, तो जर्मनी में न तो नात्सीवाद का उदय ही हो पाता और न द्वितीय साम्राज्यवादी महायुद्ध के छिड़ने की ही नौबत आती। पर जिन शक्तियों ने लड़ाई जीती थी, वे ऐसा भला कब होने दे सकती थीं। वे तो रूस में समाजवादी राष्ट्र की स्थापना से ही बौखलाई हुई थीं, उसी को नष्ट करने के लिये उन्होंने प्रथम महायुद्ध के बाद समाजवादी रूस पर एक साथ २१ तरफ से हमला किया था। पर रूस की लाल सेना तथा अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन को धन्यवाद है कि उनकी दुष्ट चेष्टायें सफल न हो सकीं, और उन्हें मुँहकी खानी पड़ी। अस्तु, वे किसी भी दामों पर जर्मनी मे सर्वहारा क्राति होने देने के लिये तैयार नहीं थे।

जर्मन पूँजीवाद की मदद

१६२३ ई० में जब जर्मनी मे सर्वहारा क्राति होते-होते रह गयी, उस समय तक विजयी विश्व पूँजीवाद जर्मनी के साथ एक प्रतिशोध मूलक नीति बरत रहा था, पर इस घटना से उसकी आखे खुल गयी। विजयी पूँजीवादी इस बात के लिये विवश हुए कि बदले की भावना को त्याग-कर जर्मनी की मदद करे। लोकार्नो में जो पैक्ट हुआ था, वह पूँजी-वादी जगत की इस घबराहट का परिचायक है। सच बात तो यह है कि लोकार्नो के पहले ही अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद ने जर्मनी को अपनी छत्रछाया में ले लिया था। जो बातें आर्थिक रूप से शुरू हो चुकी थी, लोकार्नो पैक्ट में उन्हीं बातों को राजनैतिक रूप दिया गया। १६२६ में इस प्रकार से अब तक का राजनैतिक रूप से अछूत जर्मनी राष्ट्र संघ के अन्तर्भुक्त कर लिया गया। यदि इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी-वाद जर्मन पूँजीवाद के रक्षार्थ आगे न बढ़ता, तो १६२३ में जर्मन क्राति भले ही न कामयाब होती, किन्तु फिर जाकर कहीं आगे कामयाब

होती। इस प्रकार यह ऐतिहासिक रूप से कहा जा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद ने ही मजदूर क्रांति के भय को टालने के लिये ही जर्मन पूँजीवाद के पैर के नीचे से खिसकती हुई जमीन को सम्हाला।

फासीवाद को प्रोत्साहन

१६२६ के विश्व आर्थिक संकट के फल स्वरूप जर्मनी की हालत और भी बिगड़ गयी, और १६३१ में तो जर्मनी ने हरजाना देना बन्द कर दिया। जर्मनी में फासीवाद के उदय में न केवल व्यक्तिगत रूप से कुछ पूँजीवादियों को ही दोष दिया जा सकता है, बल्कि इसमें ब्रिटिश सरकार का बहुत साफ-साफ हाथ था। लार्ड वेंसिटार्ट जो बाद को जर्मनी के बच्चे-बच्चे से बदला लेने का नारा देकर सुर्खरू बन गये, यहाँ तक कि उनके नाम पर विश्व साहित्य में खूनी बदले के पर्यायवाचक शब्द के रूप मे वेंसिटार्टवाद शब्द चला, वे ही लार्ड वेसिटार्ट १६३० से १६३७ तक ब्रिटिश परराष्ट्र विभाग के उपसचिव थे। इनके समय में जर्मनी के उदीयमान फासीवाद को ब्रिटिश पूँजीवाद ने किस तरह प्रोत्साहन दिया, यह द्रष्टव्य है। इस युग मे वर्साई सन्धि-पत्र के बिल्कुल विरुद्ध ब्रिटिश अस्त्र शस्त्र निर्माताओं ने जर्मनी में तोप तथा हवाई जहाज भेजे, और यह सब ब्रिटिश सरकार की सम्मति से हुआ। फ्रांस विरोध करता ही रह गया, पर उसकी कोई सुनाई नहीं हुई। १६३५ में इङ्गलैंड और जर्मनी के बीच एक नौसंधि हुई, इस संधिपत्र में पनडुब्बी निर्माण के सम्बन्ध में ब्रिटेन और जर्मनी की बराबरी मान ली गयी। इस प्रकार वर्साई संधिपत्र को फाड़ फेंकने में स्वयं ब्रिटिश सरकार ने जर्मन फासीवाद की मदद की। इस बीच में जर्मनी ने हवाई सेना के सम्बन्ध मे उस पर जो रोक लगी हुई थी, उसको भी भङ्ग किया। फ्रांस ने इस पर आवाज उठायी, किन्तु ब्रिटेन ने कोई सहायता नहीं दी, उल्टा उसे चुप कराया। जर्मनी में फासीवाद का उदय हुआ, उसका कारण यही हुआ कि जर्मनी का पूँजीवाद अब एक ऐसी जगह पर पहुँच गया था कि अब उसके लिये यह सम्भव

नहीं था कि वह पार्लियामेंट आदि का ढकोसला कायम रखे, और साथ ही शासन करे। पार्लियामेंट पद्धति के बावजूद पूँजीवाद तभी तक किसी देश पर शासन कर सकता है, जब तक वहाँ की जनता की हालत अपेक्षा कृत अच्छी हो, तथा वहाँ की जनता राजनैतिक रूप से पिछड़ी हुई हो। हिटलर के शक्ति आरूढ़ होने के पहले जर्मनी में ये दोनों बातें मौजूद थीं। तभी जर्मनी में पूँजीवाद अपने नग्न रुद्र रूप में प्रगट हुआ। हिटलर कैसे एक के बाद एक ज्यादती करता गया, कैसे उसकी ताकत दिन-ब-दिन बढ़ती गयी, और इन सारी बातों मे फ्रांस से मतभेद के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने कैसे हिटलर की पीठ पर हाथ रखा, यह सभी जानते हैं। चेम्बरलेनवाद कोई चेम्बरलेन की ही विशेषता नहीं थी। हिटलर के उदय से लेकर १९३९ तक सारी ब्रिटिश राजनीति ही चेम्बरलेनवाद का व्यवहारिक रूप है। अबीसिनीया, चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया आदि का हड़पा जाना इसी चेम्बरलेनीय राजनीति के युग की कोशशिलाये मात्र हैं। स्पेन में जिस प्रकार एक प्रजातन्त्र को ब्रिटिश तथा फ्रेंच सरकार ने आंख के सामने गला घुटवाकर मर जाने दिया, उससे भी विश्व पूँजीवाद की फासीवाद प्रोत्साहन नीति स्पष्ट होती है।

इटली में फासीवाद

इटली में फासीवाद का उदय जर्मनी से पहले ही अर्थात १९२२ में हो चुका था। महायुद्ध के बाद इटली का शासन यद्यपि पार्लियामेंट के जरिये होता था, किन्तु अब वहाँ के पार्लियामेंट में पहले की तरह केवल पूँजीवादी प्रतिनिधियों का बोलबाला नहीं रह गया था। वहाँ के समाजवादी इतने शक्तिशाली हो गये थे कि वे सरकार को बिल्कुल बेकार कर सकते थे। साथ ही वे इतने शक्तिशाली नहीं थे कि वे अपने हाथों में राष्ट्र की बागडोर को ले सकें। यह एक क्रांतिकारी परिस्थिति थी, ऐसे समय में इन दोनों शक्तियों में से जो भी शक्ति आगे बढ़कर काम करती, और राष्ट्र शक्ति को अपने हाथों में लेने के लिये जोखिम

उठाने को तैयार होती, उसी के हाथों में राष्ट्र शक्ति जाती। कृषिप्रधान दक्षिणी इटली में समाजवादियों का प्रभाव कम था, और वे डरते थे कि यदि उत्तर इटली के भरोसे वे राष्ट्र की बागडोर को अपने हाथों में ले लेंगे तो उसके फलस्वरूप एक दीर्घ तथा घोर गृहयुद्ध छिड़ सकता है; और यह भी संभव है कि इस सिलसिले में बाहरी पूँजीवादी घेरा डाल दे, जिसका नतीजा यह होता कि अन्नाभाव के कारण उनकी हार हो जाती। ऐसे समय में क्रांतिकारी नेतृत्व की आवश्यकता थी। किन्तु समाजवादियों में यह नेतृत्व मौजूद नहीं था। इस कारण इतनी अच्छी क्रांतिकारी परिस्थिति होने पर भी इटली के समाजवादी क्रांति नहीं कर सके। इसके विपरीत पूँजीवादी वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित हुआ। रोम की दशा इस वक्त इतनी खराब हो गयी थी कि कोई भी शक्तिशाली संस्था चाहती तो इस पर कब्जा जमा सकती थी। ऐसे समय में मुसोलिनी नामक एक व्यक्ति ने तथा उसकी टुकड़ी ने हिम्मत की। राजा तथा पूँजीवादी वर्ग ने उसे अपना आशीर्वाद दिया, और वहाँ पूँजीवादियों के सामरिक शासन का सूत्रपात हुआ।

फासीवाद का प्रोत्साहन क्यों?

इस प्रकार फासीवाद का उदय न तो आकस्मिक था और न तो अप्रत्याशित। जब फासीवाद का उदय हुआ तो स्वाभाविक रूप से उसमें उपनिवेशों की तथा बाजारों की जरूरत पैदा हुई, और चूँकि बाजार तथा उपनिवेश दूसरों के कब्जे में थे, इस कारण युद्ध की अनिवार्यता बहुत स्पष्ट हो जाती है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कर्णधार गण इस बात को न समझते हों ऐसी बात नहीं, पर वे यह समझते थे कि हिटलर जब हमला करेगा, तो रूस पर करेगा। सच तो यह है कि बहुत कुछ इसी धारणा के वशवर्ती होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने हिटलर तथा मुसोलिनी को बढ़ाया था, इसी भ्रम में उसने स्पेन में फासीवादियों की शक्तियों की खुले आम शिरकत को देखकर भी नहीं देखा

था, इसी आशा में उन्होंने हिटलर को एक के बाद एक इलाका लेने दिया था।

भारत के नेता बेखबर नहीं

भारत के राजनैतिक नेता इन परिस्थितियों से एकदम अपरिचित हों, ऐसी बात नही। नेताजी सुभाषचन्द्र ने त्रिपुरी में पठित अपने अभिभाषण में कांग्रेस के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा था कि समझौते की चेष्टा को छोड़कर लड़ाई को अनिवार्य जानकर ब्रिटेन को ६ महीने का अल्टीमेटम दे दिया जाय कि यदि इस बीच में भारत को स्वतन्त्रता नहीं दी गयी तो स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ दिया जायेगा। स्मरण रहे कि स्वतंत्रता संग्राम के सम्बन्ध मे अभी तक सुभाषबाबू के विचार किसी भी प्रकार महात्मा गांधी के विचारों से अलग नहीं थे, याने स्वतंत्रता संग्राम से उनका मतलब किसी न किसी रूप में सत्याग्रह ही था, इससे अधिक कुछ नहीं।

कांग्रेस सहयोग के लिये तैयार

कुछ भी हो कांग्रेस ने सुभाष बाबू की बात नही मानी थी। यूरोप में लड़ाई छिड़ते ही वायसराय ने भारत सरकार की तरफ से लड़ाई छेड़ दी। यही नही कुछ आर्डिनेंस जारी किये गये जिनके द्वारा प्रांतीय मन्त्री मंडलों के अधिकार बहुत कुछ छिन गये। इस युग में ८ प्रांतों में कांग्रेस मन्त्रिमंडल काम कर रहे थे। लड़ाई १ सितम्बर १६३६ को छिड़ गयी। १४ सितम्बर को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई जिसमें फासीवाद नात्सीवाद की निन्दा के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ किया था उसकी भी निन्दा की गयी। कांग्रेस ने सहयोग के लिये हाथ बढ़ाया, पर साथ ही यह कह दिया कि सहयोग भाई चारे से होता है न कि जबर्दस्ती। कार्य समिति ने इस अवसर पर जो प्रस्ताव पास किया, उसका अर्थ थोड़े में यह था कि कांग्रेस सहयोग के लिये तैयार है, पर बिना शर्त के सहयोग नहीं।

सरकार चुप

इस प्रस्ताव को पासकर कांग्रेस ने इस बात की प्रतीक्षा की कि शायद सरकार की तरफ से कुछ हाथ बढे, पर सरकार बिल्कुल चुप रही। उधर गवर्नर और मन्त्रिमंडलों में खींचा-तानी बढ़ती गयी। २२ अक्टूबर को कार्य-समिति ने मन्त्रिमडलों को इस्तीफा देने की आज्ञा दी और अगले महीने के अन्दर ही एक-एक करके आठ मन्त्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया। अब तो सरकार और भी खुलकर दमन करने लगी। कार्यकर्त्ता, विशेषकर वाम पक्षी कार्यकर्त्ता धड़ाधड़ गिरफ्तार होने लगे। सरकार का दमन चक्र चल निकला।

रामगढ़

इसी प्रकार की उधेड़ बुन तथा निष्क्रियता में १९४० में रामगढ़ कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसमे यह साफ कर दिया गया कि सरकार ने जो नीति अख्तियार की है, उसको देखते हुए संग्राम के अतिरिक्त अब कोई मार्ग नहीं है। पर अब भी कांग्रेस सग्राम छेड़ने में हिचकिचा रही थी। १९४० के जून में कार्य-समिति ने सहयोग के लिये फिर चेष्टा की। पर जब इसका कोई नतीजा नहीं हुआ तो कांग्रेस को मजबूरन वैयक्तिक सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ना पड़ा। इसके पहले पञ्जाब में अहरारों ने, युक्त प्रान्त मे यूथलीग ने तथा फारवार्ड ब्लाक ने लड़ाई छेड़ी थी। इन सब में सबसे पहले लड़ाई छेड़ने का श्रेय अहरारों को प्राप्त है। अहरारों ने तथा सयुक्त प्रान्त की यूथलीग ने युद्ध विरोधी प्रचार कार्य से अपना काम शुरू किया। इसी मे इनके मुख्य नेता गिरफ्तार हो गये। युद्धविरोधी व्याख्यानों में कई वामपक्षी गिरफ्तार हो गये।

वामपक्षियों की हलचलें

रामगढ़ कांग्रेस के ठीक बगल में सुभाषबाबू ने समझौता विरोधी सम्मेलन किया था। इसमें यह तय हुआ था था कि ६ अप्रैल से

संग्राम छेड़ दिया जाय ! मजे की बात है कि ठीक बङ्गाल में ही इस कार्यक्रम का पालन नहीं किया जा सका क्योंकि सुभाषबाबू कारपोरेशन के चुनाव सम्बन्धी कार्यों में फँस गये। अवश्य बाद को इससे छुट्टी पाने पर उन्होंने हालवेल मानूमेंट आन्दोलन चलाया। यह मानूमेंट ब्लैक होल ट्रेजडी नामक कल्पित घटना से सम्बद्ध था। सत्याग्रही इस मानूमेंट को तोड़ने के लिए जाते थे, और उन्हें गिरफ्तार किया जाता था। पर उत्तर भारत में विशेषकर इलाहाबाद में ६ अप्रैल को ही युद्ध विरोधी आन्दोलन छेड़ दिया गया। इस आन्दोलन में वहाँ की यूथलीग ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। वहाँ इस आन्दोलन के नेता सर्व श्री केदार मालवीय, बसन्त बनर्जी, रूपनारायण पाडे, डाक्टर राम भजन, अबसार अहमद, नलिनीकुमार मुकर्जी थे। बनारस में भी यह आन्दोलन चला। अन्य स्थानों मे भी छिटफुट तरीके से इनका अनुकरण हुआ। इलाहाबाद में इस आन्दोलन को कोतवाली, जेल, हाईकोर्ट, किला पर झण्डा लगाने का रूप दिया गया, और क्रान्ति की पुकार शीर्षक लाल पर्चों में यह घोषित कर दिया गया कि अब सत्याग्रह का युग नहीं रहा, अब सरकारी इमारतों पर कब्जा करने का युग आ गया। यद्यपि इस प्रकार एक क्रान्तिकारी नारा दिया गया, पर अर्थतः यह सारा आन्दोलन सत्याग्रह के इर्दगिर्द ही रहा, क्योंकि जो लोग सरकारी इमारतों पर झण्डा लगाने जाते थे, वे प्रतीकवादी तरीके पर ही दबाव राजनीति से ऊपर उठे हुए कहे जा सकते थे, वे यह जानकर जाते थे कि उन्हें गिरफ्तार होना है। फिर भी मानसिक मुक्ति इन्हें प्राप्त हो चुकी थी। इलाहाबाद के इन यूथलीगियों को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने ही पहले पहल रेल की पटरी उखाड़ो और तार काटो का नारा दिया। ये नारे दीवारों पर लिखे गये तथा पर्चों में इनके महत्व को समझाकर सशस्त्र क्रान्ति की आवश्यकता बताई गई।

वामपक्ष का असर

इस प्रकार सुभाषबाबू के नेतृत्व में वामपक्ष के एक हिस्से ने

कांग्रेस हाई कमांड से अलग ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लोहा लेने की चेष्टा की। पर इसमें उनकी ईमानदारी जाहिर होने पर भी वे पृथक संग्राम छेड़ने में सफल नहीं रहे। वामपक्ष की यह कमजोरी न तो आकस्मिक है और न ऐसा वामपक्षी नेताओं के कमजोर चरित्र के कारण ही है। भारतीय वामपक्ष की कमजोरी और ढुलमुलयकीनी का कारण यह था कि वामपक्ष सम्पूर्ण रूप से उसी वर्ग पर निर्भर रहता था जिस पर कांग्रेस निर्भर रहती है। इस प्रकार की अवस्था में वामपक्षी दल दक्षिण पन्थी दलों या उपादानों से न तो अधिक भिन्न हो सकते थे और न वे कार्यक्षेत्र में ही अधिक गरम हो सकते थे, नारेबाजी की बात और है। फिर भी वामपक्ष के कुछ छिट-फुट लोगों ने जो संग्राम छेड़ा, वह बिल्कुल बेकार गया, ऐसा नही कहा जा सकता। कोई भी आन्दोलन, यदि वह सही दिशा में है तो चाहे जितना भी छोटा हो, वह व्यर्थ नहीं जा सकता।

कांग्रेस आगे बढ़ने को मजबूर

वामपक्षियों, प्रगतिशील दक्षिणपंथियों का दबाव तथा जनता की क्रमशः बिगड़ती हुई हालत ने कांग्रेस को कुछ करने के लिये मजबूर किया। पर नेता गण अभी तक करें या न करें में पड़े हुए थे। मन्त्रिमंडलों से लाभ उठाया हुआ सुधारवादी हिस्सा कांग्रेस को पीछे की तरफ घसीट रहा था। इनके लिये मन्त्रिमण्डलों का अन्त जगत का अन्त था। और सांगठनिक रूप से कांग्रेस अधिकांश रूप से ऐसे लोगों के हाथों में थी जो किसी भी तरह ऐसे पदलोलुपों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं थे जिन्होंने पदों के दाम के रूप में हर दस साल जेल जाना मन्जूर कर लिया था।

पर आधे दिल से आगे बढ़ी

अन्त तक कांग्रेस को आधे दिल से कार्यक्षेत्र में उतरना पड़ा। इस प्रकार वैयक्तिक सत्याग्रह की उत्पत्ति हुई। मैंने १९४०-४१ के

वैयक्तिक सत्याग्रह पर जो कुछ अपनी एक पुस्तक में लिखा है, वह इस सम्बन्ध में पूरा उद्धृत किया जाता है—

"यह एक बहुत ही हास्यास्पद बात थी कि लोग पहले से इत्तला देकर एक खास जगह पर पहुँचें और वहाँ न एक पाई न एक भाई या इस किस्म का कोई नारा देकर गिरफ्तार हो जावें। पर यही इस आंदोलन में किया गया। इस आंदोलन की कल्पना मूर्खतापूर्ण थी और इसको इस प्रकार काम में लाया गया कि उससे एक पीला रोगग्रस्त दृष्टिकोण सूचित होता था।

प्रतीकवादी आंदोलन

"इस आंदोलन के महान संचालकों के अनुसार यह आंदोलन प्रतीकवादी (Symbolical) था। राजनैतिक विचारों का कितना दिवालियापन था ! ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ऐसे भयंकर यंत्र के साथ एक प्रतीक से लड़ने चलना एक ऐसा विचार था जिससे ज्ञात होता था कि गांधीवाद जिसने सुयोग्य ठाठ के साथ भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था अब सम्पूर्ण रूप से ह्रासशील हो चुका था, और अब आगे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ कैसे लड़ा जाय इसका कोई उपाय इसे नहीं सूझ रहा था। एक प्रतीक के साथ तो एक प्रतीक से लड़ा जा सकता था, पर साम्राज्यवाद एक प्रतीक तो था नहीं। यह बात सच है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद इस लड़ाई के लिये अच्छी तरह तैयार नहीं था, इसलिये यह एक विपत्ति में फँस गया था, पर वह चाहे जितना कमजोर हो गया हो और चाहे जितनी विपत्ति में फँस गया हो, पर वह अब भी लूट और सताने का बहुत जबर्दस्त यंत्र बना हुआ था। इस सम्बन्ध में यह मजेदार बात है कि नेहरू जी प्रथम वैयक्तिक सत्याग्रही होने वाले थे। यह नहीं मालूम कि कहाँ तक पंडित जी ने इच्छापूर्वक यह स्वीकार किया था, और कहाँ तक यह उनके ऊपर लादा गया था। जो कुछ भी हो वे गिरफ्तार हो गये, और सत्याग्रह करने के पहले ही एक व्याख्यान के लिये जेल भेज दिये गये।

वैयक्तिक सत्याग्रह बिल्कुल व्यर्थ नहीं

"फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि वैयक्तिक सत्याग्रह आन्दोलन बिल्कुल व्यर्थ गया। न कुछ करने से प्रतीकवादी संग्राम ही अच्छा था। अब ऐसी हालत पहुँच चुकी थी कि युद्ध के विरुद्ध उठाई हुई उँगली भी हितकर थी। जब वैयक्तिक सत्याग्रह के फलस्वरूप एक-एक करके भारत के जगतप्रसिद्ध व्यक्ति तथा कल के मन्त्री और प्रधानमंत्री गिरफ्तार होते गये, तो इससे जगत के सामने यह बात साफ हो गयी कि वास्तविक प्रतिनिधि स्थानीय भारतीय लड़ाई के साथ नहीं थे। पर ऐसी हालत में जब कि हमारे साथ जो सहानुभूति कर सकते थे ऐसे लोग, जैसे मान लीजिये कि अमेरिकन स्वयं ही जीवन मरण के संग्राम में उतरने वाले थे, इस स्पष्टीकरण से क्या आता जाता था। इस समय जिस बात की जरूरत थी वह था असली वास्तविक संग्राम न कि क्रन्दनोत्पादक नाटकीय विषय।

पर सरकार पर असर नहीं

"जहाँ तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सम्बन्ध है, उसने इस आंदोलन की कोई परवाह न की। बात यह है कि अब सरकार पर दबाव राजनीति का कोई असर नहीं रह गया था। परिस्थिति का तकाजा यह था कि कोई नया अस्त्र निकाला जाता, और साम्राज्यवाद के विरुद्ध काम में लाया जाता। इसमें गांधीवादी नेतृत्व सफल रूप से असफल रहा। इसके दिन लद चुके थे। वैयक्तिक सत्याग्रह ने मानों उस तरह की दबाव मूलक राजनीति की मरण दुदुभी बजा दी, जिसके गांधी जी ही जनक और विशेषज्ञ थे।"*

क्रिप्स मिशन

फिर भी कांग्रेस ने इस आंदोलन को चलाया तो यह कुछ न कुछ

---

*"अगस्त क्रांति और प्रतिक्रांति" पृ॰ ३४, ३५

चला। ७ दिसम्बर १६४१ को जापान मित्र पक्ष के विरुद्ध युद्ध में उतर पड़ा, और उसने बात की बात में प्रशान्त महासागर पर अपना कब्जा जमा लिया। १९४१ के ३० दिसम्बर को कार्य-समिति ने सरकार की तरफ फिर से हाथ बढ़ाया। इस सम्बन्ध में यह दिखलाने के लिये कि कांग्रेस के सहयोग का अर्थ केवल नैतिक सहानुभूति नहीं है, बल्कि इसका अर्थ हर तरीके की सहायता है। कार्य-समिति ने गांधी जी को नेतृत्व से मुक्ति दी। उधर पूर्वी रणक्षेत्र में ब्रिटेन की हालत बिगड़ती ही गयी। ८ मार्च १६४२ को रंगून पर जापानी कब्जा हो गया, और ११ मार्च को क्रिप्स मिशन की घोषणा हो गई, और २३ मार्च को सर स्टैफ़र्ड क्रिप्स भारतवर्ष के सामने प्रस्तावों की पिटारी लेकर प्रगट हुए। इस प्रस्ताव का उद्देश्य जापान को हराने में भारतवर्ष की मदद लेना था। इस प्रस्ताव में लीग को भी खुश करने की कोशिश की गयी थी। उन दिनों ब्रिटेन इस तरह का रहा था कि गांधी जी ने इस प्रस्ताव को दिवालिया बैंक पर बाद की तारीख का चेक करके घोषित किया, इसका मतलब साफ था कि जो शक्ति खुद ही अपनी अन्तिम साँस गिन रही है, उसके साथ सौदा क्या करना! अंतिम समय में क्रिप्स ने भी रहस्यजनक तरीकों से हाथ बटोर लिया, इस कारण परिस्थिति जहाँ की तहाँ रही। अब इस प्रस्ताव की असफलता के बाद कांग्रेस के सामने इसके सिवाय कोई चारा नहीं रहा कि वह कुछ करे। अब कोई न कोई कदम उठाना अनिवार्य था। और वह कदम उठकर रहा। यद्यपि कोई तैयारी नहीं थी, फिर भी कदम उठा।

क्रांति का जन्म

गांधी जी की रहस्यजनक बातें

मालूम होता है कि गांधी जी के बहुत इर्द-गिर्द के लोग भी इस बात का अनुभव कर रहे थे कि पुराना गांधीवादी तरीका तथा वैयक्तिक सत्याग्रह अब हथियार के रूप में बेकार हो चुके थे। तभी इन दिनों स्वयं गांधी जी के लेखों तक से अजीब ध्वनि निकलती थी। १९४२ की १९ जुलाई को उन्होंने लिखा "इस बार मैं मांग कर जेल नहीं जाने वाला हूँ। इस संग्राम में माँगकर जेल जाना नहीं है। माँग कर जेल जाना तो बहुत ही नरम चीज होगी। अवश्य अब तक हमने माँग कर जेल जाने का व्यापार कर लिया था। अब की बार मेरा इरादा यह है कि आंदोलन को जहाँ तक हो सके शीघ्र तथा ह्रस्व किया जाय।"

वक्तव्य से प्रश्नों की उत्पत्ति

इसमें सन्देह नहीं कि गांधीजी का यह वक्तव्य बहुत भ्रम उत्पन्न करने वाला था। स्वयं गांधी जी के शब्दों से ज्ञात होता है कि वे कुछ ऐसी बात करने का वादा कर रहे थे, जो उनके अब तक के इतिहास को देखते हुए अनोखा होने वाला था। दक्षिण अफ्रिका से लेकर अभी कल तक गांधी जी ने जितने भी आन्दोलन का नेतृत्व किया था, उन सब की मुख्य विशेषता ही यह थी कि जेल जाया जाय, और माँगकर, बताकर, नोटिस देकर जाया जाय। स्वभावतः गांधी जी के इस वक्तव्य से यह प्रश्न उठता था कि यदि अब की बार वे जेल जाने वाले नहीं थे, तो वे क्या करने वाले थे? तो क्या लोग अब की बार गिरफ्तारी से बचकर काम करने वाले थे? यदि लोग गिरफ्तारी से अपने को बचाने वाले थे, तो वे बचकर क्या करने वाले थे? वे कहाँ तक अहिंसा का पालन करने वाले थे? ये कुछ ऐसे प्रश्न थे जो उठे बिना नहीं रह सकते थे। और जो बहुत ही कष्ट कर थे।

गांधी जी का दूसरा वक्तव्य

गांधी जी ने २६ जुलाई के अन्त में फिर लिखा "आन्दोलन को नरमी से चलाने के लिये जितने भी एहतियात हो सकते हैं, मैं उतने एहतियात लूँगा। पर यदि मैं देखूँगा कि ब्रिटिश सरकार तथा मित्र शक्तियों पर किसी प्रकार छाप नहीं पड़ रही है। (No impression is produced) तो मैं अन्त तक जाऊँगा। भारत में जो कुछ होगा उसके लिये यह उचित ही है कि मैं मित्र शक्तियों को जिम्मेदार समझूँ, क्योंकि यह चीज उनके हाथों में है कि लड़ाई में बाधक जो कुछ भी किया जाने वाला है, उसको न होने दें।"

महादेव देसाई का लेख

१९४२ के ६ अगस्त के "हरिजन" में महात्मा जी के शिष्य और सहयोगी श्रीमहादेव देसाई ने 'अहिंसा असहयोग के तरीके' नाम से एक लेख लिखा। जिसमें उन्होंने लिखा "हम अहिंसा असहयोग के कुछ तरीकों से बराबर परिचित रहे हैं। इनमें सरकारी संस्थाओं तथा नौकरियों का बायकाट और टैक्सबन्दी भी थी।" पर अब "शत्रु के सारे कर्मक्षेत्र तक अपने असहयोग को अहिंसा के दायरे में ले जाना पड़ेगा।"

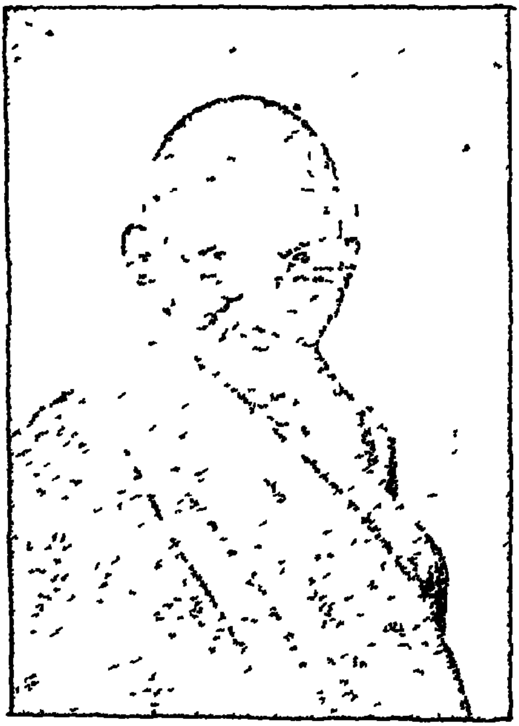
मशरूवाला का वक्तव्य

महात्मा जी के अन्य प्रधान शिष्य श्री मशरूवाला ने २३ अगस्त के 'हरिजन' में एक लेख लिखा जो इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उन दिनों गांधी जी के अन्तरङ्ग वृत में कैसी-कैसी बातें हो रही थीं। श्री मशरूवाला ने अपने लेख में तोड़-फोड़ का समर्थन किया था। इस लेख में रेलों, पुलों आदि के हस्तक्षेप को अहिंसा बताया गया था।

गांधी जी के शिष्यों में बुद्धि-भेद

हम और ब्यौरे में न जायेंगे, जो सबूत हमने उद्धृत किये, उनसे

भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



महात्मा गाँधी

यह स्पष्ट हो जाता है कि वाम पक्षियों को जाने दिया जाय, वे तो हमेशा से ही अहिंसा का विरोध करते आ रहे थे, पर स्वयं गाधी जी के अन्तरङ्ग शिष्यों में अगस्त क्रान्ति के ऐन पहले तोड़-फोड़ अहिंसा है, इस प्रकार का मतवाद जोर पकड़ चुका था। स्वय गाधी जी ने बाद को वायसराय को जो पत्र लिखे उनमें से एक से यह ज्ञात होता है कि क्रिप्स प्रस्ताव तथा, अगस्त क्रान्ति के बीच के समय में गांधी जी के शिष्यों में इस बात पर बहुत वादविवाद हुआ करता था कि रेल की पटरी उखाड़ना तथा तार काटना अहिंसा है या नहीं। गाधी जी ने एक पत्र में यों लिखा था—"मशरूवाला ने मुझे इस विषय पर तर्क करते सुना होगा कि रेलों पुलों आदि के हस्तक्षेप को अहिंसा के अन्तर्गत माना जा सकता है या नहीं।"

गांधीवाद संकट ग्रस्त

मशरूवाला के लेख से यह भी पता चलता है कि गांधी जी के प्रधानतम शिष्यों में भी कुछ लोग इस नतीजे पर पहुँच चुके थे कि अपने पुराने स्वरूप तथा आकार में गाधीवाद अब असर पैदा नहीं कर सकता था, तथा इसके दबाव मूल्य को बढ़ाने के लिये जो उस समय शून्य के बिन्दु तक पहुँच चुका था, इसमें कुछ ऐसी बातों को जोड़ने की आवश्यकता थी, जो अब तक कार्यक्रम के बाहर समझी जाती थी, तथा जो पहले के कट्टर अर्थ में अहिंसा के दायरे के अंदर नहीं समझी जाती थी। इस माने में यह कहा जा सकता है कि निरन्तर विफलताओं के कारण स्वयं गांधीवाद के ५२ सालों के अन्दर एक वामपक्षी प्रवृत्ति का जन्म हो चुका था। गाधीवाद बाहर के आक्रमणों से परेशान तो था ही, अब वह भीतर से भी सकट ग्रस्त हो रहा था। परिस्थितियों के दबाव के कारण ही ऐसा हुआ था।

रहस्यपूर्ण वातावरण

उन दिनों गाधी जी के पास से जो लोग आते थे, वे भी रहस्य-जनक तरीकों से बातें करते थे। उनकी बातचीत से यह ज्ञात होता था

कि जैसे उनको कोई बहुत बड़ा रहस्य मालूम हो गया है, जिसकी वे मुश्किल के साथ रक्षा कर रहे हैं। सरदार पटेल ने भी इन्हीं दिनों कहीं-कहीं ऐसा कहा कि अब की बार संग्राम का वारा न्यारा एक सप्ताह के अन्दर ही हो जायेगा। इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि लोग यह समझे कि इस बार संग्राम का तरीका ही कुछ और होगा। इन्हीं दिनों ६ जुलाई को वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक हुई। यह बैठक बहुत लम्बी हुई। सच तो यह है कि यही पर कांग्रेस के नेताओं ने संग्राम छेड़ने का अन्तिम निश्चय कर लिया।

कार्य-समिति का प्रस्ताव

१४ जुलाई को कार्य समिति ने १२०० शब्दों का एक विराट प्रस्ताव प्रकाशित किया। उस प्रस्ताव का सारांश यों था—

"दिन प्रतिदिन घटने वाली घटनायें और भारत की जनता जिस परिस्थिति में से गुजर रही है, उसका अनुभव कांग्रेस जनों की उस राय को मजबूत बनाता है कि भारत में अंगरेजी राज्य का शीघ्र अन्त हो जाना चाहिये।......विश्व युद्ध आरम्भ होने के समय से ही कांग्रेस दृढता पूर्वक युद्ध मे बाधा न पहुँचाने की नीति को बरतती आ रही है। अपने सत्याग्रह को निष्फल बना देने का खतरा उठाकर भी कांग्रेस ने जान-बूझकर इसे प्रतीकवादी रूप दिया।.... पर ये उम्मीदें चूर-चूर हो गयीं। क्रिप्स प्रस्ताव की असफलता ने यह साफ-साफ बता दिया कि भारतवर्ष पर से अगरेजी दासता का पजा हटने को नही है। क्रिप्स वार्त्ता में कांग्रेस के प्रवक्ताओं ने पूरी कोशिश लगायी—राष्ट्रीय माँग के अनुकूल कम से कम अधिकार माँगे, पर सब व्यर्थ। इस विफलता से ब्रिटिश विरोधी विचार और भी तीव्र हो गये, और जापानियों की विजय पर लोगों में सन्तोष हुआ है। कांग्रेस ब्रिटिश विरोधी वर्तमान भावना को शुभ कामना मे बदल देगी, पर यह तभी सम्भव है जब भारत को स्वतन्त्र किया जाय। अगरेजी शासन के भारत से विदा हो जाने का प्रस्ताव करते हुए कांग्रेस बिल्कुल नही चाहती कि

ग्रेट ब्रिटेन अथवा दूसरी मित्र शक्तियों को युद्धोद्योग में किसी भी प्रकार तङ्ग किया जाय। ऐसा कोई भी कार्य करना कांग्रेस नहीं चाहती। कांग्रेस मित्र शक्तियों के रक्षा साधन को किसी प्रकार हानि पहुँचाना नहीं चाहती। अतः कांग्रेस को इस बात में कोई उज्र नहीं कि भारत मे मित्र शक्तियों के सशस्त्र सैनिक यदि वे जापानी और दूसरे आक्रमण को रोकने के लिये तथा चीन की मदद करने के लिये रहें, तो रह सकते हैं। यदि कांग्रेस की यह अपील व्यर्थ गयी, तो कांग्रेस ने १९२० से लेकर अब तक जितनी अहिंसात्मक शक्ति का संचय किया है, वह अनिच्छा पूर्वक उसका उपयोग करने के लिये बाध्य होगी।"

इस बीच की बातचीत

इसी प्रस्ताव में यह भी तय हुआ कि यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है इसलिये इस विषय पर फैसला करने के लिये ७ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक बुलायी जाय। अभी बैठक के होने में करीब तीन सप्ताह थे। इसलिये इस बीच मे जो बातचीत हुई, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। सभी लोग इस बात को जानने के लिये व्यग्र थे कि इस बार के आंदोलन में क्या विशेषता होगी। गांधी जी ने १९३० का आंदोलन डांडी यात्रा नमक बनाने से शुरू किया था। उस बार उनका उद्देश्य अपने को गिरफ्तार कराना था। अपने को गिरफ्तार कराकर जनता में इसके लिये जोश पैदा करना तथा जेलों को भरवा कर दबाव डालना, यही गांधीवादी तरीके की विशेषता थी। इसलिये स्वाभाविक तरीके से जो देशी तथा विदेशी पत्रकार उनसे इस बीच में मिले, वे इसी बात को जानने के लिये कोशिश करते थे कि अगले आंदोलन का स्वरूप क्या होगा। तदनुसार सम्वाददाताओं ने उनसे यह प्रश्न किया कि क्या आप जेल जाना चाहेंगे? इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि नहीं, मैं जेल जाना नहीं चाहूँगा। इस पर यह उनसे पूछा गया कि क्या आप जेल भेज दिये

जाने पर अनशन करेंगे, इसके उत्तर में उन्होंने फिर कहा कि जेल जाने का कोई प्रश्न नहीं उठता, पर यदि मैं जेल में ठूँस दिया गया, तो मैं अनशन करूँगा या नहीं करूँगा, यह मैं बता नहीं सकता। उनसे यह भी पूछा गया कि आंदोलन होते ही उपद्रव होंगे, इस पर उन्होंने जरा भी डर जाहिर नहीं किया, और कहा कि मेरा तो उद्देश्य ऐसा नहीं है, पर उपद्रव हो तो हो। उनसे यह भी कहा गया कि जब तक महायुद्ध चल रहा है तब तक के लिये वे अपने आंदोलन को स्थगित रखें, पर उन्होंने कहा कि आंदोलन होने से ही जर्मनी के साथ निपटारा करने में आसानी होगी।

असल आंदोलन पर स्पष्टीकरण

इन दिनों कांग्रेस के नेताओं की तरफ से जो वक्तव्य हुए, उनसे यह साफ कर दिया गया कि अब आंदोलन होकर ही रहेगा। यदि आंदोलन रुक सकता है तो एक ही कारण से रुक सकता है, वह है भारत की स्वतन्त्रता। गांधी जी ने पत्रकारों से बोलते हुए यह भी साफ कर दिया कि जब तक जापानी हमले का डर है तब तक मित्र पक्ष के सैनिक भारतवर्ष में रह सकते हैं। गांधी जी ने यह भी कहा कि यदि जापानी देश में आगये तो मैं उनसे असहयोग करूँगा। आंदोलन के स्वरूप पर न्यूज क्रानिकल को वक्तव्य देते हुए गांधी जी ने कहा कि 'आंदोलन के कार्यक्रम में जन आंदोलन के अन्तर्गत विशुद्ध अहिंसात्मक सारी बातें आ सकती हैं। पर मैं विशेष विवरण नहीं दे सकता। इसका कारण यह नहीं कि मैं कुछ छिपा रहा हूँ बल्कि यह है कि अभी तक कोई खास कार्यक्रम तय नहीं किया गया है।' उन्होंने यह भी कहा कि सम्भव है कि आंदोलन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव के दो सप्ताह के अन्दर ही छेड़ दिया जाय। अवश्य साथ ही उन्होंने कहा कि मैं वायसराय से मिल सकता हूँ।

सार्वजनिक तथा वैयक्तिक वक्तव्य में भेद

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि सार्वजनिक रूप से जो कुछ नेताओं

ने कहा यों व्यक्तिगत रूप से उससे कहीं अधिक कहा। सार्वजनिक रूप से बराबर अहिंसा पर जोर दिया गया, पर व्यक्तिगत रूप से ऐन गांधी जी के इर्द-गिर्द रेल और पुल उड़ाने की बातें होती रहीं और मशरूवाला ऐसे व्यक्ति को यह ख्याल हुआ कि गांधी जी ऐसे कार्यों को अहिंसा में समझते हैं, यह तो हम पहले ही दिखा चुके।

क्या यह आकस्मिक ?

क्या यह सब बिल्कुल आकस्मिक थी। गांधी जी की आध्यात्मिकता में सन्देह न करते हुए भी यह कहा जा सकता है कि वे एक चतुर राजनीतिज्ञ तथा जनमनोवैज्ञानिक हैं। उनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि उनकी बातों से उनके शिष्यों के मन में जो प्रतिक्रिया उत्पन्न होती थी, उसे वे समझ सकते हैं। तो यह क्या बात थी कि वे बराबर आगामी आंदोलन के बारे में बड़े रहस्यपूर्ण लहजे में उल्लेख कर रहे थे, मानों इस बार वे कोई बहुत ही नयी और अभूतपूर्व बात करने जा रहे हैं। क्यों वे रहस्यजनक रूप मे रेल की पटरी उखाड़ना, तार काटना आदि के सम्बन्ध मे ऐसे उल्लेख करते थे मानों वे इस विषय में भयानक उधेड़-बुन में पड़े हुए हों कि अहिंसा में ये सब काम आ सकते हैं या नहीं ! इन विषयों पर सोचते हुए वे मानसिक रूप से क्यों विध्वस्त और परेशान प्रतीत होते थे ! अहिंसा के साक्षात अवतार होते हुए भी उन्होंने अपने हरिजन में श्री महादेव देसाई तथा श्री मशरूवाला के द्व्यर्थक लेख क्यों छपने दिये ! उन्होंने बातचीत के दौरान मे श्री सीतारमैया ऐसे चतुर व्यक्ति को भी यह धारणा कैसे और क्यों दे दी कि टेलीग्राफ के तारों को काटना शायद अहिंसा में आ सकता है, जैसा कि बाद को श्री सीतारमैया के बयान से ही ज्ञात होता है।

आंध्र की गश्ती चिट्ठी

श्री सीतारमैया ने इसी धारणा के वशवर्त्ती होकर उस गश्ती चिट्ठी को भेजा था जो आन्ध्र की गश्ती चिट्ठी नाम से मशहूर हुई।

इस गश्ती चिट्ठी में कांग्रेसजनों से तार काटने की सिफारिश की गयी थी। इस गश्ती चिट्ठी की प्रतियाँ सरकार के हाथ लगी और सरकार ने इसी का हवाला देकर बराबर यह कहा कि तोड़-फोड़ के कार्यों के लिए भीड़ की ख्वामख्याली नहीं, बल्कि जिम्मेदार कांग्रेसजन उत्तरदायी हैं। इस गश्ती चिट्ठी पर सरकार ने बाद को एक प्रस्ताव भी पास किया जिसमें यह कहा गया कि "कौंसिल सहित गवर्नर जनरल को पता रहा है कि कुछ दिनों कांग्रेस दल ने बराबर गैरकानूनी और कुछ क्षेत्रों में हिंसात्मक कार्रवाइयाँ की हैं। ऐसी कार्रवाइयों में रेल, तार, यातायत तथा समाचार के साधनों में तोड़फोड़, हड़तालों की तैयारी, सरकारी फौजों को बरगलाना तथा युद्ध तैयारियों में, विशेषकर भर्ती में बाधा देना था।"

गाँधी जी द्वारा प्रतिवाद

आन्दोलन के शुरू होते ही सरकार ने धरपकड़ का समर्थन करते हुए यह प्रस्ताव किया था। गांधी जी ने आगा खाँ प्रासाद से १४ अगस्त (१९४२) को वायसराय को यह लिखा कि यह सत्य का भयङ्कर अपलाप है। गांधी जी के यह लिखने पर भी वायसराय ने उन्हें लिखा "मुझे इसका बहुत अच्छी तरह पता है कि अखिल भारतीय कांग्रेस के नाम से प्रचारित गुप्त हिदायतों के अनुसार तोड़ फोड़ का कार्य किया गया है। मुझे यह भी पता है कि सुपरिचित कांग्रेसजनों ने हिंसा तथा हत्या के कार्यक्रमों को संगठित किया है, और उसमें भाग लिया है। इस समय भी (५ फरवरी १९४३) एक गुप्त कांग्रेस संस्था काम कर रही है जिसमें कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य की स्त्री प्रमुख भाग ले रही है, और यह संस्था बम के साथ आक्रमण तथा आतङ्कवाद को सङ्गठित कर रही है।"

राष्ट्रपति द्वारा विरोध

राष्ट्रपति ने विशेषकर आन्ध्रवाली गश्ती चिट्ठी के सम्बन्ध में लिखा "अभी अभी सरकारी विज्ञप्ति में एक गश्ती चिट्ठी का उल्लेख

किया गया है, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह आन्ध्रप्रान्तीय काग्रेस कमेटी के द्वारा प्रचारित हुई थी। हम लोग इस गश्ती चिट्ठी के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते हैं, और हम यह विश्वास नहीं कर सकते हैं कि कांग्रेस के मौलिक वसूलों के विरुद्ध किसी जिम्मेदार काग्रेसी ने ऐसी हिदायते दी होंगी। फिर भी इस सम्बन्ध में यह द्रष्टव्य है कि इस गश्ती चिट्ठी के सम्बन्ध में सरकारी वक्तव्यों में विभिन्न बातें कही गयी हैं। २६ अगस्त १६४२ में मद्रास सरकार द्वारा प्रकाशित एक वक्तव्य में इसका पहले पहल उल्लेख किया गया। इस वक्तव्य में यह कहा गया कि इस गश्ती चिट्ठी मे और बातों के साथ साथ रेल की पटरियों को उखड़वाने की हिदायत थी। इस वक्तव्य के दो ही सप्ताह बाद हाऊस आफ कामन्स में बोलते हुए मिस्टर ऐमरी ने यह कहा कि इस गश्ती चिट्ठी में यह साफ-साफ कहा गया था कि "पटरियाँ न उखाड़ी जायँ, और किसी की जान को खतरे में न डाला जाय।"

पर आंध्र गश्ती चिट्ठी जाली नहीं

उस समय तो मामला यहीं दब गया था, पर जब नेतागण १६४५ मे छूटे तो श्री सीतारमैया ने बेजवाड़ा में बोलते हुए यह कहा कि कथित आन्ध्र गश्ती चिट्ठी के वे एकमात्र रचयिता थे, और इसके लिए अन्य कोई भी व्यक्ति जिम्मेदार नहीं है। उन्होंने यह बताया कि इस गश्ती चिट्ठी में जो हिदायतें थीं, उन्होंने उनको गाधी जी के साथ अच्छी तरह बातचीत करने के बाद प्राप्त किया। डाक्टर सीतारमैया ने यह साफ-साफ कहा कि इस गश्ती चिट्ठी में ताड़ तथा खजूर के पेड़ों को काटने की, म्युनिसिपल्टी के टैक्सों के अतिरिक्त अन्य टैक्सों की बन्दी तथा टेलीग्राफ के तारों का काटना था। गाँधी जी के अनुसार यह अन्तिम बात निषिद्ध तो नहीं थीं, पर उसकी सिफारिश नहीं की जा रही थी। महात्मा जी ने जिस खुले विद्रोह की कल्पना की थी, उसमें इस कथित गश्ती चिट्ठी में वर्णित सभी बातें आ जाती थीं, पर

उसमें रेल की पटरियों को उखाड़ा जाना या रेल के डब्बों का जलाया जाना बिल्कुल मना था।"

नेता इस वातावरण के लिये मजबूर

श्री सीतारमैया का वक्तव्य इस बात का प्रमाण है कि जानबूझ कर किस प्रकार का वातावरण पैदा किया गया था। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि इस वातावरण को तैयार करने में इस आन्दोलन के महान नेता मजबूर थे। सत्याग्रह का पुराना तरीका बिल्कुल बेकार हो चुका था, शक्ति पर कब्जा दिलाना तो दूर रहा, यह शत्रु के मन पर प्रभाव उत्पन्न करने (देखो वायसराय के नाम गाँधी जी का पत्र १४ अगस्त १९४२) में असमर्थ था। तभी इस पुराने अस्त्र में क्रान्ति का मुलम्मा चढ़ाकर पेश करने की जरूरत पड़ी। गाँधी जी अहिंसा से हटे नहीं, पर उन्होंने उसके दायरे में रहते हुए यह प्रभाव उत्पन्न करना चाहा कि वे अब की बार कहीं पर भी नहीं रुकेंगे, आगे बढ़ते चले आयेंगे, इसकी परवाह नहीं करेंगे कि चौरीचौरा या शोलापुर हो। पर यह तो ऊपरी बात थी, भीतर से वे चाहते थे कि उन्हें ऐसा न करना पड़े, और समझौता हो जाय।

युद्ध पर रुख और सुधारवाद उधेड़बुन का कारण

युद्ध के सम्बन्ध में कांग्रेस का रुख बहुत कुछ उधेड़बुन के लिए बाध्य करता था। कांगरेस के नेतागण सम्पूर्ण रूप से फासीवाद और नात्सीवाद की विजय के विरुद्ध थे, पर वे साथ ही साथ साम्राज्यवाद के भी विरुद्ध थे। इस कारण भी कांग्रेस उधेड़बुन में पड़ी रही। इसके अतिरिक्त कांग्रेस के अन्दर जो माडरेट उपादान थे, वे भी उसे पीछे घसीट रहे थे। १९३४ में सत्याग्रह जिस छिछालेदर के साथ बन्द हुआ, १९४०-४१ में वैयक्तिक सत्याग्रह से जिस प्रकार भद्द हुई, उसमें सत्याग्रह के तरीकों में कांग्रेस के बहुत से लोगों का विश्वास उठा जाना स्वाभाविक था। ये लोग समझते थे कि पुराना अस्त्र बेकार हो चुका है।

अगस्त प्रस्ताव

इन्हीं परिस्थितियों में अगस्त में अखिल भारतीय कांगरेस कमेटी की सभा हुई। ४ अगस्त को कार्य समिति की बैठक हुई। ५ अगस्त को उसका प्रस्ताव प्रकाशित हुआ। यही प्रस्ताव बाद को अखिल भारतीय कांगरेस कमेटी के सामने रखा गया। इस प्रस्ताव में यह कहा गया कि 'अखिल भारतीय कांगरेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चों पर की बिगड़ती हुई स्थिति को निराशा के साथ देखा है, और वह रूसियों और चीनियों की उस वीरता की खुलकर प्रशंसा करती है जो उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रदर्शित किया है। भारत मे अंग्रेजी शासन के अन्त हो जाने पर ही युद्ध का भविष्य निर्भर है। खतरे को देखते हुये भारत को स्वतन्त्र कर देने और ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त कर देने की आवश्यकता है। स्थिति में सुधार तभी हो सकता है जब भविष्य के लिए गारेन्टियाँ न देकर तुरन्त भारत छोड़ा जाय। भारत की स्वतंत्रता की घोषणा हो जाने पर एक अस्थायी सरकार बना दी जावेगी, और स्वतन्त्र भारत मित्रराष्ट्रों का मित्र बन जायेगा। अस्थायी सरकार देश के मुख्य वर्गों तथा दलों के सहयोग से बनाई जायेगी। इस प्रकार यह एक मिली जुली सरकार होगी, जिसमें भारतीयों के समस्त महत्व-पूर्ण दलों का प्रतिनिधित्व होगा। अस्थायी सरकार का प्रथम कर्तव्य अपनी सशस्त्र तथा हिंसात्मक शक्तियों द्वारा मित्रराष्ट्रों से सहयोग कर भारत की रक्षा करना, आक्रमण का विरोध करना, और खेतों, कारखानों तथा अन्य स्थानों में काम करने वाले उन श्रम-जीवियों का कल्याण तथा उन्नति करना होगा, जो निश्चय ही समस्त शक्ति और अधिकार के वास्तविक पात्र हैं। अस्थायी सरकार एक विधान सम्मेलन की योजना बनायेगी, और यह सम्मेलन भारत सरकार के लिए एक ऐसा विधान तैयार करेगी जो जनता के समस्त वर्गों को स्वीकार होगा। कांगरेस के मत से यह विधान संघ विषयक होना चाहिये, जिसके अन्तर्गत संघ में सम्मिलित होने वाले प्रान्त को शासन के अधिकतर

अधिकार प्राप्त होंगे। अवशिष्ट अधिकार भी इन प्रान्तों को प्राप्त होंगे। स्वतंत्रता भारत को अपनी जनता की सम्मिलित इच्छा और शक्ति के बल पर आक्रमण का कारगर ढंग से विरोध करने में समर्थ बना देगी। भारत की स्वतन्त्रता विदेशी आधिपत्य से अन्य एशियाई राष्ट्रों की मुक्ति का प्रतीक और प्रारम्भ होगी। इस संकट काल में यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को प्रधानतः भारत की स्वाधीनता और रक्षा से सम्बन्ध रखना चाहिये, तथापि कमेटी का मत है कि संसार की भावी शांति, सुरक्षा, और व्यवस्थित उन्नति के लिए स्वतंत्र राष्ट्रों के एक विश्व संघ बनाने की आवश्यकता है। विश्व संघ स्थापित हो जाने पर समस्त देशों में निःशस्त्रीकरण हो सकेगा, राष्ट्रीय सेनाओं, नौ सेनाओं और वायु सेनाओं की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, और विश्व रक्षक सेना में शान्ति रखेगी। चीन और रूस स्वतंत्रता की बड़ी मूल्यवान निधि हैं। पर भारत का भी खतरा नित्य बढ़ता जा रहा है। विदेशी शासन प्रणाली के आगे सिर झुकाने से भारत का पतन होता जा रहा है, और आत्मरक्षा करने तथा आक्रमण का विरोध करने की उसकी शक्ति घटती जा रही है। कार्य-समिति ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों से जो सच्ची अपील की थी, उसका अभी कोई उत्तर नहीं मिला है। बहुत से विदेशी क्षेत्रों में की गयी आलोचनाओं से प्रगट हो गया है कि भारत और विश्व की आवश्यकताओं के विषय में अज्ञान फैला हुआ है। इस अन्तिम क्षण में भी कमेटी फिर ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों को अपील करना चाहती है, परन्तु वह यह भी अनुभव करती है कि उसे अब राष्ट्र को एक ऐसी साम्राज्यवादी सरकार के विरुद्ध अपनी इच्छा प्रदर्शित करने से रोकने का कोई अधिकार नहीं है जो उस पर आधिपत्य जमाती है, और जो उसे अपने और मानव समाज के हित का ध्यान रखते हुए काम करने से रोकती है। इसलिए कमेटी भारत की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के अविच्छेद्य अधिकार का समर्थन करने के उद्देश्य से अहिंसात्मक

प्रणाली और अधिक से अधिक विस्तृत परिणाम पर एक विशाल संग्राम चालू करने की स्वीकृति देने का निश्चय करती है, जिससे देश गत २२ वर्षों के शान्तिपूर्ण संग्राम में की गयी समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके। यह संग्राम निश्चय ही गांधी जी के नेतृत्व में होगा और कमेटी उनसे नेतृत्व करने और प्रस्तावित कार्यवाहियों में राष्ट्र का पथ-प्रदर्शन करने का निवेदन करती है। लोगों को यह अवश्य याद रखना चाहिये कि इस आन्दोलन का आधार अहिंसा है। ऐसा समय आ सकता है जब हिदायत देना या हिदायतों को जनता तक पहुँचाना सम्भव न होगा, और जब कांग्रेस कमेटियाँ काम न कर सकेंगी। ऐसा होने पर इस आन्दोलन में भाग लेनेवाले प्रत्येक नर-नारी को सामान्य हिदायतों की सीमा में रहते हुए अपने आप काम करना चाहिये। स्वतन्त्रता की कामना और उसके लिए प्रयत्न करने वाले प्रत्येक भारतीय को स्वयं अपना पथ-प्रदर्शक बनकर अथक रूप से अग्रसर होते जाना चाहिये। यह मार्ग भारत की स्वतन्त्रता और मुक्ति पर जाकर समाप्त होगा। अन्त में यह बताना है कि यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने स्वतंत्र भारत की भावी सरकार के विषय में अपना विचार प्रगट कर दिया है, तथापि कमेटी समस्त सम्बद्ध लोगों के लिए यह बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहती है कि संग्राम आरम्भ करके वह कांग्रेस के लिए ही शक्ति प्राप्त करने की इच्छुक नहीं है। शक्ति जब मिलेगी तो उस पर सारे भारतीयों का अधिकार होगा।"

अगस्त प्रस्ताव में क्रान्ति अन्तर्निहित नहीं

इस प्रस्ताव के पढने से यह ज्ञात होगा कि यह इस ढङ्ग के कांगरेसी प्रस्तावों में एक प्रस्ताव है। बाद को अगस्त प्रस्ताव के सम्बन्ध में सरकार की तरफ से बराबर यह मांग की गयी कि अगस्त प्रस्ताव वापस लिया जाय तो कुछ हो। इसी प्रकार कांगरेस की तरफ से बराबर इस प्रस्ताव पर फिर से विश्वास प्रगट किया गया, पर इसे ध्यान से पढ़ने से ज्ञात होगा कि सब आन्दोलन के पहले जैसे प्रस्ताव पास किये

जाते थे, यह भी उसी मेल का एक प्रस्ताव था। स्वयं इस प्रस्ताव में कोई विशेषता नहीं थी। केवल एक भयभीत, आतंकग्रस्त, ह्रासशील मुमूर्षु साम्राज्यवाद ही इस प्रस्ताव में क्रांति के बीजाणु देख सकता था।

जनता द्वारा इतिहास निर्माण

हम पहले ही बता चुके हैं कि कांगरेस के सार्वजनिक प्रस्तावों में क्रान्ति दृष्टिगोचर नहीं हो सकती थी। फिर भी जैसा कि बाद को हम देखेंगे कि क्रांति हुई। जनता की शक्ति दबाव राजनीति की धारा से निकलकर शक्तिपर कब्जा की धारा में प्रवाहित हुई, और इतने जोर से प्रवाहित हुई कि उसके वेग के सामने एक बार साम्राज्य ढह गया। जैसा कि ट्राट्स्की ने लिखा है कि 'क्रान्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें जनता ऐतिहासिक घटनाओं में सीधे सीधे इस्तक्षेप कर चीजों को अपने हाथों में ले लेती है। साधारण समयों में राष्ट्र, वह चाहे राजतांत्रिक हो या लोकतांत्रिक राष्ट्र ने ऊपर उठकर खड़ा हो जाता है और उस दिशा में जो विशेषज्ञ होते हैं, अर्थात राजा, मंत्री-गण, नौकरशाही के लोग, पार्लियामेंटवादीगण, पत्रकारगण इतिहास का निर्माण करते हैं। क्रान्ति का इतिहास सर्वोपरि इस बात का इतिहास है कि जनता अपने भाग्य निर्माण के कार्य में जबर्दस्ती घुस आवे।' १९४२ में यही हुआ। अबकी बार जनता जिसके सामने अस्पष्ट अफवाहों के अतिरिक्त कोई कार्यक्रम नहीं था, और जिसके नेता गिरफ्तार कर लिए गये थे, अपने साहस तथा बुद्धि को सबल बनाकर दौड़ पड़ी, और उसने इतिहास निर्माण के सूत्र को कुछ समय के लिए अपने हाथों में ले लिया, इतने जोरों से ले लिया कि जितना इसके पहले उसने कभी नहीं लिया था।

परिस्थितियों के षड्यंत्र से क्रान्ति

जनता ने यह जो क्रान्ति की, उसका सूत्रपात्र जैसा कि हम देख चुके, नेताओं की वैयक्तिक बातचीत तथा परेशानी की चिनगारी से हुआ। पर नेता तो पकड़ लिये गये। जनता आगे बढ़ गयी "क्रान्ति की

पिस्तौल का घोड़ा सरकार के सिर पर खींचते-खींचते सब तरह के प्रचार कार्य में इतना पीछे तक खींचा गया था कि और नहीं खींचा जा सकता था। जब तक पिस्तौल का घोड़ा गाँधी जी के हाथों में था तब तक यह खिलौने की पिस्तौल के घोड़े की तरह निरापद था। सच-मुच अहिंसा गांधी जी के नथुने का प्राणवायु था। वे अपने शत्रु के हृदय को परिवर्तित करने के लिए उसके सिर पर क्रान्ति की खिलौने वाली नहीं सचमुच पिस्तौल ताने हुये थे। उन्होंने इसका घोड़ा भी खींच रखा था, पर उनका यह इरादा कदापि नहीं था कि इस खींचे हुये घोड़े को किसी भी हालत में छोड़ा जाय। नहीं कदापि नहीं। जाल बहुत बढ़िया तरीके से डाला गया था, उतना बढ़िया तरीके से कि सरकार समझ नहीं पायी कि मामले की गहराई सचमुच कहाँ तक है। नतीजा यह हुआ कि सरकार ने उसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया जिसके हाथों में भारतीय बारूदखाने से बनी पिस्तौल का घोड़ा था। इसका यही फल हुआ जो हो सकता था। हाथ खींच लिए जाने पर घोड़ा धमाके से गिर पड़ा। फिर तो वज्र विस्फोट होकर रहा। सरदार पटेल ने १९४६ की जनवरी के एक व्याख्यान में कहा था कि गांधी जी क्रान्ति के विरुद्ध एक Bulwark या दीवार हैं। पर परि-स्थितियों के अजीब षड्यंत्र ने क्रान्ति के विरुद्ध इस दीवार को सरकार ने गिरफ्तार कर कार्यक्षेत्र से उठा लिया। स्मरण रहे कि सरकार क्रान्ति नहीं चाहती थी। पर उसी के इस कार्य का परिणाम यह हुआ कि एक भयङ्कर पर प्रस्तुत क्रान्ति हुई।"

गांधी जी गिरफ्तार न होते तो क्रान्ति न होती

सारी परिस्थितियों के अध्ययन से यह पता चलता है कि यदि सरकार आतंक से जर्जरित होकर गांधी जी को गिरफ्तार न कर लेती, तो १९४२ की क्रान्ति की नौबत ही नहीं आती। गांधी जी जब नजर-बन्द भी हो गये, तब भी यदि उन्हें छोड़ा जाता, तो भी इस क्रान्ति

पर बिल्कुल प्रारम्भ में ही रोक थाम हो जाती, पर दुर्बुद्धि ग्रस्त राक्षसी साम्राज्य ने अपनी बुद्धि को तिलाजली देकर गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया, और उनके अहिंसा सम्बन्धी पत्रों को महज छूटने का तरीका समझकर उन्हें छोड़ा भी नहीं।

इतिहास की शक्तियों द्वारा क्रान्ति

"इस प्रकार इतिहास की शक्तियाँ गांधी जी और सरकार की इच्छा के विरुद्ध काम कर गयीं। गांधी जी इस क्रान्ति को नहीं चाहते थे, जिसने एक ही घड़ी में उनकी वर्षों की इकट्ठी अहिंसा की पूंजी को उड़ा दिया। सरकार भी क्रान्ति नहीं चाहती थी, पर क्राति को रोकने की दानवीय शक्ति को जल्दी मे उसने गाँधीजी के हाथ को जबर्दस्ती घोड़े पर से खींच लिया, नतीजा यह हुआ कि क्रान्ति हुई।

"इतिहास कई बार नेताओं तथा सरकारों को उल्लू बनोकर नचा देता है। यह मौका ऐसा ही था जब इतिहास ने ऐसा ही किया था। न तो गाँधी जी इस क्रान्ति को चाहते थे, न सरकार। पर इतिहास के व्यंग के कारण—कोई रहस्यपूर्ण बात नहीं जैसा कि हम देख चुके हैं, गाँधी जी और सरकार ने मानों षड्यन्त्र कर इस क्रान्ति को जन्म दिया।"*

क्या १६४२ की क्रान्ति अहिंसात्मक थी?

घटनाओं पर जाने के पहले हम एक विषय पर और थोड़ी आलोचना कर ले। यह दिखाने को व्यर्थ चेष्टा की गई है कि १६४२ की क्रान्ति अहिंसात्मक थी। श्री गोविन्द सहाय लिखते हैं—

"हमारा विश्वास है कि सन् १६४२ का खुला विद्रोह पिछले सभी आन्दोलनो से ध्येय, युद्धनीति, सगठन, आकार, विस्तार इत्यादि की दृष्टि से भिन्न था।"

---

*अगस्त क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति पृ० ६०, ६१,

यहाँ तो मैं भी उनसे सहमत हूँ, पर आगे ये नेताशाही के सुर में सुर मिलाने की चेष्टा करते हुए गुड़ गोबर कर देते हैं। वे लिखते हैं कि 'इसे अहिंसात्मक सत्याग्रह का एक अन्तिम रूप ही समझना चाहिये।' श्री गोविंद सहाय जी का यह कथन सम्पूर्ण रूप से मिथ्या है। सच तो यह है कि सन् १९४२ की क्रांति में भारतवर्ष निश्चित रूप से गाँधीवाद दबाव राजनीति के युग से निकल गया, और उसने Capture of power अर्थात शक्ति पर कब्जा के कार्य-क्षेत्र में पदार्पण किया।

बलिया के कलेक्टर ने क्यों आत्म समर्पण किया

बलिया की घटनाओं को लेकर अहिंसावादी यह दिखाने की चेष्टा करते हैं कि यह क्रान्ति अहिंसात्मक थी, पर जैसा कि हम देखेंगे यह उतनी अहिंसात्मक नहीं थी जितनी कि बताई गयी है। बलिया के कलेक्टर ने इसलिये आत्म-समर्पण नहीं किया था कि उस भले आदमी का हृदय परिवर्त्तित हुआ था, बल्कि उसने जब देखा कि विनाश मुँह बाये खड़ा है और वह बुरी तरह घिर गया है, तभी उसने नाममात्र के लिए आत्म-समर्पण किया। नाम मात्र के लिए इसलिए लिख रहा हूँ कि उसने न तो हथियार ही छोड़े और न पहले की पुलिस सगठन को तितर-बितर किया। पुलिसवालों ने केवल यह वादा किया कि वे लाइन के बाहर नहीं निकलेंगे, इसे भी उन्होंने नहीं रखा और २० अगस्त को अधाधुंध गोली चलाई। इसी प्रकार और भी घटनाओं के सम्बन्ध में हम देखेंगे।

इतिहास का प्राण

श्री गोविन्दसहाय ऐसे लोग इस क्रांति के सारभार को या तो समझ नहीं पाये, और इसी कारण उनका लिखा हुआ विवरण तथ्यात्मक होते हुये भी गलत हो गया, क्योंकि इतिहास का प्राण केवल तथ्य नहीं, बल्कि सामाजिक आर्थिक शक्तियों के रुख को देखते हुए तथ्यों के बहाव को

समझना है। बिना सही परिप्रेक्षित के तथ्यों में प्राणप्रतिष्ठा नहीं हो सकती। वे मन से असलियत को समझकर भी किसी कारण वश असली बात नहीं कह पाते, तभी हम देखते हैं कि उनके विवरण में ऐसे द्वयर्थक वाक्य आते हैं—"इस आन्दोलन का रूप पिछले सभी आंदोलनों से भिन्न था। यद्यपि इसका मन्तव्य बड़ा सीधा और सरल था, पर इसका रूप बड़ा ही उग्र और व्यापक था।" क्या इस प्रकार के वाक्यों का कोई अर्थ होता है?

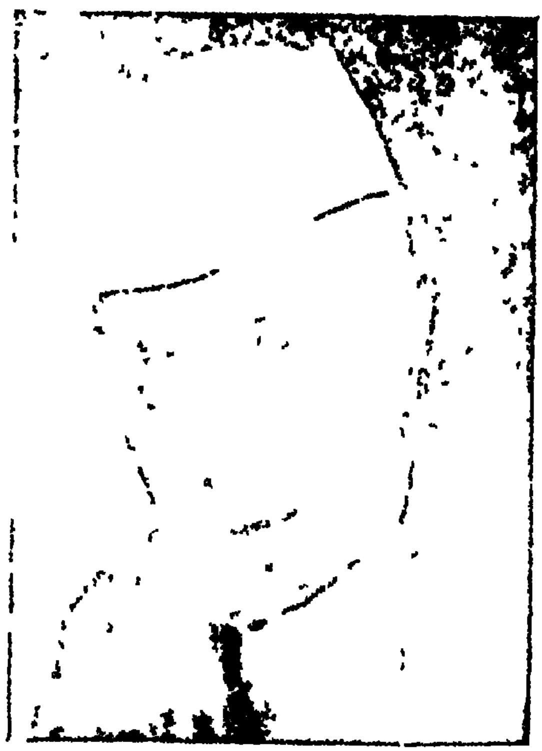
जनता को कोई कार्यक्रम नहीं दिया गया।

फिर भी श्री गोविन्द सहाय इसलिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने यह माना है कि नेताओं ने १९४२ में जनता को बिना किसी प्रोग्राम के छोड़ दिया (पृष्ठ ४१)। दूसरे शब्दों में वे इस बात को न मानते हुए भी यह मानते हैं कि जनता ने ही इस आंदोलन को चलाया। यह बात कदाचित उनकी कलम से निकल गई क्योंकि एक तरफ तो इस वक्तव्य का अर्थ यह है कि नेताओं ने बड़ी बड़ी बातें कीं, बड़े बड़े सिद्धांत के बाल की खालें निकालीं, पर जनता को लेकर खेला। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि वे केवल क्रांति से खेल रहे थे और उसे इस प्रकार से इस्तमाल करना चाहते थे कि वह दबाव राजनीति के अन्दर रहे। इससे आगे वे जाना नहीं चाहते थे, वे तो केवल धमकी देकर सरकार से अपना काम बनाना चाहते थे। मैं यह नहीं कहता कि शत्रु को धमकी देना राजनीति से बाहर चीज है, पर धमकी हमेशा ठोस होनी चाहिये, धमकी में यह सामर्थ होनी चाहिये कि मौका पड़ने पर उसे कार्य रूप में परिणत किया जा सके, नहीं तो दुर्गति ही होगी।

१९४२ के वीर गाँधीवादी वीर नहीं

मैंने संक्षेप में १९४२ की क्रांति को समझने के उपयोगी कुछ विश्लेषण कर लिया। इस सम्बन्ध में जैसा कि हम बता चुके पहली बात तो यह है कि १९४२ का आंदोलन गुणागत रूप से १९२०,

भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



पं० जवाहरलाल नेहरू

१६२१, १६३०, १६४०-४१ के आंदोलनों से भिन्न था। १६२०-४१ के गाँधी युग के आंदोलनों के साथ इसका आवश्यिक सम्बन्ध होते हुए भी यह आंदोलन इन सबों से भिन्न था। फिर इस सम्बन्ध मे सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि प्रत्येक नये आन्दोलन के साथ नयी किस्म के मानवों का उदय होता है। नयी किस्म के वीर तथा वीरांगना सामने आतीं हैं। १६४२ के राज नारायण मिश्र, महेन्द्र चौधरी लेना प्रसाद, मातगिंनी हाजरा आदि वीर तथा वीरांयें चाफेकर बन्धुओं, खुदीराम, कन्हाई लाल, करतार सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला, राजेन्द्र लाहिड़ी, भगतसिंह और आजाद की श्रेणी में आते हैं। वे सम्पूर्ण रूप से तथा गुणागत रूप से विनोवा भावे, मशरु वाला, काजू और इस प्रकार के लोगों से भिन्न थे। बातों की कितनी भी जादूगरी की जाय पर इन वीरों को विनोवा भावे की श्रेणी में नहीं डाला जा सकता। यह एक बहुत बड़ी बात है जिससे १६४२ का चरित्र स्पष्ट होता है।

बम्बई ने क्रान्ति का बिगुल फूंका

शर्त के साथ सहयोग

अगस्त १६४२ में पूर्व निश्चय के अनुसार भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। सुप्रसिद्ध अगस्त प्रस्ताव को पंडित नेहरू ने पेश किया, और सरदार पटेल ने उसका समर्थन किया। प्रस्ताव पेश करते हुए भी सहयोग के लिए हाथ बढ़ाने की बात कही गयी। पं० नेहरू ने कहा कि 'प्रस्ताव कोई धमकी नहीं है, यह तो एक निमन्त्रण है। हमने सहयोग का हाथ आगे बढ़ाया है।' अवश्य यह सहयोग भारतीय कम्युनिस्टों के सहयोग की तरह बिना शर्त के नहीं था। उन्होंने कहा "किन्तु इसके पीछे एक साफ बात यह है कि यदि कुछ बातें न हुईं तो परिणाम क्या हो सकता है। यह स्वतंत्र भारत के सहयोग का दावतनामा है। स्वतंत्रता के अलावा किसी शर्त पर हमारा सहयोग नहीं हो सकता।"

युद्ध और कांग्रेस

पंडित नेहरू ने कांग्रेस की महायुद्ध सम्बन्धी नीति को स्पष्ट करते हुए यह कहा कि 'मित्र राष्ट्रों' के ध्येय नकारात्मक दृष्टि से केवल इसलिये ठीक हैं कि जर्मनी और जापान इनसे भी बुरे हैं। पर यदि भारत स्वतंत्र कर दिया जाय, तो उससे लड़ाई का रूप बदल जायेगा, और मित्रराष्ट्रों का ध्येय व्यवहारिक रूप में ठीक हो जायेगा। इसका नाजी लोगों पर भी प्रभाव पड़ेगा, और जो उनकी मदद कर रहे हैं, उन पर भी एक गहरा और जबर्दस्त नैतिक प्रभाव पड़ेगा। मुझे अफसोस है कि इंगलैंड और अमेरिका के लोग इस प्रश्न पर संकीर्ण दृष्टि से सोच रहे हैं, और उनके ध्यान में अभी तक यह बात नहीं आयी कि भारत की आजादी का इस लड़ाई से क्या सम्बन्ध है।......हम अंगरेजों और अमेरिकनों से कहीं अधिक जानते हैं कि गुलामी क्या है, क्योंकि हम उसके अभिशापों का वहन कर रहे हैं।"

करो या मरो का मंत्र

महात्मा जी ने इस अवसर पर बोलते हुए कार्यक्रम का जो खाका खींचा, वह यों है—"अब क्या करना है, वह सुना दूँ। आपने प्रस्ताव तो पास कर लिया, पर हमारी सची लड़ाई शुरू नहीं हुई। आज मेरे मातहत हो गये। अभी तो वायसराय से प्रार्थना करूँगा। समय तो देना होगा, उस बीच आपको क्या करना होगा, मौलाना साहब ने पूछा कि तब तक कोई कार्यक्रम तो बताइये। मैंने कहा, चरखा है। मौलाना साहब निराश हो गये। मैंने कहा चौबीस घण्टे काम करना है, तो कुछ तो चाहिये। इसलिए चरखा बताया। और भी कहता हूँ। आप मान लें कि हम आजाद बन गये। आजादी के माने क्या हैं? गुलाम की जंजीरें तो छूटीं। उसके दिल से तो छूटी। अब बीच में समझौता नहीं है। मैं नमक की सुविधायें या शराब बन्दी लेने को नहीं जा रहा हूँ। मैं तो एक ही चीज लेने जा रहा हूँ आजादी। नहीं देना है तो कत्ल करे। मैं वह गाँधी नहीं जो बीच में कुछ चीज लेकर आ जाय। आपको तो मैं

एक मन्त्र देता हूँ 'करो या मरो'। जेल को भूल जायें। आप सुबह शाम यही कहें कि खाता हूँ, पीता हूँ, सांस लेता हूँ तो गुलामी की जंजीर तोड़ने के लिए। जो मरना जानते हैं उन्ही ने जीने की कला जानी है। आज से तय करें कि आजादी लेनी है। नहीं लेनी है तो मरेंगे। आजादी डरपोकों के लिए नहीं है। जिनमें मरने की ताकत है, वही जिन्दा रह सकते हैं।"

मंत्र की अस्पष्टता

यह द्रष्टव्य है कि महात्मा जी ने इस आंदोलन के लिए 'करो या मरो' का ध्येय बतलाया, पर यह नहीं बतलाया कि क्या करो। चरखे का उन्होंने जो उल्लेख कर दिया; अवश्य ही उसका ध्येय यह नहीं हो सकता था कि उससे आजादी मिल जाय। करो या मरो एक बहुत ताकतवर मन्त्र था, पर यह अस्पष्ट था इसमें संदेह नहीं। इस अर्थ में यह इस आन्दोलन का प्रतीक था, याने नेताओं की तरफ से जो अस्पष्टता तथा कार्यक्रमहीनता रही, उसका प्रतीक रहा। अवश्य जनता ने करो या मरो को किसी और ही अर्थ में लिया। यह भी द्रष्टव्य है कि गाधी जी के इस वक्तव्य में जेल जाने की बात नहीं थी, मरने की ही बात थी, और जनता अपनी सद्‌ज्ञात-बुद्धि से जानती थी कि कौन से ऐसे काम हैं जिनमें जेल जाना नहीं है और मरना है। फिर एक बार यह प्रश्न उठता है कि शब्द शास्त्र के कुशल ज्ञाता गाधी जी ने आकस्मिक रूप से यह अस्पष्ट मन्त्र दिया या जानबूझ कर दिया? हम इस पर पहले ही अपने वक्तव्य को स्पष्ट कर चुके हैं।

८ अगस्त की रात

८ अगस्त को साढ़े दस बजे रात को अ० भा० का० कमेटी की बैठक समाप्त हुई। उसके बाद का जो चित्र समसामयिक पत्रों में निकला था, उसका कुछ हिस्सा यहाँ पर उद्धृत किया जाता है। जिस समय बैठक समाप्त हुई, उस समय अ० भा० कां० कमेटी के पंडाल के अन्दर सौ से अधिक रिपोर्टर मौजूद थे। इनमें भारतीयों के अति-

रिक्त अँगरेज, अमेरिकन तथा चीनी रिपोटर भी थे। जब बैठक समाप्त हो गयी तो ये लोग रिपोर्ट भेजकर अपनी-अपनी जगह पर सोने चले गये। टाइम्स आफ इंडिया, इलस्ट्रेटेड विकली के रिपोर्टर कुछ देर तक काम करते रहे पर वे भी काम खतम कर चले गये। केवल क्रानिकल, फ्री प्रेस के सम्वाददाता देर तक टाइपराइटर खटका रहे थे। सम्वाददाताओं का काम ऐसे समय बहुत ही परिश्रम का होता है, उनको इन दिनों रात को भी जगना पड़ता था।

खतरे की घंटी

फिर खतरे की पहली घंटी बजी। वायसराय की कौंसिल में जो स्ताव पास हुआ था, उसकी प्रति उस समय तक मौजूद सम्वाददाताओं के हाथ लगा। इस प्रस्ताव के रुख से मालूम हुआ कि अब चीजें एक निर्दिष्ट स्वरुप लेने जा रही हैं। कहा जाता है एक सम्वाददाता ने टेलीफोन उठाकर सरदार पटेल को खबर दी कि इस तरह की परिस्थिति है, इस पर उन्होंने कहा कि कोई नहीं जानता था कि इतना जल्दी जेल के लिये बिस्तर बांध लेना पड़ेगा।

टेलीफोन भी कटे

इसके बाद मालूम हुआ कि टेलीफोन काम नहीं कर रहा है। यह रात डेढ़ बजे की बात थी। जब कोई दस साल पहले गांधी जी गिरफ्तार हुए थे तो उस समय भी इसी प्रकार टेलीफोन का कनेक्शन काट दिया गया था। पर यह भी तो हो सकता था कि एक टेलीफोन खराब हो गया था इसलिये और टेलीफोनों को देखा गया। मालूम हुआ कि सब जगह टेलीफोन कटे हैं। तजर्बेकार लोग समझ गये कि क्या होनेवाला है। यह भी मालूम हुआ कि स्टेशन पर पुलिस का सख्त पहरा है। सम्वाददाता चटपट वहाँ पहुँचे जहाँ गांधी जी थे, पर वहाँ भी सन्नाटा था। गांधी जी २ बजे सोने के लिये गये थे, पर जल्दी ही उठ गये थे। पुलिस आ गयी थी। गांधी जी को खबर दे दी गयी। फिर उन्होंने बकरी का दूध और सन्तरे का रस पिया

'वैष्णव जन तो तेने कहिये' गाना सुना, कुरान का कुछ हिस्सा सुना फिर वे तैयार हो गये। कार्य-समिति के लोग भी गिरफ्तार हो गये। खबर बिजली की तरह फैल गयी और इन्कलाब जिन्दाबाद नारे के बीच से नेताओं की लारी निकल गयी।

अश्रुगैस व्यर्थ

अगले दिन गाधी जी ने हर प्रान्त के दस बारह प्रमुख व्यक्तियों को इसलिये अपने पास बुलाया था कि वे अपना कार्य-क्रम लोगों से बतायेंगे, पर इस कार्य-क्रम के बताने के पहले ही गाधी जी तथा अन्य नेता गिरफ्तार हो गये। बम्बई में उपस्थित कांग्रेस जनों में किंकर्त्तव्य विमूढ़ता छा गयी। जनता में पहले आश्चर्य फिर रोष के भाव दृष्टि-गोचर हुए। ६ अगस्त को ८ बजे गवालिया मैदान में स्वयं सेवकों की परेड होने जा रही थी, पर पुलिस ने आकर उस पर कब्जा कर लिया। अपार जनता भी इकट्ठी थी। पुलिस ने जनता को तितर-बितर करने के लिये अश्रुगैस का प्रयोग किया। अश्रुगैस से बचने के लिये लोग जमीन पर लेट गये। दो मिनट बाद वे खड़े हो गये। पुलिस ने कोई ६ बार अश्रुगैस का प्रयोग किया। पर जनता ने वही नीति अख्तियार की। तब पुलिस ने लाठी चलायी। लाठियों से जनता तितर-बितर हो गयी।

क्रान्तिकारी परिस्थिति

बम्बई की हालत बिल्कुल क्रान्तिकारी हो गयी। ६ अगस्त को ही १५ जगह पुलिस ने गोलिया चलायीं। जनता के जोश का सबसे बड़ा परिचय यह था कि सर्वत्र जिधर देखिये उधर, यहाँ तक कि पेड़ों पर करो या मरो लिखा हुआ था।

अन्य ब्यौरे

युवक तथा छात्र आन्दोलन मे आगे बढ़े और अब मोटरों तथा ट्रामों पर हमला शुरू हो गया और वे जलाये जाने लगे। नेताओं ने

जनता को कोई कार्य-क्रम नहीं दिया था, पर इस बीच में जो खुले तथा गुप्त प्रचार कार्य हुए थे उसके कारण जनता को यह ख्याल हुआ था कि अब की बार क्रान्ति कर देनी है, तदनुसार वे अपने विचारों के अनुसार चलने लगे। कोई संगठन ऐसा नहीं था जो जनता के कार्यों को नियंत्रित करता, पर समय पर बहुत से नेता जनता मे से निकल आये। कुछ जिम्मेदार कांग्रेसियों ने जिनमें वाम पक्षी तथा दक्षिण पंथी दोनों थे, एक गुप्त संगठन बना लिया। एक ब्राडकास्टिङ्ग-स्टेशन भी चला। कोई संगठित तैयारी तो थी नहीं फिर भी बराबर तोड़-फाड़ के कार्य होते रहे। तोड़ फोड़ के अलावा झंडा सलामी आदि सत्याग्रह के तरीके भी चलते रहे, जिसका जो मन आता था वह जनता के सामने उसी कार्य-क्रम को रखता था, इस प्रकार एक अजीब खिचड़ी आन्दोलन चला। आठ दिन तक मजदूरों ने बिलकुल कोई काम नहीं किया। पर कम्युनिस्टों तथा लीगियों के जहरीले प्रभाव के कारण वे काम पर लौट गये। स्कूल कालेजों में भी हड़ताल रही। तीन-चार महीने तक करीब-करीब हड़ताल चली, पर बाद को यह खतम हो गयी। सितम्बर तक आन्दोलन कारी बम तक का भी इस्तेमाल करने लग गये थे। ३ अक्टूबर को पजगाँवकोट में एक भयंकर धड़ाका हुआ। उसी महीने की १८ तारीख को अरगोली रोड पर टाइम्स आफ इंडिया के कागज के गोदाम में जो आग लगी, उसे राजनैतिक समझकर कुछ लोगों पर मुकद्दमा भी चला, पर सब लोग छूट गये। टाइम्स आफ इंडिया पर जनता का द्वेष इसलिये सही था कि यह अधगोरा अखबार हमेशा भारतीयों के विरुद्ध लिखा करता था। नवम्बर १९४२ तक कांग्रेस का रेडियो स्टेशन पकड़ गया। इस सम्बन्ध में लोगों को लम्बी सजायें हुईं। गांधी जी के १९४३ की फरवरी के अनशन तक सारा आन्दोलन कुछ न कुछ तेजी के साथ चला पर गांधी जी के अनशन के सम्बन्ध में जो पत्र निकले उनसे आन्दोलन एक दफे बढ़-कर फिर घट गया। १९४४ की फरवरी तक फिर भी आन्दोलन कुछ

न कुछ घसिटता रहा। हजारों व्यक्ति इस सम्बन्ध में गिरफ्तार हुए। सैकड़ों गोलियों से मारे गये। बहुत सी इमारतें नष्ट कर दीं गयीं, स्टेशन, चौकिया तथा पुलिस वालों के खड़े होने की गुमटियां नष्ट कर दी गयीं, कई सरकारी अफसर मारे गये। जो मारे गये उनमें फौज के चार बड़े अफसर भी थे। घायल तो बहुत से अफसर हुए। रेल की गाड़ियां उलट दीं गयीं। संक्षेप में जनता ने निडर होकर अपनी क्रांतिकारी शक्ति का उपयोग किया, पर कोई स्पष्ट कार्य-क्रम तथा संगठन न होने के कारण उनकी ये चेष्टायें महान होती हुई भी बिखर गयीं, और चारों तरफ एक बुलबुला पैदा करके रह गयीं। इसके लिये सारा दोष नेताओं को दिया जाना चाहिये। बुलेटिनें भी निकाली गयीं। अवश्य गुप्त रूप से। गांधीवादी अहिंसा का कहीं पता नहीं था।

संयुक्त प्रान्त में क्रांति

नेताओं की गिरफ्तारी की प्रतिक्रिया

यह सम्भव नहीं है कि ब्यौरेवार तरीके से प्रत्येक घटना का वर्णन किया जाय। इसलिये हम प्रत्येक प्रान्त की मुख्य घटनाओं का वर्णन करेंगे। सबसे पहले हम संयुक्त प्रान्त की क्रान्ति का वर्णन करेंगे। उसमें भी हम बलिया की घटनाओं को सबसे पहले लेंगे। ९ अगस्त को बम्बई में नेताओं की जो गिरफ्तारी हुई उसकी खबर बलिया में शाम को रेडियो से मालूम हो गई। यह भी मालूम हुआ कि गिरफ्तारी नेताओं तक ही सीमित नहीं है। १० अगस्त तक खबर सारे जिले में फैल गयी। विद्यार्थियों में इससे बहुत जोश बढ़ा और १० तारीख को बलिया के सब स्कूल बन्द हो गये और उन्होंने नारे लगाते हुए जुलूस निकाले। स्मरण रहे कि इस जुलूस के निकालने में विद्यार्थियों ने अपनी बुद्धि से ही काम लिया था। ११ अगस्त को जनता तथा छात्रों का जुलूस निकला और शहर घूमता हुआ चौक में एक सभा के रूप में परिणत हो गया। वहाँ के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता

श्री राम अनन्त पांडे ने लोगों को चुनौती स्वीकार करने के लिये कहा।

सभा समाप्त हो जाने के बाद जनता कचहरी बन्द कराने के लिये चली। बात की बात में कचहरियाँ बन्द हो गयीं और श्री पांडे गिरफ्तार कर लिये गये।

छात्रों का प्रदर्शन

१२ अगस्त को फिर छात्रों का एक जुलूस निकला, जनता छात्रों के साथ हो गयी। यह जुलूस फिर कचहरियों को बन्द कराने के लिये आगे बढ़ा पर रेल की गुमटी के पास १०० सशस्त्र पुलिस ने जुलूस को रोक लिया। वहाँ तो करो और मरो का नाश था, फिर जुलूस क्यों रुकता। कहा जाता है कुछ ईंट पत्थर भी चले, रेल लाइन के कंकड़ तो पड़े ही थे। फिर सब डिविज़नल आफ़िसर मिस्टर ब्रयस ने जुलूस पर लाठी चार्ज का हुकुम दिया। एक-एक विद्यार्थी पर बीसियों लाठियाँ पड़ीं। कई विद्यार्थी बहुत सख्त घायल हुए, एक को तो इतनी चोट आयी कि वह अस्पताल जाकर शहीद हो गया।

ऐमरी के भाषण से तोड़-फोड़

१२ अगस्त को ही समाचार पत्रों में भारत सचिव ऐमरी का भाषण निकला जिसमें उन्होंने बतलाया कि कांग्रेस ने अपने आंदोलन के लिये जो तरीके चुने हैं, वे ये हैं—उद्योग-धन्धों, व्यापार, राज्य परिचालना, अदालत आदि में हड़ताल कराना, टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटना तथा फौज की भर्ती करने वाले केन्द्रों पर धरना देना। कहते हैं कि इस भाषण से अधिकांश थानों की जनता को यह पता लगा कि उन्हें क्या करना है। यह कांग्रेस के नेताओं तथा संगठन के लिये बड़ी लज्जा की बात थी कि ऐमरी के व्याख्यान से जनता को कार्यक्रम का पता मिला पर हमने अगस्त प्रस्ताव तथा उसके पहले की घटनाओं का जो विश्लेषण किया है, उससे यह कुछ आश्चर्यजनक न ज्ञात होगी। मिस्टर ऐमरी के भाषण के बाद से

तोड़-फोड़ का कार्य जोर पकड़ गया। इस बीच में बाहर से भी खबर आयी कि सर्वत्र तोड़-फोड़ हो रहा है। १३ अगस्त को बिलथरा रोड स्टेशन पर हमला कर दिया गया और इमारत जला दी गयी। यह मजे की बात है कि स्टेशन के सेफ खोलने पर जो नोटों का पुलिन्दा मिला उसे लूटा नहीं गया बल्कि जला दिया गया। पानी का पम्प और टङ्की तोड़ डाली गयी। एक मालगाड़ी आयी तो उसे लूट ली गयी, और उसका इ जिन तोड़ डाला गया। डाकखाने पर भी हमला हुआ। बीज गोदाम और थानों पर भी हमला होने लगा।

और भी क्रान्तिकारी कार्य

१६ अगस्त को रसड़ा तहसील, खजाना और थाने पर हमला हुआ। बीजगोदाम पर हमला हुआ तो इस पर गोलिया चलीं। फिड़हरा पुर स्टेशन भी जला दिया गया। इसी प्रकार अन्य स्टेशन तथा थाने पर हमले हुए। १७ तारीख को एक थाने पर हमला हुआ तो वहाँ के दारोगा ने गांधी टोपी पहन ली और राष्ट्रीय नारे लगाये। लोगो ने उससे हथियार मागा तो उसने अगले दिन का वादा किया। अगले दिन हजारों की भीड़ थाने पर गयी तो थानेदार ने चालाकी से नेताओं को भीतर कर लिया और जनता पर गोली चलाने का हुकुम दिया। इसी समय थाने पर लगा हुआ कांग्रेसी तिरङ्गा झंडा भी उतार लिया गया तब कौशल्या कुमार नामक नवयुवक झंडा फिर से लगाने के इरादे से आगे बढ़ा, इस पर वह गोली से मार दिया गया। साढे तीन बजे से ८ बजे तक गोली चलती रही। जब पुलिस की सारी गोली खतम हो गयी तब पुलिसवालों ने आत्म-समर्पण कर दिया। एक अन्य विवरण यह है कि रात को जनता ने थाने पर घेरा डाल रखा था और थानेदार भाग गया। जब पता लगा कि थाने में कोई नहीं है तो थाने में आग लगा दी गयी।

नोट जलाये गये

सारे बलिया में इस प्रकार कई थाने जलाये गये। पर कुछ जगहों

के थानों पर तिरङ्गा झंडा फहरा कर छोड़ दिया गया। यदि इन सारी घटनाओं का वर्णन किया जाय तो वह न तो रोचक ही होगी, और न यह सम्भव है कि इस छोटे से दायरे में यह किया जाय। संक्षेप में १२ तारीख तक जिले की प्रधान जगहों पर कब्जा हो गया। अब जनता ने यह तय किया कि बिल्कुल सरकारी चिन्ह मिटा दिया जाय। उधर बलिया के अधिकारी यह सोच रहे थे कि बाहर से फौज आकर उनकी मदद करेगी, पर रेल तथा तार के कट जाने से यह उम्मीद जाती रही। फिर भी वे आशा लगाये बैठे हुए थे और इस बीच में चाहते थे कि किसी तरह क्रान्ति टले। जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर निगम को इतने में यह मालूम हुआ कि बलिया शहर की उन सड़कों पर जो उसे देहात से मिलाती हैं हजारों की तादाद में लोग आ रहे हैं। इनके सम्बन्ध में यह पता चला कि ये नेताओं को रिहा करके खजाने तथा कचहरी पर धावा करेंगे।

अधिकार समर्पण

इस पर वे स्वयं जेल पर गये और पंडित चीतू पांडे तथा बाबू राधा मोहन सिंह से यह कहा कि वे इस शर्त पर छोड़े जा सकते हैं कि वे जनता को समझावें। इस पर नेताओं ने छूटने से इनकार किया। तब उन्होंने उनसे कहा कि कम से कम खजाना, जेल और जानमाल की जिम्मेदारी ले लें। इस पर नेताओं ने कहा कि हम इसकी भी गारेन्टी नहीं कर सकते क्योंकि न मालूम कांग्रेस का क्या आदेश है। तब जिला मजिस्ट्रेट ने सब नेताओं को रिहा कर दिया। नेता टाऊन हाल में गये और वहाँ अपार भीड़ के सामने उनका भाषण हुआ। श्री चितू पांडे ने तोड़-फोड़ से लोगों को रोका, कुछ जनता मान गयी, पर बाकी इसके लिये तैयार नहीं थे। श्रीगजाधर शर्मा, महानन्द मिश्र प्रसिद्ध नारायण, नगीना चौबे मंगल सिंह, परशुराम सिंह, आदि जनता के नेताओं ने जनता से दूसरी ही बातें कहीं। फिर तोड़-फोड़ के कार्य होने लगे। मिस्टर वयस जिन्होंने विद्यार्थियों को पिटवाया था वह पकड़े तथा पीटे गये। कपड़े

गाजे और शराब की दुकानों पर हमला हुआ। गांजे के दुकानदारों को इस बात के लिये मजबूर किया गया कि वह अपने सारे सामान में खुद आग लगावे। जिला मजिस्ट्रेट समझ गये कि अब खजाना लुटेगा, तब उन्होंने एक डिप्टी कलेक्टर से यह आज्ञा दी कि नोटों का नम्बर ले लेने के बाद उन्हें जला डालो। ऐसा ही किया गया, पर सिपाहियों ने लाखों के नोट बचाकर जेबों में धर लिये। बीज गोदाम पर भी आक्रमण हुआ। लोगों ने अनाज लूट लिया।

सरकार की ज्यादती

जिस समय नेता जेल से निकाले गये थे उस समय उनसे यह वादा किया गया था कि पुलिस वाले लाइन के बाहर नहीं निकलेंगे। पर ऐसा उन्होंने हृदय परिवर्त्तन के कारण नहीं बल्कि केवल भय तथा मसहलत के कारण किया था, यह इस बात से प्रगट है कि २० तारीख को पुलिस की एक लारी शहर में घूमी और उसने कई जगह गोली भी चलायी। पर अब भी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि कुछ कर सके।

बलिया का प्रजातंत्र

२० अगस्त को बलिया में एक बहुत बड़ी सभा हुई। यदि नेताओं के पास कोई कार्य-क्रम होता तो वे इस समय बचे खुचे सरकारी केन्द्रों पर हमले का कार्य-क्रम बनाते, पर उन्होंने इसके बजाय दूसरी ही बातें कीं। मुहल्लों के लिये अलग-अलग पंचायतें बनीं और नगर रक्षा के लिये कांग्रेसी स्वयंसेवक नियुक्त हुए। बलिया प्रजातंत्र बना और कांग्रेस कमेटी का दफ्तर उसका केन्द्र बना। पंडित चीतू पांडे पहले जिलाधीश कहलाये। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार इस समय तक जिले के दस थानों में से सात पर क्रान्तिकारियों का अधिकार हो गया था। शहर में ढिंढोरा पीटकर यह बता दिया गया कि अब बलिया में कांग्रेसी राज्य है।

सभा से इनकार

२२ अगस्त को श्री चीतू पांडे ने एक सभा बुलायी जिसमें उन्होंने जिला मैजिस्ट्रेट मिस्टर निगम को हाजिर होने के लिये कहा, पर वे नहीं आये। उन्होंने लिख भेजा कि तरह तरह की अफवाहें फैल रही हैं, इसलिये मैंने एक नोटिस निकाली है, जिसे सभा में पढ़ कर सुना दीजियेगा। इस नोटिस में यह कहा गया था कि कस्बे में जो आतंक फैलायेंगे वे गिरफ्तार कर लिये जायेंगे।

फिर से अंगरेजी राज्य

जिला मैजिस्ट्रेट की इस नोटिस से तथा २० तारीख को पुलिस ने जो गोलियां चलायीं थीं उससे यह साफ जाहिर है कि एक घड़ी के लिये भी मिस्टर निगम का हृदय परिवर्त्तित नहीं हुआ था, वे तो एक चतुर व्यक्ति की तरह परिस्थिति की ताक में बैठे थे। २० अगस्त तक सेना आ गयी, और जनता के साथ कई बार डटकर लड़ाई करने के बाद बलिया पर फिर से अंगरेजी राज्य हो गया। इस प्रकार बलिया की स्वतंत्रता कुछ ही दिन स्थायी हुई। इस सरकार के सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यह है कि इसे जनता का विश्वास प्राप्त था और बात की बात में इसके खर्च के लिये हजारों रुपये एकत्र हो गये। नयी सरकार ने लोगों से यह भी कहा कि लोग लूट के माल वापस कर दें, तो इस पर सचमुच बहुत से लोगों ने लूट का सारा माल लौटा दिया।

असली नेताओं का पता नहीं

इतिहास केवल घटनाओं का समूह नहीं है इसलिये हम यहाँ पर ठहरकर यह बतला दें कि बलिया की जनता की अद्भुद क्रान्तिकारी शक्ति को देखते हुए उनके नेता अयोग्य साबित हुए। यदि नेता चाहते तो इस शक्ति का उपयोग कर सारे जिले में अपना अधिकार बैठा सकते थे, पुलिस लाइन में पुलिस-वालों को

रहने देना कभी स्वीकार नहीं करना चाहिये था। उनके हथियार लेकर उन्हें घर जाने के लिये मजबूर करना चाहिये था। यदि सच्ची बात कही जाय तो बलिया एक मिनट के लिये भी स्वतन्त्र नहीं हुआ। जब दुश्मन के सशस्त्र सिपाही पड़े हुए थे, और मौका देख रहे थे, तब उसे स्वतन्त्र कैसे कहा जा सकता है। सही अर्थ में श्री चीतू पांडे की सरकार एक सफल समान्तराल सरकार मात्र थी।

सेना आने के बाद

सेना आने के बाद बलिया का बहुत जोरों से दमन हुआ। सेना के साथ मि० स्मिथ और नेदरसोल भी आये। श्री देवनाथ उपाध्याय ने लिखा है कि सबसे पहले उन नौजवानों की गिरफ्तारी हुई जो आन्दोलन के दिनों नेता का काम कर रहे थे। इनमें सर्व श्री उमाशंकर, सूरजप्रसाद, हीरा पनसारी, विश्वनाथ, मन्नालाल और राजेन्द्र लाल के नाम उल्लेखनीय बताये गये हैं। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि असल मे बलिया क्रान्ति के नेता श्री चीतू पांडे या ऐसे व्यक्ति नहीं बल्कि ये ही नौजवान तथा इस प्रकार के नौजवान थे। यही कारण है कि ज्योंही फौज की टुकड़ी पहुँची त्योंही सबसे पहले ये गिरफ्तार हुए, और यही नहीं इनको बारबार पीटा तथा घसीटा गया। अभी कल ही का तो इतिहास है पर असली इतिहास किस प्रकार गायब हो गया, और दूसरे लोग क्रान्ति के नेता के रूप में यशस्वी बने। रसड़ा बासडीह तथा क्रान्ति के अन्य केन्द्रों में जो असली नेता थे उनको शायद इतिहास कम जाने।

दमन का दौरदौरा

इसके बाद बलिया में जो दमन हुआ है, उसका पूरा इतिहास देना सम्भव नहीं है। हम कुछ उदाहरण मात्र देंगे। जिनके सम्बन्ध में यह रिपोर्ट मिली कि ये क्रान्ति के मददगार थे, उनके घर भी जलाये गये। उल्लिखित क्रान्तिकारी नौजवानों को मुर्गा बनाया गया, चूतड़ों तथा अण्डकोषों पर ठोकर मारी गयी, फिर पेड़ पर चढ़ाये जाते और

नीचे से संगीनों से भोंका जाता। बहुत से लोगों के मकान लूटकर, उनके सारे सामान पुलिस लाइन भेज दिये गये। एक हवाई जहाज भी ऊपर डराने के लिये घूमा। चौक में लोगों पर बेंत लगाये गये, और जब यह देखा गया कि बेंत लगते समय लोग कपड़ा पहने हुए थे, तो हुक्म हुआ कि नंगा करके फिर बेत लगे। धाधली ऐसी मची कि सिनियर गवमेंट प्लीडर अपने वर्षों की खैर-ख्वाही के बावजूद केवल इस कारण पकड़े गये कि ये बलिया के कांग्रेसी नेता बाबू राधागोन्दि सिंह के भाई हैं जिन्होंने बासडीह का खजाना लुटवाया था। इस पर उनपर जूतों थप्पड़ों और बेतों की मार पड़ी, फिर बाद को उनके लिये यह हुआ कि रात को बन्द रखो सवेरे गोली मार दो। तदनुसार सवेरे उन को खड़ा करके गोली मारने की तैयारी की गयी इतने में मिस्टर निगम आ गये, और उनकी जान बची। फिर भी वे सात दिन तक हवालात में बन्द रहे। कई कोठियाँ लूट ली गयी और फिर आग लगा दी गयी।

गाँवों में अत्याचार

गावों में भी अत्याचार हुआ। फौज की टुकड़ी बलिया से आठ मील उत्तर २४ अगस्त को सुखपुरा पहुँची, इसी गाव के पास कई दिन पहले बन्दूकें छीनी गयी थी। फौज की लारी की आवाज पाते ही गांव के सब पुरुष भाग गये। आते ही फौज वालों ने मनमाना गोली चलाना शुरू किया। यहाँ एक महन्त थे जो सरकार के खैरख्वाह थे। उन्होंने २ महीना पहले ही १०-हजार युद्ध चंदा दिया पर उनकी ऐसी दुर्गति की गयी कि ४० फीट ऊँचे से वे कूद पड़े और उनकी टाँग टूट गयी। उनके हाथी को गोली मार दी गयी। उनका अपराध केवल इतना ही था कि उन्होंने अपने मठ पर तिरंगा फहराया था। फिर गाँव लूट लिया गया। यहीं पर मिस्टर मार्स स्मिथ ने चन्दी प्रसाद नामक एक किसान को इसलिये गोली मार दी कि वह सन २१ मे काँग्रेस में था, यद्यपि बाद को वह कांग्रेस से अलग हो गया था। बांसडीह में भी अन्धाधुंध गोली चलायी गयी। २५ अगस्त को मिस्टर नेदरसोल ने

रामकृष्ण सिहं और वागेश्वर सिंह को इतना पीटवाया कि वे मर गये। इसी प्रकार गांव गांव में घूमकर लूट मचाई गयी, बलिया के तीस गाँव में आग लगायी गयी। रेवती में सारा बाजार लूट लिया गया। जो लोग भगकर खेतों में चले गये उनपर भी गोलियाँ चलायी गयीं। लोगों पर ऐसा आतंक बैठा कि चौकीदार पुलिस कप्तान बन गये। प्रत्येक व्यक्ति को सिपाही के देखते ही सलाम करना पड़ता था।

गाँधी टोपी पर मार

श्री उपाध्याय लिखते हैं "अगस्त १९४२ के अन्त से लगाकर फरवरी १९४४ के फरवरी तक लगाकर बलिया में कोई भी ऐसा आदमी नहीं था जो अपने सिर पर गांधी टोपी रख सके। फरवरी १९४४ से बलिया के राजनैतिक बंदियों के मुकदमों की पैरवी के लिये जब इलाहाबाद के कुछ लोग बलिया आने जाने लगे तब से गांधी टोपी कहीं कहीं दिखाई देने लगी।" यहाँ तक कि ट्रेन में बैठकर कोई व्यक्ति गाधी टोपी लगाकर बलिया होकर नहीं जा सकता था। अप्रैल १९४४ में मुज्जफरपुर जिले के श्री हरिहर सिंह बलिया स्टेशन से जा रहे थे, उन्हें हुक्म दिया गया कि टोपी उतारो। उन्होंने अपने हाथ से नहीं उतारा, इसपर वहीं पर गाड़ी से उतार दिये गये और प्लेटफार्म पर मारते मारते ढेर कर दिये गये। सामूहिक जुर्माना मनमाने ढंग से लगाया गया और दस की जगह पर पचास वसूल किया गया।

गिरफ्तार लोगों पर अत्याचार

जो लोगों गिरफ्तार होते उन्हे पहले तो खुद खूब पीटा जाता, कोतवाली हवालात में उन्हें खाने नहीं दिया जाता था। कैदी से जो प्रश्न किये जातें, यदि वह उनका उत्तर नहीं देता तो उसे उलटा लटका देते। श्री उपाध्याय लिखते हैं—"कुछ अधिक खतरनाक बन्दियों के लिये और अधिक खतरनाक यातनायें थीं। गुह्यांगों पर मिर्च लगाना और पुरुषेन्द्रिय पर छड़ी मारना तथा उसे रगड़ना भी खास मौकों पर बड़े काम का सिद्ध होता था। पुरुषेद्रिन्य को पुलिस की आज्ञा पाकर

भंगी हाथों से रगड़ता, पहले तो वीर्य निकलता किन्तु बाद को रगड़ते रगड़ते खून निकलता।"

जेल में अत्याचार

जो लोग जेल में पहुँचा दिये गये उनके लिये और भी आफत थी। इतने लोगों को जेल में ठूँस दिया गया कि उन सबके लिये बैठने तक की जगह नहीं थी। लोगों को ओढ़ने-बिछाने पहनने के लिए कुछ नहीं दिया जाता था। तसला कटोरी की जगह पर एक मिट्टी का कसौरा दिया जाता था। एक वक्त किसी तरह चोकर की रोटी दी जाती थी। लोगों को आम तौर से पेचिस हो गयी। पर दवा मांगने पर वे गालियां सुनाते थे। जेल में जब कोई कैदी दाखिल होता तो उसे गुड़ खिलाया जाता अर्थात मारा जाता, इसके अलावा बेड़ी दी जाती थी। बेगुनाहों को पकड़ कर जेल में भर दिया गया था और उनसे घूस मांगा जाता था। बहुत रोग लेकर लौटे। जिस समय कांग्रेस का जोर था, उस समय सरकारी अफसरों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया गया था। इसीका नतीजा यह था कि जब बलिया में फिर से अंग्रेजी राज्य स्थापित हुआ तो उनको यह सलूक मिला। श्री देवनाथ उपाध्याय ने ६४ ऐसे व्यक्तियों का पता लगया है जो शहीद हुए। इसमें सन्देह नहीं कि इनका त्याग चिरामर सीय रहेगा।

गाजीपुर की घटनायें

गाजीपुर में भी क्रान्तिकारी जनता ने १६, २० और २१ अगस्त को बिल्कुल ब्रिटिश शासन खतम कर दिया और बलिया की तरह पंचायतें स्थापित कर दी गयीं। यद्यपि १९४२ के सम्बन्ध में बलिया को विशेष ख्याति प्राप्त हुई, जैसा कि हम देखेंगे भारत वर्ष के बहुत से स्थानों की जनता ने बलिया के समान कार्य किये। रहा यह कि बलिया की ख्याति क्यों हुई, सो इसके सम्बन्ध में इतना ही मालूम होता है कि बलिया में मैजिस्ट्रेट ने ऊपरी तौर पर आत्म समर्पण कर दिया।

तोड़ फोड़ कार्य शुरू

गाजीपुर में नेताओं की गिरफ्तारी की खबर से लोगों में जोश फैला और तार के खम्मे उखाड़ने तथा रेल की लाइन काटने का कार्य-क्रम शुरू हुआ। स्टेशनों में आग लगा दी गयी, डाकखाने लूट लिये गये। रेल के इंजन तोड़ डाले गये, तथा माल-गाड़ियों को लाइन पर से उतार दिया गया। नन्दगंज स्टेशन पर जनता पर गोली चली। यह अनुमान है कि यहाँ ८० आदमी शहीद हुए। सादात और जमानिया स्टेशनों में भी गोलियाँ चली और कुछ व्यक्ति मरे।

गाजीपुर के क्रान्तिकारी कार्य

गाजीपुर में विद्यार्थियों ने बहुत अधिक भाग लिया और १५ अगस्त को गाजीपुर शहर में एक विराट जुलूस निकला। जुलूस ने यह कोशिश की कि कोतवाली पर झंडा लगाया जाय, तदनुसार वह आगे बढ़ा। पर सादात थाने पर उनपर गोलियाँ चलीं। जब गोलियाँ खतम हो गयीं और जनता के बहुत से लोग गोलियों के शिकार हो चुके तब जनता ने थानेदार तथा सिपाहियों सहित थाने को जला दिया। इस प्रकार जनता की विजय हुई। सैदपुर में तहसीलदार ने आफत देखकर कचहरी पर तिरंगा फहरा दिया। शेरपुर गाँव के लोगों ने १४ अगस्त को मोहमदाबाद स्टेशन तथा पास के हवाई अड्डे पर हमला किया। हमला सफल रहा और श्री यमुनागिरि गोली से शहीद हुए। इससे जनता में और भी जोश बढ़ा, पर जनता ने नीति बदलकर यह तय किया कि रात को हमला किया जाय। तदनुसार ऐसा ही हुआ, पर इसके पहले ही हवाई अड्डा खाली हो चुका था। शेरपुर गाँव के एक डाक्टर साहब के हाथों में झंडा होने के कारण उन्हें एक के बाद एक तीन गोलियाँ मारकर शहीद कर दिया गया।

गाजीपुर में दमन

२२ अगस्त को गोमती पार कर सेना आयी और उसने बिना कारण बेरहमी का बरताव किया। शेरपुर के रामशंकर राय तथा शोभनराम मारे गये। गांव में कत्ले आम तथा लूट १२ घण्टे तक चलता रहा! एक महिला राधिका देवी को कुंए में डालकर मार डाला गया। गमहार गाव में दूधनाथ सिंह और दारोगा सिंह को गोली मार दी गयी। स्त्रियों पर बलातकार भी हुआ। २४ अगस्त को 'आज' के सम्वाददाता विक्रमादित्य सिंह बिना कारण पकड़े गये और उन्हें मारा पीटा गया। करूयाबाद, सदन, नन्दगंज आदि बहुत से गांव में अत्याचार हुआ। ७८ गांव पर विशेष अत्याचार हुए। १६७ व्यक्ति शहीद हुए, न मालूम कितने घायल हुए। नवा तीन लाख सामूहिक जुर्माना हुआ।

बनारस में क्रान्ति

बनारस में आन्दोलन का प्रारम्भ हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के जुलूस से हुआ। इस जुलूस के साथ आकर अन्य जुलूस भी मिले और वह फौजदारी अदालत पर झण्डा फहराने के लिये चला। पुलिस के अधिकारियों ने जुलूस को तितर-बितर होने के लिये कहा। मिस्टर टीवडेल ने, जो बाद को कुछ क्रान्तिकारी कैदियों को जेल से अदालत तक घसीटने के सम्बन्ध में मशहूर हुए, जनता पर हन्टर चलाया। बस इसके बाद तो लाठी चार्ज शुरू हुआ। जनता देर तक डटी रही पर तितर-बितर हो गयी।

जनता झंडा लगाकर खुश

अगले दिन फिर यही चेष्टा हुई। अधिकारियों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया। वे इस बात को समझ गये थे कि यदि गोली चलायी गयी तो आन्दोलन बढ़ेगा। और जुलूसवाले चाहते ही क्या थे? इतना ही न कि इमारत पर झण्डा फहरावें। तदनुसार उन्होंने फौजदारी अदालत पर तिरङ्गा झंडा लहराने दिया। बस इतने ही से कार्य-क्रम हिन्

जनता खुश हो गयी और नारा लगाती हुई दीवानी अदालत की ओर चली। वहा एक नौजवान ने जान हथेली पर लेकर झण्डा चढा दिया। यहा अधिकारियों ने यह चालाकी की थी कि छत पर जाने के रास्ते बन्द कर दिये थे, पर उस बहादुर नौजवान ने झण्डा लगा ही दिया। इन दोनों जगहों में झण्डा लग जाने से जनता खुश होकर घर लौट गयी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद इसे मजे में इसलिये देख सका कि यह तो एक खिलौना था, यदि जनता इतने से खुश हो रही थी, तो क्या हर्ज था ? यदि जनता खजाने या मैगजीन पर कब्जा मागती या सामने खड़ी सशस्त्र पुलिस से कहती कि अपने हथियार हमें दे दो, तभी साम्राज्यवाद के लिये खतरे की बात होती।

गोलियां चलीं

फिर भी जो कुछ हुआ था उतने ही से नौकरशाही की मानहानि होती थी, इसलिये उन्होंने शक्ति से बर्ताव शुरू किया। सैकड़ों वर्ष की रोब मिट्टी में मिली जा रही थी उसे बचाना था। १३ तारीख को दशाश्वमेध से जुलूस निकलने वाला था, पर रास्ते में ही उस पर लाठी चार्ज किया गया। श्री रमाकान्त मिश्र तथा श्री विन्ध्येश्वरी पाठक घायल हो गये। जनता ने इसका जवाब पत्थर से दिया। तब गोलियां चलीं। बहुत से व्यक्ति शहीद हुए।

अन्य क्रान्तिकारी कार्य

टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार भी कटे, खम्भे उखाड़ डाले गये, करीब-करीब सभी स्टेशन लूट लिये गये और सब तरफ की लाइनें उखाड़ ली गयीं। राजवाड़ी और इज्जतपुर के हवाई अड्डे खतम कर दिये गये, डाकखाने, रेल, गोदाम, पुलिस चौकिया लूट ली गयीं। इनमें से जो बच रही उन पर तिरङ्गा झंडा फहरा दिया गया। कई जगह तो पुलिस वालों को झण्डा फहराने के लिये मजबूर किया गया। धानापुर थाने पर जनता झण्डा चढ़ाने गई, तो थानेदार ने उल्टा बाजार

लूटने के लिये पुलिस को हुक्म दिया। इस पर क्रुद्ध जनता ने दारोगा तथा दो सिपाहियों को मार डाला। १५० आदमियों पर मुकद्दमा चला, और लम्बी सजायें दी गई। ग्रैंड ट्रंक रोड से होकर कहीं फौज न आवे इस कारण जगह-जगह सड़क में गड्ढा कर दिया गया। इस प्रकार क्रान्तिकारी जनता ने केवल अपनी बुद्धि से उन सब कामों को किया जिन्हें वे कर सकते थे।

सैयद राजा बाजार में गोली

बनारस के कुछ स्थानों मे जैसे सैयद राजा बाजार में २८ अगस्त को भा आन्दोलन जीवित था। यहाँ उस दिन जुलूस निकला तो उस पर गोली चली। श्री जगत नारायण तथा कुछ और लोगे को चोटें आयीं। तब चन्द्रिका नायक लोगों को हिम्मत दिलाते हुए आगे बढ़े। यहा पर पुलिस वाले छिप कर गोली चला रहे थे। जनता ने यहाँ एक नया तरीका अख्तियार किया। जब-जब गोली चलती तो जनता लेट जाती, फिर उठ खड़ी होती। इसी प्रकार संध्या हो गयी। फिर सिपाही बाहर निकल कर घायलों की खोज में चले पर उनके हाथ एक भी घायल न लगा। तब उन्होंने बाजार पर अत्याचार किया। अत्याचार इतना अधिक हुआ कि बहुत से लोग बस्ती छोड़कर भाग गये। यहाँ पर स्त्रियों के साथ बहुत अत्याचार हुआ। कइयों को नङ्गी करके पीटा गया।

१९४२ और हिन्दू विश्वविद्यालय

बनारस के आन्दोलन में हिन्दू विश्व विद्यालय के छात्रों का बहुत बड़ा स्थान रहा। इसलिये जब सरकारी दमन चक्र चला तो फौज ने विश्व विद्यालय पर विशेष रूप से प्रहार किया। छात्र तथा छात्राओं के होस्टल जबर्दस्ती खाली किये गये, और खाली करते समय बहुत-सा सामान लूट लिया गया। विश्व विद्यालय के विद्यार्थी प्रान्त भर में फैल गये और उन्होंने जाकर आन्दोलन का नेतृत्व किया। देश के

कार्यों में न केवल यहाँ के छात्र बल्कि कुछ अध्यापक भी बराबर १९२० से कांग्रेस के साथ रहे। इस विश्व विद्यालय के देशभक्त अध्यापकों में श्री कृपलानी, अध्यापक राधेश्याम, अध्यापक असरानी, अध्यापक गैरोला के नाम विशेष उल्लेखनीय है। यहा की छात्राओं ने भी बहुत काम किया था।

इलाहाबाद में क्रान्ति

इलाहाबाद में नेताओं की गिरफ्तारी की खबर कुछ पहले पहुँची। ६ अगस्त को ही कांग्रेस के सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये और कांग्रेस के दफ्तरों पर ताला डाल दिया गया। १० अगस्त को पुरुषोत्तमदास पार्क में तथा मुहम्मद अली पार्क में सभायें हुईं। ११ अगस्त को विश्व विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं का एक जुलूस निकला। यह जुलूस भ्रा होस्टल तक ही पहुँचा था कि उस पर पुलिस अधिकारियों ने लाठी चार्ज करना चाहा, पर कहा जाता है कि सिपाहियों ने ऐसा करने से इनकार किया। उसी दिन यूनियन हाल में छात्रों की एक सभा युद्ध नीति तय करने के लिये हुई। यहा पर यह तय हुआ कि १२ अगस्त को जुलूस निकाला जाय।

खूब गोलियां चलीं

यह जुलूस निकला। जुलूस के आगे-आगे कुछ लड़कियां थीं। पुलिस ने उनकी तरफ गोलिया चलायीं। तब एक विद्यार्थी ने आगे बढ़कर सीना खोलते हुए कहा, 'मुझे गोली मार दो, लड़कियों पर क्या गोली चलाते हो।' बस इसी पर वह गोली से मार दिया गया। एक अन्य जुलूस भी यदुवीर सिंह के नेतृत्व में निकल रहा था। इसमें भी लड़किया थीं। पहले जुलूस पर कंकड़ बरसाया गया। फिर गोली चलायी गयी। गोलियां चलती गयीं और भीड़ आगे बढ़ती गयी। लड़कियों ने इस अवसर पर बड़ी बहादुरी दिखलायी, उन्होंने एक तो झण्डा देने से इनकार किया, फिर घुड़सवारों के घोड़ों की लगाम

पकड़ लिया। इसके बाद तो कई गोली काण्ड हुए जिनमें बहुत से व्यक्ति मारे गये। कोतवाली की तरफ जाने वाले एक जुलूस में बैजन नामक व्यक्ति को इसलिये गोली मार दी गयी कि वह जनता से यह कह रहा था कि आगे बढ़े चलो, डरने की कोई बात नहीं है। दौलत राम उर्फ बङ्गाली नामक एक सोनार पर कई गोलियां लगीं। यह व्यक्ति ८ दिन तक काल्विन अस्पताल में रहा। अहियापुर के राजा पंडित को भी गोली लगा। कट्टू अहीर तथा यासीन को भी गोली लगी। लाल पद्मधर सिंह नामक विद्यार्थी अगस्त १२ को इलाहाबाद जिला के अदालत के कम्पाउण्ड के अन्दर गोली से मारे गये थे। गोली खाने वालों में सबसे अधिक बहादुरी १४ साल के लड़के रमेश मालवीय ने दिखलायी। वह बेलूची सैनिकों से गोली न चलाने के लिये कह रहे थे। इस पर बेलूचियों ने दाहिने जबड़े पर गोली मार दी। एक चीख निकली और भारत मा का यह लाल हमेशा के लिये सो गया। इनके मृतदेह के लिये जनता और सिपाहियों में हाथा पाई हुई। पर अन्त तक मृतदेह सरकार के हाथ में रही। यह एक शहीद की मृत्यु थी। पी० सी० बैनेर्जी होस्टल के पास एक घास वाले को अकारण गोली मार दी गयी। एक अध्यापक के कथनानुसार एक लारी आयी, और उसमें से किसी ने निशाना बांधा और घास वाला मर गया। पास ही एक मिलटरी बैल गाड़ी में आग लगी हुई थी, यह उसी का बदला था।

मिस्टर रजा का इस्तीफा

मिस्टर अमीर रजा नामक एक दस साल के पुराने डिप्टी कलेक्टर ने बाद को अपने बयान में बतलाया कि लाल पद्मधर सिंह पर जो गोली चली थी उसे हत्या कही जा सकती न कि और कुछ। उनके अनुसार मिस्टर एस० एन० आगा शहर कोतवाल ने बिना कारण गोलियां चलवायीं। मिस्टर रजा ने अमृत बाजार के एक प्रतिनिधि से बताया कि उन्होंने एक बार मिस्टर आगा को किसी से टेलीफोन पर

ऐसा कहते हुए सुना कि देखो और गोली मार दो। इस पर मिस्टर रजा ने उपस्थित सिटी मैजिस्ट्रेट मिस्टर एनथोनी से इसका प्रतिवाद किया। वहा पर दो अन्य मैजिस्ट्रेट मौजूद थे, उन्होंने भी मिस्टर रजा का समर्थन किया और कहा कि गोली चलाने के लिये हुक्म देने का अखितयार केवल मैजिस्ट्रेटों को ही है। इस पर आगा बहुत कुड़कुड़ाये यहा तक कि उन्होंने अपमानजनक तरीके से इन दो मैजिस्ट्रेटों के साथ बातचीत की और सामने खड़े एक सामरिक कर्मचारी से कहा कि इन मैजिस्ट्रेटों की भली चलायी तुम अपना काम करो। इन्हीं बातों से तथा पुलिस की ज्यादती से नाराज होकर मिस्टर रजा ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और तब से कांग्रेसी हो गये।

हवाई अड्डा तथा रेल लाइन पर हमला

१३ अगस्त को बमरौली हवाई अड्डे पर भी हमला हुआ पर वह एकदम से खतम नहीं किया जा सका। कई फौजी लारियां फूँक दी गयीं। बहुत से डाकखाने भी लूट लिये गये। यहाँ पूरे तरीके से रेल लाइन काटी नहीं जा सकीं, फिर भी कुछ गाड़ियों का रास्ता कट गया।

देहात में आन्दोलन

हँडिया तहसील में आन्दोलन बहुत जोर पकड़ा और यहाँ करीब-करीब सरकार बेकार कर दी गयी। पर जब सेना आयी तो उसने बरोद बाजार, बनकट, सैदाबाद आदि जगहों में बहुत अत्याचार किया। बरोद बाजार में एक कांग्रेसी को कई बार पैर बांध कर पेड़ से लटकाया गया, पर अन्त तक वह बच गया। हँडिया में कुछ छात्रों को पेड़ से लटका कर उन पर गोली चलायी गयी! बनकट की दो गर्भिणियों ने भयके मारे ज्वार में बच्चे जन्म दिये। बनकट गाँव खाली हो गया। सैदाबाद में एक कांग्रेसी का मकान जमींदोज कर दिया गया। गांधी टोपी पर विशेष कोप रहा।

गांधी टोपी पर प्रहार

गाधी टोपी लगाने वाले को पकड़ लिया जाता था और उसे टोपी पर थूकने तथा पेशाब करने के लिये बाध्य किया जाता था। दशरथ लाल जायसवाल नामक एक नवयुवक को यह बात बहुत बुरी लगी, और उसने जान बूझकर गाधी टोपी पहन ली, इस पर उसे पकड़ कर टोपी पर थूकने आदि के लिये कहा गया। उसने इनकार किया, तब उसे पीटा गया, किसी ने उसके पेट को पार करके एक गोली मार दी, फिर भी उसने गाधी टोपी नहीं छोड़ी। वह उठकर वहा से जाने लगा तो उस पर लगातार दो गोली मारी गयी। इनमें से एक उसे पारकर एक धोबी को लगी, और वह मर गया। कहते हैं कि दशरथ लाल फिर भी नहीं मरे।

अगस्त क्रान्ति में इलाहाबाद

इलाहाबाद के कुछ व्यक्तियों ने विशेषकर छात्र तथा छात्राओं ने बहुत बहादुरी दिखलायी, पर इलाहाबाद में जितने नेता रहते हैं और यहां के जितने एम० एल० ए० हैं उसको देखते हुए अगस्त क्रान्ति में इलाहाबादियों का हिस्सा पूर्वी जिलों के मुकाबिले में बहुत फीका रहा। सच तो यह है कि जो कुछ हुआ वह पूर्वी जिलों में ही अधिक हुआ।

आजमगढ़

आजमगढ़ में आन्दोलन ने बहुत जोर पकड़ा था। १० अगस्त को एक विराट जुलूस निकला और वह कर्बला मैदान में जाकर सभा में परिणत हो गया। पहले मैजिस्ट्रेट जुलूस तथा सभा को रोकना चाहते थे, पर उन्होंने कुछ समझ कर ऐसा नहीं किया।

मधुबन का हमला

आजमगढ़ के देहात में आन्दोलन बहुत ही क्रान्तिकारी ढङ्ग से हुआ। ७० हजार की भीड़ मधुबन थाने के सामने पहुँची। उनके नेता ने

थाने के अधिकारियों से मिलकर आत्म-समर्पण करने के लिये कहा। पर अधिकारियों ने न आत्म-समर्पण किया न झण्डा फहराने दिया। तब अपार भीड़ आगे की ओर बढ़ी। इस पर उसके ऊपर गोली चलायी गयी। फिर भी वह आगे बढ़ी। जब मशीन गन की खबर आयी तब भीड़ हटी। इस अवसर पर ३४ व्यक्ति फौरन शहीद हुए और बाद में से जो लोग घायलों में से शहीद हुए उनको लेकर ७५ के करीब व्यक्ति शहीद हुए। शायद कुछ अधिक ही मरे हों। मधुबन में जो जनता ने बहादुरी दिखलाई थी, वह ऐतिहासिक है।

अन्य क्रान्तिकारी कार्य

महाराजगंज थाने पर जब आक्रमण हुआ तो थानेदार मौजूद नहीं था और बाकी लोगों ने आत्म-समर्पण कर दिया। राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया गया। तरवा थाने में जनता ने पीछे से हमला करके पुलिसवालों की बन्दूकें छीन लीं, और उनके सब हथियार ले लिये। यहां भी राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। तरवा में जनता ने सरकारी कर्मचारियों पर मुकद्दमा चलाने के लिये एक पंचायत कायम की। इसने थानेदार को इलाके से निकल जाने की सजा दी। कासा थाने में एक अंगरेज जमींदार श्रीमती स्टारमार के बंगले में आग लगा दी गयी। उनके पूर्व पुरुषों को यह जमींदारी गदर के दिनों की सेवाओं के लिये मिला था। उसकी यह उपयुक्त सजा थी। पर श्रीमती स्टारयर विलायत में थीं। डाकखानों पर हमले हुए। रेल लाइन उखाड़ी गयी। एक फौजी गाड़ी गिरा दी गयी। रानी की सराय के पास एक इंजन तोड़ डाला गया। कई जगह सड़कों के पुल तोड़े गये। पटवघ गांव के पास २३ अगस्त को लोगों ने एक फौजी लारी को घेर लिया। सैनिक समझे कि दो चार को मार सकते हैं। इसलिये उन्होंने भीड़ से कहा कि हम तो तुम्हारे ही हैं, तब भीड़ हट गयी तो उस पर गोली चली। ३ मरे कई घायल हुए।

नेतृत्व की कमी

यहाँ जनता ने जितनी बहादुरी दिखलायी उतनी से अच्छी तरह क्रान्ति हो सकती थी, पर नेतृत्व तथा कार्य क्रम के अभाव के कारण यह आन्दोलन किसो नतीजे में नहीं पहुँच सका। जब सरकार की बारी आयी तो उसने कोई अत्याचार उठा नहीं रखा।

दमन का जोर

जुड़ावा परदेवारा के कांग्रेस कार्यकर्त्ता महादेव सिंह के घर की दीवारें तक गिरा दी गयीं, फिर उनमें आग लगा दी गयी। उनके मुँह में पेशाब भी किया गया तथा उन्हें पेड़ में लटकाया गया। इस जिले में करीब सौ मकान जलाये गये।

स्त्रियों पर अत्याचार

स्त्रियों पर मारपीट तथा बलातकार भी हुआ। रामनगर गांव में चेत नामक अछूत की स्त्री के साथ बीस गोरों ने इतना बलातकार किया कि वह मर गयी। मझा में एक स्त्री के साथ उनके घरवालों के सामने बलातकार किया गया। दंदारा के निकट एक स्त्री एक साल के बच्चे को लेकर जा रही थी। उसे बिना कारण गोली मार दी गयी। रानी की सराय में मेले पर गोली चलायी गयी। रईसों के घर लूटे गये। इसी प्रकार अमीला में पुलिस घर लूटने पहुँची तो सुप्रसिद्ध नेता श्री अलगूराय शास्त्री की भावज अड़ गयीं और बोली कि यदि हमारा सामान फूँकना है तो पहले मुझे फूँक दो, इस पर सैनिक हार मान गये।

गोरखपुर आन्दोलन और दमन

गोरखपुर में आन्दोलन बहुत देर में शुरू हुआ, पर जब शुरू हुआ तो कई थानों तथा डाकखानों पर जनता ने अपना झंडा लगा दिया। कई जगह पुलिया भी तोड़ दी गयी। ऐसा मालूम होता है कि इस जिले के लोग संगठित ढंग से कुछ अधिक कर नहीं पाये

और अत्याचार शुरू हो गया। यहाँ की कहानी मुख्यतः जनता को दबाने की कहानी है। कहीं गाव लूटे गये तो कहीं घर लूटा गया। मार कर लोगो को वेहोश किया गया। बपुवा, खोयापार, गोपालपुर, अभोड़ा, दुधरा, मालपुरी, उसवा, सिसई, भदरिया आदि कितने ही गावों में पुलिस का अत्याचार हुआ। पंडित रामबली मिश्र की स्त्री श्री मती कैनाशवती को पीटा गया। उन्हें नगी करने का हुक्म हुआ, पर कपड़े फाड़कर छोड़ दिये गये। सिसई गांव में जो अधिक अत्याचार हुआ तो वहा के लोगो ने आये हुए सरकारी कर्मचारियों की अच्छी मरम्मत की। इस पर सरकार की ओर से वेलूची फौज भेजी गई, पर गाववाले गाव छोड़ कर भाग चुके थे। मकानों में आग लगाई गई, और स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया गया।

गोरखपुर षड़यंत्र

गोरखपुर की एक विशेष घटना गोरखपुर षड्यंत्र है। सहजनवा ट्रेन डकैती की जाच के सिलसिले में पुलिस को यह ज्ञात हुआ कि यद्यपि बहुत दिनों से श्री शिब्बन लाल सक्सेना जेल में बन्द पड़े थे, फिर भी वे जेल के अन्दर से ही बाहर अपने मित्रों को पत्र भेजते थे, तथा जेल से भागने की तैयारी कर रहे थे। पुलिस ने इस सूत्र का अनुसरण करते हुए राना प्रताप सिंह नामक व्यक्ति को गिरफ्तार किया जिनके जरिये से जेल जमादार का पत्र दिये जाते थे। राना प्रताप सिंह से पूछे जाने पर शहर गोरखपुर के बाहर धरमपुर गाव में एक मकान का बता दिया जिसमे एक कमरे में १३ षड्यन्त्रकारी गिरफ्तार हुए। इस तथा कुछ अन्य मकानों की तलाशी लेने पर तोड़फोड़ के औजार, आठ तैयार बम, कुछ बम के सामान, हजारों पर्चे तथा छापने के यन्त्र बरामद किये गये। इस पर जिले भर में गिरफ्तारियां हुईं, और एक षड्यन्त्र का मुकदमा चला। २० व्यक्ति अभियुक्त के रूप में पेश किये गये। मिस्टर आर० बी० जेम्स सेशन जज ने २९७ पृष्टों के फैसले में इस बात पर तफसील के साथ

लिखा कि अभियुक्तों के द्वारा अहिंसा की आड़ लिये जाने पर भी कांग्रेस के नेताओं ने जो खुला विद्रोह, करो या मरो का नारा दिया, उसी में हिंसा तथा तोड़फोड़ अन्तर्निहित था। जज ने श्री शिब्बनलाल को षड्यन्त्र का नेता तथा दिमाग करार देकर १० साल की सजा दी। सूर्यनाथ पांडे तथा रामजी वर्मा को ७ साल की सजा दी गई। कैलाशपति गुप्त तथा ५ अन्य अभियुक्तों को ५ साल की सजा दी गई। बाकी दस अभियुक्तों को तीन तीन साल की सजा हुई। श्री शिब्बनलाल सक्सेना पहले अध्यापक थे, फिर एम० एल० ए० और एक प्रतिष्ठित कांग्रेसी नेता रहे। पर इस कारण वे जेल में मार से न बच सके। और उनको जो मारा गया, सो जेल के किसी मूर्ख वार्डर ने नहीं, बल्कि स्वयं आई० सी० एस० मजिस्ट्रेट ने मारा। इसका विवरण अन्यत्र दिया गया है।

जौनपुर जिले का इतिहास

क्रान्तिकारी नेता राजदेव

हिन्दुस्तान के कांग्रेस के इतिहास में जौनपुर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। जब जब कांग्रेस की लड़ाई ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ हुई है, जौनपुर जिले ने अपना हिस्सा अदा किया है। जिस तरह भारतवर्ष में कांग्रेस में वाम पक्ष तथा दक्षिण पक्ष रहे हैं, जौनपुर जिला भी उससे अछूता नहीं रहा है। यहां पर भी वाम पक्षी शक्तियों का जन्म पहले ही से चुका था। सन् ६३८ में ही कामरेड राजदेव सिंह जी एम० ए० के प्रयास से कई वाम पक्षी ट्रेनिंग कैम्प जिले में चल चुके थे। दो साल के अन्दर ही जिले में काफी सैनिक तैयार हो चुके थे। सन् १९४० में राजदेव सिंह के जेल चले जाने के बाद यह काम कुछ शिथिल तो अवश्य पड़ गया था, लेकिन उन्होंने सैनिकों में जो आग फूंक दी थी वह भीतर ही भीतर जल रही थी।

भारत में सशस्त्र क्रांति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



राजदेव सिंह

भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



बरेली जेल के वीर मिठाईलाल

राजनारायण पहले से तैयारी कर रहे थे

सन् १९४० के सत्याग्रह के अवसर पर यहाँ के सभी नवजवान सत्याग्रह करके जेल चले गए। जेल से छूटने पर लोगों ने फिर वही अपने ढंग से कार्य करना शुरू कर दिया। सन् ४२ के शुरू ही से लोगो ने हथियार वगैरह इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। इसमें प्रमुख हाथ कामरेड सूर्यनाथ उपाध्याय तथा कामरेड राजनारायण मिश्र का था।

किसान हाई स्कूल प्रतापगंज

अगस्त में देश व्यापी आन्दोलन होगया। यह आन्दोलन जौनपुर के नवजवानों को काफी प्रिय मालूम हुआ, और उसमें वे दिल खोल कर कूद पड़े। इस समय जिले भर की क्रांति का केन्द्र किसान हाई स्कूल, प्रतापगज होगया। इस स्कूल की नींव सन् १९४१ में ठा० जगन्नाथ सिंह ने डाली थी। और सन् १९४२ में प्रान्तीय किसान कान्फ्रेंस यहीं पर हुई थी। सबसे पहले ८ अगस्त को इसी स्कूल पर एक मीटिंग हुई जिसमें लगभग जिले के हर कोने से लोग आए थे। इस मीटिंग में सूर्यनाथ उपाध्याय इस लड़ाई के कमान्डर चुने गए। उन्होंने सबको अलग अलग आदेश दिया।

क्रान्ति का प्रारम्भ

दूसरे दिन शहर में विद्यार्थियों ने बड़ी जोर हड़ताल किया। कचहरी पर उन पर गोली भी चलाई गई लेकिन वे पीछे न हटे। कलक्टर तथा कप्तान को लोगो ने घेर लिया और माफी माँगने पर ही उन्हें छोड़ा। कचहरी तथा अन्य सरकारी इमारतों पर तिरंगा झंडा फहरा दिया गया। १० तारीख को जिले की तमाम गल्लें की गोदामों को लूट लिया गया। खास तौर से सिकरारा का बीज गोदाम बहुत अच्छी तरह से लूटा गया। इसके बाद थानों पर हमला किया गया। मछली शहर, बदलापुर तथा बख्शा के थानों पर झंडे लगा दिए गए

तक टिका रहा। दूसरी जगहों के आन्दोलन ज़्यादा से ज्यादा २ हफ़्ते में खतम होगए लेकिन यहाँ का आन्दोलन सालों तक चलता रहा। यहाँ के बहुत से आदमी अन्त तक नहीं गिरफ़ार हुए। मास्टर जगन्नाथ सिंह जिनकी गिरफ़ारी के लिए ३०००) इनाम रक्खा गया था अन्त तक फ़रार रहे। काँग्रेस मिनिस्ट्री ने सन् १९४६ अप्रैल में उनका वारन्ट कैन्सिल किया।

कानपुर

संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी जिलों में अगस्त आन्दोलन पूर्वी ज़िलों के मुकाबिले में बहुत कम जोर पर रहा। कानपुर मजदूरों का नगर है, इस क्रान्ति में उससे बड़ी आशा थी, पर कम्युनिष्टों के कुप्रभाव तथा आम तौर पर कानपुर के नेताओं की दुलमुनयक़ीनी के कारण यहां पर आन्दोलन धीमा ही रहा। ६ अगस्त को यहां की जनता ने कांग्रेस दफ़र तिलक हाल पर कब्जा करने की कोशिश की थी। कुछ गोरों तथा उनकी मोटरों पर भी हमले हुए। १० अगस्त को कुछ थानोंपर आक्रमण हुए, जनता पर गोली चली और इस प्रकार से हमले सफल न हो सके। सरकार ने कानपुर में शुरू से ही दमन से काम लिया, फ़िर भी कुछ इक्के दुक्के हमले, कहीं डाकखानो पर तो कहीं सरकारी इमारतों पर, जारी रहे। विद्यार्थियों ने डेढ़ महीने तक हड़ताल रखी। कानपुर सेन्ट्रल-स्टेशन पर हमला हुआ, जिसके सम्बन्ध में श्री दलपत आदि छात्र नेताओं पर मुकदमा चला और उन्हें सज़ा हुई।

आगरा

आगरा में भी आन्दोलन बहुत धीमा रहा। विद्यार्थियों ने तथा जनता ने थानों पर झंडा चढ़ाने के लिये जुलूस निकाले, पर ये जुलूस सफल न हो सके। हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि पूर्वी जिलों के लोगों ने क्रान्ति के लिये जिस तत्परता तथा साहस का परिचय दिया पश्चिमी ज़िलों में वैसा कहीं नहीं देखने में आता। सात

गद्दारों पर हमले

बँधवा के स्थान पर कांग्रेस के एक जत्थे से पुलिस से मुठभेड़ होगई, उसमें एक C. I. D. Inspector तथा एक कान्स्टेबल मारा गया। जिले में गद्दारों की संख्या को घटाने के लिए कई गद्दारों का मकान लूटा गया और उन्हें मारा भी गया। कांग्रेस के एक जत्थे ने अक्तूबर के आखिरी हफ्ते में कुन्हना मऊ के स्थान पर गवर्नमेन्ट की डाक लूट लिया। वहाँ पर जनता द्वारा सूर्यनाथ उपाध्याय, कैलनाथ सिंह, कुन्दन मौर्य, उदरेज सिंह तथा दयाशंकर सिंह गिरफ्तार करके कोतवाली तक पहुँचा दिए गए।

क्रान्ति के नेता गिरफ्तार

इसके थोड़े ही दिन बाद रामशिरोमणि दूबे, राजनारायण मिश्र तथा नन्दकिशोर सुजान गंज थाने के अन्तर्गत जनता द्वारा गिरफ्तार कराए गए। थाने में इनके साथ बहुत ज्यादा सख्ती की गई। मिश्र जी के तमाम हाथ पैर तोड़ दिए गए। नाखून तक फोड़ दिए गए। आग में डालकर जलाए गए लेकिन उन्होंने आह तक नहीं किया।

इसके बाद जिले के नवजवानों का नेतृत्व मास्टर जगन्नाथ सिंह के हाथ आया। उन्होंने तमाम जिले भर में फिर से नवयुवक संगठन किया। इसी समय जिले में भूप नारायण सिंह का पैशाचिक जुल्म शुरू हुआ। इन्होंने जिले में लगभग १०० आदमियों को कन्ट लगा कर प्रायः नपुंसक कर दिया। कितनी ही औरतों को थाने में ले जाकर बेइज्जत किया। सुजान गंज थाने की दो राइफलें डँवरूआ गाँव में मँगल चमार के यहाँ बरामद हुई। उनकी वजह से उस मौजे पर ४६००) जुर्माना हुआ। बँधवा कांड में राजनारायण मिश्र, रामशिरोमणि दूबे, गौरीशंकर, गिरजाशंकर सिंह तथा अन्य ७ व्यक्तियों को फाँसी की सजा हुई थी।

आन्दोलन टिका

जौनपुर जिले की क्रान्ति की यह विशेषता थी कि वह बहुत दिनों

तक टिका रहा। दूसरी जगहों के आन्दोलन ज्यादा से ज्यादा २ हफ्ते में खतम होगए लेकिन यहाँ का आन्दोलन सालों तक चलता रहा। यहाँ के बहुत से आदमी अन्त तक नहीं गिरफ़ार हुए। मास्टर जगन्नाथ सिंह जिनकी गिरफ़ारी के लिए ३०००) इनाम रक्खा गया था अन्त तक फरार रहे। कॉंग्रेस मिनिस्ट्री ने सन् १९४६ अप्रैल में उनका वारन्ट कैन्सिल किया।

कानपुर

संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी जिलों में अगस्त आन्दोलन पूर्वी जिलों के मुकाबिले में बहुत कम जोर पर रहा। कानपुर मजदूरों का नगर है, इस क्रान्ति में उससे बड़ी आशा थी, पर कम्युनिष्टों के कुप्रभाव तथा आम तौर पर कानपुर के नेताओं की दुलमुनयकीनी के कारण यहा पर आन्दोलन धीमा ही रहा। ९ अगस्त को यहा की जनता ने कांग्रेस दफ़र तिलक हाल पर कब्जा करने की कोशिश की थी। कुछ गोरों तथा उनकी मोटरों पर भी हमले हुए। १० अगस्त को कुछ थानोंपर आक्रमण हुए, जनता पर गोली चली और इस प्रकार से हमलें सफल न हो सकें। सरकार ने कानपुर में शुरू से ही दमन से काम लिया, फिर भी कुछ इक्के दुक्के हमले, कहीं डाकखानो पर तो कहीं सरकारी इमारतों पर, जारी रहे। विद्यार्थियों ने डेढ़ महीने तक हड़ताल रखी। कानपुर सेन्ट्रल-स्टेशन पर हमला हुआ, जिसके सम्बन्ध में श्री दलपत आदि छात्र नेताओं पर मुकदमा चला और उन्हें सजा हुई।

आगरा

आगरा में भी आन्दोलन बहुत धीमा रहा। विद्यार्थियों ने तथा जनता ने थानों पर झंडा चढ़ाने के लिये जुलूस निकाले, पर ये जुलूस सफल न हो सके। हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि पूर्वी जिलों के लोगों ने क्रान्ति के लिये जिस तत्परता तथा साहस का परिचय दिया पश्चिमी जिलों में वैसा कहीं नहीं देखने में आता। सात

दिन के अन्दर ही आगरा का सामूहिक आन्दोलन बिल्कुल दब गया। इसके बाद कहीं तार काटे जाते तो कहीं पटरी उखाड़ी जाती। ई० आई० आर० के कुछ स्टेशनों में आग लगा दी गयी। बी० बी० एण्ड सी० आई० के दो इंजन तोड़ डाले गये। इनकम टैक्स आफिस पर भी हमला हुआ। जो कुछ काम हुआ उसे विद्यार्थियों ने तथा जनता के लोगों ने किया। कांग्रेस के नेता तो बिना कार्यक्रम दिये ही गिरफ़ार हो चुके थे। कुछ थानों में जनता आग लगाने में सफल रही। बाद को आगरा षड्यंत्र मामला चला जिसके नेता सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री श्रीराम शर्मा करार दिये गये। इनके नेतृत्व में कुछ उच्च शिक्षित नवयुवकों ने अच्छा काम किया था। यह मुकदमा सफल नहीं हुआ और सरकार को सब अभियुक्तों को छोड़ देना पड़ा। पर छूटे हुए लोग करीब करीब सभी नजरबन्द कर लिये गये। चन्दौला स्टेशन पर जो आक्रमण हुआ था, उसमें पांच शहीद हुए और ३४ घायल हुए।

मथुरा, वृन्दावन, अलीगढ़, बिजनौर

संयुक्त प्रान्त के शेष जिलों के अलग अलग इतिहास देने की कोई आवश्यकता नहीं है। कुछ विशेष घटनाओं का वर्णन किया जाता है। सभी जगह नेताओं की गिरफ्तारी की प्रतिक्रिया में जुलूस निकले और हड़ताल हुई। तार भी अक्सर जगह जगह पर काटे गये। रेल की पटरियां भी उखाड़ी गयीं। मथुरा के परखम स्टेशन के पास एक इंजन को गिरा दिया गया। वृन्दावन में जुलूस पर गोली चलायी गयी, जिसमें कई मरे और घायल हुए। अलीगढ़ के अतरौली में एक जगह गिरफ़ारी हो रही थी, तो साथ ही साथ पुलिसवाले गिरफ्नार व्यक्ति को गोली देते जाते थे। इस पर गिरफ़ार व्यक्ति के भाई को क्रोध आया और उसने उठाकर पुलिसवालों को बांस मारा। इस पर वह फौरन गोली से मार दिया गया। दूसरे एक भाई को गोली मारी गई, वह मरा नहीं घायल हो गया। गोली चलाने के बाद मरे

हुए व्यक्ति के लाश को पुलिस अपने साथ लेती गयी। हरदुआगंज का डाकखाना जलाया गया। रेल की लाइन भी उखाड़ी गयी, और एक जगह एक पुल करीब करीब तोड़ दिया गया। बिजनौर में १६ अगस्त को नूरपुर थाने की देहाती जनता ने कुछ तोड़ फोड़ के कार्य किये, रतु-नगढ़ का डाकखाना तोड़ डाला। इस जुलूस पर बाद को लाठी चार्ज हुआ और एक व्यक्ति शहीद हो गया। इसी प्रकार बिजनौर में अन्य तोड़फोड़ के कार्य हुए। ३ व्यक्ति पुलिस की गोली से शहीद हुए। बिजनौर शहर में कोई खास बात नहीं हुई। इस जिले में धामपुर में आन्दोलन बल्कि तेजी पर रहा। यहाँ सरकारी इमारतों, तहसील और थानों पर तिरंगा फहराया गया। गढ़वाल में नेताओं की गिरफ्तारी के प्रतिवाद में जो जुलूस निकला उसकी विशेषता यह थी कि सरकारी कर्मचारियों के लड़के जुलूस में शामिल थे। जो छात्र जुलूस का नेतृत्व कर रहा था, वह किसी रायबहादुर का लड़का था। इन्हीं कारणों से इस जुलूस पर गोली चलाना तय करके भी इस कारण बन्द करना पड़ा कि कहीं इसके फलस्वरूप सरकारी कर्मचारी भी सरकार के विरुद्ध न हो जाँय। इस जुलूस ने अदालत पर झंडा फहराया।

लखनऊ

संयुक्त प्रान्त की राजधानी की दृष्टि से लखनऊ ने बहुत कम किया, फिर भी जुलूस हड़ताल आदि के अतिरिक्त यहाँ के आन्दोलन की विशेषता यह रही कि यहां कई गैरकानूनी पर्चे निकलते रहे। फ्री इंडिया, आजादी, गदर, जन्मभूमि आदि कई पत्र निकलते रहे। शिवकुमार द्विवेदी, मुनीश आदि के प्रबन्ध से ये पर्चे निकले। श्री द्विवेदी ने इधर सब से अच्छा काम किया। कहा जाता है कि उन्हीं की देखरेख में आलमबाग पर हमला हुआ था, तथा इधर जो कोई भी तोड़फोड़ के कार्य हुए उनमें द्विवेदी परिवार का हाथ रहा। पं० नेहरू ने छूटकर इस परिवार को अभिनन्दित किया था। श्री शिवकुमार द्विवेदी अन्त तक पुलिस की गिरफ्त में नहीं आये। लखनऊ में कुछ डाकखानों के

अलावा ए० आर० पी सेन्टर्स में आग लगा दी गई। यहाँ के विश्वविद्यालय के छात्र हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों की तरह तो नहीं साबित हुए, पर तोड़फोड़ में उनका हाथ रहा। कान्यकुब्ज स्कूल के लड़के तथा महिला विद्यालय की लड़कियों ने विशेष कार्य किये। यद्यपि यहां सरकार किसी समय बेकार न की जा सकी, फिर भी बराबर इक्के दुक्के कार्य जारी रहे, और पुलिस को कुछ पता नहीं लगा।

गढ़वाल

गढ़वाल में समानान्तर सरकार के संगठन की चेष्टा भी की गयी और स्वराज्य अदालतें भी खोली गयीं। एक सेना का संगठन भी किया गया जिसमें मुख्यतः बालक थे। इस सेना के लोग जनता को सही खबर देते थे और यह कोशिश करते थे कि जनता घबड़ाये नहीं। इस जिले के लोग स्वभावतः सैनिक प्रवृति के होने के कारण यहां के लोगों को आसानी से दबाया नहीं जा सका और फौज की सहायता लेनी पड़ी। फरार कांग्रेसियों के घर वालों पर खूब अत्याचार किया गया।

अल्मोड़ा

अल्मोड़ा जिले में पं० मदनमोहन उपाध्याय तथा अन्य क्रान्तिकारी मनोवृत्ति के नेताओं के कारण आन्दोलन अपेक्षाकृत रूप से संगठित ढंग से चला। उपाध्याय जी एक बार ११ अगस्त को गिरफ्तार भी हुए पर वे भाग गये। बाद को सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के लिये २ हजार इनाम की घोषणा की और अन्य विशेष तरीके भी किये। पर वे गिरफ्तार न हो सके। देहाती जनता सरकारी अफसरों से बिल्कुल असहयोग कर रही थी। सरकारी आदमियों को कहीं खाना तक नहीं मिलता था। कहते हैं इस असहयोग का असर यह हुआ कि एक पुलिस के सिपाही ने यह कहकर इस्तीफा दे दिया कि मुझे खाना नहीं मिलता मैं क्या काम करूँ, इस पर उस सिपाही को एक साल की कड़ी सजा दी गयी। ११ अगस्त को छात्रों के जुलूस के हाथ से स्वयं

कलक्टर ने राष्ट्रीय झंडा लेकर फाड़ डाला। इस पर उसे किसी ने एक ढेला मारा। शहर में फिर ४४ हो गया। देघाट में पुलिसवाले एक मकान में छिपकर एक सभा की कार्रवाई को सुनते रहे, फिर बाद को उन्होंने वहीं से भीड़ पर गोली चला दी। इस जिले में गोरी फौज यत्र-तत्र अत्याचार के लिये भेजी गयी। सरयूतीर के बगेश्वर में कई महीनों तक ब्रिटिश सरकार का अस्तित्व ही नहीं रहा। इस जिले की एक विशेषता जंगल सत्याग्रह था। सलन और सल्ट में टैक्सबन्दी सफलतापूर्वक की गई।

अन्य जिलों में आन्दोलन

मुरादाबाद, एटा, बरेली, व सबरेली, मेरठ, सहारनपुर, देहरादून, बुलन्दशहर, मैनपुरी आदि स्थानों में वही जुलूस निकालना, हड़ताल करना, मामूली तोड़फोड़ तक कार्य सीमित रहा। इनमें से कई स्थान में देहातों में हफ्तों ब्रिटिश राज्य खतम सा हो गया, पर ढंग का कार्यक्रम न होने के कारण कहीं भी आन्दोलन कुछ विशेष उच्चता तक नहीं पहुँच सका। कहीं कहीं तो आन्दोलन बिल्कुल ही नहीं के बराबर रहा, जैसे सुलतानपुर। यहां केवल ७०० रुपये सामुहिक जुर्माने में वसूल किया गया। सम्भव है इन जिलों की कोई घटना छूट गयी हो, पर ये घटनायें उसी प्रकार की थीं।

शहीद राजनारायण का बचपन

सयुक्त प्रान्त की क्रान्ति का विवरण श्री राजनारायण मिश्र के उल्लेख के बगैर पूरा नहीं हो सकता। इनको खीरी लखीमपुर के तहसील भीखमपुर के एक गुप्त दल के नेतृत्व का सौभाग्य प्राप्त था। इस दल ने वहाँ के जिलेदार को जान से मार डाला। इनका संक्षिप्त जीवन यों है—राजनारायण मिश्र जो लखीमपुर के श्री बलदेव मिश्र जी के पुत्र थे। ये जन्मजात क्रान्तिकारी थे। फांसी की रस्सी उनके जीवन से बचपन में ही जुड़ गयी थी। इनकी माँ तुलसी देवी ने,

इनके बच ये ७ साल के थे, असहाय छोड़कर फांसी लगाकर अपनी जान दे दी थी। इस वीर बालक के लालन पोषण का भार बहन रमादेवी पर पड़ा। इनकी रुचि बचपन से ही मारपीट की तरफ थी। भाइयों ने इनकी बालसुलभ उद्दंडता को रोकने के साथ ही इन्हें सदा हिम्मत दिलाई आखिर वे हिम्मत क्यों न दिलाते, क्योंकि उन्हें तो राजनारायण को शेर जो बनाना था। बालक राजनारायण की निडरता और स्वतन्त्र प्रियता बचपन से ही झलकती थी। इनके हृदय पर भगतसिंह की फांसी अपनी अमिट छाप सदा के लिये छोड़ गयी। यद्यपि इनकी उम्र अभी अधिक नहीं थी फिर भी इन्होंने आत्म-बलि-दान की भावना को अपने मन में स्थान दिया। भगतसिंह की वीर-गाथा को सुनकर भगतसिंह बनने के लिये इनका हृदय मचल पड़ा।

छात्र-जीवन में ही राजनीति

१९३० के असहयोग की आंधी उठी और इस आंधी की झकोरों से भीखमपुर गाँव अछूता न रह सका। इन्होंने राष्ट्रीय पताका को लेकर आगे कदम बढ़ाया। इस दुःसाहस के फलस्वरूप मास्टरों ने इन्हें बेतों की सजा दी। गाँव की पाठशाला से निकलकर ये सिकन्दरा-बाद मिडिल स्कूल में दाखिल हुए। अपने उग्र तथा क्रान्तिकारी स्वभाव के कारण इन्हें इस पाठशाला से भी हटना पड़ा। अध्यापक यह चाहते थे कि ये सरकार की प्रशंसा से भरे हुए गाने गायें, किन्तु उस वीर को सिर्फ भगतसिंह का ही तराना याद था। इस कारण इस पाठशाला को भी छोड़ना पड़ा। इनके राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ सीतापुर की युक्तप्रान्तीय नवयुवक संघ के अधिवेशन से होता है। इस अधिवेशन में आप स्वयंसेवक की हैसियत से गये हुये थे। यह इनके जीवन का पहला मौका था जब ये प्रान्त के अन्य नवयुवकों के संपर्क में आये। वहाँ से वापस लौटने पर इन्होंने इस बात की कोशिश की कि नवयुवक संघ स्थापित किया जाय। आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिये इन्होंने अपनी सायकिल बेंच दी। नवयुवक संघ इनके नेतृत्व

में स्थापित हुआ। इस संघ का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना था। उनका छात्र-जीवन सुचारु रूप से चल न सका क्योंकि एक धनी लड़के से इनकी लड़ाई हो गयी। इस पाठशाला से निकलते जाने पर इन्होंने अपना नाम छत्री स्कूल में लिखवाया, और ८ वीं श्रेणी वहीं से पास किया।

एक साल की सजा

अब तक राजनारायण जी को देश की राजनैतिक परिस्थिति का काफी ज्ञान हो चुका था। इनका स्वाभाविक झुकाव क्रान्ति की ओर था। इनके बड़े भाई पंडित बाबूराम मिश्र जी अपने जिले के प्रमुख नेता थे। इन्हें १८ साल की सजा हुई थी। राजनारायण जी को भी जेल यात्रा करनी पड़ी। इनको राजद्रोहात्मक भाषण देने पर सजा हुई थी। इनके जेल जाते ही इनके गाँव पर पुलिस वालों ने हमला किया। प्रायः सभी घरों की तलाशी ली गयी क्योंकि राजनारायण पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने उन्नाव के इन्सपेक्टर का रिवाल्वर उठाया है। राजनारायण पर यह झूठा आरोप था। वे पुलिस के चंगुल में न आ सके और १ वर्ष की सजा काटकर लौटे। इसी समय घर पर इनके पिता श्री का देहान्त हुआ।

पिता जी की अन्तिम क्रिया से अवकाश पाये कुछ दिन भी नहीं हुए कि १९४२ का अगस्त विद्रोह छिड़ा। इस विद्रोह की चिनगारी वहाँ भी आयी। राजनारायण जी इस विद्रोह को अपने गाँव में सफल बनाना चाहते थे। इनके नेतृत्व में सैकड़ों नवयुवक थे। इन्होंने अपने व्याख्यान के द्वारा नवयुवकों में जोश भर दिया। ३०० के करीब नवयुवकों की एक टोली कायम की गयी। इसके नेतृत्व का भार राजनारायण जी ने खुद अपने हाथों में लिया। ये वीर नवयुवक यह प्रतिज्ञा कर चुके थे कि अन्य जिलों की भाँति वे भी अपने जिले पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करेंगे। इसी उद्देश्य से उन्होंने गाँव के बाहर मार्च किया।

जिलेदार की हत्या

राजनारायण जी सर्वप्रथम अपने दल को शक्तिशाली बनाना चाहते थे। अतएव इन्होंने जमींदारों तथा अगरेजों के खैरख्वाहों की बन्दूके छीनने तथा तहसील पर कब्जा करने का निश्चय किया। बात की बात में इन लोगों ने पास पड़ोस की सारी बन्दूकों को छीन ली, और जिलेदार की अन्तिम बन्दूक लेने के लिये आगे बढ़े। जिलेदार ने इन लोगों को देखते ही अपना बन्दूक सीधी की। इसी समय गोली की आवाज आयी, और जिलेदार मारे गये। इसके तीन दिन बात गोरी पल्टन की सहायता से पुलिस ने गांव पर हमला बोल दिया। दमनचक्र जोरों से चला, और सैकड़ों आदमी तबाह हो गये। सरकार ने कोई अत्याचार उठा नहीं छोड़ा था।

फाँसी

राजनारायण का दल तितर-बितर हो गया, वे फरार हो गये। इन्होंने इस दशा में अकेले देश के प्रमुख स्थानों का भ्रमण भी किया था। इसी हालत में वे नाम बदलकर आन्दोलन के फलस्वरूप दो बार जेल भी काट चुके थे। जेल से रिहा होने के बाद इनको आर्थिक सकट का सामना करना पड़ा। इनके सभी पुराने साथी जेल में थे। अन्त में इनकी भेंट श्यामवीर जी से लखनऊ में हुई और इन्होंने अपना असली परिचय भी मित्रता के कारण बता दिया। ये पुलिस के चंगुल में फंस गये। दो मास के अन्दर ही इनके भाग्य का फैसला हो गया। मुकद्दमें की पैरवी भी ठीक से धनाभाव के कारण न हो सकी। २२ जून को फाँसी की सजा सुना दी गयी।

अन्तिम सन्देश

९ दिसम्बर को अपनी पत्नी तथा प्यारे बच्चों से सदा के लिये बिदा होते हुए अमरशहीद राजनारायण मिश्र ने यह कहा था—हम देश के लिये मर रहे हैं, फिर पैदा होंगे और फिर मरेंगे। २४ वर्ष की

भरी हुई मचलती जवानी में ही यह वीर मां के बन्धनों को तोड़ने के पूर्व ही अपना बन्धन, तोड़ गया। इनका यह बलिदान अनुपम था। राजनारायण जी हंसते-हसते फांसी पर झूल गये। फाँसी पर झूलने के पूर्व इनके चेहरे पर एक दिव्य प्रभा भासित हो रही थी। इनका वजन भी बढ़ गया था। फासी पर झूलने के पूर्व इन्होंने क्रान्तिकारी नारे दिये, इन्कलाब-जिन्दाबाद उनका आखिरी नारा था।

शहीद को अपने त्याग के संम्बन्ध में सन्देह

अन्त में मैं पाठकों को यह स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि फासी की प्रतीक्षा करते हुए फाँसी घर से अन्तिम पत्र लिखते हुए श्री मिश्र ने यह भय जाहिर किया था कि कहीं उनके त्याग का दुरुपयोग न हो। उन्होंने यह कहा था कि इसे रोकना चाहिये। उनका पत्र यों था—

डिस्ट्रिक्ट जेल, लखनऊ
फांसीघर

श्री मान्यवर भाईजी

प्रणाम,

…सगदरपुर को पत्र डाला था जप कराने के लिये, अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है! हमें तो जप में कोई विश्वास नहीं है, पर आपकी आज्ञा हमें शिरोधार्य है।

… हमारे बलिदान का लाभ सुधारवादी या कांग्रेस में मध्यम वर्ग वाले नहीं उठा सकते हैं, क्योंकि मैं अपने को वर्गहीन समाज-सेवक मानता हूँ। वर्गहीन समाज का समाजवाद कायम करूँगा, मध्यमवर्ग तथा सुधारवादी सभी को मिटाने का हमारा ध्येय है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि चन्द सुधारवादी धनिक लोग हमारे बलिदान का लाभ उठायें। हमारे परिवार वाले लाभ न उठाकर चन्द मध्यमवर्ग को उठायें। हमारा बलिदान तो गरीब वर्ग के ऊपर है। मध्यमवर्ग, धनिकवर्ग विनाश समाजवादी क्रान्ति में किया जायेगा। समाजवादी समाज वर्गविहीन व्यवस्था स्थापित की जावेगी, जहाँ धनी रहेंगे न.

गरीब, हालाकि हमारे केस की पैरवी कुंअर खुशवक्त राय ने की है। लेकिन हमने उन्हें कई बार साफ कर के लिखा है। उन्होंने अपने पास से एक पैसा खर्च नहीं किया है बल्कि गरीब किसानों से, यह और भी अच्छा हुआ। मेरा परिवार आप ही हैं, आप ही हमारे बलिदान का लाभ उठायें। परिवार को विकसित करें, जनता को समझायें किस कारण हमारा बलिदान हुआ है। आशा है स्पष्ट हो जायेगा, हम तो आप से यही आशा करते हैं। हमारे बलिदान के बाद हमारे बलिदान का सही प्रयोग करेंगे, जिस कार्य के लिये हुआ उस कार्य में वृद्धि होगी, भारत को भी लिखा है, अपने परिवार के सभी साथियों से नमस्कार कहना।

आपका छोटा भाई
राजनारायण मिश्र
ता:० २३-११-४४

द:
Superin tendent Distt.
Jail, Lucknow

यह पत्र इनके भाई श्री ललना डामिल के नाम लिखा गया था। जो उस समय फतेहगढ़ जेल में राजबन्दी थे। १९४५ के एक शहीद का यह सन्देह बहुत ही हृदय द्रावक है। आखिर फासी चढ़ने के पहले इस शहीद शिरोमणि को यह शका क्यों हुई थी? यह स्पष्ट है कि फासी घर में बन्द इस भावी शहीद को प्रतिक्रान्ति अपने भयकर जबड़ों को खोले हुए दिखाई पड़ी। शहीद ने अपने अनुभूतिशील हृदय से यह अनुभव किया कि मौजूद परिस्थिति में उनके तथा दूसरे शहीदों के त्यागों के दुरूपयोग की सम्भावना है।

आसाम क्रान्ति की गिरफ़्त में

नेताओं की गिरफ़्तारी से तैश

बम्बई में नेताओं की गिरफ्तारी के साथ ही साथ आसाम कांग्रेस के प्रमुख नेता फखरुद्दीन अली अहमद, तयबुल्ला, विष्णुराम मेधी, डॉ० शर्मा आदि आसामी नेता गिरफ्तार कर लिये गये। आसाम के

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री गोपीनाथ बरदोलोई डी० शर्मा आदि जो नेता बम्बई गये हुये थे, वे भी धुबड़ी में उतरते ही गिरफ्तार कर लिये गये। आसाम की जनता तथा सरकार दोनों एक दूसरे पर टूट पड़ने के लिये पहले ही से तैयार थी। जापानी आक्रमण की बातें आसामियों के लिये कोई दूर की चीज नहीं, बल्कि एक बहुत ही पास की चीज थी। जापान के हाथों में अंगरेजों की हार पर हार के कारण जनता में ब्रिटिश सरकार की साख बिल्कुल खतम हो गयी थी। फिर लाखों की तादाद में आसाम में जो ब्रिटिश फौज पड़ी थी, उसके अत्याचारों के कारण ब्रिटिश शासन के प्रति जनता की रही सही रुचि भी जाती रही थी। फौज के लोग जबर्दस्ती गांवों के भेड़, बकरों, मुर्गियों तथा फल फूलों उठा ले जाते, नाममात्र का दाम देते थे, या कुछ भी नहीं देते थे। हवाई अड्डों के लिये बात की बात में गावों को ढाह देते तथा गांव वालों की बहू-बेटियों पर अत्याचार करते। इसलिये जब 'करो या मरो' का सन्देश पहुँचा तो आसामियों ने बड़े जोरों से उसका साथ दिया।

शान्तिपूर्ण आन्दोलन

आसाम में आन्दोलन ने फौरन ही तोड़-फोड़ का रूप धारण नहीं किया। पहले लोग जुलूस आदि निकालते रहे. पर बाद को जब सरकार ने शान्तिपूर्ण प्रदर्शनों को भी दबाना चाहा, तभी आन्दोलन ने क्रान्तिकारी रूप धारण किया। हड़ताल यहाँ इतनी व्यापक रही कि सब शिक्षा संस्थायें बन्द हो गयीं। मजे की बात है कि शुरू में आसाम में कहीं भी कोई तोड़-फोड़ का कार्य नहीं हुआ। १५ अगस्त को ग्वालपाड़ा के छात्रों ने एक जुलूस निकाला। यह जुलूस क्रान्तिकारी नारे दे रहा था। इस पर पहले लाठी चार्ज किया गया, तिस पर भी जब जुलूस तितर-बितर नहीं किया जा सका तब उस पर सङ्गीन से हमला कर दिया गया। ६ व्यक्ति बहुत बुरी तरह घायल हुए। बाद को चार व्यक्ति को लम्बी सजाएँ दी गयीं।

गोपुर का जुलूस

२० सितम्बर १९४२ को दारांग जिला के गोपुर थाने की घटना को ली जाय। इस जुलूस में ५ हजार के करीब देहाती जनता थी। इस जुलूस का उद्देश्य थाने पर झंडा लगाना था। थाने के सामने एक पोखरा पड़ता था इसलिये पोखरे के सामने पर जुलूस ने अपने को दो हिस्सों में बाँट लिया और दो तरफ से लोग थाने में पहुँचने लगे। कनकलता बरुआ नाम की एक चौदह वर्ष की लड़की जुलूस के आगे-आगे थी। जब जुलूस बिल्कुल थाने के सामने पहुँचा तो कनकलता ने पुलिसवालों से यह कहा कि वे अपने ही भाई हैं, उन्हें चाहिये कि विदेशी शासन की नौकरी से अलग हो जायँ। यह कहकर वह थाने के फाटक की तरफ बढ़ी। इस पर पुलिसवालों ने कनकलता से यह कहा कि भीतर मत आओ। कनकलता बोली कि थाने तो जनता की सम्पत्ति हैं, यदि जो लोग उसकी रक्षा के लिये नियुक्त हैं, वे अपने को जनता का सेवक समझकर काम नहीं करते, तो जनता को यह अधिकार है कि वह अपनी सम्पत्ति पर अधिकार जमा ले और अनाधिकारियों को वहाँ से खदेड़ दे।

कनकलता शहीद हुई

थानेदार एक बच्ची की मुँह से ऐसी बातें सुनने के लिये तैयार नहीं था। उसने कनकलता तथा जुलूसवालों को थाने के हाते से निकल जाने को कहा कनकलता एक क्षण भी नहीं हिचकिचायी और आगे बढ़ी। फौरन थानेदार ने गोली चलायी और वीरांगना कनकलता वहीं पर चिरनिन्द्रा में सो गयी।

झंडा चढ़ कर रहा

थानेवालों ने इसके बाद भीड़ पर भी गोली चलायी और श्रीमुकुन्द काकता नामक एक नौजवान, जिसने कनकलता के हाथ से झंडा ले लिया था, पुलिस की गोलियों का शिकार हो गया। अन्य लोगों को भी गोलियाँ लगीं। इधर जब पुलिस गोली चलाने में लगी हुई

थी तो कुछ क्रान्तिकारी थाने पर चढ़ गये, और थाने की छत पर तिरंगा फहरा दिया। इस हत्याकांड में ६० के करीब आदमी मरे। पुलिस तो यही कहती है कि केवल ६ व्यक्ति मरे।

ढोकाईजुली हत्याकांड

इसी दिन तेजपुर से १६ मीलदूर पर ढोकाईजुली में भी इतिहास निर्माण हो रहा था। इस इलाके में पहाड़ी तथा चाय बगान के कुलियों की संख्या अधिक थी। यहाँ भी जनता ने थाने पर झंडा फहराने की कोशिश की। जुलूसवालों ने शान्तिपूर्ण तरीकों से थानेवालों से कहा कि हमें झंडा फहरा लेने दीजिये। थाने वाले राजी नहीं हुए और अंधाधुन्ध गोली चलाने लगे। इस गोली कांड में २० व्यक्ति शहीद हुए जिनमें फुलेश्वरी नाम की एक १२ साल की लड़की भी थी। यहाँ भी झंडा फहरा दिया गया। यह इलाका विशेषकर उन लोगों का था जो आदिवासी करके अभिहित किये जाते हैं। भला सरकार इस बात को कब बर्दाश्त कर सकती थी कि इन लोगों में इस प्रकार जोश फैले? इसलिये इस घटना के बाद ही फौज आयी, और जनता पर उसने मनमाना अत्याचार किया। और अत्याचारों के अलावा स्त्रियों पर बलातकार भी हुआ। किराये के गुंडे भी जनता के विरुद्ध इस्तमाल किये गये। पास ही एक मेला लगा हुआ था। फौजियों ने यह समझा कि ये लोग भी कुछ प्रदर्शन कर रहे हैं उनपर अंधाधुन्ध गोली चलायी। १६ व्यक्ति मारे गये और १०० से अधिक बुरी तरह घायल हुए। जो लोग मारे गये उनमें से ८ स्त्रियाँ भी थीं. जिनमें से एक गर्भवती थी। अधिकारी वर्ग निहत्थी भीड़ पर गोली चलाकर ही सन्तुष्ट नहीं हुए। बाद को इन फौजियों में से एक व्यक्ति टहलता हुआ अस्पताल पहुँचा। वहां पर उसने एक व्यक्ति को बहुत घायल अवस्था में पड़ा हुआ पाया, तो उसने समझा कि यह आज के झगड़े से घायल हुआ है। बस, फौरन उसने उसके सीने पर रिवाल्वर तान दिया, और गोली भी चला दी होता, पर खैरियत यह हुई कि डाक्टर

वहीं पर मौजूद थे, और उन्होंने फौजी से कह दिया कि यह उस झगड़े का घायल नहीं है।

तेजपुर में गोली कांड

जब इन गोली कांडों की खबर तेजपुर में पहुँची, तो इसके विरुद्ध आवाज उठाने के लिये एक सभा बुलायी गयी। देहाती जनता इस सभा में भाग न ले सके, इस उद्देश्य से शहर आने जानेवाली सब सड़कों पर सशस्त्र पहरा बैठा दिया गया। फिर भी कुछ लोग आही गये और सभा करने की कोशिश करने लगे। पर अधिकारी तो तुल चुके थे। वे चाहते थे कि यदि तेजपुर में जनता को दबा दिया जाय तो आसाम के इस इलाके में शान्ति रहे। जनता से कहा गया कि वे सभा न करे, पर जनता ने इस नादिरशाही हुक्म को मानने से इनकार किया। बस अंधाधुन्ध गोली चलायी जाने लगी, और उसमें १०० के करीब आदमी बुरी तरह घायल हुए।

दारोगा जी ने नाम कमाया

यह हत्याकांड कोई आकस्मिक नहीं था, सरकार की नीति ही यह थी कि इस इलाके में लोगों को कुचल दिया जाय। पार चारकूची थाने के जोलाछोट गाम में कांग्रेसियों की एक सभा हुई थी। शायद पुलिसवालों को ठीक समय पर पता नही लगा। इस कारण वे सभा के समय नहीं पहुँच सके। पर दारोगा जी को तो अपनी नामवरी करनी थी और यह दिखाना था कि वे लड़खड़ाते हुए साम्राज्यवाद को बचाने के लिये हर तरह की चेष्टा कर रहे हैं। इसलिये वे दौड़ लेकर रास्ते में खड़े रहे और सभा से लौटते हुए कुछ लोग आपस में बातचीत करते हुए चले जा रहे थे, उनसे बोले कि इस तरह क्यों चल रहे हो, फौरन तितर बितर हो जाओ। इस पर लोगों ने कहा कि हम तो अपने अपने घर जा रहे हैं। इसपर दारोगा जी ने कहा कि घर जा रहे हो तो अलग अलग जाओ, पर जनता ने इस प्रकार

अपमान जनक हुक्म को मानने से इनकार किया। बस, दारोगा जी ने फौरन गोली चलायी, और बजाली हाईस्कूल की चौथी श्रेणी के छात्र मदनचन्द्र बर्मन तथा सदारी गांव के रामतरन दास पुलिस की गोलियों से मारे गये। दारोगा जी को इतने ही से खुशी नहीं हुई। वे लपककर एक दूसरी सड़क पर पहुँचे, जहाँ लोग सभा से लौट रहे थे। दारोगा जी ने इनपर भी गोला चलवा दी। दारोगा जी का मतलब कदाचित यह था कि सभा हो गयी, पर लोग उसके जहरीले असर को अपने साथ लेकर न जांय। इसी कारण उन्होंने ये गोलियाँ चलायीं। एक दारोगा ने इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य को बचाना चाहा। पता नहीं वे अब कहाँ हैं।

घर से निकालकर मारा

१९४२ की क्रान्ति में जनता ने ही नये तरीके का इस्तमाल किया ऐसी बात नहीं। हम देख चुके कि पारकारचुकी के थानेदार ने सभा से लौटकर घर जाते हुए लोगों पर गोली चलाने का नया तरीका इस्तमाल किया। छोटिया तथा बेहला थानों के थानेदारों ने भी नया तरीका इस्तमाल किया। २० सितम्बर को जनता ने इन थानों पर झंडा फहरा दिया। उस समय तो दारोगा ने कुछ नहीं कहा, पर बाद को वे पुलिस लेकर इस झंडा समारोह के अगुओं के घर पर पहुँचे, और उन्हें घर से निकाल-निकाल कर मारा पीटा, घर वालों पर अत्याचार किया, छाती पर रेंगवाया, और जो भी उपाय समझ में आये उनसे उनको सताया।

शान्ति सेना के शहीद

नवगांव जिले में क्रान्ति की ज्वाला बहुत प्रबल रूप से भड़की। यहाँ की जनता ने शान्ति सेना बना रखी थी और लोग तुरही बजाने पर इकट्ठा हो जाया करते थे। सरकार इस बात को जानती थी पर कुछ कर नहीं पाती। एक दिन सरकारी छापेमार फौज चुपके से बेबजिया

गांव पर पहुँचा, वहाँ शान्ति सेना का एक सैनिक पहरे पर था। उसने जो सरकारी फौज को देखा तो तुरन्त तुरही उठा लिया और उसने फूँक मारने की तैयारी की। फौजी कमांडर ने तमंचा तान दिया और कहा—फूँका कि मारे गये, पर उस सैनिक ने जिसका नाम तिलक केकाह था फौरन तुरही बजा दी। साथ साथ गोली भी चली और उसकी लाश वहीं पर गिर गई। फौरन जनता इकट्ठी हो गयी और उसने फौज को घेर लिया, पर फौजियों ने गोली चलाना जारी रखा और जनता अपने वीर की मृतदेह को लेकर तितर बितर हो जाने को बाध्य हुई। कई आदमी घायल हो गये। बाद को लाश को ले जाने के अपराध में इस गाव के ३०० आदमी गिरफ्तार हुए। इन गिरफ्तार व्यक्तियों पर हर तरीके का अत्याचार किया गया। शान्ति सेना के दफ्तर में आग लगा दी गयी और जब एक शान्ति सैनिक ने इसके विरुद्ध आवाज उठायी तो उसे पकड़कर उसी आग में झोंक दिया गया।

पुल पर काल्पनिक हमला से रक्षा

इस गांव पर बराबर अत्याचार हुये। २० अगस्त को ही बस गांव के पास एक पुल के नीचे फौज छिपी हुई थी। मुखबिर ने शायद यह खबर दी थी कि गांव वाले पुल को उड़ाने वाले हैं। जब उस तरफ से कुछ निरीह गांव वाले शौच आदि के लिये निकले, तो उनपर फौजियों ने अंधाधुंध गोली चला दी। कई व्यक्ति वहीं पर घायल होकर गिर पड़े। इस प्रकार साम्राज्यवाद का पुल बचाया गया था।

झंडा नहीं उतरा

गोहा हाई स्कूल की इमारत में राष्ट्रीय झंडा लहरा रहा था। छात्र बहुत दिनों से नहीं आते थे। वहां पर सिर्फ शिक्षक डटे हुए थे। एक दिन एक गोरा सिपाही उधर से जा रहा था, झंडा देखकर चौंक पड़ा और वहीं पर खड़े होकर उसने शिक्षकों को हुक्म दिया कि

इस झंडे को उतार लो। शिक्षकों ने इससे इनकार किया। बस वह गोरा आगबबूला हो गया और उसने शिक्षकों पर मारपीट करना शुरू किया। शिक्षक मारे गये पर झंडा नहीं उतरा।

झंडे के लिए बुढ़िया पर गोली

नवगांव जिले के बहरमपुर नामक स्थान में कांग्रेस की एक सभा होने वाली थी। इस उपलक्ष्य में देहातीगण झंडा ले लेकर के आये हुये थे। पुलिस और फौज को भी खबर लग गयी और वहां स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी इकट्ठे हुए। फौजी तथा सिपाही भी आ गये। रत्नमाला नाम की एक बच्ची के हाथ में एक झंडा था। पुलिसवालों ने जो जनता के हाथ से झंडा छीनना शुरू किया तो रत्नमाला का झंडा भी छीन लिया, और झंडा छीनकर उसे एक धक्का भी दे दिया जिससे वह गिर पड़ी। उस लड़की की दादी भोगेश्वरी फुकनानी वहीं पर मौजूद थी, उसने जो इस झंडे का अपमान देखा और पोती को गिरते देखा, तो उसने झंडे को छीन लिया और उसके डंडे से उस गोरे सार्जेण्ट पर हमला किया। बस, इस पर उस बुढ़िया को गोली मार दी गयी और वह झंडा हाथ में लेकर मर गयी।

शहीदों की टोली

इस पर जनता ने जोर का जयकारा किया और झंडे की मर्यादा के लिये दौड़ पड़ी। पुलिस ने फौरन गोली चलायी। इस अवसर पर लक्ष्मीराम हजारिका और थानूराम सूत तथा बालूराम सूत दो भाई मारे गये। लक्ष्मीराम हजारिका मरते समय अपनी जेब से ६ पैसे निकालकर जनता को देश के नाम देते गये। इस वीर के दिये हुए ये पैसे राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में रखे हुए हैं। जिस समय लक्ष्मीराम की पत्नी को अपने पति की मृत्यु की बात मालूम हुई तो उसने बड़ी खुशी इसलिये प्रकट की कि देश के काम में उसका पति शहीद हुआ।

यद्यपि पुलिस ने इस अवसर पर इस प्रकार अंधाधुन्ध गोली चलायी, पर शहीदों की लाशों को नहीं पा सकी। जनता उनको रात भर अगोरे बैठे रही और जब सवेरे फौजी तथा पुलिस वाले अपना कर्तव्य कर के चले गये, तो जनता ने उनका जुलूस निकाला।

कामरूप में आन्दोलन

कामरूप जिले में आंदोलन पहले शांतिपूर्ण रहा। जुलूसों और सभाओं तक सीमित रहा, पर जब सरकार ने दमन किया और व्यर्थ में लोगों की हत्या की, तब आन्दोलन ने क्रांतिकारी रूप ग्रहण किया। २६ अगस्त को जनता ने इस जिले के सोरभग नामक हवाई अड्डे पर धावा बोल दिया, और वहाँ जो कुछ भी सामान मिला उसमें आग लगा दी। ३ सामरिक लारियों में भी आग लगा दी गयी। जनता ने यह केवल सामूहिक जोश में नहीं किया था, यह इस बात से प्रमाणित है कि ऐसा करते समय जनता ने पहले से वहाँ आने के सब रास्तों को काट दिया था तथा नदी पार करने के नावों को जला या छिपा दिया था। इस कारण जब महकुमा आफिसर को इस अग्निकांड की बात ज्ञात हुई तो वे आग बुझाने तथा जनता को सजा देने के उद्देश्य से चल पड़े, पर वे पहुँच न सके। सरकार को लाखों का नुकसान हुआ। इन तोड़-फोड़ों में स्त्रियों का भी हाथ था। आसाम की वीर महिलाओं ने बराबर आन्दोलन में पुरुषों का हाथ बँटाया। इस हवाई अड्डे के अतिरिक्त अन्य अनेक सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी थी।

८) रुपये के लिये संगीन से छेदा गयी

ग्वालपाड़ा जिले में आन्दोलन का कोई बहुत अधिक जोर नहीं रहा। फिर भी यहाँ सरकार को कई दिन तक बेकार कर दिया गया था। यहाँ भी तोड़-फोड़ के कुछ कार्य हुए। यहाँ पर निधन नामक एक व्यक्ति से ८) रु० जुर्माना वसूल करने के लिये उसके दो बैल

खोल लिये गये। इसपर निधन ने आपत्ति की तो चौकीदार ने जाकर झूठी रिपोर्ट कर दी कि उस पर भाला चलाया गया। बस इस पर सामरिक लारी आ गयी और अंधाधुन्ध गोली चलायी गयी। निधन ने घर बन्द कर लिया था इसलिये दरवाजा तोड़कर उसे निकाला गया, और संगीनों से कोंचकर उसे मार डाला गया।

स्वतंत्र राष्ट्र

चारीगांव, हाथीगढ़, तेवका आदि स्थानों में स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना की गयी थी और इन राष्ट्रों की तरफ से यह चेष्टा हुई थी कि फौजियों को गाय, भेड़, बकरी, मुर्गी कुछ न मिले। इस पर फौजी गांवों पर चढ़ आये और उन्होंने मनमाना तरीके से गांव वालों को पीटा तथा लूटा। तेवका के वीर नारियों ने जब फौजियों को आते देखा तो हाथ में तिरंगा ले लिया और संगीनों की मार के बावजूद तिरङ्गा लेकर डटी रहीं। आसाम में आंदोलन का क्रांतिकारी रूप सितम्बर में शुरू हुआ और जब तक गांधी जी के अनशन वाले पत्र प्रकाशित न हुए तब तक चलता रहा। चार महीने तक सरकार को सामरिक शासन करना पड़ा, फिर भी पुलिस और फौज केवल कुछ केन्द्रों में ही अपना अधिकार कायम रख सकी। देहातों में क्रांतिकारियों का जोर रहा।

कौशल कोनवर

अब हम आसाम के विवरण को कुछ शहीदों के विवरण से समाप्त करते हैं। कौशल कोनवर अहोम जाति के थे। उन्होंने रेल लाइन के तोड़ फोड़ में हिस्सा लिया था। उन पर मुकद्दमा चला और फांसी की सज़ा दी गई और १९४३ के १५ जून को उन्हें फांसी दे दी गयी। उन्होंने फांसी पर चढ़ने के पहले यह कहा था कि 'जिस सार्थक लक्ष्य के लिए मुझे फांसी हो रही है, इसका मुझे गौरव है, ईश्वर मुझ पर अधिक कृपा रखते हैं, इसी कारण उन्होंने मुझे इस काम के लिए चुना।' वे 'पार करो दीनानाथ संसार सागर' गाना

गाते हुए फासी पर झूल गये। श्री बरदोलोई उन दिनों उसी जेल में थे और उन्हें किसी तरह इस वीर बन्दी से फांसी के पहले दिन मिलने का मौका हुआ था। इस भेंट का उन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। शहीद की बातों से ईश्वर पर विश्वास टपकता था। फांसी के सम्बन्ध में कौशल कोनवर ने कहा कि यह तो कोई बात नहीं, पैदा होते समय डेढ़ घण्टा कष्ट झेला था, इसमें तो कुछ मिनटों का ही काम है। फासी घर में कौशल कोनवर का वजन बढ़ गया था। वे बराबर गीता पढ़ा करते थे। जब सवेरे जल्लाद फासी के लिए आये तो पाच मिनट तक प्रार्थना करने के बाद वे उठ खड़े हुए, ऐसे चल दिये जैसे कहीं टहलने जा रहे हों।

कमला मिरी

जो लोग जेल में भेजे गये उनपर कैसे कैसे मानसिक तथा शारीरिक अत्याचार किये गये, यह कमला मिरी के जीवन से पता लगता है। उन्हें जेल में ले जाकर माफी मांगने के लिए तरह तरह का कष्ट दिया गया। पर उन्होंने माफी मांगने से इनकार किया। उन्हें मानसिक कष्ट देना जारी रहा और वे घुलघुल कर जेल में मर गये।

बगाल में अगस्त क्रान्ति

संगठानिक कमजोरी

बंगाल के आंदोलन के पहले ही २ हजार नवयुवक नजरबन्द हो चुके थे। फिर बगाल की काग्रेस १९४२ में बड़ी विभक्त हालत में थी। सुभाष बाबू को कांग्रेस के पदों से हटा दिये जाने के कारण वहाँ दो कांग्रेस हो गयी थी। कार्यसमिति द्वारा स्वीकृत कांग्रेस बिल्कुल बेकार थी, पर दूसरी काग्रेस भी फूट के कारण कुछ विशेष सफल नहीं रही। इसके अतिरिक्त इस कांग्रेस के बहुत से लोग गिरफ्तार हो चुके थे। बंगालियों में गाधी जी की विचारधारा के प्रति कभी श्रद्धा नहीं थी, साथ ही ऐतिहासिक कारणों से जिनका वर्णन हम

पहले भाग में कर चुके हैं, आतंकवादी संगठन बिखर गये थे। कम्युनिस्ट पार्टी तो लोक युद्ध का नारा देकर कांग्रेस के कार्यक्रम से अलग ही हो चुकी थी। इस कारण बंगाल में करो या मरो का नारा देते ही कुछ नहीं हो पाया। बंगाल में मुस्लिम लीग का जोर बढ़ता जा रहा था, इस कारण मुसलमान अर्थात अधिकतर बंगाली जनता आंदोलन से पृथक रही।

नाव सायकल जब्त

फिर बंगाल के मेदिनीपुर में आंदोलन ने जो सफलता प्राप्त की वह अभूतपूर्व है। मेदिनीपुर में १९३९ में ही कांग्रेस अच्छी तरह संगठित थी। जापानी आक्रमण शुरू होते ही सरकार का ध्यान मेदिनीपुर पर गया, और मेदिनीपुर खतरनाक रकबा घोषित किया गया। मेदिनीपुर में रेल कम है, इस कारण बस चलते थे, पर बसों का तेल बहुत कम कर दिया गया था। १९४२ के ८ अप्रैल को सरकार ने यह हुक्म दिया कि कांथीं और तमलूक महकुमें के नन्दी ग्राम और मैना थाने के इलाके की सब नावें ३ घटे के अन्दर हटा दी जायँ और ६० मील दूर पहुँचायी जायँ। इस हुक्मनामे का पालन सम्भव नहीं था। नतीजा यह हुआ कि सब नावें जला दी गयीं। स्मरण रहे कि नावें बंगालियों के लिये केवल यातायात के साधन नहीं हैं बल्कि जीविका के भी साधन हैं, क्योंकि बगाल में मछली मारना कृषि के बराबर ही महत्वपूर्ण धंधा है। उसके बाद सरकार की तरफ से हुक्म आया कि सायकल जमा कर दी जाय। तदनुसार सब सायकलें जमा हो गयीं।

विद्युत वाहिनी

नाव के लिये जाने के कारण तथा फौजी कार्य के लिये अनाज की खपत बढ़ जाने के कारण पहले ही से लोगों को मालूम था कि जिला में दुर्भिक्ष पड़ेगा। इसके लिये लोगों ने जाकर अधिकारियों से

कहा भी पर कोई सुनायी नहीं हुई। तब लोग जहाँ तक हो सका अपनी मदद आप करने लगे। ६ अगस्त के पहले ही मेदनीपुर में जापानी आक्रमण के समय सगठित रहने के उद्देश्य से विद्युत वाहिनी नाम की सेनायें बनायी गयीं। इनकी संख्या पांच हजार तक पहुँची थी; ७० स्वयंसेविकायें भी थीं। ये स्वयसेवक तथा स्वयसेविकायें २४ घण्टा काम करने वाली थीं।

चावल का मिल पर संघर्ष

१९४२ के आठ सितम्बर को एक थानेदार ने मेदनीपुर की एक चावल की मिल के मालिक को इस सम्बन्ध में मदद देना चाहा जिससे वह चावल बाहर भेज सके। कोई ढाई हजार गांव वाले इकट्ठा होकर इसके विरोध में खड़े हो गये। पुलिस ने गोली चलाई, ३ आदमी मारे गये। यह सब जनता ने खुद किया था। जब गोली चली तो वह पीछे हट गयी, और कांग्रेस में खबर दो गयी। कांग्रेस की ओर से ४० स्वयंसेवक आये और उधर ४० सशस्त्र पुलिस आयी। स्वयसेवक यह मांग करने लगे कि चावल बाहर न भेजा जाये और उन तीन व्यक्तियों की लाशें दे दी जायें। अधिकारीवर्ग लाशें देने पर राजी हुए, पर अन्त तक वादाखिलाफी की, और लाशों को नदी में डाल दिया, गांव वालों ने उन्हें नदी से निकाल लिया और उन तीनों को एक चिता पर दाह किया गया। इस अपराध के कारण अगले दिन पुलिस ने ६ गाँवों पर धावा किया, २०० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया, दिन भर उन्हें धूप में बैठाया, और बाद को १८ व्यक्तियों को डेढ़ से लेकर २ साल तक सजा कर दी। पर चावल के मिल मालिक को दबना पड़ा, जनता ने उस पर डेढ़ हजार रुपया जुर्माना किया। ये रुपये गोली से शहीद व्यक्तियों के घरों में बाँटा गया। मिल मालिक ने चावल की रफ्तनी न करने का वादा किया।

सभा जुलूस

अन्त में सरकार ने चावल बाहर भेजना बन्द कर दिया, पर

इसका पालन नहीं होता था, इस कारण काग्रेस के लोगों को खबर लगते ही वे पिकेटिंग आदि करके चावल को रोकते थे। १६ अक्टूबर को जो भयकर आधी आयी तो सरकार ने चावल पर सचमुच रोक लगा दी। अब मेदिनीपुर में काग्रेस का सन्देश पहुँच गया। गाँव गाँव में सभायें हुई तथा जुलूस निकाले गये। प्रत्येक इलाके में सभा हुई और उस इलाके को स्वतंत्र घोषित किया गया। स्वयसेवक पुलिस का काम करते थे।

महिषादल स्वतंत्र

महिषादल थाने के सामने २० हजार जनता की सभा में स्वतत्रता की घोषणा कर दी गयी, इस पर एक उच्चकर्मचारी मिस्टर शेख पहुँचे, और उन्होंने चार व्यक्तियों को गिरफ्तार करना चाहा, पर जनता ने गिरफ्तारी नहीं होने दी। तब उन्होंने सिपाहियों से कहा कि लाठी चार्ज कर भीड़ तितर-बितर कर दो, पर इस पर सिपाही राजी नहीं हुए। इस पर मिस्टर शेख झेप कर वापस चले गये। महिषादल में स्कूल के शिक्षकों तथा छात्रों ने काग्रेस का साथ दिया।

अपना डाक विभाग, अपना राज्य

इस जिले में काग्रेसी डाक विभाग भी चालू किया गया था। इसी डाक विभाग के जरिये से कांग्रेस सगठन तथा काग्रेसी एक दूसरे से सम्बन्ध रखते थे। प्रान्तीय काग्रेस कमेटी से भी इसी डाक विभाग के जरिये सम्बन्ध कायम था।. विप्लवी नाम से साइक्लो स्टाइल से छपा हुआ एक पर्चा बराबर निकलता था। सरकार के साथ युद्ध घोषणा के पहले ही मेदिनीपुर के स्वयंसेवकों के अपने शिविर थे। जब आन्दोलन चला तो शिविर तथा स्वयसेवकों की सख्या बढ़ी। अदालतों का बायकाट वाला कार्यक्रम बहुत सफल रहा। १६३० के आन्दोलन में ही सरकार ने मेदिनीपुर जिले की म्युनिसिपलिटियों को अपने कब्जे में कर लिया था, पर १६४० से उन पर काग्रेसियों का

अधिकार था। इनके जरिये से राष्ट्रीय कार्य होते थे। चौकीदार और जमादारों की सरकारी वर्दी इकट्ठी कर जला डाली गयीं। जिन यूनियन बोर्डों ने क्रान्तिकारियों से सहयोग नहीं किया था उन पर कब्जा कर लिया गया, और उनके कागजात जला दिये गये।

क्रान्ति शुरू

१९४२ के २९ सितम्बर को मेदिनीपुर के क्रान्तिकारियों की एक सभा में यह तय हुआ कि थाने, अदालत तथा सरकारी अन्य केन्द्रों पर एक साथ हमला कर दिया जाय। पांसकुड़ा और मैना थानों के अतिरिक्त सब थानों पर हमला किया गया। २८ सितम्बर की रात को पेड़ काटकर महत्वपूर्ण सड़कों पर गिरा दिये गये, और रास्ते बन्द कर दिये गये। ३० पुल तोड़ दिये गये। २७ मील टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काटे गये और १९४ तार के खमे गिरा दिये गये। कोशी और हुगली नदी की नावे डुबा दी गयीं।

सरकार आफत में

सरकार को उसी रात को खबर लग गयी और तम्लुक पांसकुड़ा सड़क को सरकार ने मुक्त कर लिया और २९ सितम्बर २ बजे दिन तक सड़क मोटर आने जाने लायक होगयी। दूसरे रास्तों को साफ करने में १५ दिन लगें। इस बीच में नावें भी बन्द थीं। २९ तारीख को ही थानों पर हमले हुए। एक खास बात यह है कि जिनको भी गोली लगी, उनको सामने की तरफ गोली लगी। २९ तथा उसके बाद सात दिन के अन्दर बहुत सी सरकारी इमारतों के अतिरिक्त १२ शराब की दूकानें भी जला डाली गयीं, चौकीदारों की ३०० वर्दी जला दी गयी, क्रान्तिकारियों ने १३ सरकारी कर्मचारियों को गिरफ्तार किया, पर जब इन्होंने यह वादा किया कि वे आगे सरकार की नौकरी नहीं करेंगे, तो उनको अपने-अपने घर का किराया देकर छोड़ दिया गया। क्रान्तिकारियों ने कुछ बन्दूकें तथा तलवार भी इकट्ठी कर ली।

रामचन्द्र बेरा की शहादत

२९ तारीख को ३ बजे दिन को बड़ी भारी भीड़ों ने चार जुलूस बनाकर शहर पर हमला किया। बड़ा जुलुस पश्चिम से आया। उसमें ८ हजार क्रान्तिकारी जनता थी। थाने के पास पहुँचते ही जुलूस पर लाठी चार्ज किया गया. लाठी चार्ज व्यर्थ हुआ तो गोली चली। ५ व्यक्ति शहीद हो गये। तब भीड़ तितर बितर हुई पर कुछ लोग आगे बढ़ते हुए फिर भी मारे गये। रामचन्द्र बेरा नामक एक घायल व्यक्ति के घाव से बहुत खून आ रहा था पर वह और आगे बढ़ता हुआ थाने के दरवाजे तक पहुँचा और 'मैंने थाने पर कब्जा कर लिया' कहकर वहीं पर वीरगति को प्राप्त हुआ।

मातंगिनी हाजरा

उत्तर से जो जुलूस आ रहा था उसका नेतृत्व मातंगिनी हाजरा नाम की ७३ साल की बुढ़िया कर रही थी। बानपुकुर के पास जुलूस पर फौज ने लाठी चार्ज किया। तब लक्ष्मी नारायण दास नामक एक लड़के ने आगे बढ़कर एक फौजी की बन्दूक छीन ली, इस पर फौजियों ने उसे बहुत मारा और मार डाला। मातंगिनी हाजरा के नेतृत्व में फिर जुलूस आगे बढ़ा। उनके हाथ में तिरंगा था। फौज ने उनके दोनों हाथों में गोली मार दी, हाथ झुके पर झंडा नहीं झुका। वह फौजियों को नौकरी छोड़ने के लिये कहती हुई आगे बढ़ी। इस पर उनके ललाट पर एक गोली लगी और वे वहीं गिर पड़ीं, पर हाथ में झंडा कसकर पकड़ा हुआ था। एक फौजी ने आकर लात मार कर झंडा को अलग कर दिया।

फौजी झेंपा

मातंगिनी हाजरा तथा लक्ष्मी-नारायण के अतिरिक्त १४ साल का लड़का पुरी माधव प्रामाणिक, नगेन्द्र नाथ सामन्त और जीवन बन्धु बंश भी शहीद हुए। जो घायल हुए उनमें से कुछ को जनता

ने अस्पताल पहुँचाया। एक घायल पानी पानी चिल्ला रहा था, इस पर एक स्त्री आंचल भिगो कर उसे पानी की बूँदें देने के लिये आगे बढ़ी तो एक फौजी ने उसे मना किया, इस पर उस वीरांगना ने चिल्ला कर कहा कि तुम मुझे मारना चाहो तो मार सकते हो, पर मैं पानी दूंगी। इस पर वह फौजी झेंप कर अलग हो गया।

दक्षिण के जुलूस पर गोली

दक्षिण से जो जुलूस आरहा था, वह ज्योंही राकर आरा पुल में पहुँचा तो उस पर गोली चला दी गयी। १७ साल का निरंजन जना तथा २२ साल का पूर्णचन्द्र मायती घायल हुए, बाद को वे अस्पताल में मर गये। अन्य बहुत से लोग घायल हुए। जुलूस में जो स्त्रियाँ थीं वे घायलों की परिचर्या करने लगीं, फौजियों ने बाधा दी, तो वे चली गयीं, और एक एक बाल्टी पानी तथा हसुआ लेकर लौटीं, और चिल्ला कर फौजियों से बोलीं कि यदि हमारे काम में बाधा दोगे तो इस हसुआ से गला काट डालेंगी। इस पर फौजी चुप हो गये। इन स्त्रियों ने सब घायलों को घर तथा अस्पताल पहुँचा दिया।

महिषादल

दक्षिण पश्चिम से ३ हजार का एक जुलूस आया, पर उस पर लाठी चार्ज हुआ, और गिरफ्तारियाँ हुईं। अन्त तक सात ही व्यक्ति गिरफ्तार रहे। इनको बाद को दो दो साल की सजा दे दी गयी। पश्चिम से भी एक जुलूस आया, उस पर लाठी चार्ज हुआ।

यद्यपि शहर पर जनता का कब्जा न हो सका पर देहातों में जनता सफल रही। २६ सितम्बर को महिषादल थाने की तरफ जो जुलूस गया, उस पर गोली चलाकर दो मार दिये गये और १८ जख्मी हुए। पर इस बीच में विद्युत वाहिनी के नेतृत्व में संगठित एक २५ हजार का जुलूस इस जुलूस से आकर मिला। फिर गोली चली। जनता कुछ पीछे हटी। चार बार थाने पर हमला हुआ। दारोगा

के मकान में आग लगा दी गयी। सुभाषचन्द्र सामंत और खुदी राम बेरा घायल होने पर भी गिरफ़ार किये गये। खुदी राम हवालात में मर गये। अन्त तक जनता की जीत हुई।

सूताहाटा

२६ सितम्बर को सूताहाटा थाने पर पूर्व तथा पश्चिम से ५० हजार जनता टूट पड़ी। इन जुलूसों के सामने वर्दी से लैस विद्युत वाहिनी तथा भगिनी सेना शिविर के सदस्य तथा सदस्यायें थीं। सूता-हाटा थाने के इनचार्ज ने जनता से तितर बितर होने के लिये कहा। पर जनता ने उसे गोली चलाने का मौका न देकर ही गिरफ़्तार कर लिया, और उनके हथियार छीन लिये। कुछ कारतूसों के साथ ६ रायफल और २ तलवारें ले ली गयीं। थाने की पक्की इमारत में आग लगा दी गयी, और थाने के अन्दर की सब चीजें जला दी गयी। इस मौके पर ३ हवाई जहाज आकर बहुत नीचे जनता पर उड़ने लगे, और इनमें से कम से कम एक बम गिराया गया। (बाद को सेशन की अदालत में पुलिस की गवाही में यह बताया गया कि यह गिरायी हुई वस्तु बम नहीं थी बल्कि तरल आग की सी कोई वस्तु थी।) इसके बाद क्रान्तिकारी जनता इलाके भर में फैल गयी और खासमहल, सबरजिस्ट्रार तथा यूनियन बोर्ड के दफ़्तरों में आग लगा दी गयी। जो सरकारी नौकर गिरफ्तार हुए उनके साथ अच्छा बर्ताव किया गया, और उन्हें किराया देकर घर भेजा गया।

३० सितम्बर को १० हजार जनता ने नन्दीग्राम थाने पर हमला किया। पुलिस वालों ने आड़ में रहकर गोली चलायी। चार उसी समय मरे, बाद को एक अस्पताल में मरा, १६ घायल हुए। पर जनता ने लौटकर बाकी सब सरकारी इमारतों में आग लगा दी। गांववालों को तंग करने के लिये पास में फ़ौज का पड़ाव डाल दिया गया, फ़ौजी गावों में जाते और मनमाना अत्याचार करते। पर फ़ौजियों

को भी गाववालों से इतना डर था कि वे कभी छोटी टुकड़ी में गांव की तरफ नहीं जाते थे।

ताम्रलिप्त जातीय सरकार

१६ अक्टूबर को जो भयंकर आंधी आयी उसमें दस हजार व्यक्ति और तीन चौथाई ढोर मर गये। इस प्राकृतिक विपत्ति के साथ साथ दुर्भिक्ष भी पड़ा। सरकारी पिट्ठुओं ने यह प्रचार किया कि कांग्रेसियों के कारण यह सब हुआ। पर जनता इससे नहीं बहकी। १९४२ के १७ दिसम्बर को ताम्रलिप्त जातीय सरकार की स्थापना हुई और इसी सरकार के अधीन १९४३ की २६ जनवरी को सुताहाटा नन्दी ग्राम, महिषादल और तमलूक के प्रत्येक थाने में अपने थाने की जातीय सरकार स्थापित हुई।

विद्युत वाहिनी के विभाग

महिषादल में पहले पहल विद्युत वाहिनी संगठित हुई थी, पर बाद को तमलूक आदि स्थानों में विद्युत वाहिनी का संगठन हुआ। इसकी तीन शाखायें थी। (१) सामरिक (२) खुफिया (३) एम्बुलेंस। बाद को यही विद्युत वाहिनी को जातीय सरकार ने अपनी सेना करके घोषित की और इसके दो विभाग और खोले गये। (१) गरीज्ञा (२) भगिनी सेना। अब इन सेनाओं के जरिये से चोर डकैत भी गिरफ्तार किये जाते थे और जातीय सरकार उनको सजा देती थी।

जातीय सरकार समाप्त

जातीय सरकार के प्रथम सर्वाधिनायक सतीश चन्द्र सामन्त हुए। इसके बाद कई अधिनायक हुए। चतुर्थ सर्वाधिनायक वरदाकान्त कुइती ने १९४४ के ८ अगस्त को एक वक्तव्य देकर इस संस्था को भंग कर दिया, महात्मा जी के वक्तव्यों के कारण ही ऐसा हुआ था। इसके बाद विद्युत वाहिनी भी भंग कर दी गयी।

न्याय विभाग

जातीय सरकार ने अपने करीब करीब २ साल के जीवन में बहुत से मुकद्दमों का फैसला किया। इस अदालत में मुकद्दमा चलाने के लिये १) फीस देनी पड़ती थी। बाद को यह फीस २) कर दी गयी, फिर १९४४ की १लीं जनवरी को फीस ४) रुपये हो गयी। इन अदालतों में दीवानी, फौजदारी दोनों तरह के मामलों के फैसले किये जाते थे। थाने की अदालत की अपील महकुमें में और महकुमें की अपील तीन जजों के स्पेशल ट्राइबूनल में सुने जाते थे। जनता के सुविधार्थ चलती फिरती अदालतें भी थीं। मुद्दई तथा मुद्दालह अदालत में मौजूद रहते थे, कभी कभी ३ सौ तक दर्शक मौजूद रहते थे। फौजदारी मामलेमें जुर्माना, अदालत उठने तक कैद, चेतावनी आदि सजा दी जाती थी। अदालत के हुक्म से फरारों की सम्पत्ति जब्त कर ली जाती थी। डिग्री जारी होने पर भी सम्पति जब्त होती थी। अधिकांश केसों में दोनों पक्ष फैसले को मान लेते थे। सूताहाटा जातीय सरकार ने ८३६, नन्दी ग्राम सरकार ने २२२, महिषादल सरकार ने १०४५ और तमलूक सरकार ने ७६४ मामलों का अर्थात सब मिला कर २९०७ मामलों की सुनाई की। इनमें से कुछ ही मामलों में ऊपर तक अपील हुई। जब जातीय सरकार तोड़ दी गयी, तो मुल्तवी मुकद्दमों की फीस लौटा दी गयी, पर बहुतों ने वापस नहीं लिया।

अन्य विभाग

जातीय सरकार का युद्ध विभाग दुर्भिक्ष, रोग, साथ ही डकैतों, चोरों का सामना करता था। दुर्भिक्ष के समय जातीय सरकार की सेना एक वक्त भात और दूसरे वक्त उबाले चने पर गुजारा करती थी। बहुत दिनों तक इन सैनिकों ने दिन भर में तीन छटांक चावल और २ छटांक चने पर गुजारा किया। ७६००० रुपयों की दवा, कपड़े गरीबों में बांटे गये। जातीय सरकार ने स्कूल भी ढंग से चलाये और उनके लिए अच्छे परिदर्शक नियुक्त किये।

दमन

सरकार ने मेदिनीपुर की जनता को दबाने में कुछ उठा नहीं रखा। एक तो दुर्भिक्ष, तिसपर नाव नहीं, और फिर सरकारी अत्याचार। एक गोरे ने सताने का एक ढङ्ग निकाला। आदमी को पकड़कर उसके मलद्वार में एक रूल घुसा दिया जाता था, और फिर उसे घुमाया जाता था। मेदनीपुर में स्त्रियों पर भी बलात्कार हुआ पर उनका विवरण हम अन्यत्र देंगे। नालू हाटा बाजार में एक सत्याग्रही छवी लाला बेरा को नंगा करके उसके लिंग पर चूना और सोडा लगा दिया गया, उस बेचारे ने आफत के मारे माफी माग ली। सूता हाटा के डाक्टर जनार्दन हाजरा के घर में आग लगा दी गई। शतीश चन्द्र मायती पर बेंत का प्रहार हुआ, फिर नाखून में सूई चुभोई गयी, फिर लिटाकर बूट सहित फौजी छाती पर चढ गये। इस पर भी उसने माफ नहीं लिखा। खुदीराम कुइंसा को नङ्गा करके पीटा गया, फिर उँगली मे सुई चुभोई गयी। इसके बाद पैर अलग करके खड़ा रहने पर मलद्वार में उँगली धर कर घुमाई गई। इस प्रकार दो हजार व्यक्तियों के साथ अत्याचार हुए। १०४४ घर लूट लिए गये।

कांथी

कांथी में अगस्त में ही नेताओं की गिरफ्तारी पर कई हड़तालें हुई। देहातों में भी सभायें होती रहीं और जुलूस निकलते रहे। ६००० स्वयसेवक तैयार हो गये, और प्रत्येक यूनियन में ८७ शिविर स्थापित हुए। सब स्कूल के छात्र स्वयसेवक हो गये। १४ सितम्बर को ४०००० हजार जनता बीस जुलूसों में दिन के तीन बजे ८ सड़कों से कांथी कस्बे की ओर बढ़ी। सरकार पर इतना आतंक छा गया कि पुलिस वाले भी चुप रहे। ६ सितम्बर को परगना के हाकिम ने युद्ध फंड के लिये एक नाच की व्यवस्था की, स्वयसेवकों ने इस नाच पर पिकेटिङ्ग की, इस पर कुछ गिरफ्तार हो गये।

तीन सप्ताह तक काथी की यह हालत रही कि वहाँ के लोग बाहर चले गये । बहुत से चौकीदारों ने खुशी से नौकरी छोड़ दी, पर कुछ को मजबूर किया गया। २० सितम्बर को ११ गिरफ्तार स्वयसेवकों को जनता ने छुड़ा लिया । कहीं स्वयमेवकों के शिविर पर पुलिस का हमला न हो इसलिये आने का रास्ता काट दिया गया । इस पर पुलिस ने आसपास वाले गांव को धमका कर रास्ता मरम्मत कराया । बाद को जनता आ गयी और पुलिस ने गोली चलायी जिससे २५ आदमी घायल हुए । काँथी पर जनता का पूरा कब्जा नहीं हुआ । पर १६ सितम्बर को परासपुर थाने पर जनता ने आक्रमण किया तो थानेदार भाग गया, और जनता ने पुलिसवालों की बन्दूकें छीन लीं । फिर थाने में आग लगा दी । इसके बाद कई सरकारी इमारतें जला दी गयीं । २८ सितम्बर को खजुरी थाने पर आक्रमण हुआ, और वहाँ थानेदार तथा सिपाही से हथियार ले लिये गये, थाने में आग लगा दी गयी तथा अन्य इमारतों में भी आग लगा दी गई । जनता ने हेनरिया, हलुदबाड़ी, कलागाछीया, अजय, बङ्का और खजुरी डाकखानों के सब पोष्टकार्डों, लिफाफों आदि में आग लगा दी गयीं, कई पुल जला दिये गये, दो आबकारी की दूकानों में आग लगा दी गयी । बाद को इनको दबाने के लिये ११ सिपाहियों के साथ सर्किल आफिसर आये पर वे नदी पार होते ही गिरफ्तार कर लिये गये, और उन्हें १० दिन तक कांग्रेस के कैदखाने में रखने के बाद सुन्दर वन में ले जाकर छोड़ दिया गया । २६ सितम्बर को २०००० जनता ने भगवानपुर थाने पर आक्रमण किया । इसी प्रकार अन्य कार्य हुए ।

मेदिनीपुर के अन्य घटनाओं का हम वर्णन नहीं करेंगे । सच तो यह है कि मेदिनीपुर के गाव गाव में इतिहास की सृष्टि हुई । केवल उसी के वर्णन के लिये एक विराट पुस्तक चाहिये ।

कलकत्ता

१० अगस्त को ही बङ्गाल की प्रान्तीय काग्रेस कमेटी को गैरकानून।

घोषित कर दिया गया। ११ और १२ को कलकत्ता में बहुत बड़े-बड़े जुलूस निकले और सभायें हुईं। १३ से मिलटरी लारियाँ सड़क पर पहरा देती हुई घूमने लगीं। फिर भी कलकत्ता तथा बङ्गाल अब तक इतना पीछे था कि १३ अगस्त को मिस्टर चर्चिल को यह कहने की हिम्मत हुई कि बम्बई में नेताओं की गिरफ़ारी से कलकत्ता तथा बङ्गाल सम्पूर्ण अविचलित है। शायद इसी कारण उसी दिन से कलकत्ता में सघर्ष शुरू हुआ। बङ्गाली छात्र बिगड़ खड़े हुए और हरीसन रोड और मिर्जापुर रोड के संगम तथा शङ्कर घोष लेन और कार्नवालिस स्ट्रीट के सङ्गम पर तीन ट्राम गाड़ियाँ जला दी गयीं। श्रीमानी बाजार के निकट पुलिस के साथ जनता का संघर्ष हुआ और गोली चली जिसमें वैद्यनाथ सेन शहीद हुए।

१४ अगस्त

१४ अगस्त को आन्दोलन और भी व्यापक हो गया। चौरङ्गी के अतिरिक्त शायद सभी मुहल्लों में गोली चली। टेलीफोन के तार काटे गये तथा ट्राम जलाये गये। डाकखानों पर हमले हुए। कुछ मीलों में हड़ताल हुई। फिर भी जनता यत्र-तत्र इकट्ठी होती रही और उस पर अश्रुगैस तथा गोलियों का प्रयोग किया गया। मिलटरी लारियाँ भी जलाई जाने लगीं। १४ तारीख को बम्बई मेल, दून एक्सप्रेस, दिल्ली एक्सप्रेस आदि गाड़ियाँ कलकत्ते से रवाना नहीं हुई। १३ अगस्त की शाम को जो अप पञ्जाब मेल रवाना हुआ था वह झाझा से लौट आया।

१५ अगस्त

१५ अगस्त को कलकत्ता का भीषण रूप हो गया। कलकत्ता के चित-रञ्जन ऐवन्यू से बराबर सामरिक लारियाँ चलती रहीं और वे बेनगन तथा टामीगन से बराबर गोली बरसाती रहीं। उस दिन हाथी बगान बाजार की एक मिठाई की दूकान में मिलटरी वाले घुस पड़े और लूट-पाट की। उस दिन ट्राम तथा बसों का चलना बन्द रहा।

१६ अगस्त

१६ तारीख को बालीगञ्ज ट्राम डिपो के पास एकडलिया रोड में बालीगंज सब पोस्ट आफिस में आग लगाई गई। दमकल आकर उसे मुश्किल से बुझा पाया। सन्ध्या समय विद्यासागर हॉस्टल के सामने गोली चली। उसी दिन ताराचन्द लाहा ऐवन्यू के पास एक ट्राम में आग लगा दी गयी थी, और उधर की जनता ने बाधा डालकर रास्ते को बन्द कर दिया था। पुलिस वाले तथा फौजी इस दिन भी मिठाई वाले के यहाँ घुसे। इन दिनों कितने आदमी गोलियों से मारे गये, इसका कुछ पता नहीं क्योंकि पुलिस ने सम्वाददताओं को आने जाने नहीं दिया, केवल 'बंगला भारत' पत्र कुछ कुछ खबरें छापता था, पर इस अपराध में इस पत्र के दफ़्तर पर ताला लगा दिया गया।

आन्दोलन धीमा, पर चालू

कलकत्ता में आन्दोलन इसके बाद धीमे धीमे बराबर चलता रहा। जहाँ भी जनता को मौका मिलता, वह सरकारी रेल कम्पनी, ट्राम कम्पनी तथा फौजी विभाग के चीजों में आग लगा देती, या उन्हें नुकसान पहुँचाती।

ढाका

बङ्गाल के अन्य जिलों में जो आन्दोलन हुआ उसमें कोई विशेषता नहीं है। इसलिए हम संक्षेप में ही उनका वर्णन करेंगे। कलकत्ता के बाद बङ्गाल का सबसे महत्वपूर्ण शहर ढाका में १० अगस्त को हड़ताल रही। विद्यार्थियों ने विशेष भाग लिया। जब हड़ताली विद्यार्थी एक स्कूल से दूसरे स्कूल को जा रहे थे तो उनके कार्य में बाधा पहुँचायी गयी। ११ अगस्त को भी विद्यार्थियों का जुलूस निकला, पर ईडेन गर्ल्स कालेज के सामने विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ। १३ अगस्त को जनता ने ढाका के मुंसिफ कोर्ट पर हमला किया और वहाँ कागजात में आग लगा दी। इस पर गोली चली और

एक मरे तथा कई घायल हुये। इस दिन टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार भी काटे गये। ढाका की सड़कें रोक दी गयीं और रेल की पटरियाँ भी उखाड़ी गयीं। १४ अगस्त को कुछ लोगों ने नवाबपुर, उआरि, टिकाटूली, लक्ष्मी बाजार, फरहामगंज और वाल्टर रोड के डाकखानों के कागजात में आग लगा दी। ढाकेश्वरी और लक्ष्मी नारायण काटन मिल्स में हड़ताल रही। १५ अगस्त को कई जगह जनता और पुलिस का संघर्ष हो गया। गोली चली और जनता के लोग मरे। नारायण गंज और ढाका के बीच गंडारिया स्टेशन पर आग लगायी गयी। कई जगह बम विस्फोट हुए। विशेषकर पुलिस अफसरों के घरों पर बम फेंका गया। ए० आर० पी० की इमारत में आग लगा दी गई।

१७ अगस्त को फरहासगंज थाने के दो देहाती डाकखानों में आग लगा दी गई। इसके बाद बराबर कहीं तार कटता तो कहीं बम फटता। इस प्रकार कुछ न कुछ तोड़ फोड़ के कार्य होते रहे। मुंशीगंज में बहुत दूर तक तार काटा गया। १४ सितम्बर को वहाँ एक सभा पर पुलिस ने गोली चलायी जिसमें तीन मरे। २२ सितम्बर को जनता ने नवाबगंज थाने पर कब्जा करना चाहा। एक व्यक्ति मरा और कई घायल हुए।

फरीदपुर

नेताओं की गिरफ्तारी पर यहाँ भी पहले जुलूस आदि निकाले गये फिर तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हुए। देहातों में भी तोड़ फोड़ फैल गया। ५ सितम्बर को मदारीपुर के छात्रों के एक जुलूस पर लाठी चार्ज हुआ। ६ सितम्बर को एक सभा पर लाठी चार्ज करके उसे भंग कर दिया गया। २ सितम्बर को एक जुलूस चिकदी अदालत की ओर बढ़ने लगा तो इस पर लाठी चार्ज हुआ। नरिया मे नजरबंद मजदूर नेता सुरेश बनर्जी को गिरफ्तार करते समय गाववालों में तथा पुलिस वालों में

संघर्ष हुआ। गांव वाले उन्हें गिरफ्तार नहीं होने देना चाहते थे। पुलिस ने लाठी चार्ज किया। मंगा में पुलिसवालों ने हिन्दू मुसलमान दंगा करवा दिया। कुछ तार भी काटे गये। हमन्तपुर स्टेशन नष्ट कर दिया गया। कुछ सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी।

मुर्शिदाबाद

बंगाल के बाकी जिलों में कोई विशेष महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई। फिर भी जो थोड़ी बहुत घटनायें हुई उनमें से कुछ का हम वर्णन कर देते हैं। मुर्शिदाबाद में नशिन नगर के आसपास के तार काट दिये गये। अजीमगंज तथा बेलडंगा स्टेशनों पर हमले हुए। कई जगह नशे की दुकानें जला दी गयीं। एक सेकेन्ड क्लास का डब्बा जला दिया गया। यहाँ आन्दोलन कुछ मामूली तोड़ फोड़ के कार्यों तक ही सीमित रहा।

हावड़ा

हावड़ा में भी पहले जुलूस आदि निकले, फिर बिजली तथा टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काटे गये। मैंदागढ़ लाइन की पटरियां उखाड़ दी गयीं। बिसनपुर हवाई अड्डे पर हमला हुआ। चन्दर और कलूर्ना के सामरिक औरगनाइजेशन कैम्प को नुकसान पहुँच गया। कुछ डाकखाने नष्ट किये गये। हावड़ा में भी कलकत्ते की तरह कुछ मीलों में शुरू-शुरू हड़ताल रही।

हुगली

हुगली में चूंचड़ा, श्रीरामपुर, हुगली खास के म्युनिसिपल कमिश्नरों ने नेताओं की गिरफ्तारी पर पदत्याग कर दिया। मार्टिन एन्ड कम्पनी की रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गयीं, जिसके कारण उस लाइन में कई दिनों तक रेल नहीं चल सकी। ई० आई० आर० की पटरियां भी उखाड़ी गयीं। आराम बाग के इलाके में तोड़-फोड़ का

कार्य अधिक हुआ और वहाँ खास महल, यूनियन बोर्ड डाकखाने में आग लगा दी गयी। कोन नगर के पास तार काट दिये गये। धनियां कादा, चटूल तथा देवखादा डाकखाने जलाये गये। सरकार ने जिला कांग्रेस कमेटी पर ताला दे रखा था, जनता ने उस पर कब्जा कर लिया। ३० अक्टूबर को चम्पाडाँगा बाजार में जनता का हमला हुआ, इस पर गोली चली, जिसमें तीन मरे। बरीसाल में स्टीमर स्टेशन तथा डाकखाने में आग लगायी गयी।

मैमनसिंह

मैमनसिंह में कई जगह जैसे नीलगंज, नेतकोना आदि में रेल तथा डाकखानों पर हमले हुए। सरकारी भूसे के गोदाम में आग लगायी गयी। ३१ अगस्त को जनता ने सेल्सटैक्स तथा इनकमटैक्स के दफ्तर पर आक्रमण किया। १७ सितम्बर को जनता का जोश सबसे अधिक रहा, उस दिन एक क्रान्तिकारी जुलूस पर जिसमें छात्राओं की संख्या अधिक थी, पुलिस ने कई बार लाठी चार्ज कर तितर-बितर किया। १२ सितम्बर को जनता ने मुक्तागछा डाकखाना में आग लगा दी। रायेर बाजार तथा अथरबरी के बाजार पर हमले हुए। पहले बाजार मे गोली चली तो ३ मरे, और दूसरे बाजार में गोली चली तो १०० के करीब घायल हुए।

बर्दवान

बर्दवान में पहले जुलूस आदि निकले फिर तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हुए। कालना का डाकबँगला तथा स्टेशन में आग लगा दी गयी। १६ सितम्बर को कालना अदालत पर तिरङ्गा फहरा दिया गया। कासियारा डाकखाना भी जला दिया गया। इसी प्रकार अन्य तोड़-फोड़ के कार्य हुए। बबनिया गाँव के कनाल आफिस, जमालपुर का डाकखाना, स्टेशन आबकारी की दूकान थाना आदि जलाये गये।

बोलपुर

कवीन्द्र रवींद्र का बोलपुर भी चुप न रहा। २६ अगस्त को हिंदू-मुसलमान सबनाल सबने मिल कर बोलपुर स्टेशन पर हमला किया, और उसे नुकसान पहुँचाया। ७ व्यक्ति घायल हुए। टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ के तार भी कटे।

नदिया

नदिया में कुसठिया के छात्र तथा छात्राओं ने सबसे पहले आंदोलन किया। रानाघाट में रेल तथा तार सम्बन्धी तोड़-फोड़ हुए। नेताओं की गिरफ़्तारी के प्रतिवाद में नवद्वीप की म्युनिसिपलिटी के ७ सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया। श्यामनगर तथा उसके पास के डाकखाने में आग लगायी गयी। कृष्ण नगर स्टेशन पर खड़े चार अव्वल दर्जे के तथा दूसरे दर्जे के डब्बे जलाये गये। शान्तिपुर फटका बाड़ी रामपुर के पोस्ट आफिस जलाये गये। बेलडांगा और अजिमगंज के स्टेशन पर हमले हुए। बहरमपुर की अदालत पर आक्रमण हुआ। मुड़ागाछा स्टेशन जला दिया गया।

हवाई जहाज से बम

इसी जिले के रानाघाट में हवाई जहाज से मशीनगन चलायी गयी। यह घटना कितनी अन्यायपूर्ण थी इसी से पता लग सकता है कि १६४२ के २ अक्टूबर को प्रधान मंत्री मिस्टर फजलुलहक ने यह कहा कि कुछ कुली रेल लाइन पर काम कर रहे थे, ऊपर से एक पहरेवाले हवाई जहाज ने यह समझा कि लोग लाइन काट रहे हैं, बस उसने आव देखा न ताव कुलियों पर बम बरसा दिया।

बगुड़ा

बगुड़ा ज़िले में ११ सितम्बर को एक जुलूस कलेक्टरी में घुस गया। और वहां सब कागजात ले लिये। भालुरपाड़ा स्टेशन में अव्वल तथा दूसरे दर्जे के डब्बों में आग लगा दी गयी। शेरपुर और चन्द्र-

देवना के बीच के तार काटे गये। माल्दह जिला के रतन थाने में आन्दोलन जोर पर रहा, वहाँ डाकखाना, आबकारी, यूनियन बोर्ड तथा अन्य सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी। जिले भर में तार काटे गये। दार्जिलिंग में भी अगस्त प्रस्ताव की गूंज पहुँची। ६ सितम्बर को ६ अगस्त के मासिक मनाने के लिए एक जुलूस निकला, इस पर गोली चली, ३ मरे १२ घायल हुए।

बालूर घाट

दीनाजपुर के बालूर घाट में २४ घण्टे के लिए सरकारी शासन बिल्कुल खतम हो गया था। १३ सितम्बर की रात को देहात से कांग्रेसियों के नेतृत्व में एक सौ से अधिक टोलियाँ चलकर बालूर घाट कस्बे से ३ मील दूर अत्रेयी नदी के पश्चिम किनारे डगीरघाट पर इकट्ठा हुई। इसमें से कोई कोई टोली ३० मील दूर से आयीं थी। बालूर घाट शहर के कांग्रेसी नेता सरोजरंजन चटर्जी ने इनका स्वागत किया। जनता ५ हजार के लगभग थी। यहाँ से क्रांतिकारी नारे के साथ जनता कस्बे की ओर बढ़ी और दिन के ८ बजे कस्बे में दाखिल हो गयी। जब जुलूस खजाने के पास पहुँचा तो श्री चटर्जी ने ट्रेजरी के भारतीयों को नौकरी छोड़ देने के लिए कहा। इसके बाद तो फिर डाकखाना, सब ट्रेजरी आफिस, जूट इंसपेक्टर का आसिफ, कोआपरेटिव भवन, अग्रीकलचरल डिमनस्ट्रेटर का दफ्तर और गोदाम आदि पर हमले हुये। ११ बजे जुलूस शहर से वापस हुआ। जुलूस वाले फिर से डंगीरघाट पर पहुँचे, वहाँ पर सरकारी धान मौजूद था। उसे जनता ने ले लिया, सीमुलतली में भी जो धान मिला वह ले लिया गया। जिला मैजिस्ट्रेट वहाँ हथियार सहित मौजूद थे, पर चुप रहे। पर १५ सितम्बर को जिला मजिस्ट्रेट को यह खबर मिली कि तपन थाने पर आक्रमण होगा, असल में २०० गाँव वाले तेलीघाट में धान के बाहर भेजे जाने के लिए इकट्ठे थे। जिला मैजिस्ट्रेट ने इन्हीं को थाने पर हमला करने वाला समझा और उनपर गोली चलायी।

जनता फौरन तितर बितर हो गयी। और वहाँ से उसने जाकर एक सरकारी मुखबिर की दूकान लूट ली।

दारोगा कांग्रेसी बना

२२ सितम्बर को पुलिस वाले फूल चांद मण्डल के घर पर पहुँचे और उनके घर में पहुँचकर चीज वस्तु लूटी और लोगों को मारा पीटा। फौरन गाँव वाले इकट्ठा हो गये, तो पुलिस ने गोली चलाई, पर गोली खतम हो गई, तो गाँव वालों ने पुलिस वालों को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें कसकर रस्सी से बाधा गया और उनसे कहा गया कि नौकरी छोड़ दो और काग्रेस के प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तखत करो, तब छोड़े जाओगे। इस पर उन्होंने ऐसा ही किया। तब उन्हें नाश्ता कराकर छोड़ दिया गया।

परिलाहाट गोलीकांड

२४ सितम्बर को मोराडागा के सम्बन्ध में पुलिस को यह खबर लगी कि वहाँ पुलिस के लोग गिरफ्तार हैं। इस पर थानेदार आदि वहाँ चले। रास्ते में परिलाहाट में पुलिसवालों ने दो राजवशी को गिरफ्तार किया। इस पर आसपास के गाँव वाले इकट्ठे हो गये, और सौंताल तीर धनुष लेकर चढ़ आये। इससे पुलिस को उन आदमियों को छोड़ना पड़ा और किसी तरह गोली चलाते हुए जान बचाकर भागे। ३ व्यक्ति मारे गये जिनमें माघाकुड़ी के ७० वर्ष के आधार मडल भी मारे गये। इसके बाद तो इस इलाके में फिर पुलिस आयी और हर तरीके का अत्याचार हुआ। सरोजरजन चटर्जी पर १ हजार का पुरस्कार घोषित किया गया।

हिन्दू मुसलमान लड़ाये गये

यहाँ पर सरकार ने जो सबसे खराब बात की, वह यह थी कि मुसलमान देहातियों को बुलाकर हिन्दू गावों को लुटवा दिया और इस सिलसिले में कई स्त्रियों की लज्जाहानि भी हुई। पुलिस काफी

नही पड़ती थी इसीलिये इस जघन्य उपाय का अवलम्बन किया गया। मुसलमान देहाती बेचारे क्या जानते कि इसमें क्या रहस्य है, वे यह समझ कर दौड़ पड़े कि मुसलमानी राज्य स्थापित हो गया। ऐसी घटनायें अन्त तक जो कड़वापन छोड़ जाती हैं, वह भले ही भारतीय राष्ट्रीयता के लिये घातक हो, पर सरकार का तो काम बनता है। सरकार का यह अपराध कदाचित उसी श्रेणी में आता है, जिस श्रेणी में राजनैतिक दमन के उद्देश्य से स्त्रियों पर बलातकार करना।

उड़ीसा में आन्दोलन

सङ्गठन कमजोर

इस आदोलन में उड़ीसावासी भी पीछे नही रहे। इन्डिया ऐक्ट १९३५ के समय उड़ीसा पृथक प्रांत बन गया था। जब से उधर जापान ने आक्रमण किया तब से बराबर यह खबर फैल रही थी कि शायद उड़ीसा की तरफ से भारत पर आक्रमण हो। इस कारण समुद्र तट कटक से राजधानी उठाकर सम्भलपुर ले जाया गया। मेदिनीपुर की तरह यहाँ की नाव तथा सायकलें भी ले ली गयी थीं। यहाँ गरीबी तो हमेशा से है, तिस पर ये कारण, इसलिये ९ अगस्त का नारा उड़ीसा में पहुँचते ही वहाँ की जनता क्षुब्ध हो उठी। पर यहाँ भी सङ्गठन की कमी थी। यहाँ के आन्दोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि सरकार के साथ ही साथ अत्याचारी जमींदारों के विरुद्ध आदोलन किया गया। यहाँ किसानों तथा विद्यार्थियों ने ही आन्दोलन में सबसे बढ़कर हिस्सा लिया। यहाँ पर भी १९३९ में युद्ध छिड़ते समय कांग्रेसी मन्त्रीमंडल था, उसने इस्तीफा दे दिया था। पर बाद को कुछ कांग्रेसी एम० एल० ए० कांग्रेस से अलग होकर वहाँ मन्त्रिमण्डल बनाने पर तुल गये और पार्लकिमेडी के राजा के नेतृत्व में एक मंत्रिमण्डल बना। पर यह मन्त्रिमंडल बिल्कुल सरकार का पिट्ठू था।

फिर भी कांग्रेस के एम० एल० ए० बनों के विश्वासघात के कारण यहाँ की कांग्रेस को धक्का पहुँचा, इसमें संदेह नहीं।

कटक

नेताओं की गिरफ्तारी से कटक में सर्वत्र हड़तालें तथा सभायें हुईं। छात्रों ने विशेष भाग लिया। रावेनशा कालेज के विद्यार्थियों ने नेतृत्व किया। छात्राओं ने भी अच्छा हिस्सा लिया। छात्राओं को डराने के लिए यह धमकी दी गई कि यदि हड़ताल तोड़कर कालेज में नहीं आवेंगी तो उनका नाम काट दिया जायेगा। इस पर इन लड़कियों ने कालेज के दफ्तर पर हमला बोलकर उसके जो कागज़ात मिले उसमें आग लगा दी। कटक के मुसलमान छात्रों ने भी आंदोलन में पूरा भाग लिया।

जनता द्वारा हमले

अब तो तोड़-फाड़ का कार्य-क्रम शुरू होगया। १६ अगस्त को कुछ राजनैतिक कैदी बाहर भेजे जा रहे थे, इस पर तीन चार हजार की भीड़ इकट्ठी हो गई और उसने इसे रोका। इस पर गोली चली, एक मरा तथा कई घायल हुए। कांग्रेस दफ्तरों पर पुलिस पहले ही ताला डाल चुकी थी। उन पर भी हमले हुए। कई सरकारी इमारतें जिनमें जगतसिंहपुर की तहसील, अरसमा का डाकखाना, रेवेन्यू दफ़्तर आदि थे, जला दिये गये। १० अगस्त से ही कटक में १४४ लगा था, फिर भी रोज इसे तोड़कर जुलूस निकलते। यहाँ भी सरकार ने हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानों को भड़काया और जब सामूहिक जुर्माना हुआ तो मुसलमान उससे बरी कर दिये गये, यद्यपि तथ्य यह है कि मुसलमान आंदोलन में शामिल थे।

पुरी

पुरी में छात्रों ने बहुत दिनों तक हड़ताल की। इस जिले में

तोड़फोड़ के कार्य कम हुए। नीम पाड़ा के थाने पर हमला हुआ, पर पुलिस ने गोली चलायी, एक मरा और कई घायल हुए।

बालासोर

बालासोर में छात्रों ने आदोलन शुरू किया। इस जिले में तोड़-फोड़ के कार्य बहुत हुए। धाम नगर और खड़िया के इलाके में क्रान्तिकारी कार्य अधिक हुए। एकाध मजेदार घटना भी हुई। ६ व्यक्ति बालासोर की अदालत में चुपके से घुस गये और उन्होंने एकाएक रिकार्ड जलाना शुरू किया और बात की बात में उन्होंने रिकार्ड जला भी डाला। बाद को ये लोग गिरफ्तार कर लिये गये। इस जिले के क्रान्तिकारी नेता मुरलीधर पंडा चोरबाजारियों को लूट कर धान जनता में बँटवा देते थे। सरकारी अफसरों का घर भी इसी ढंग से लूटा जाता था। २२ सितम्बर को सरकार को खबर मिली कि कटसाही के पास मुरलीधर हैं। वहाँ ५-६ हजार की भीड़ भी थी। पुलिसवाले वहाँ पहुँचे, पर वे कुछ कर भी नहीं पाये और उनपर हमला हो गया। दारोगा बुरी तरह घायल हो गया। गोली चली और ६ व्यक्ति मारे गये। मुरलीधर ने यह समझा कि भागने को तो मै भाग सकता हूँ, पर जनता की बुरी गति होगी, इसलिये उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

प्रान्त में अन्य क्रान्तिकारी काय

ऐराम के जमीदार के घर पर हमला हुआ। बात यह है कि इस व्यक्ति ने सैकड़ों मन गल्ला छिपा रखा था, और उधर जनता भूखों मर रही थी। जमीदार ने पुलिस को खबर भेजा तो पास के थाने से १८ सिपाही और एक दारोगा रवाना हुए। रास्ते में भीड़ ने पुलिस वालों पर हमला किया और उनके सामानों के थैले छीन लिये। इस पर गोलियाँ चलीं। यहाँ ४० के करीब आदमी मारे गये। इसी प्रकार दामनगर में एक गोलीकाड हुआ जिसमें ८ मरे। इस जिले

में आंदोलन का जोर सबसे अधिक रहा। गंजाम तथा संभलपुर में कोई खास बात नहीं हुई। हाँ गंजाम में एक शराब की भट्ठी तथा थाने पर हमले के सिलसिले में गोली चली जिसमें ४ मारे गये।

विहार में क्रान्ति

विहार क्रान्ति के आगे की कतार में

यद्यपि १९४२ तक राजनैतिक भारत के मानचित्र पर विहार कम दिखाई पड़ता था, याने वहाँ के नेताओं के नाम के पीछे न दौड़ने के कारण यद्यपि विहार का नाम कम सुनाई पड़ता था, पर विहार के उस श्रेष्ठ नीरव सेवक राजेन्द्र बाबू ने विहार को किस सुन्दर तरीके से संगठित किया था तथा यहाँ की जनता किम प्रकार जागृत हो गई थी, इसका पता १९४२ की क्रान्ति में लगा। इस प्रान्त के मुसलमानों ने भी काफी तादाद में आन्दोलन में भाग लिया। विहार की शहरी तथा देहाती जनता ने करो या मरो के नारे को अपनाकर जो असाध्य साधन किये वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। विहार में मजदूरों ने भी जोरों के साथ हिस्सा लिया। यह सब तो हुआ, पर दो बताकर तब हम घटनाओं पर चले।

आन्दोलन में नेतृत्त्व कांग्रेस से नहीं आया

एक तो यह कि यद्यपि यहाँ कांग्रेस का संगठन देहातों तक पहुँचा हुआ था, फिर भी अगस्त क्रान्ति के समय तक जनता के सामने कोई कार्य क्रम नहीं रखा गया था। बाबू अनुग्रह नारायण सिंह ने फ्री प्रेस जनरल के फ्रीडम सपलीमेन्ट में १९४४ में लिखते हुए साफ कह दिया था कि—'Bihar gave a very good account of itself during the last trail and although the movement was neitheir initiated nor controlled by official congress organisation. अर्थात् यद्यपि कांग्रेस के सङ्गठन ने न तो आंदोलन शुरू ही किया, और न उसका नियंत्रण

ही किया, फिर विहार ने गत परीक्षा के अवसर पर बहुत अच्छा उदाहरण उपस्थित कर दिया। इसलिये जनता की बहादुरी की और भी अधिक सराहना करनी पड़ती है कि उसने बिना नेतृत्व के तथा बिना क्रान्तिकारी सङ्गठन के इतना जबरदस्त काम किया।

क्रान्ति न कि अहिंसात्मक संग्राम

दूसरी बात जिस पर हम जोर देना चाहते हैं वह यह है कि जैसा कि उक्त बाबू जी ने ही कहा है कि 'It proved beyond doubt the potentialities of what a non-violent struggle for freedom if scruplously pursued, could achieve in the fullness of time. अर्थात 'इसने यह दिखला दिया कि समय पाकर यदि अहिंसात्मक स्वातंत्र्य युद्ध चलाया जाय तो उसमें कितनी शक्ति है।' यह बिल्कुल गलत है। बिहार के आन्दोलन को क्रांति के दायरे से निकालकर अहिंसात्मक युद्ध के दायरे में घसीटने की अपचेष्टा कभी सफल नहीं हो सकती। अहिंसात्मक संग्राम में बिहार किसी प्रांत से पीछे नहीं रहा, पर १९४२ के अगस्त में अहिंसात्मक संग्राम का को प्रश्न ही नहीं था। यदि १९४२ में बिहार में जो कार्य हुए, वे अहिंसा के अन्तर्गत हैं, तब तो फिर अहिंसा याने दबाव राजनीति और क्रान्ति में कोई भेद ही नहीं है। यह अपचेष्टा नितान्त हास्यास्पद है।

पटना पहले से तैयार

९ अगस्त के पहले ही पटना के क्रातिकारी छात्र स्वतंत्रता के लक्ष्य को लेकर मर मिटने के लिये व्याकुल हो रहे थे। श्री अनुग्रह नारायणसिंह ने उक्त लेख में लिखा "१९४२ की ३१ जुलाई को बहुत जोर का पानी पड़ रहा था, फिर भी उसी में छात्रों की एक बहुत महत्वपूर्ण सभा हुई। अञ्जुमन इस्लामिया हाल गच्चागच्च भरा हुआ था, नौजवानों का बहुत बड़ा समूह बाहर खड़ा भीग रहा था। उन नौ-

जवानों के चेहरों पर जोश की दिव्य प्रभा थी, यद्यपि उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि क्या कार्यक्रम अपनाया जायगा। ६ अगस्त को देश-भर में नेताओं की गिरफ्तारी शुरू हुई। यद्यपि यह पहले से कानाफूसी हो रही थी कि अगस्त प्रस्ताव के पास होते ही कुछ घण्टों के अन्दर नेताओं की गिरफ्तारी हो जायगी, पर फिर भी लोग यह समझते थे कि प्रस्ताव में जो रुख दिखलाया गया है, उसके कारण गिरफ्तारियाँ शायद न हों। मेरे प्रान्त में किसी को भी यह पता नहीं था कि कॉंग्रेस का स्वीकृत कार्यक्रम क्या है। हमने इस सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने की बहुत कोशिश की, पर हमें कुछ भी सफलता नहीं हुई। इधर उधर स्पष्ट अफवाहें तो फैल रही थीं, पर कोई प्रमाणित बातचीत नहीं मालूम होती थी। नेताओं की गिरफ्तारी के बाद ही प्रान्त भर में अजीब बेचैनी फैल गयी। विशेषकर विद्यार्थियों के जोश का कोई ठिकाना नहीं था।'

१० अगस्त

१० अगस्त को छात्रों की हड़ताल से कार्यक्रम का सूत्रपात हुआ। अधिकतर छात्र तो निकल आये पर कुछ संस्थाओं पर पिकेटिंग भी करनी पड़ी। पिकेटिंग में कई जगह छात्रों पर लाठी चार्ज हुआ। गर्ल्स हाई स्कूल के पास छात्रों के जुलूस पर घोड़े दौड़ाये गये, बेंत चलाये गये। बहुतों को चोटें आईं फिर भी लोग पीछे नहीं हटे और जनता में जोश बढ़ता ही चला गया।

सेक्रेटेरियट पर झंडा

सेक्रेटेरियट पर झंडा चढ़ाने का जो कार्यक्रम था, वह बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण था। सच तो यह है कि इसी कार्यक्रम ने बाद को बिहार के बारूदखाने में चिनगारी का काम किया। अनुग्रह नारायण जी के अनुसार "११ का दिन बड़े महत्व का था। मुख्यतः नौजवानों का एक जुलूस सेक्रेटेरियट पहुँचा और उसने असेम्बली चेंबर पर

तिरङ्गा झण्डा चढ़ा दिया। यह विद्रोह का सिगनल था, और इसे आसानी से दबाया नहीं जा सकता था। असेम्बली चेंबर के बाहर तैनात अफसर और लाट भवन में बातचीत हुई। गोली चलाने की आज्ञा मिली। आधे दर्जन से अधिक नौजवान जिनमें कि एक बालक था, शहीद हो गये। अन्य कई घायल हुए। घायलों की प्राथमिक शुश्रूषा का कोई इन्तजाम नहीं था। घायल तथा मरे हुए उठाकर अस्पताल भेज दिये गये।"

वीर बालक

इस अवसर पर जो बालक मरा था उसके सम्बन्ध में ज्ञात हुआ है कि जिस समय वह अस्पताल पहुँचाया गया था, उस समय तक वह जीवित था। उसे कुछ मुहूर्तों के लिये होश भी आया तो उसने डाक्टर से यह पूछा कि गोली कहाँ पर लगी है, सीने में या पीठ में डाक्टर ने इसका उत्तर दिया कि 'सीने में'। बस इस पर उस वीर बालक के चेहरे पर एक तृप्ति की हँसी खेल गयी, और उसने हमेशा के लिये आँखें मूँद ली। यह भी ज्ञात हुआ है कि घायलों पर जो गोली मारी गयी थी, वह दमदम गोलियाँ थीं, जिनका व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय विधान से इस कारण मना है कि इसकी चोट से भले ही बच जाय, पर इसके छूते ही सड़न पैदा हो जाती है। निहत्थी जनता पर इस प्रकार की गोली चलाना साम्राज्यवाद की बर्बरता का परिचायक था, इसमें कोई सन्देह नहीं।

क्रान्तिकारी कार्य

इस प्रकार सरकार ने आतङ्कवाद का आरम्भ किया। जनता ने इसका जवाब क्रान्तिकारी कार्यों से दिया। पटना के स्टेशन, सब लेटर-बाक्स, डाकखाने, स्टेशन के गोदाम पर जनता के हमले हुए। तार काटना, पटरियाँ उखाड़ना, इञ्जन तोड़ना यह सब होता रहा। ११, १२ और १३ अगस्त को सम्पूर्णरूप से जनता का राज्य रहा। पर सरकार

कब इस बात को बर्दाश्त करनेवाली थी। १४ को गोरे सैनिक काफी तादाद में आ गये। जब इस तरह शहर के लोग क्रान्तिकारी मार्ग पर आगे बढ़े तो उधर देहातों में भी भयङ्कर रूप से तोड़-फोड़ के कार्य शुरू हुए। फतुहा में दो कनाडियन अफसर जनता द्वारा जला दिये गये। हिलसा और बिहार शरीफ में सरकारी इमारतों में झण्डा फह-राया गया। मोकामा और बेहरा में कपड़े की गाँठें लूटी गयीं। फुलवारी में जनता ने हमले किये तो उस पर गोली चली। १७ मरे। इसी प्रकार देहात में सर्वत्र जोर के तोड़-फोड़ हुए। फौज आने पर भी वे हमले चलते रहे।

चम्पारन

चम्पारन में १० और ११ को जुलूस निकले। जुलूसों पर मन-माना लाठी चार्ज हुआ तो तोड़-फोड़ का काम शुरू हुआ। कहते हैं कि इस विषय में रक्सौल ने नेतृत्व किया। नाम गिनाने की आवश्य-कता नहीं है, इतना ही कहना यथेष्ठ होगा कि सभी सरकारी इमारतों पर किसी न किसी रूप में आक्रमण हुए। पुलिसवाले थाने छोड़कर हेडक्वार्टर भाग गये। इस जिले में सबसे मजेदार बात यह हुई कि आंदोलन जब शुरू हुआ तो कलेक्टर हिन्दू थे। सरकार ने इनको निकाल कर उनसे कहीं नीचे दर्जे के एक गोरे को कलेक्टर बना दिया। जब फौज आयी तो इस जिले में कोई अत्याचार बाकी नहीं रखा गया।

गोविन्दगञ्ज थाने के कार्यकर्ता सबसे अधिक क्रान्तिकारी साबित हुए। ऋषिजी, सहदेव प्रसाद, जगन्नाथ प्रसाद, ब्रह्मानन्द तिवारी ने एक समान्तराल सरकार सी बना रखी थी। पुलिस ऋषि जी को गिर-फ्तार नहीं कर सकी, थाने तभी गिरफ्तार कर सकी जब उन्होंने एक सभा में अपने को गिरफ्तार कराया। बेतिया में जनता पर गोली चली, आठ मरे। ऋषिजी का सङ्गठन मुखबिरों को सजा देता था तथा जनता की हर तरीके से सहायता करता था।

शाहाबाद

शाहाबाद में १० अगस्त को प्रदर्शन हुआ। शाम के समय रमना मैदान में सभा हो रही थी। प्रद्युम्न मिश्र नामक एक नेता का भाषण हो रहा था। इतने में पुलिसवाले भीड़ के अन्दर पहुँचे और मिश्रजी को गिरफ्तार करने के लिये आगे बढ़े। जनता को तैश आ गया और पुलिस को घेर लिया। बस पुलिसवाले भाग खड़े हुए। इतने में और पुलिस आ गयी, पर वह चुपचाप खड़ी देखती रही। पुलिसवालों को यह हुक्म दिया गया कि वे गोली चलावें, पर उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया। इसके बाद तो जनता ने सरकारी इमारतों पर झंडा फहराने का कार्यक्रम अपनाया और उसमें सफलता मिली। बाद को जब गोरे आये तो वे मुश्किल से महीनों में क्रान्ति को दबा पाये। जब दमन शुरू हुआ तो वीरपुर गाँव के चन्द्रमणिसिंह का घर लूटा गया। श्री जगतनारायण लाल के बयान के अनुसार सिंह जी के मकान को गाँववालों से तोड़वाया गया। और जिन्होंने तोड़ने से इनकार किया वे बुरी तरह मारे गये।

एक रिपोर्ट

एक रिपोर्ट के अनुसार प्रायः सभी गांव के धनी जमींदार, सरकारी नौकर जैसे मैजिस्ट्रेट, रिटायर्ड आफिसर आदि अपने-अपने घर गोरे सिपाही तथा सशस्त्र पुलिस को निमंत्रण देकर अपने यहाँ पड़ाव डलवा रखा था। वे अपने एजेन्टों के द्वारा क्रान्तिकारियों तथा कांग्रेसियों की गिरफ्तारी करवाते थे। यह तो इनका हाल था, पर रेल तार, डाकखाने के कर्मचारी तथा देशी सिपाही एक मास तक जनता से पुरी सहानुभूति रखते थे। व्यापारियों ने कुछ भय के कारण और कुछ देशभक्ति से कार्यकर्त्ताओं को महीनों तक खाना आदि खिलाया। क्रान्ति दब जाने पर इन देशी सिपाहियों ने भी जनता पर काफी जुल्म किये। थानेदारों ने कार्यकर्त्ताओं के परिवार से नाजायज तरीकों से काफी रुपये लिये। कम्युनिस्टों ने भी सरकार का हाथ बढ़ाया।

झंडे पर कई शहीद

डुमराँव में १६ अगस्त को ५ हजार का एक जुलूस झंडा फहराने के लिये आया। कपिल मुनि नाम का एक नौजवान नेतृत्व कर रहे थे। झंडा लेकर जब जुलूस आगे बढ़ा तो थानेदार ने चेतावनी दी, पर कपिल मुनि बढ़ता ही गया। फौरन गोली चली और कपिल-मुनि वहीं पर शहीद हो गया। इस पर रामदास लोहर नामक एक व्यक्ति आगे बढ़ा तो वह भी गोली से मार दिया गया। इस पर ६० वर्ष का एक बूढ़ा आगे बढ़ा, वह भी गोली मार दिया गया। तब १६ वर्ष का एक लड़का गोपाल राम आगे बढ़ा, उसको भी गोली मार दी गयी। इस प्रकार की घटना शायद १९४२ के इतिहास में भी यह एक ही है।

गया

गया में आन्दोलन बिहार के अन्य स्थानों के मुकाबिले में देर में शुरू हुआ। १३ अगस्त तक जनता देखती रही कि नेताओं की ओर से कुछ होता है या नहीं, परं नेता तो गिरफ्तार हो गये और उन्हें भी यह नहीं मालूम था कि क्या कार्यक्रम है, इसलिए अब जनता ने अपना काम शुरू किया। देहातों में थानों पर आक्रमण हुए। जब यह समझा गया कि थानों की रक्षा नहीं हो सकती, तब बहुत से थाने खाली कर दिये गये और सिपाही तहसीलों में इकट्ठे हो गये। कई डाक खाने तथा नहर के दफ्तर फूँक दिये गये। जब जनता कुरथा थाने पर झंडा फहराने पहुँची, तो लाठियों तथा बर्छियों से उसका स्वागत हुआ। श्यामबिहारी लाल नामक एक कांग्रेसी शहीद हुए। मुसलमानों ने भी आंदोलन में भाग लिया। मास्टर दुखारसिंह अरवाल थाने में मारते मारते मार डाले गये। उनका अपराध यह था कि वे कांग्रेसियों का साथ देते थे।

भागलपुर

भागलपुर में १० अगस्त को ही कचहरी, कलेक्टरी, तथा हेड

पोस्ट आफिस पर धावा बोला गया और झंडा फहराया गया। सरकार ने भी नेताओं को गिरफ्तार करने के अतिरिक्त कांग्रेस भवन पर ताला डाल दिया। १६ अगस्त को जनता ने इसे मुक्त कर लिया। रेल-गोदाम लूटा गया, फिर कई सरकारी इमारतें जलायी गयीं। खगरिया लाइन में बड़ी दूर तक पटरी उखाड़ी गयी। देहातों में आन्दोलन फैला तो १३ अगस्त को पुलिस ने सैदाबाद के चर्खा शिक्षण शिविर के चर्खों को तोड़ फोड़ डाला और उन्हें थाने में रोटी पकाने के लिए ले गये। इस पर जनता को क्रोध आया, और वह थाने पर टूट पड़ी। थाने की सब चीजों को नष्ट किया गया, और गांव वाले चर्खे वापस ले आये। बनगॉव इलाके में कांग्रेस कैंप नाम से क्रांतिकारी शिविर खुला और उसकी तरफ से यह हुक्म निकाला गया कि इलाके के सब लायसेन्सी बन्दूक वाले फौरन अपनी बंदूकें दाखिल करें। ७ बन्दूकें जमा भी हो गयीं। इनके अतिरिक्त और भी स्थानों पर क्रान्तिकारियों ने बन्दूकें छीनीं।

परशुराम बाबू का दल

इस जिले में परशुराम बाबू ने और उनकी गिरफ्तारी के बाद सियाराम बाबू ने एक गुप्त दल का नेतृत्व किया जो बकायदा पुलिस-वालों से हथियार छीनता था, मुखबिरों के नाक कान आदि काटे गये। सरकार ने महेन्द्रगोप तथा अन्य ७५ अपराधियों को सजा पूरी होने के पहले ही जेल से छोड़ दिया। ये लोग सबके सब उक्त दल में शामिल हो गये। इनके शामिल होने से दल बहुत प्रचंड हो गया। पुलिसवाले तो इस दल के नाम से थरथर काँपते थे। इस दल का नाम सुनते ही उनकी घिग्घी बंध जाती थी। बाद को महेन्द्र गोप पकड़े गये और उनको फाँसी दे दी गयी। राजेन्द्र बाबू तथा अन्य नेताओं की कोशिश के बावजूद यह फाँसी हुई। सियाराम बाबू अन्त तक गिरफ्तार नहीं किये जा सके। इस दल का जोर बांका तथा भागलपुर तहसीलों में था। बाद को दमन के युग में बहीपुर थाने में

जो इस दल का मुख्य केन्द्र समझा गया, प्रत्येक चौराहे पर फौजी कैम्प खोला गया। इस कैम्प के लोगों ने पूरी नादिरशाही मचा दी। जब चाहते गांव में घुस पड़ते, जो चीज चाहते उठा ले जाते, तथा जिस स्त्री पर चाहते बलातकार करते। इस प्रकार साम्राज्यवाद की खोई हुई साख फिर से स्थापित की गयी।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर जिले में अगस्त क्रान्ति बड़े शानदार तरीके से हुई। पहले यहाँ भी जुलूस आदि निकला और फिर ऐमरी के व्याख्यान से क्रांति की ज्वाला भड़की। जनता ने करीब करीब करीब सभी सरकारी इमारतों पर तिरङ्गा फहरा दिया। पुलिसवाले तहसील या जिले में भाग गये। २४ तारीख को बाजपट्टी में एकत्र जनता ने एस० डी० ओ० हरदीपसिंह, एक थानेदार तथा दो सिपाही को जान से मार डाला। इसका बदला लेने के लिये ११ लारी फौज सहित प्रान्त के तथा जिला के उच्च अधिकारी पहुँचे। पुपरी के भागे हुए थानेदार भी पहुँचे। वहाँ के प्रसिद्ध लालचन्द मदनगोपाल फर्म को लूटा गया। स्मरण रहे इस लूट के समय पुलिस के आई० जी० तथा जिला कलेक्टर मौजूद थे। सेठ साहब के एक लड़के देवकी प्रसाद को मार डाला गया। अन्य लड़कों को अपमानित किया गया। घर की बड़ी बहू की लज्जाहानि की कोशिश सफल न हो सकी, क्योंकि वह वीर महिला छुरा तान कर खड़ी हो गयी। पुपरी पर सरकार का विशेष कोप रहा और बारबार यहाँ लूट मचायी गयी। इसी इलाके में अत्याचार से घबराकर बन्द-गाँव के लोग भाग गये, और इस गाँव में फौजियों ने आग लगा दी। यह सारा अत्याचार इसलिये और भी अधिक हुआ कि पुपरी का थानेदार रक्षक के रूप में भक्षक था। खैरियत यह है कि बाद को उसे डकैती के अभियोग में साढ़े आठ साल की सजा दे दी गयी। पर इस एक जालिम को सजा देकर साम्राज्यवाद सुर्खरू नहीं बन सकता। एक को सजा दी पर हजारों तो मजा कर रहे हैं, वे शायद आगे भी मजा

करें क्योंकि कांग्रेस ने पहले जो यह मांग रखी थी कि ऐसे सब कर्मचारियों को सजा दी जाय जिन्होंने १९४२ में अत्याचार किया था'। उसे बाद को भुला दिया गया, और अब वे कांग्रेस सरकार के खैरख्वाह बने हुए हैं।

थानेदार जलाया गया

मीनापुर के थाने पर हमला हुआ तो गोली चली। १ मरा कई घायल हुए। इस पर जनता ने रुष्ट होकर हमला किया, थानेदार को पकड़कर थाने की मेज, कुर्सी आदि से चिता बनाकर जला दिया गया।

सीतामढ़ी के स्टेशन पर जनता ने ११ अगस्त को कब्जा किया, इसके बाद १४ अगस्त को उधर की रेल की पटरी भी उखाड़ दी गयी। मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी के बीच में जो मोटर की बहुत चालू सड़क है उसे भी तोड़ दिया गया और बीच बीच में पुलिये खराब कर दिये गये।

बाद को जब सरकारी शक्ति बढ़ी तो ठाकुर रामनन्दन सिंह का बंगला लूट लिया गया। बन्दगाँव के कत्ल में रामफल को फांसी की सजा हुई तथा अन्य लोगों को कालेपानी की सजा दी गयी।

पूर्णिया

पहले पूर्णिया जिले में भी आन्दोलन सभायें करने तथा जुलूस निकालने तक सीमित रहा। १३ अगस्त को जनता ने कटिहार थाने पर झंडा चढ़ाने के लिए धावा किया। गोलियाँ चलीं, आठ मरे और कई घायल हुए। ध्रुव नाम का एक १३ वर्ष का बालक मारा गया। ध्रुव का पिता डा० कुंडु अभी पुत्र का दाह संस्कार कर घर के लिए रवाना हो रहे थे कि गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। ऐसे पुत्र का पिता होना भी जुर्म था। इसके अतिरिक्त डा० कुंडु एक प्रमुख कांग्रेस के कार्यकर्त्ता भी थे। इस गोलीकांड के बाद जनता में जोश और बढ़ा और फिर तो आमतौर से थानों और डाकखानों पर हमले शुरू हो गये। जनता

ने एक जगह एक थानेदार और ३ सिपाही मारे, पर पुलिस ने अपनी गोलियों से सब स्थानों को मिलाकर ५० के करीब आदमी मार डाले। २ खादी भण्डार जला दिये गये। बहुत से गाँवों पर सरकार ने विशेष जुल्म किया। सैकड़ों परिवारों के घर लूटे गये तथा जला दिये गये। यहाँ के मुसलमानों ने भी आन्दोलन में कुछ भाग लिया।

सारन

सारन जिला में भी जुलूस तथा सभाओं से आन्दोलन शुरू हुआ। पर पुलिस को यह भी गवारा नहीं हुआ और सेवान में सभा पर गोली चलाई जिससे २ मरे। इसी के बाद तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हो गये और जनता ने इस क्षेत्र में काफी सफलता पायी। छपरा स्टेशन कचहरी, इंजिन रोड जला दिये गये। सोनपुर जंकशन पर धावा हुआ। तीन इंजिन चलाकर छोड़ दिये गये, और चूंकि पटरी कटी हुई थी, इसलिए वे जाकर खड्ड में गिरे और बेकार हो गये। एकाध तोड़ फोड़ के समय पुलिस आ गई, और गोली चली। अवश्य जनता के ही आदमी मरे।

शहीद फुलेना प्रसाद

सेवान थाने पर झंडा लगाने की घटना इसलिए अधिक स्मरणीय रहेगी कि इसी सम्बन्ध में श्री फुलेना प्रसाद जी शहीद हुए। श्री फुलेना प्रसाद जी पुराने राजनैतिक कार्यकर्त्ता थे, वे तथा उनकी स्त्री श्रीमती तारावती भारत के इतिहास में सदा प्रसिद्ध रहेंगी। चश्मदीद गवाहों का कथन है कि आठ गोली तक भी फुलेना प्रसाद नहीं गिरे, नवीं गोली में उनके सिर के टुकड़े टुकड़े हो गये। इस अवसर पर ३ और व्यक्ति शहीद हुये। जिस समय फुलेना प्रसाद जी को गोली लगी, और वे गिर पड़े उस समय उनकी स्त्री उन्हीं के साथ थीं। पति के गिरने पर इस वीरांगना ने थोड़ी देर तक रुककर अपनी साड़ी के एक फाड़े हुए टुकड़े से पति का सिर बांध दिया, फिर

वह उसी अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये आगे बढ़ी जिसके कारण उसके पति की यह दशा हुई थी। जब झंडा लग चुका और वे लौटीं, तो फुलेनाप्रसाद जी शहीद हो चुके थे।

सारन में दमन

जिस समय दमन चक्र चला, उस समय जनता को दबाने की सब चेष्टा की गयी। श्री जगलाल चौधरी के २ साल के बच्चे को जान बूझकर मार डाला गया। रामविनोद सिंह के मकान को डायनामाइट से उड़ा दिया गया। नादिरशाही की हद हो गयी। जेल में राजबन्दी नारे लगा रहे थे, इसी समय बाहर गोरों की एक टुकड़ी जारही थी, बस यह टुकड़ी जेल में घुस पड़ी, और चुन चुनकर लोगों को बेंत लगवाये। सारन जिला में सरकार बहुत दिनों तक बेकार रही और वहाँ की बहादुर जनता ने अपना राज्य कायम रखा।

दरभंगा

दरभंगा में जुलूसों से सूत्रपात होकर आन्दोलन तोड़फोड़ में परिणत हो गया। १७ अगस्त को एक बहुत भारी जुलूस स्टेशन पर पहुँचा तो उस पर गोली चलायी गयी। एक मरा और कई घायल हुए। जानकी मिश्र को पीटते पीटते मार डाला गया। बेहरा में श्रीमती जानकी देवी के नेतृत्व में १६ अगस्त को एक बहुत बड़ी भीड़ बेहरा थाने पर पहुँची और वहाँ के कागजात तथा अन्य सामानों में आग लगा दी। थानेवाले पहले ही से भाग चुके थे। इस प्रकार अब डाकखानों मे आग लगाना तथा रेल की पटरियाँ उखाड़ना शुरू हुआ। २२ अगस्त तक याने जब तक कि गोरे नहीं आये इधर के इलाके पर जनता का राज्य रहा। इसके पहले शहर में १२ तारीख को कचहरी पर झण्डा लग चुका था। यहा के अधिकारियों ने उस समय गोली चलाना उचित नहीं समझा। खलौली तथा अन्य थानों पर भी आक्रमण हुए। जब दमनचक्र चला तो फिर सरकारी अफसर

कहीं पर नहीं रुके। स्त्रियों पर बलात्कार भी हुए। जहाँ तहाँ गांव लूटे तथा जलाये गये। दीप गांव में २ सौ मकान जला दिये गये। इन दिनों पुलिसवालों ने जो धन लूटा उससे वे अमीर हो गये।

मानभूमि

मानभूमि जिले के कांग्रेसी नेताओं की अहिंसावादिता के कारण बहुत दिनों तक जनता का जोश दबा रहा। संताल तथा महतो लोग तीर-धनुष लेकर लड़ने पर तैयार थे पर उन्हें अहिंसावादियों ने शान्त किया। फिर् भी जब दूसरे जिलों की तोड़ फोड़ की खबर आयी तो वहाँ भी वह कार्यक्रम शुरू हो गया। इस बीच में नेतागण भी छीन लिये गये थे। जिले भर में तार काटना तथा पटरी उखाड़ने का कार्य-क्रम जारी रहा। बड़ा बाजार और बांधवान के थाने में आग लगा दी गयी। लालपुर और लधुरमा के सामरिक कैम्पों में जनता ने आग लगाने की चेष्टा की। जरगाँव, कवरानगढ़ तथा मान-बमार में गोलियाँ चलीं। जब दमन हुआ तो और जिलों की तरह यहाँ भी भयंकर दमन हुआ।

जमशेदपुर

सिंहभूमि जिले में जमशेदपुर के मजदूरों की हड़ताल से कार्यक्रम शुरू हुआ। मजदूरों के नेतागण जेलों में ठूस दिये गये। इसमें नेता-सिंह भी थे जो जेल में भूख हड़ताल के कारण शहीद हो गये। हड़-ताल बहुत ही शान्तिपूर्ण ढंग से चलती रही। मजदूरों की इस हड़ताल का सिपाहियों पर भी प्रभाव पड़ा और २८ सिपाहियों ने इस्तीफा दे दिया। ६ सितम्बर को एक विराट जनता जेल के फाटक पर पहुँची। उसने जेल के अफसरों से यह कहा कि हम नेताओं का दर्शन करना चाहते हैं। इसपर जेल के अफसरों ने परिस्थिति देख कर नेताओं को बाहर ला दिया। फिर व्याख्यान हुए, नेताओं को मालायें पहनायी गयीं। मानपत्र भेंट, किया गया, और जनता खुश

होकर वापस चली गयी। इस घटना को पढ़कर एक तरफ जनता स्वयं अपनी बुद्धि से इतनी आगे बढ़ी इसपर खुशी होती है, पर दूसरी तरफ इन्हें कोई कार्यक्रम न देकर केवल भावुकतापूर्ण नारे देकर छोड़ दिया गया, इस पर चिढ़ मालूम होती है। यदि जनता को शक्ति पर कब्जा का नारा दिया जाता तो सिंहभूमि का यह वास्टाइल तोड़ दिया जाता।

रांची

रांची के अधिकारियों ने आन्दोलन के साथ बड़े अजीब तरीके से वर्त्ताव किया। इस कारण आन्दोलन पनप न सका। प्रदर्शनकारी सरकारी इमारतों पर झंडा फहराने आये, तो इन्होंने इसकी परवाह नहीं की। जनता झंडा लगाकर खुश होकर चली गयी। कुछ जगहों पर जनता ने फिर भी सरकारी इमारतों पर ताले लगा दिये, पर इस पर भी सरकार ने चुप्पी साध ली और जनता से कहा कि हम तो आजाद सरकार के भक्त हैं, यदि ताले डालोगे तो हमें ही कष्ट होगा। इस पर कार्यक्रमहीन भोली भाली जनता ने ताले खोल दिये। कुछ थाने को छोड़कर सब थानों में ताले डाले गये थे। हीनू के हवाई अड्डे, लोहरदगा के फौजी कैंप आदि कई जगहों पर तोड़ फोड़ की चेष्टा की गयी। यहाँ भी एक जुलूस जेल के पास पहुँचा, राजनैतिक बन्दियों ने यह चेष्टा की कि तोड़कर बाहर आवें पर इखलाकी कैदियों ने उन्हें रोक लिया। बाहर जनता को कुछ इस किस्म की गलतफहमी दिलायी गयी कि राजनैतिक बन्दी तो गाधी जी का हुक्म मानकर बाहर आने से इनकार कर रहे हैं। नतीजा यह हुआ कि जनता नारे लगा कर लौट गयी। बाद को जब जनता चली गयी तो राजनैतिक बन्दियों को गिराकर मारा गया जिसमें आत्मा राम नामक एक नौजवान को बहुत चोटें आयीं।

पालामाऊ

पालामाऊ जिले में छात्रों ने आन्दोलन का नेतृत्व किया। हड़-

लाल जुलूस के बाद डालटेनगंज, हुसेनाबाद, लैस्लिगंज और लति-हार थानों पर झंडा फहरा दिया गया। डालटेनगंज के जेल पर आक्रमण हुआ और नेता छुड़ा लिये गये। यहाँ डाकखानों पर भी आक्रमण हुआ। आंदोलन का केन्द्र डालटेनगंज रहा। यहाँ थाना जला भी दिया गया। शराब की भट्ठियां भी जला दी गयीं।

हजारीबाग

हजारीबाग में आन्दोलन ने विशेष जोर नहीं पकड़ा। श्रीमती सरस्वती देवी के नेतृत्व में एक जुलूस निकला, पर कोई तोड फोड का कार्य ऐसा नहीं हुआ जो उल्लेखनीय हो। हजारीबाग शहर मुख्यतः व्यापारियों, वकीलों इस प्रकार के परोपजीवियों का ही शहर है। इस कारण यहाँ कुछ न होना कोई आश्चर्यजनक नहीं है। इसके अतिरिक्त यहाँ की कांग्रेस नाममात्र के लिये संगठित होने पर भी जनता से उनका कभी कोई सम्पर्क नहीं था। मासिक झंडाभिवादन की बात तो दूर रही नेतागण २६ जनवरी, राष्ट्रीय सप्ताह आदि मनाना भी जरूरी नहीं समझते थे। घर बैठे सब नेता गिरफ्तार हो गये। पर इस जिले के मजदूर वाले इलाकों में अर्थात डोमचाच, कोडरमा आदि स्थानों में आंदोलन बल्कि जोरों पर रहा। कोडरमा में जनता के जोश को दबाने के लिये लोगों को चौराहे पर नङ्गा करके मारा गया। इसके बाद लोग जेल भेज दिये जाते थे। कोडरमा में एक गोली काण्ड भी हुआ। डोमचाच में जनता पर गोली चली जिसमें २ शहीद हुए।

जयप्रकाश का पलायन

हजारीबाग सेंट्रल जेल में प्रान्त भर के बहुत से राजनैतिक कैदी इस जेल में एकत्र किये गये थे। अगस्त आंदोलन के छिड़ते ही बहुत से क्रांतिकारी नेता इस बात के लिये व्याकुल रहने लगे कि किसी प्रकार बाहर पहुँचा जाय। जेल में उच्च श्रेणी के नजरबन्द रात को खुले रहते

थे। कार्यक्रम बना कि भागा जाय। इसके लिये दिवाली की रात (११ नवम्बर) चुनी गयी, क्योंकि उस दिन जेल में भी कैदी खेल तमाशा करनेवाले थे, उसका फायदा उठाकर एक टोली ने भागने का निश्चय किया। इनमें सुप्रसिद्ध कांग्रेस समाजवादी नेता जयप्रकाश जी, सुप्रसिद्ध भूतपूर्व आतङ्कवादी योगेन्द्र शुक्ल, रामनन्दन मिश्र, सूर्यनारायण सिंह, गुलाबचन्द्र गुप्ता और शालिग्राम सिंह थे। ये लोग उत्सव का फायदा उठाकर चुपके से दीवार नाघ कर बाहर निकल गये। फिर मोटर पर रांची पहुँचे। यहां से ये रही सही क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिये देश में फैल गये। फिर इन लोगों ने, पहले से जो लोग गुप्त रूप से काम कर रहे थे, उनके साथ सम्बन्ध स्थापित किया, और यह कोशिश की कि क्रांति फिर से सुलगे। कई बार जयप्रकाश जी गिरफ्तार होते होते बचे। एक बार गिरफ्तार होकर भी भाग निकले। इसमें सन्देह नहीं कि जयप्रकाश जी ने बहुत वीरता का परिचय दिया, पर यह कहना हास्यास्पद है कि वे अगस्त क्रांति के नेता थे। उन्हें अगस्त क्राति का एक प्रतीक तथा प्रतिनिधि माना जा सकता है, पर नेता नहीं, क्योंकि जब तक वे बाहर निकले तब तक तो अगस्त क्राति एक तरह से खतम हो चुकी थी। जो कोयले इधर-उधर छिटफुट रूप से जल रहे थे, उन्हें इसके बाद भी धधकाने की कोशिश की गयी, इसमें सन्देह नहीं। इसका श्रेय जयप्रकाश जी तथा उनके वीर साथियों को अन्य अनेक लोगो के साथ प्राप्त है।

मुँगेर -

मुँगेर, क्राति की अगली कतार मे रहा। १४ तारीख से ही तोड़ फाड़ का कार्य क्रम शुरू हो गया। छात्रों तथा छात्राओं ने भाग लिया। यों तो २० मे से १० थानों पर जनता का कब्जा हो गया, पर तारापुर में मेदिनी पुर की तरह अपनी सरकार सङ्गठित की गयी। एक पार्लियामेंट बनी, जज बना, तथा सेना बनी। चौकीदारों से कहा गया कि वे नयी सरकार के अधीन चलें। गावों से कहा

गया कि पंचायत बनाकर अपने झगड़े फैसले करो। व्यवस्था इतनी अच्छी रही कि इधर के इलाकों में इन दिनों चोर डकैत बिल्कुल शान्त हो गये। अवश्य बाद को इसी कारण से सरकार ने यहां पर अत्याचार बहुत किया। तारापुर की एक विशेष घटना यह है कि जनता पर गोली चलाने के लिये अमेरिकन फौज बुलायी गयी, पर उसने गोली चलाने से इनकार किया। तब दूसरी फौज बुलायी गयी। तारापुर के अतिरिक्त तोड़फोड़ इतना अधिक हुआ कि ब्रिटिश सरकार बहुत दिनों के लिये खतम हो गयी। यहां करीब करीब सब सरकारी इमारतों पर झंडा फहरा दिया गया। अन्त तक सरकार ने यहां दमन करने के लिये हवाई हमले की शरण ली और चलती फिरती जनता पर बिना कारण गोलियां बरसायीं, जिनसे सैकड़ों घायल हो गये और ४ मरे। स्मरण रहे कि केवल हवाई हमलों से ही इतने शहीद हुए। बरियार पुर की घटना है कि वहा एक टोली के एक व्यक्ति को गोली मार दी गयी।

आरा

आरा में भी आन्दोलन बहुत जोरों पर रहा। कोइलवर स्टेशन मुगल सराय तक ई० आई० आर० की पूरी लाइन काट दी गयी। इधर की सभी लाइन रोज तोड़ी जाती। ५ सितम्बर तक मास्टर जग्गूलाल के अध्यक्षता में तोड़फोड़ के कार्य हुए। देहात की क्रान्तिकारी जनता शहर मे पहुँची और शहर आरा के सरकारी दफ्तरों कचहरी, मैगजीन पर जनता का कब्जा रहा। बाद को मास्टर जग्गूलाल के घर में डिनामाइट डालकर उड़ाने की धमकी दी गयी। जब मास्टर साहब गिरफ्तार हुए तो उनपर अमानुषिक अत्याचार हुए, इसपर उनके पिता को इतना शोक हुआ कि वे मर गये। भाई कपिलदेव गोरों की गोली से-मारा गया, फिर गोरों ने अपने हाथ से उसकी अतड़ियाँ निकाल डाली। गोरे रेलवे लाइन की तरफ किसी बटोही को भी देखते, यहाँ तक कि भेड़, बकरी, बैल, भैंस को गोलियाँ मार देते थे। स्त्रियों का

सतीत्व नष्ट किया गया और उन्हें मोटर पर बैठाकर ले जाकर निर्जन स्थान में छोड़ दिया जाता था। एक पुराने खैरख्वाह शशि-शेखर प्रसाद सिंह कहते ही रह गये कि हम हमेशा खैरख्वाह रहे, तथा ५७ के गदर में हमारे खानदान ने मदद दी पर उन्हें चार गोली मारी गयी, पर वे बच गये। कोइलवर से आरा आता हुआ प्रत्येक पथिक मारा जाता था। आरा कोइलवर के बीच १ मील दूरी से एक व्यक्ति को गोली से मारा गया। चांदी गाव के हाई-स्कूल के पुस्तकालय को गोरों ने नष्ट किया। बमौरा में कुछ लोग पाखाना फिर रहे थे। उनको गोली मार दी गयी घोड़ादेई के कवि कैलाश सिंह को गरम पानी में डुबो डुबो कर मार डाला गया। बबूरा में दीप नारायण सिंह के घर में पेट्रोल छींट कर आग लगा दी गयी। जगदीशपुर थाने के बलिगाव के छट्ठन राय के कांग्रेसी पुत्र को गिरफ़ार करने के सिलसिले में छट्ठन राय को गोली मार दी गयी। लसाढ़ी में जब गोरी फौज आयी तो वहाँ के जनता ने जिसमें ग्वाले अधिक थे, जोश में आकर नगाड़े बजाते हुए उन पर टूट पड़े, इसमें १२ व्यक्ति गोली से शहीद हुये जिनके नाम ये हैं—वासुदेवसिंह शीतलसिंह, केशवसिंह, जगन्नाथसिंह, सभापतिसिंह, गिरवरसिंह, महादेव सिंह, रामानुज पाडे, शीतल मिस्त्री, केशव प्रसाद सिंह, अकिल देवी और द्वारिका प्रसाद सिंह।

सब बातो को देखकर यह कहा जा सकता है कि यदि सब जिलों को देखा जाय तो अगस्त क्रान्ति मे बिहार का स्थान सब प्रान्तों से ऊँचा रहा।

मध्य प्रान्त का आन्दोलन

नागपुर

इस प्रात के दो हिस्से हैं, एक मराठी मध्यप्रान्त और एक हिन्दुस्तानी मध्यप्रान्त। मराठा मध्य प्रान्त में ही अस्ठ और

चिमूर स्थित है जिनका नाम भारतवासी बच्चे-बच्चे की जीभ पर हो गया था। पहले हम नागपुर को लेते हैं। यहां पर भी जुलूस सभाओं के बाद तोड़-फोड़ शुरू हुई। खापा में रेल की पटरियां उखाड़ी गयीं। कुछ गोरों के बंगले पर भी हमले हुए। जिनके कारण बाद को फौजियों ने बाजार लूट लिया, फिर भी सावेनर में रेल की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया गया। अमरेढ़ रामलेट आदि ताल्लुका में भी थानों पर हमले हुए। नागपुर में ३ दिन तक जनता का राज्य रहा। शङ्कर नामक नागपुरी को बाद को फाँसी हुई। शहर के अदालत पर झण्डा फहराने के सिलसिले में तथा अन्य कई अवसरों पर गोली चली। नागपुर शहर तथा देहात में बाद को बहुत बार गोलियां चलीं। इस जिले के रामटेक ताल्लुका में आंदोलन जोरों पर रहा। तहसील पर धावा बोला गया और खजाना लूट लिया गया। जनता को ११ लाख रुपये मिले।

हिन्दुस्तान लाल सेना

इसी जिले में कांग्रेस के आंदोलन के पहले ही १९३९ में हिंदुस्तान रेडआर्मी का सङ्गठन हुआ था। इस आर्मी के नेता मगनलाल बागडी तथा श्यामलाल नायक थे। यह एक सामरिक संस्था थी, और नाम से तथा काम से श्री शचींद्रनाथ सान्याल स्थापित और चन्द्रशेखर आजाद तथा भगतसिंह द्वारा बढ़ाई हुई हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एशोसियेशन से मिलती जुलती थी। इसका झंडा लाल था, पर यह कांग्रेसी झंडा का भी इस्तेमाल करती थी। मालू कोश्टी और मदनलाल बागडी हिन्दुस्तान लाल सेना के संगठन-कर्त्ता थे। यह एक गुप्त संस्था थी। अगस्त क्रान्ति ने और पार्टियों को अप्रस्तुत पाया, वे तो बातों का ही जमा खर्च करती थीं, पर हिन्दुस्तान लाल सेना तो इसी ढङ्ग पर काम करती आ रही थी, इसलिए क्रान्ति का नारा दिये जाते ही इसने जोरों के साथ अपना कार्यक्रम जारी किया। १९४२ के १४ अगस्त को इस संस्था ने शेख

पाऊद नाम के एक सिपाही को गिरफ्तार कर लिया। वह एक थाने से हेड क्वार्टर को कुछ खबर लेकर जा रहा था कि और सिपाही भेजे जायँ। यह खबर पाकर एक जनता तथा बागडी थाने पर पहुँचे और वहाँ जनता के हमले के साथ साथ बागडी तथा श्यामलाल नायक ने पुलिस पर गोली चलायी जिसमे गजानन्द पाडो नामक एक सिपाही घायल हुआ, बाकी सिपाही भाग गये। हेड कानिस्टेबिल गौरी शंकर शोर सुन कर अपने क्वार्टर से निकल रहा था कि बागडी ने उस पर गोली चलाई और घायल कर दिया गया। थाने में आग लगा दी गयी। बागडी के दल ने थाने के सब हथियार ले लिये। बागडी जब बाद को गिरफ्तार हुए तो उनके साथ एक बहुत खतरनाक डायरी पकड़ी गयी। बागडी और मालूकोण्डी को काले पानी की सजा हुई। जब ऐसी संस्था मौजूद थी तो फिर नागपुर आगे क्यों नहीं रहता।

वर्धा

जब से गांधी जी ने साबरमती त्याग दिया तब से वर्धा उनका प्रधान केन्द्र हो गया। नेताओं की गिरफ्तारी पर यहाँ सभा हुई और लोगों ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी, इस पर इस सभा पर गोली चलायी गई और जंगलू नामक व्यक्ति शहीद हो गया। वर्धा में सक्सरिया कामर्स कालेज के लड़कों ने आन्दोलन में बहुत कार्य किया, इस कारण उसमें ताला डाल दिया गया। ३०० छात्र में २४ को सजा हुई। जनता अभी शान्ति पूर्ण थी कि सरकार ने हमला बोल दिया और जुर्म होने लगे।

अस्टी

वर्धा जिले में ही अस्टी नामक स्थान है। यहां नेताओं की गिरफ्तारी पर लोगों में जोश बढ़ा और वे थाने पर झंडा चढ़ाने के लिये गये। थाने के पास उनपर गोली चलायी गयी, जिससे जनता को

जोश आया, और वह पुलिस पर टूट पड़ी। इसमें एक थानेदार रामनाथ मिश्र तथा चार अन्य पुलिस वाले मारे गये। अब थाने पर झंडा फहराया गया। इस घटना के बाद इस इलाके पर बहुत जुल्म हुआ। एक मुकदमा चला जिसमें ६ व्यक्ति को फांसी की सजा हुई जिनमें से अन्त दो को फांसी दे दी गयी।

देवली-हिंगनघार आदि स्थानों में कुछ न कुछ तोड़फोड़ के कार्य हुए पर विशेष उल्लेख के योग्य नहीं हैं।

चिमूर

चाँदा जिले में चिमूर नामक स्थान है। १६ अगस्त को एक शांतिपूर्ण जुलूस निकल रहा था, पर पुलिस ने इस पर ही नहीं जहाँ तहाँ अंधाधुन्ध गोली चलायी। जनता को इस बात पर तैश आ गया और सब कुछ भूल कर पुलिसवालों पर टूट पड़ी। ५ पुलिसवाले मारे गये। इसके बाद कस्बे के सारे रास्तों को बंद कर दिया गया। फिर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट फौज सहित आये। डा० मुंजे बाद को चिमूर के अत्याचार को देखने के लिये गये थे। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि करीब १३० गिरफ्तार व्यक्तियों को तीन चार छोटी कोठरियों में बन्द रखा गया। उन्होंने लिखा है कि 'हमें यह एक स्लोक हाल मालूम पड़ा, लोगों पर क्या बीता होगा इसकी कल्पना की जा सकती है।' फिर श्री मुंजे मिस्टर बागडे के घर पर गये और वहाँ श्रीमती बागडे ने उनके सामने १७ स्त्रिया पेश की जिनमें से १३ ने उनके सामने बयान दिया कि उनपर बलात्कार हुआ। नायक परिवार की एक लड़की पर एक गोरे ने तथा एक सिपाही ने बलातकार किया फिर उसकी सोने की अँगूठी ले ली, और उसकी बुढ़िया माँ से भी दस रुपये ऐंठे। डाक्टर मुंजे ने लिखा है कि लूट के दृश्य तो हृदय विदारक थे। एक छोटी लड़की का गला घोंट दिया गया। चिमूर में पुलिस वालों के मारे जाने के सम्बन्ध में मुकदमा चला और उसमें से कई लोगों को फांसी की सजा दी गयी।

भंडारा

भंडारा जिले में १४ तारीख को प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई गयी। इससे जनता नाराज हो गयी और तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हो गये। डाकखाने, स्टेशन, तारघर आदि पर हमले हुये। गोंदिया, शिरोहा, मोहरा आदि स्थानों में कुछ न कुछ आन्दोलन हुआ।

बेतूल

बेतूल में स्थानीय नेताओं की गिरफ्तारी के बाद जनता क्रोध से आपे से बाहर हो गयी और पुलिस पर पत्थर फेंके गये। गोली चली, जिससे एक व्यक्ति मारा गया। ऐसे ही कई जगह पर छोटे मोटे गोली कांड हुये। तोड़ फोड़ के कार्य भी जारी रहे। पुलिसवालों के दमन का एक नमूना यह है कि श्री वेला नामक एक कांग्रेस कार्यकर्त्ता के लड़के को गोली से मार दिया गया।

जबलपुर

महाकोशल के अन्य जिलों में भी इसी प्रकार छोटे मोटे गोली कांड तथा तोड़ फोड़ के कार्य हुये। जबलपुर में हाई स्कूल के लड़कों ने आगे बढ़कर काम किया, पर १४ तारीख को उनके जुलूस पर गोली चलायी गयी। गुलाब सिंह नामक नौजवान शहीद हुआ। मदन महल स्टेशन जला दिया गया।

अमरावती

अमरावती में जगह जगह तार काटे गये तथा अन्य तोड़ फोड़ के कार्य हुए। यहाँ के लोगों पर जब सामूहिक जुर्माना लगा तो उन्होंने देने से इनकार किया। यहाँ तक कि कलक्टर भी आये तो भी नहीं दिया। कलेक्टर ने राष्ट्रीय झंडा उतारना चाहा, इस पर जनता से मुठभेड़ हो गयी। ५ वहीं मर गये। जिले में ६ बार गोलियाँ चलीं, १४ मरे, ४० घायल हुये।

अकोला आदि

अकोला में सरकार ने पहले ही अत्याचार शुरू कर दिया। लोगो ने हड़ताड़ की, इसी पर लोग पकड़ पकड़ कर पीटे गये। स्कूली लड़कों ने विशेष कर तिलक राष्ट्रीयशाला और अकोला नेशनल स्कूल के लड़कों ने आन्दोलन में अच्छा भाग लिया। बुलडाना, यौवतमाल आदि मे आन्दोलन धीमा रहा।

अत्याचार का एक नमूना

जब नेतागण १९४४ में छूटे और १९४२ की कहानियाँ सामने आने लगीं तब सेठ गोविन्ददास के सभापतित्व में महाकोशल के अत्याचारों पर एक जॉच कमेटी बैठी। हम उसके ब्यौरे में न जायेगे' १९४२ के २३ अगस्त को नर्मदाप्रसाद और बाबूलाल दो व्यक्ति गिरफ्तार हुए थे। स्टेशन दूर होने के कारण वे चिचली के राजा साहब के घर पर टिकाये गये। इस पर एक भीड़ वहा इकट्ठी हो गयी। नायब तहसीलदार मिस्टर अग्रवाल ने जनता से चले जाने के लिये कहा और नहीं तो गोली मार देने की धमकी दी। इस पर जनता जाने लगी। सबसे पीछे मनसा राम था। वह अनिच्छुक तरीके से जा रहा था। इसपर मिस्टर अग्रवाल ने मनसा राम को रिवाल्वर की गोली से मार दिया। इस हत्याकाड के विरुद्ध हड़ताल रही। न पुलिस ने लोगों को फिर निकलवा निकलवाकर पिटवाया। २ व्यक्ति सुखलाल और प्रेमचन्द्र मार के कारण पागल हो गये। 'पुलस आ रही है, दरवाजा बन्द करलो' कहते कहते ये दोनों कई दिन बाद मर गये।

दिल्ली ने भी कुछ किया

दिल्ली में सनसनी

दिल्ली का सरकारी सङ्गठन इस प्रकार है तथा यहां की पुलिस

अपने अत्याचारों के लिये इतनी मशहूर है कि राजनैतिक आंदोलन पर हमेशा यहा पर बहुत रोक थाम रही है। बात-बात में लोग दिल्ली से निकाल दिये जाते थे। दिल्ली में नेताओं की गिरफ्तारी की खबर ६ तारीख को ही दोपहर तक लग गयी। किसी ने एलान नहीं किया पर बहुत सफल हड़ताल हुई और सध्या समय गांधी ग्रांऊड में विराट जनता की एक सभा भी हुई।

नई दिल्ली चुप

अवश्य नयी दिल्ली इन बातों से करीब करीब अछूती रही। नयी दिल्ली को तो सरकार ने अपना शहर करके बनाया ही था। वहाँ के भारतीय नेताओं की गिरफतारी से प्रभावित नहीं हुए थे, यह बात नहीं पर उन सबके मुँह में किसी न किसी कारण ताले पड़े हुए थे। नयी दिल्ली ऐश्वर्य तथा सौंदर्य मे पुरानी दिल्ली से अच्छी हो सकती है और है भी, पर उसके दिमाग का वह हिस्सा गायब है जिसके कारण लोग राजनैतिक आदोलनों मे कूद पड़ते हैं।

लोग नई दिल्ली पहुँचे

इस कारण १० तारीख को पुरानी दिल्ली के घण्टाघर के इर्दगिर्द जो जनता इकट्ठी हुई उसने पहले यही सोचा कि नयी दिल्ली को उसे नींद से जगाया जाय। तदनुसार जनता इसी पर तुल गयी, किन्तु सरकार को पहले ही खबर लग चुकी थी और उसने शहर को पहले ही से कॉटेदार तारों से सुरक्षित कर दिया था। फिर भी जनता इक्के दुक्के करके नयी दिल्ली पहुँची, और वहाँ दूकानें बन्द कराने लगी। अधिकाश दूकानें तो नुकसान के भय से पहले ही बन्द हो चुकी थीं।

कोतवाली की तरफ जुलूस

११ अगस्त को यह तय हुआ कि जुलूस बनाकर कोतवाली की ओर चला जाय पर पुलिस ने भयङ्कर रूप से लाठी चार्ज किया और जुलूस के नेता खलीलूरहमान को गिरफ्तार कर लिया। इस पर

जनता आपे से बाहर हो गई, किसी ने पास ही खड़े डिप्टी कमिश्नर को ताककर ढेला या ईंटा मार दिया, बस इस पर गोली चली, और एक व्यक्ति मरा तथा कई घायल हुए।

क्रान्तिकारी हमले शुरू

इसके बाद आमतौर से तोड़फोड़ के कार्य शुरू हो गये। म्युनिसिपल दफ्तर ने हड़ताल मानकर दफ्तर बन्द करना अस्वीकार किया, इस पर जनता ने उसमें आग लगा दी। पुलिस आई, गोली चली तो जनता ने आग बुझानेवाले दमकल वालों पर हमला कर दिया। पीली कोठी और क्वींस रोड पर पेट्रोल में आग लगाई गई। शहर के सबसे बड़े रेलवे आफिस में आग लगी। एक दारोगा जान से मारा गया। जनता का हौसला बढ़ गया तो पहाड़गंज के फौजी बैरक तथा डाकखाना पर हमला कर दिया, फौजी भाग गये। बिजली के तार काट दिये गये। पुलिस ने खूब गोलियाँ चलाईं। १३ अगस्त को १५० व्यक्ति मारे गये।

बराबर जारी

जनता में जोश बढ़ता ही गया। मजदूर विशेष कर दिल्ली क्लाथ मिल तथा बिड़ला मिल के मजदूर भी हड़ताल में शामिल हो गये। छात्रों ने तो खैर भाग लिया हो, पर छात्राओं ने भी एक्सिक्युटिव आफिसर के घर पर पिकेटिङ्ग की। आन्दोलन छिटफुट तरीके से चलता रहा। कहीं जुलूस निकल जाता, तो कहीं तोड़फोड़ के कार्य होते। पर्चे तो बराबर निकलते रहे। कभी छपे हुए और कभी साइक्लोस्टाइलशुदा। नवम्बर तक कभी कभी कभी प्रभात फेरियाँ निकल जातीं। स्त्रियों की एक प्रभात-फेरी पर लाठी चार्ज हुआ, दो मरीं।

देहात भी पीछे नहीं

देहातों में भी तोड़फोड़ के कार्य हुए। कई स्थानों पर पटरियाँ

उखाड़ी गईं, तथा तार काटे गये। बादली तथा बेवरा स्टेशनों पर हमले हुए।

पंजाब और सीमाप्रान्त का आन्दोलन

पंजाब का पिछड़ापन

पंजाब भारत सरकार का रिक्रूटिंग ग्राउंड रहा है, तिसपर यहां लीग तथा युनियनिस्ट पार्टी का जोर था, यहां की कांग्रेस हमेशा साहूकारों के हाथों में रही, इन्हीं कारणों से यहां कांग्रेस का आन्दोलन कभी नहीं पनपा। यहां के पढ़े लिखे वर्ग ने अंग्रेजी सभ्यता के ऊपरी ठाट को अपना रक्खा है, और बहुत कुछ जनता से दूर रहने में ही अपनी भलाई समझते हैं। इन कारणों से पंजाब में १९४२ की क्रान्ति जोर नहीं कर पाई। लाला लाजपत राय का पंजाब इस अवसर पर सब से पीछे रहा।

नाममात्र आन्दोलन

फिर भी नेताओं की गिरफ्तारी की कुछ प्रतिक्रिया तो हुई ही। विरोध सभायें हुईं। कांग्रेसवाले भले ही बेखबर रहे हों, पर सरकार बेखबर नहीं रही। उसने फौरन स्थानीय नेताओं को गिरफ्तार किया, और कांग्रेस के दफ्तरों पर ताले लगा दिये। कुछ नौजवानों को जैसा समझ में आया, वैसा काम किया, और कहीं कहीं रेल की पटरी तथा तारों को हानि पहुँचाई गई। पंजाब, वीरता का घर समझा जानेवाला पंजाब इस प्रकार १९४२ में बिलकुल पिछड़ा रहा, और कोई ऐसी घटना नहीं हुई जो उल्लेखयोग्य हो।

सीमाप्रान्त के आन्दोलन की विशेषता

पर सीमाप्रान्त ने इस आन्दोलन में गौरवमय हाथ बटाया। हाँ, एक बात बता दी जाय कि सीमाप्रान्त इस अवसर पर गांधीवादी दबाव-राजनीति के दायरे में ही रहा, वह शक्ति पर

कब्जावाली नई क्रान्तिकारी नीति को अपनाकर इसमें अपना जौहर नही दिखा सका। और उससे इतनी उम्मीद थी। इस प्रकार सीमाप्रात के कांग्रेसी क्यों कथित अहिंसा या दबाव राजनीति से बाहर नहीं निकल सके, इसका सबसे बडा कारण यह है कि साम्राज्यवाद ने यहाँ गिरफ़्तारी की नीति ही नहीं रक्खा। यह कहना गलत होगा कि उधर जापानी आक्रमण और इधर अगस्त विस्फोट के कारण नौकरशाही पागल हो गई, नही वह कभी पागल नहीं हुई, याने पागल भी हुई तो उसके पागलपन में एक तरीका था। उसने इस क्राति के दमन में भी ऐसी नीति रक्खी कि जहाँ तक हो सके मुस्लिम जनता में जोश तथा घृणा की भावनायें उत्पन्न न हों। इसी नीति के कारण उसने ऐसे स्थानों में जहाँ मुसलमान जनता ने आन्दोलन का साथ भी दिया, वहाँ भी जब सामूहिक जुर्माना किया मुसलमानों को उससे बरी रक्खा। डा० मुजे ने मध्यप्रात के दमन के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट लिखी, उसमें इस अजीब बात पर विस्मय प्रकट किया। उन्होंने लिखा "हम जिन शहरों में गये, वहा के तोड़फोड़ में मुसलमानों का अच्छा खासा भाग था। इसलिये जुर्माने के समय केवल हिन्दुओं पर जुर्माना कर उन्हें बरी करना एक ऐसी बात है जिसके सम्बन्ध में यह सन्देह होता है कि इससे हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव में ठेस लगेगी।" मैं यह भी दिखा चुका हूँ कि कुछ स्थानों में मुसलमानों के द्वारा हिन्दू आदोलनकारियों को लुटवाया गया।

आन्दोलन का रुख बदला

इसी प्रकार सरकार ने सीमाप्रात में प्रदर्शनकारियों को शुरू शुरू में गिरफ़्तार नहीं किया। यहां तक कि खान अब्दुलगफार खां को भी गिरफ्तार नहीं किया। इस प्रकार सारा अहिंसात्मक प्रदर्शन ही बेकार हो गया। दमन दबाता भी है, पर उसमें स्फूर्तिदायक शक्तिया भी हैं। यदि खान अब्दुलगफार गिरफ़्तार हो जाते, तो भी शायद आदोलन कुछ पनपता क्योंकि फिर खुदाई खिदमतगार दूसरे प्रांतों

का अनुकरण कर क्रांतिकारी कार्यक्रम अपनाते, पर वे गिरफ़ार नही हुए। मशरूवाला आदि की तरह वे अहिंसा की नयी व्याख्या को लेकर नही चले। फिर भी अक्टूबर तक वे ऊब गये, और उन्होंने आंदोलन को एक नया रुख देते हुए शराब की दूकानों पर पिकेटिंग शुरू करवा दी।

आर रुख भी बदला

पर सरकार इस पर भी चुप रही। तब सरकारी इमारतों पर भी पिकेटिंग शुरू हुई। साथ ही साथ फौजी कैम्पों पर भी पिकेट भेजे जाने लगे। अब सरकार के दुम पर पैर पड़ने लगे, इसके अलावा इस बीच मे अन्य प्रान्तों मे दमन कर स्थिति काबू में लाई जा चुकी थी, अब सरकार यहॉ नीति बदल सकती थी। अकेला सीमाप्रान्त वाले क्या बिगाड़ लेंगे? अब लाठी चार्ज होने लगा। ६ अक्टूबर को नेता गिरफ़ार भी हुए। अब आन्दोलन में कुछ तेजी आई, अब तो सरकारी इमारतों पर पिकेटिंग ही नही, अब उन पर झंडा चढ़ाने का कार्यक्रम आया। जनता पर लाठी चार्ज हुआ। कुछ घायल हुए, कुछ गिरफ़ार हुए। बन्नू, कोहाट, मरदान सर्वत्र आन्दोलन का यही रूप रहा। एक जगह गोली चली, पर यह शायद स्थानीय आफिसर की गलती थी, वह शायद सरकार की पालिसी समझ नह पाया था। और जगहों पर तो जुल्म करने के लिए लोगो को तमगे मिले, पर इस आफिसर का ग्रेड ही घटा होगा। वह सरकार की long range पालिसी के विरुद्ध गया था। दूसरे स्थानों पर आन्दोलनकारियों के कारण अन्य लोग भी गिरफ्तार हुए, स्त्रियों पर बलात्कार हुये, पर यहॉ जो लोग बढ़कर आन्दोलन मे शरीक थे वे ही गिरफ्तार हो गये। कुल अढ़ाई हजार व्यक्ति अन्त तक गिरफ्तार हुए। इतने छोटे प्रान्त के लिए अढाई हजार गिरफ्तारी कम नहीं थी, इसके लिए वहॉ की कांग्रेस बधाई के योग्य है, पर ये

लोग जिस प्रकार और जितनी देर में गिरफ्तार हुये, उससे जनता में विशेष जोश उत्पन्न नहीं हुआ।

गुजरात, सिन्ध काठियावाड़

गुजरात गान्धीवाद से आगे बढ़ा

सीमाप्रान्त अहिंसा के प्रति सच्चा रहा, पर स्वयं गान्धीजी का जन्म प्रान्त गुजरात-काठियावाड़ अहिंसा के प्रति उस प्रकार सच्चा नहीं रहा। बात यह है कि खान बन्धु गान्धी जी से भी अधिक गान्धीवादी हो गये थे, पर गुजरात तथा काठियावाड़ क्रान्ति की अगली कतार में रहे।

अहमदाबाद

स्वाभाविक रूप से अहमदाबाद आगे रहा। अहमदाबाद वालों ने अपने शहर के अतिरिक्त सारे गुजरातीभाषी इलाके को संगठित किया। मजदूरों ने यहां कांग्रेस का पूरा साथ दिया, और उन्होंने हड़ताल कर दी। इसका एक कारण तो यह था कि यहां के मजदूरों पर कम्युनिस्टों का कोई प्रभाव नहीं था, दूसरा पूंजीपति भी आन्दोलन की सफलता चाहते थी। रायिस्टों तथा कम्युनिस्टों का यह कहना है कि पूँजीपतियों ने दो दो महीने की तनख्वाह देकर मजदूरों को बिदा कर दिया, पता नहीं यह कहां तक सत्य है, पर यदि सत्य भी है तो यह कोई लज्जा की बात नहीं। पूँजीपतियों ने भले ही ऐसा अपने मतलब से किया हो, और भले ही वे स्वतंत्रता का अर्थ पूँजीपति राज्य लगाते हों, पर इस अवसर पर उन्होंने जो कुछ किया, उससे क्रान्ति की शक्तियों को स्फूर्ति ही मिली।

श्री विनोद किनारीवाला

मजदूरों, विद्यार्थियों तथा गुमाश्तों की एक सम्मिलित युद्ध समिति बनी। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों की कई स्थानीय तथा प्रान्तीय संस्थायें तो थीं ही। १० तारीख को विद्यार्थियों के एक जुलूस पर गोली

चली, और श्री विनोद किनारीवाला नामक एक छात्र शहीद हो गया। वे झण्डा लेकर आगे आगे चल रहे थे। पर झण्डा नहीं उतरा, छात्रों ने उसे देने से इनकार किया। अन्त में लाठी चार्ज और अश्रुगैस का प्रयोग कर भीड़ को तितरबितर किया गया। लाठीचार्ज से कई छात्रों को सख्त चोटें आईं। एक हजार के करीब सैनिक अहमदाबाद के दमन के लिये घूमने लगे।

बढ़ी हुई गति

फौजियों ने नागरिकों पर तरह तरह का जुल्म शुरू किया। ये जब तब गालियाँ भी चलाने लगे। रास्ते में जो मिलता उसी की पिटाई हो ने लगी। फिर गोलियाँ कभी इधर से सन से आतीं तो कभी उधर से। १२ अगस्त को ८ बार गोलिया चलीं। जब लोगो को बाहर निकलना मना हो गया तो लोग छत पर चढ़कर रात को नारे लगाने लगे। साथ ही तोड़फोड़ के कार्य होने लगे। कहीं थाने पर बम डाले गये, तो कहीं स्टेशन को नुकसान पहुँचाया गया। शहर के सारे तार काट दिये गये। दारोगाओं के बंगलों तथा पुलिस हेडक्वार्टर पर हमले हुए।

खेड़ा का अडास कांड

खेड़ा जिला भी पीछे नहीं रहा, वहाँ भी जुलूस आदि निकले। लाठी तथा गोलीकाड हुए। फ्री प्रेस जनरल में अडास में जो काड हुआ था, वह यों है। बड़ौदा से बम्बई जाने वाली गाड़ी पर ३४ छात्र रवाना हुए। उनका उद्देश्य यह था कि दीवारों पर कार्यक्रम खरियामिट्टी से लिखा जाय, तथा अन्य तरीके से कांग्रेस के कार्यक्रम का प्रचार किया जाय। वे अपना काम कर अडास पहुँचे जहाँ से वे बड़ौदा लौटना चाहते थे। ज्यों ही वे अडास पहुँचे, त्योंही चार या छै रायफलधारी पुलिसवाले जो उन्ही की टोह में थे उनके पास आये, और बोले कि बैठ जाओ, इस पर छात्र बैठ गये। उन्होंने समझा

कि या तो पुलिसवाले उन्हें गिरफ्तार करेंगे या मारेंगे। वे इसके लिये तैयार हो गये। इसके बाद पुलिसवालों ने छात्रों के सीने से बन्दूक लगाकर गोलियां चलाईं। दो या तीन के सीने में गोली लग गई। चार छात्र वहीं पर मर गये, १२ घायल हुए जिनमें से ? बाद को अस्पताल में मर गया। पुलिस ने केवल इन्हें मार ही नहीं डाला, पर अन्तिम समय में लोगों को पानी भी नहीं देने दिया। इसी हालत में मृत तथा घायल ७ बजे से रात बारह बजे तक पड़े रहे। तब फौजदार आया तो उसने मृत देहों को जनता के सुपुर्द किया, और घायलों को आनन्द अस्पताल भेजा। पुलिस ने बाद को इन पर मुकद्दमा भी चलाया।

डाकोर गोलीकांड

डाकोर में भी गोली चली। यहाँ जनता को दौड़ादौड़ाकर गोली से मारा गया। मज़े की बात है कि जनता चाहती तो पुलिसवालों को गिरा लेती. और वह गिरा भी रही थी, पर श्री छोटा भाई नामक एक सज्जन ने जनता को रोका। पर थोड़ी देर में जब अधिक पुलिस आई तो उसने छोटा भाई को ही गोली से उड़ा दिया। पुलिसवालों को बचाने का श्री छोटाभाई को यह पुरस्कार मिला।

सूरत

सूरत में भी पहले जुलूस आदि निकला, फिर तोड़-फोड़ के कार्य हुए। बारडोली रेल की पटरी उखाड़ने के कार्य में आगे रहा। तार तो सर्वत्र कटे। तापती वेली नामक स्थान में गांधी जी के अनशन तक रेल की पटरियां उखड़ती रहीं, और तार कटते रहे। पुलिस किसी भी प्रकार इसे रोक नहीं पाई। सूरत भर में जितने थाने थे उनपर या तो रात को छिपकर आक्रमण हुआ, या सार्वजनिक तरीके पर आक्रमण हुआ।

भड़ौंच

भड़ौंच में मेघजी नायक (जो पहले डाकू थे) तथा श्री छोटाभाई के

नेतृत्व में आन्दोलन ने पहले से ही क्रान्तिकारी रूप धारण किया। इन लोगो के अनुसार कार्यक्रम बने और थानों पर क्रान्तिकारी तरीके से छापा मार कर पुलिस वालों का हथियार छीन लिया गया। मेघ जी नायक तो पहले से ही लूटमार करने में सिद्धहस्त थे। उन्होंने इस अवसर पर भी उसी नीति से काम लिया और अमीरों को लूटकर गरीबों की झोली भरते रहे। पुलिस इन लोगो की संगठन प्रतिभा के सामने परेशान थी।

छात्र रोके गये

अडास में जैसे बढ़ौदा के छात्र रोके गये थे, वैसे ही १५ अगस्त को बड़ौदा का एक छात्र दल भड़ौंच में रोका गया। इसको २४ घंटा रोक रक्खा गया। फिर जब इन लोगों के सम्बन्ध में यह इतमीनान हो गया कि ये तोड़ फोड़ के लिए नहीं निकले हैं, तभी ये छोड़ दिये गये।

पंचमहल

पञ्चमहल में आन्दोलन अपेक्षाकृत रूप से धीमा रहा। पर फिर भी यहाँ तोड़-फोड के कार्य काफी संख्या में हुये। कलोल में थाने तथा अन्य कई सरकारी इमारतों पर अज्ञात व्यक्तियों ने बम डाले। तार काटे गये, तथा रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं। इन्हीं बातों की सजा देने के लिए फौज आ रही थी, तो उसके रास्ते में जो पुल पड़ता था उसे तोड़कर रख दिया गया। कुछ फौजी चोट खा गये, पर फौज आई और उसने खूब दमन किया। इस जिले के लोग लुकाछिपी में यथेष्ट हुशियार हो गये थे। बकायदा कुछ गोरिल्ला जत्थे बन गये थे, जो पुलिस को चकमा देकर अपना काम करते थे।

सिन्ध पीछे नहीं

स्वतन्त्रता के इस सग्राम में सिन्ध प्रांत भी पीछे नहीं रहा। जैसा कि आमतौर से समझा जाता है कि सिन्ध बहुत पिछड़ा हुआ प्रांत है, पर श्री परशुराम जी ताहिलरमानी ने प्रमाणित किया कि सिन्ध इस

संग्राम में पीछे नहीं रहा। यद्यपि इस प्रान्त की आबादी ४५ लाख मात्र है फिर भी २५०० आदमी तो जेल ही गये थे। एक मजे की बात यह है कि जिस समय १९४०-४१ का वैयक्तिक सत्याग्रह आन्दोलन हुआ था उस समय सिन्ध को इस आदोलन से बरी कर दिया गया था। पर १९४२ में सिंध खुलकर खेला।

करांची

करांची में भी जुलूस सभाओं से आदोल शुरू हुआ, इस पर सरकार का प्रहार हुआ। इससे आदालन ने दूसरा रुख पकड़ा। विद्यार्थियों ने इसमें काफी हाथ बंटाया और जिन विद्यालयों में हड़ताल नही भी हुई, वहाँ पर हड़ताली छात्रों ने पिकेटिङ्ग की। पर जल्दी ही पुलिस ने ऐसी परिस्थिति कर दी कि लोग घर के बाहर निकलते तो पीटे जाते तब लोगों ने रात को अपने अपने घरों से नारे लगाने शुरू किये। इसके अलावा लोग छतों पर से राष्ट्रीय गाने भी गाते थे। इस प्रकार सामूहिक जोश का प्रदर्शन बराबर जारी रहा। इसके अलावा लोगो ने तोड़ फोड़ के कार्य भी शुरू कर दिये। कई जगह रेल लाइनें काट दी गयी और उसका नतीजा यह हुआ कि फौजी गाड़ियों को भी रुकना पड़ा।

शखर और हेमू कलानी

शखर में शुरू में हड़ताल आदि हुई पर जब इससे बाधा पहुँचाई गई तो पटरी आदि उखाड़ना शुरू हो गया। पुलिस ने तोड़ फोड़ के कार्य के सम्बन्ध में पता लगाने के लिए लोगो पर अकथनीय अत्याचार किये, चौराहे पर गिराकर मारा तथा बर्फ पर बैठाया, पर फिर भी जब कुछ पता नहीं लगा तो वे और भी अत्याचार करने लगे। इधर तोड़ फोड़ के कार्यों की सख्या और भी बढ गयी। शखर का एक छात्र श्री हेमू कलानी को फांसी की सजा दी गयी और देश भर के विरोध करने पर भी जनवरी १९४३ को उन्हें फांसी दे

दी गई । हेमू कलानी ही शायद इस आन्दोलन के सबसे प्रथम फांसी पाने वाले शहीद थे। हेमू कलानी एक छात्र थे, उनका नाम भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा।

सिन्ध के अन्य जिले

हैदराबाद तथा शिकारपुर में भी आन्दोलन का वही रूप रहा जो कराची तथा शक्खर मे रहा। हैदराबाद तथा शिकारपुर में स्त्रियों ने अपना कर्त्तव्य बहुत सुन्दर तरीकों से निवाहा और कई बार उन्हें लाठी चार्ज भी सहना पड़ा। आन्दोलन कारिणी स्त्रियों को पकड़ कर दूर जगलों में भी छोड़ दिया जाता था जिससे उनको बड़ा कष्ट होता था।

भावनगर

काठियावाड़ में भावनगर, राजकोट पोर बन्दर, जामनगर अमरेली में १९४२ की गूँज उठी। भावनगर युद्धोद्योग का प्रमुख केन्द्र था। इसलिये यहा पर छात्रों ने यह कोशिश की कि युद्ध द्रव्य उत्पादन करनेवाले इन कारखानों में हड़ताल हो जाय। इसलिये लोग जुलूस बना बना कर इन कारखानों के पास पहुँचते थे और यह कोशिश करते थे कि इनमें हड़ताल हो जाय। सरकार भला इस बात को कब बर्दाश्त करनेवाली थी, इसलिये लोग गिरफ्तार हुए। श्री हीरालाल ने लिखा है कि इस पर भी आन्दोलन धीमा नहीं पड़ा, पर सरकार ने अब मजदूरों पर भी जुर्माना करना शुरू किया, और जुर्माना न देने पर उनका बर्तन आदि उठा ले जाना शुरू किया। इससे वहाँ की जनता का जोश टूट गया फिर भी कुछ तोड़ फोड़ के कार्य हुए ही।

राजकोट, पोरबन्दर

राजकोट में भी प्रदर्शन हुए। पोरबन्दर मे खरवास अर्थात समुद्री मल्लाहों ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया। शुरू में जनता ने आंदोलन को यह रूप दिया कि रियासत को चाहिये कि जरूरत की चीजों को रियासत के बाहर जाने न दें। इस पर नेतागण गिरफ्तार कर लिये

गये। समुद्री मल्लाहों को जब इस बात के लिये मजबूर किया गया कि वे शक्कर लादें तो उन्होंने बोरों को लादकर समुद्र में फेंक दिया। इस पर अधिकारी झुके और वे नेताओं का छोड़ने के लिये विवश हुए पर ज्योंही जनता का जोश घट गया, त्योंही फिर नेता गिरफ्तार कर लिये गये। इस पर रियासत की जनता एक विशाल जुलूस बनाकर महाराजा के पास गयी। इस पर राजा ने कुछ सीधा उत्तर देने के बजाय ऊपर से तो बातचीत चलायी, पर भीतर भीतर आसपास के गांवों से अहीर तथा दूसरे लोगो को लारियों में भरकर लाया गया। जब यह सब प्रबन्ध हो चुका ता ऐसा मालूम होता है कि एक सरकारी एजेंट ने राना की तरफ एक ढेला मारा। बस इस पर जनता पर बेभाव की पड़ने लगी इस प्रकार देशी राजा अत्याचार में पीछे न रहा। बहुत दिनों तक अत्याचार चलता रहा। लोगों को पकड़कर न मालूम कहाँ ले जाया गया। गाधी टोपी की कौन कहे, सफेद टोपी देखते ही मार पड़ने लगती थी। कुछ दिनों तक तो घर से निकलना मुश्किल हो गया। इसके बाद जनता की तरफ से तार काटे गये, डाक से थैले लूटे गये, पुल तोड़े गये तथा रेल की पटरियाँ उखाड़ी गयीं। इस प्रकार काठियावाड़ भी पीछे न रहा।

बड़ौदा

बड़ौदा में नेताओं की गिरफ्तारी के बाद श्री अम्बालाल गाधी के नेतृत्व में चरडा में सभा हुई। प्रजामडल के नेता गिरफ्तार कर लिये गये और १८ अगस्त को एक जगह गोली चली जिसमें २ व्यक्ति मारे गये। सर्तन सभायें हुईं। कुराली में एक सभा हुई जिसमें चरडा से एक भीड़ के साथ अम्बालाल गांधी गये। यह खबर थी कि रेल से एक फौज जनता के दमन के लिये आ रहा है। बस क्या था श्री गाधी ने जनता को यह नारा दिया कि रेल आने ही मत दो। इस पर दो मील तक पटरी उखाड़ डाली गयी। स्टेशन जला दिया गया। डाकखाने, चोरों (ग्राम पचायत) तथा लेटरबाक्सों में आग लगा दी

गयी। इसके बाद फौज लारियों से आयी। अम्बालाल गांधी गिराकर मारते मारते बेहोश कर दिये गये। और उनके नौकर भी पीटे गये। एक महीने तक जुल्म होता रहा। ४५ हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया। ७ दिन तक १०० गांववालों को बिना खाना के एक रेल के डब्बे में बन्द रखा गया। गाववाले चोरी मे कुछ खाना पहुँचा देते। बाद को मुकद्दमा चला और अम्बालाल गाधी को १०½ साल सजा तथा १५५४० रुपये जुर्माने, प्रेमानन्द भट को १० साल सजा, ५००० हजार रु० जुर्माने किये गये। गाधी जी की दूकान जप्त कर ली गयी।

महाराष्ट्र और कर्नाटक

महाराष्ट्र भी अगली कतार में, पूना

महाराष्ट्र हमेशा से भारत के सब आन्दोलनों में आगे रहा है। यहाँ के लोग बुद्धिवादी हैं, साथ ही साथ उनके क्रान्तिकारी प्रवृत्ति की कमी नहीं है। नेताओं की गिरफ्तारी होते ही पूना में तुरन्त पता लग गया और चारों तरफ से इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगने लगे। जनता इस बात की प्रतीक्षा करने लगी कि बम्बई से आने वाले नेता क्या कहते हैं पर बम्बई से आनेवाली गाड़ी पूना में पहुँचते ही उससे उतरने वाले सब नेता गिरफ्तार कर लिए गये। लोगो को यह पता ही नहीं लगा कि स्वतंत्र होने को तो हो गये, पर क्या कार्यक्रम है पर जैसा कि श्री अनन्त कलोखे पटील ने लिखा है कि ६ अगस्त को ही पूना के छात्रों ने यह तय कर लिया कि कुछ करना है। १० अगस्त को १० हजार छात्रों का जुलूस निकला। ये लोग एस० पी० कालेज के मैदान में जाना चाहते थे। कालेज बन्द कर दिया गया और पुलिस तैनात हो गई। १० हजार छात्र उसके फाटक पर बैठ गये। डेढ़ घण्टे तक छात्र धूप में बैठे रहे। पुलिस के लोग छात्रों से चले जाने के लिए कहते रहे पर छात्र उठे नहीं। इस पर उन पर

एकाएक गोली चलाई गयी। जो लोग घायल हुये उनको किसी प्रकार डाक्टरी मदद नहीं दी गई। ४० छात्र घायल हुये। शहर में सैनिकों का पहरा हो गया। अब तो जब तब गोली चलने लगी। १० से १८ अगस्त के बीच कई बार गोली चली। बहुत से ऐसे व्यक्ति भी मारे गये जो अपने बरामदे में खड़े झांक रहे थे। पूना की सब सड़कें जनता के खून से तर हो गयीं।

गोरे मरे, बम फटे

अब तोड़ फोड़ के काम शुरू हो गये। कैपिटल सिनेमा में गोरे देखने आया करते थे, वहाँ बम फटा और पाँच गोरे मरे, कई घायल हुए। एक बारूद के गोदाम में आग लगा दी गई, जिससे करीब एक करोड़ का नुकसान हुआ, और ऐसा धड़ाका हुआ कि शहर हिल उठा। इस प्रकार पूना ने भी अपना कर्त्तव्य किया। नेतृत्व तथा कार्यक्रमहीन जनता और क्या करती।

अहमदनगर

अहमदनगर में तो कांग्रेस के सबसे प्रधान नेतागण बन्द थे। यहाँ किले की ओर जाने की चेष्टा हुई जहाँ नेता बन्द थे। तोड़ फोड़ कार्य बराबर होते रहे। कई विद्यार्थियों ने बड़े साहस के काम किया और जिला मैजिस्ट्रेट तथा अन्य कई जगह बम फटे। एक मैजिस्ट्रेट की अदालत में आग लगाई गई। कुछ सिपाहियों को मौके से पाकर जनता ने उनकी वर्दी उतार ली।

सतारा

महाराष्ट्र के सतारा ने जिस प्रकार इतिहास निर्माण किया वह एक अमर कहानी है। इस जिले के १५०० गाँव के प्रत्येक गाँव ने क्राँति के लिये कुछ न कुछ किया। १९२१ में यह जिला आगे रहा। यहाँ सत्यशोधक आन्दोलन भी चला जिसका किसानों पर बहुत बड़ा असर पड़ा। १९३० के आन्दोलन में बिलाशी गाँव ने बहुत अच्छा

काम किया। १९४२ में सतारा कांग्रेस बहुत तगड़ी संस्था थी। नेताओं की गिरफ्तारी पर यहाँ जनता में जोश छा गया। कार्यकर्ता गांव-गांव दौड़ने लगे, पर कुछ निर्दिष्ट कार्यक्रम न होने के कारण वे कोई निर्दिष्ट बात नहीं कह सके, पर धीरे-धीरे जनता की क्रांतिकारी बुद्धि सजग हो गयी, और २४ अगस्त से लेकर १० सितम्बर तक ५ कचहरियों पर झंडा लगाने का कार्यक्रम हुआ। २४ अगस्त को कराद में एकत्रित २५०० किसान श्रौंडाले के बालकृष्ण पटील के नेतृत्व में एक जुलूस बनाकर कचहरी पहुँचे। इसके बाद वहाँ जब हाते में घुसने को नहीं मिला तो एक सभा हुई, इसमें पुलिस वाले घुस आये और कहा पटील गिरफ्तार किये जाते हैं। पाण्डुरङ्ग देशमुख पर सङ्गीन से हमला किया गया। इस पर पटील ने लोगों को शान्ति से घर जाने के लिये कहा। अभी तक जनता शान्त थी।

तसगांव

३ सितम्बर को तसगाव तालुका के ४००० किसान तसगांव कचहरी पर पढ़ गये। वे शान्तिपूर्ण तरीके से आगे बढ़े। वे चाहते तो आसानी से कचहरी पर कब्जा कर लेते पर अभी जनता शान्त थी। इसी प्रकार वडज में भी शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए। यहाँ प्रदर्शन के नेता परशुराम गर्गे थे ९ सितम्बर को गर्गे जी बीमार होने के कारण बैलगाड़ी पर लिमरे भाइयों के साथ प्रदर्शन के पास गये। इसके बाद जुलूस कचहरी की तरफ रवाना हुआ। परशुराम ने झंडा लेकर आगे खड़े हुए और पुलिसवालों से कहा कि हम झंडा फहराने आये हैं। इसपर गोली चली। परशुराम तीन गोली खाकर शहीद हो गये। तीन और मरे, तीन अस्पताल जाकर मरे, ५० घायल हुए।

इस्लामपुर

१० सितम्बर को इस्लामपुर में पुलिस और जनता में चल गयी। पाण्डु मास्टर दो हजार जनता का नेतृत्व कर रहे थे। पाण्डु मास्टर

पकड़ लिये गये। गिरफ़ारी के समय पाण्डु मास्टर ने जनता को शान्तिपूर्ण तरीके से घर जाने के लिये कहा। जनता घर गयी, पर फिर भी पुलिस ने गोला चलायी। इसके फलस्वरूप बराह्र बरापटे वहीं मर गये। मिस्टर पण्ड्या नामक एक इञ्जिनियर जो रास्ते से जा रहे थे वे भी मर गये।

नाना पटील

अब तो पुलिसवालों की धांधली बहुत बढ़ गयी। पुलिसवालों ने गांववालों पर अत्याचार तो किया ही, इसके अतिरिक्त हवालातियों पर 'सुन्दरी' अर्थात जुल्म किया जाने लगा। अब तो बदमाश लोग इसका फायदा उठाने लगने। लोग भयभीत रहने लगे। ऐसे समय में श्री नाना पटील ने जनता के क्रान्तिकारी अंश को संगठित किया और तुर्की ब तुर्की पुलिस का जवाब देने लगे। नाना पटील ने पुलिस वालों के नाक में दम कर दिया। कहीं मुखबिर मारे जाते तो कहीं चौकीदार का घर फूंक दिया जाता, तो कहीं धमकी के पत्र भेजे जाते। इस प्रकार सतारा में बिल्कुल समान्तराल सरकार रही। पटील के लोग कभी पुलिसवालों का सामना जानबूझ कर नहीं करते, पर कभी सामना हो जाता तो फिर दोनों तरफ से चलतो। सरकार इनके मारे इतनी परेशान हुई कि किसी प्रकार उसका वश ही नहीं चलता था। जब कांग्रेस मन्त्रिमंडल की स्थापना हुई तभी सतारा के क्रांतिकारियों ने अपना अस्त्र टेका।

पूर्वी पश्चिमी खानदेश

पूर्वी तथा पश्चिमी खानदेश में भी आंदोलन सतारा की तरह नहीं, पर जोरदार रहा। यहा विद्यार्थियों का एक जुलूस निकल रहा था, पुलिस ने लाठी चार्ज किया। विद्यार्थी अगल बगल के मकानों में घुस गये। कुछ विद्यार्थी घुस नहीं पाये या नहीं घुसे। थानेदार उनकी तरफ जिनमें छात्रायें भी थीं, बन्दूक लेकर लपका। इस पर एक लड़के

ने सीना खोल दिया उसे गोली मार दी गयी। कुल चार छात्र मरे। एक वकील साहब जो पास से जा रहे थे, उन्होंने कुछ सहानुभूति दिखलायी, तो उनको घसीट कर जूतों से पीटा गया। शाने गुरुजी तथा उत्तम पटील और उनकी स्त्री लीला पटील के नेतृत्व में क्रान्तिकारी तोड़फोड़ हुए। लीला पटील गिरफ्तार हो गयीं, उन्हें ६ साल की सजा भी दी गयी, पर वे भाग गयीं। पति पत्नी का इस प्रकार एक साथ क्रान्तिकारी होना बहुत ही सराहनीय है। यहाँ सब तरह के तोड़ फोड़ के कार्य हुए। पुलिस के साथ कई जगह खण्ड युद्ध भी हुए।

नासिक

नासिक में आंदोलन मामूली तरीके से शुरू होकर फिर तोड़फोड़ में परिणत हो गया। सरकार यहाँ के आंदोलन को भी बहुत दिनों तक दबा नहीं पायी और आंदोलन वेग से चलने लगा।

कर्नाटक

कर्नाटक आंदोलन में पीछे नहीं रहा, बल्कि डी० पी० कर्मकार का कहना है कि १८५७ के बाद इतना जोश कर्नाटक में कभी नहीं आया। कर्नाटक में तोड़-फोड़ का कार्य बहुत अधिक हुआ। कुछ मानों में सारा कर्नाटक ही उतारू हो चुका था। सरकार को इतनी परेशानी हुई कि क्रांतिकारी नेताओं की गिरफ्तारी के लिये पांच हजार तक इनाम घोषित किया गया, पर जनता ने किसी को गिरफ्तार नहीं कराया।

तोड़-फोड़ के कार्य

हुब्ली में एक जुलूस पर गोली चली और एक बालक शहीद हुआ। बैलहुंगल में गोली चली, ७ मरे। निपानी में डाकखाना तथा कुछ अन्य सरकारी इमारतों में उस समय आग लगा दी गयी, जब कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चली। सौंदत्ती में तालुका के दफ्तर में हमला

हुआ और एक कैदी छुड़ा लिया गया। १५ सितम्बर को एक साथ हुबली के पास चार रेलवे स्टेशन में आग लगा दी गयी। इसके बाद पी० डब्लू० के दफ्तर तथा अन्य सरकारी इमारतों पर हमले हुए। १७ स्टेशनों को खतम कर दिया गया। जिन लोगो के पास हथियार थे छीन लिये गये। सरकारी गल्ला लूट लिया गया। बड़े सगठित तरीके से ये काम हुए और सबसे मजेदार बात यह है कि लोग चाहते तो साथ साथ अफसरों को भी खतम करते जाते पर उन्होंने भारतीय समझकर किसी को नहीं मारा। बेलगाँव में बराबर तोड़ फोड़ के कार्य होते रहे। कुछ सरकारी नौकरों ने जैसे मोराब के पुलिस पटील ने नौकरी छोड़ दी। गोकाक तालुका दफ्तर में कुछ स्त्री तथा पुरुष घुस गये और उन्होंने रिकार्ड जला डाला। बेलगाव के कडवी शिवपुर के एक वीर ने पुलिस का हुक्म न मानकर गोली खायी। जब तक गांधी जी ने अनशन नहीं किया तब तक यहा आन्दोलन चलता रहा।

पुलिसवाले पर पुलिस की गोली

धारावार में एक पुलिस अफसर पुलिस के ही हाथों से मारे जाते जाते बच गया। पुलिसवालों ने सुन रखा था कि इधर से तोड़ फोड़ करनेवाले आने वाले हैं इसलिये उन्होंने रास्ते पर ईंटा पत्थर डालकर बन्द कर रखा था। उधर से पुलिस अफसर आये तो उन्होंने समझा कि तोड़ फोड़ वाले सड़क रोके बैठे हैं। उन्होंने चाहा कि जल्दी मोटर दौड़ा दें इस पर पुलिस वालों ने गोली चलायी तो इंजन टूट गया पर वहा तो तोड़ फोड़ वालों की जगह पर एक पुलिस अफसर निकले।

कर्नाटक पर साढ़े तीन लाख जुर्माना हुआ। ५ व्यक्तियों को तो फांसी की सजा ही दी गयी, करीब २० जगह गोलियां चलीं। पुलिस की वर्दी छीन लेने तथा उनको निरस्त्र करने की बहुत सी घटनायें हुईं थीं।

आन्ध्र केरल तामिलनाड दक्षिण की रियासतें

आन्ध्र

आन्ध्र की जनता अगस्त क्रान्ति में पीछे नहीं रही। आन्ध्र में मजदूर विद्यार्थी, किसान, महिला सभी ने गौरवमय हिस्सा अदा किया। यहाँ तोड़-फोड़ के कार्य भी बहुत हुए। गुंटूर जिले के टेनाली ने विशेष बहादुरी दिखलायी। विद्यार्थियों ने नेतृत्व किया। १२ अगस्त को विद्यार्थी रेलवे स्टेशन में घुस गये, और उसपर कब्जा हो गया। पुलिसवालों की पगड़ी उतार ली गयी, और बुकिंग क्लर्कों को घर जाने को कह दिया गया। तार टेलीफोन काट डाले गये। सबसे बड़ी इमारत मे आग लगा दी गयी और टिकट तथा नगद उसी में झोंक दिया गया। मद्रास से उस समय एक गाड़ी आयी। उसके सब मुसाफिरों को उतारकर उसमें आग लगा दी गयी। टेनाली दुनिया से कट चुका था, पर पावर स्टेशन के तार कटे नहीं थे। उसन जिले में कोई खबर दे दी। जिला मैजिस्ट्रेट आ गये और गोली चली। कई मरे। इसपर यहाँ फौज रख दी गयी, और इस फौज ने बहुत अत्याचार किया।

कुछ कार्यक्रम था

आन्ध्र की गश्ती चिट्ठी का हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं इसलिये यहा के लोग कत्तई कार्यक्रमहीन थे, यह बात नहीं। इस कारण यहा तोड़-फोड़ के कार्य बहुत सफलता के सा । हुए। भीमावरम, राजमुंडी कोकनाडा कई जगह पर तोड़-फोड़ का विशेष जोर रहा। रेल की पटरियाँ मीलों तक उखाड़ी गयीं। एलोर में सबसे मजेदार बात यह हुई कि वहा नोटिस देकर तार काटा गया। क्यों न ऐसा होता जब कि आन्ध्र गश्ती चिट्ठी के कारण कांग्रेसी यह समझ रहे थे कि अब की बार नये तरीके का सत्याग्रह करना है। एलोर में आन्ध्र गश्ती चिट्ठी सार्वजनिक रूप से पढ़कर सुनायी गयी। जनता ने कई जगह पर कचहरी, थाने आदि पर झंडा लगा दिया। कहीं कहीं आग भी

लगा दी गयी। आन्ध्र पर बाद को ४½ लाख जुर्माना किया गया। २००० हजार के करीब व्यक्ति जेल भेज दिये गये। भीमवरम में सबसे अधिक अत्याचार हुआ। यहा के लोगों पर इस तरह विशेष जुल्म इस कारण किया गया कि यहां रेवेन्यू डिविजनल आफिस पर झंडा फहराया गया था और वहा के आफिसर के द्वारा झंडे को सलाम करने तथा जनता के साथ जुलूस में चलने के लिये मजबूर किया गया था। इसके अतिरिक्त इधर तार बहुत काटे गये थे। वे किसी भी प्रकार रोके न जा सके।

केरल

नेताओं की गिरफ्तारी के ६ घण्टे के अन्दर ही करेल के प्रसिद्ध नेता के० कलपन, के० माधव मेनन गिरफ्तार हो गये। आर० राघव मेनन और गोविन्द मेनन बाद को गिरफ्तार हुये। १० अगस्त को ही केरल कांग्रेस प्रान्तीय कमेटी गैरकानूनी करार दी गयी और पुलिस ने इसके दफ्तर पर छापा मारा। किसी ने किसी को कुछ नहीं कहा, पर छात्रों ने फौरन हड़ताल कर दी। कालीकट के जमोरिन कालेज, क्रिश्चियन कालेज और अन्य हाई स्कूलों में हड़ताल हो गयी। जुलूस निकालते हुए या सभा में बोलते हुए जानब मोईद्दू मौलवी, एम० पी० नारायण मेनन, करुणाकर मेनन, डा० चन्दू गिरफ्तार हो गये। इधर नेता गिरफ्तार होते रहे पर जनता के सामने कोई कार्यक्रम नहीं था, इस कारण लोग पिकेटिंग आदि करने लगे। कचहरियों पर पिकेटिंग हुई जिसके कारण तेलीचरी का जिला कोर्ट और कालीकोट का मुंसिफ कोर्ट, बडगरा ओट्टापलम और पालघाट बन्द हो गया। और बहुत दिनों तक बन्द रहे। मलाबार की पुलिस ने बहुत जोर का लाठी चार्ज किया। फिर भी प्रदर्शन होते रहे। १९४२ के २० अगस्त को मलाबार में जो सार्वजनिक हड़ताल हुई थी बहुत ही स्मरणीय है। पालघाट, किलाडी, तेलचरी सर्वत्र हड़ताल रही।

चर्खा केन्द्र भी गैर कानूनी

यह एक मजे की बात है कि १९४२ में भी केरल में रचनात्मक कार्यक्रम की कथिक बला जारी रही। २० चर्खा केन्द्र चले। अवश्य ये केन्द्र देशीय महिला समाज द्वारा परिचालित थे, इस कारण क्षम्य हैं। पर सरकार इन बातों को भी बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थी, और इन केन्द्रों पर भी पुलिस ने छापा मारा, और ये केन्द्र भी गैर कानूनी करार दिये गये।

स्वतन्त्र भारतम् पत्र

इन्हीं सब कारणों से तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हुये। गोविन्द-नैयर ने लिखा है कि एक गैर-कानूनी साप्ताहिक स्वतन्त्र भारतम् नाम से चला और बराबर निकलता रहा। इस पत्र की कापी जिसके पास भी मिलती उसे सजा दी जाती। पर जनता में इस पत्र के लिए बड़ा जोश था।

तोड़ फोड़ का जोर

केरल में तोड़ फोड़ जोरों से हुआ। कई जगह सरकारी इमारतें विशेषकर कस्बों की इमारतें जैसे कुरुमद्रनद तालुक की इमारतें जलायी गयी। चोम्बल नामक डिपो जलाया गया। नडूवन्नूर तथा चमनचेरी के सब रजिस्ट्री दफ्तर जलाये गये। चमनचेरी का स्टेशन जलाया गया। फेरोक के रेल वाले पुल को उड़ाने की चेष्टा की गयी। कोरायन में पटेल आफिस जला दिये गये। कालीकट और कलाई के बीच रेल का आना जाना बन्द किया गया। पल्लीकुन्नू का डाकखाना जलाया गया। इनके सम्बन्ध में बाद को तेलचरी बमकाड मुकद्दमा, तिरूवलपूर बमकाड मुकद्दमा तथा खिजरियापुर षड़यत्र चले। खिजयारी पुर में कई प्रसिद्ध व्यक्ति को १० साल की सजा हुई, जिनमें डा० के० वी० मेनन; एन० ए० कृष्णन नैयर, सी० पी० शङ्करन० नैयर, और पी० केशवन् नैयर थे। इन मुकद्दमों में जो लोग फँसे

उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया गया। लोग इतने सताये गये कि कई बीमार हो गये। गोविन्दन नैयर ने लिखा है कि कम्युनिस्टों ने लोगों को पुलिस के हवाले किया। जेल में इतना अत्याचार हुआ कि बहुत से लोग जेल में ही मर गये। ईश्वरलाल शराफ, कोम्बीकुट्टी मेनन, कुन्हीरमनन जेल में मरे। एल० एस० प्रभु जेल से बीमार होकर छूटे और मर गये।

कोचीन और ट्रावनकोर

जिस समय आंदोलन चल रहा था, उस समय केरल में कुछ प्राकृतिक प्रकोप भी हुआ, और सरकारी नीति के कारण दुर्भिक्ष तो था ही। श्रीगोविन्दन नैयर लिखते हैं कि केरल में दो देशी रियासतें कोचीन और ट्रावनकोर हैं, इनमें से ट्रावनकोर में सरकार ने शुरू से ही इतना अत्याचार किया कि लोगों को दुनिया से काट दिया गया और वहां की रियासत कांग्रेस के १०० व्यक्ति को गिरफ्तार कराके ही ठप पड़ गयी। कोचीन में १५० व्यक्ति जेलों में गये। त्रिचूर तथा एरनाकुलम के विद्यार्थियों ने बहुत अच्छा काम किया। छात्राओं ने भी अच्छा काम किया और वे भी पुलिस मार की शिकार हुईं। देशी रियासतें दमन में ब्रिटिश भारत से पीछे नहीं रहीं।

तामिलनाड

तामिलनाड में आन्दोलन बहुत सफल रहा, यहाँ भी जुलूसों तथा सभाओं से आंदोलन शुरू हुआ, साथ ही मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी। मद्रास से कलकत्ता की गाड़ी कई दिन तक नहीं चली, क्योंकि रेल कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। मद्रास में विद्यार्थी सबसे आगे रहे। नेताओं की गिरफ्तारी पर फौरन हड़ताल हो गयी शिक्षाविभाग के अधिकारियों ने बहुत चाहा कि लोग विद्यालयों में लौट आयें, पर कोई विद्यार्थी नहीं लौटा। जब तक मद्रास के अन्दर आंदोलन चला, वह विद्यार्थियों की बदौलत ही चला। चेतपुर में विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ, भीड़ को तैश आ गया, और उसने एक दारोगा तथा चार

सिपाहियों को खूब अच्छी तरह पीट दिया। यहाँ के मजदूर बड़े क्रांतिकारी सिद्ध होते, पर कम्युनिस्टों ने उनको अपने कर्तव्य से रोका और और जितना चाहिये था वे उतना कार्य नहीं कर सके। नहीं तो मद्रास एक ऐसा प्रांत था और यहाँ के रेलवे मजदूर इतने संगठित थे कि पटरियां बिना उखाड़े ही रेलें बन्द हो जातीं।

तामिलनाड के जिले

त्रिची जिले में रेल की तोड़-फोड़ बहुत हुई। मनार गुड़ी स्टेशन जला दिया गया। जिस समय स्टेशन जल रहा था, उस समय उस स्टेशन की सहायता के लिये अन्य गाड़ी आयी, पर भीड़ ने उसे वापस लौट जाने के लिये विवश किया। यहां ऐसी हालत हो गयी थी कि प्रत्येक गाड़ी के साथ सशस्त्र पुलिस के दो डब्बे रखे जाते थे। रामनद जिले में पहले जुलूस तथा सभाओं से कार्य शुरू हुआ, फिर इसके बाद आंदोलन ने दूसरा रुख पकड़ा। यहां जनता की शक्ति इतनी प्रबल मालूम पड़ी कि कई थानेदार अपने थानों को खाली कर चले गये। इसके बाद लोगों का थानों पर अधिकार हो जाता था। अन्य सरकारी इमारतों पर आग लगा दी गई, और यहाँ पर जेल तोड़कर कैदियों को भी निकाल दिया गया। ७२ घंटे के लिये सरकार का कहीं पता नहीं रहा, पर धीरे धीरे फौज आयी। और फिर से सरकार का अधिकार होने लगा। लोगों के घरों में आग लगा दी गयी, गांव के गांव लूटे गये, और जिसकी चाहे इज्जत रक्खो और चाहे जिसकी न रखी। तंजौर जिलों के तीरुत्राड़ी का मुंसिफ कोर्ट तथा अन्य सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी और उनमें जो कुछ भी मिला लूट लिया गया। कोयम्बटूर में चहरे हवाई अड्डा पर आक्रमण हुआ और उसे खतम कर दिया गया। इस कांड के बदला लेने के लिए सरकार ने आसपास के २० गांवों को बिल्कुल उखाड़ दिया। जो पुरुष मिले गिरफ्तार कर लिए गये, और जो स्त्रियां मिलीं, उनको मारा पीटा तथा उन पर अन्य-अत्याचार हुए। यहां सरकार ने जो

अत्याचार किया वह दिल दहलाने वाला है। फिर भी जिले भर में तोड़ फोड़ का कार्य बहुत जोरों के साथ हुआ। शायद ही कोई लाइन ऐसी बची हो जो उखाड़ी न गयी हो।

अन्य जिले

कोमलकोनम, मदुरा आदि स्थानों में भी कुछ आन्दोलन हुआ पर इनमें कोई खास बात नहीं हुई। देवकोटा में अत्याचार की हद कर दी गई। यहाँ पर श्री गोपाल केशवन की फरारी के कारण उनकी स्त्री को नङ्गी करके पेड़ में बाँध दिया गया। फिर उनके ऊपर तरह तरह के अत्याचार हुए, जिसके कारण वह मर गयी।

कोल्हापुर

अगस्त आन्दोलन का प्रारम्भ होते ही कोल्हापुर की रियासत कानफरेंस ने आन्दोन की घोषणा कर दी, पर इस बीच में कुछ वार्त्ता होती रही और १९४२ के १८ अक्टूबर को ही असली संग्राम का सूत्रपात हुआ। छात्र संघ ने भी मदद दी पर आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही सब सभायें, जुलूस आदि गैर कानूनी करार दिये गये, और सब राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी हो गयी। लोगों को जेल भेजने के लिये तथा सजा देने के लिये विशेष अदालतें खोली गयीं। अब तो तोड़फोड़ के कार्य शुरू हो गये और २६ चबाडा ४ बँगले, २ दफ्तर ३ स्टेशनों पर हमले हुए। ६ डाक के थैले लूटे गये। बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर लेस्लि विलसन की मूर्त्ति बिगाड़ दी गया। ८ जगह बम फटे। ४४५५० रुपये सामूहिक जुर्माना हुए। पर इससे जनता का क्रांतिकारी जोश घटा नहीं, कुछ लोग जेल से भी भाग गये। इस रियासत में १६ व्यक्ति शहीद हुए।

मिरज

मिरज में ६ अगस्त को ही आदोलन शुरू हो गया। मिस्टर चारू-दत्त पटिल ने, जो प्रजापरिषद के सभापति राजा को लिख भेजा कि वे

ने सीना खोल दिया उसे गोली मार दी गयी। कुल चार छात्र मरे। एक वकील साहब जो पास से जा रहे थे, उन्होंने कुछ सहानुभूति दिखलायी, तो उनको घसीट कर जूतों से पीटा गया। शाने गुरुजी तथा उत्तम पटील और उनकी स्त्री लीला पटील के नेतृत्व में क्रान्तिकारी तोड़फोड़ हुए। लीला पटील गिरफ्तार हो गयीं, उन्हें ६ साल की सजा भी दी गयी, पर वे भाग गयीं। पति पत्नी का इस प्रकार एक साथ क्रान्तिकारी होना बहुत ही सराहनीय है। यहाँ सब तरह के तोड़ फोड़ के कार्य हुए। पुलिस के साथ कई जगह खण्ड युद्ध भी हुए।

नासिक

नासिक में आंदोलन मामूली तरीके से शुरू होकर फिर तोड़फोड़ में परिणत हो गया। सरकार यहाँ के आदोलन को भी बहुत दिनों तक दबा नहीं पायी और आदोलन वेग से चलने लगा।

कर्नाटक

कर्नाटक आदोलन में पीछे नहीं रहा, बल्कि डी० पी० कर्मकार का कहना है कि १८५७ के बाद इतना जोश कर्नाटक में कभी नहीं आया। कर्नाटक में तोड़-फोड़ का कार्य बहुत अधिक हुआ। कुछ मानों में सारा कर्नाटक ही सतारा हो चुका था। सरकार को इतनी परेशानी हुई कि क्रातिकारी नेताओं की गिरफ्तारी के लिये पाच हजार तक इनाम घोषित किया गया, पर जनता ने किसी को गिरफ्तार नहीं कराया।

तोड़-फोड़ के कार्य

हुबली में एक जुलूस पर गोली चली और एक बालक शहीद हुआ। बैलहुंगल में गोली चली, ७ मरे। निपानी में डाकखाना तथा कुछ अन्य सरकारी इमारतों में उस समय आग लगा दी गयी, जब कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चली। सौंडटी में तालुका के दफ्तर में हमला

हुआ और एक कैदी छुड़ा लिया गया। १५ सितम्बर को एक साथ हुबली के पास चार रेलवे स्टेशन में आग लगा दी गयी। इसके बाद पी० डब्लू० के दफ्तर तथा अन्य सरकारी इमारतों पर हमले हुए। १७ स्टेशनों को खतम कर दिया गया। जिन लोगों के पास हथियार थे छीन लिये गये। सरकारी गल्ला लूट लिया गया। बड़े संगठित तरीके से ये काम हुए और सबसे मजेदार बात यह है कि लोग चाहते तो साथ साथ अफसरों को भी खतम करते जाते पर उन्होंने भारतीय समझकर किसी को नहीं मारा। बेलगाँव में बराबर तोड़ फोड़ के कार्य होते रहे। कुछ सरकारी नौकरों ने जैसे मोराब के पुलिस पटोल ने नौकरी छोड़ दी। गोकाक तालुका दफ्तर में कुछ स्त्री तथा पुरुष घुस गये और उन्होंने रिकार्ड जला डाला। बेलगांव के कड़वी शिवपुर के एक वीर ने पुलिस का हुक्म न मानकर गोली खायी। जब तक गांधी जी ने अनशन नहीं किया तब तक यहा आन्दोलन चलता रहा।

पुलिसवालें पर पुलिस की गोली

धारावार में एक पुलिस अफसर पुलिस के ही हाथों से मारे जाते जाते बच गया। पुलिसवालों ने सुन रखा था कि इधर से तोड़ फोड़ करनेवाले आने वाले हैं इसलिये उन्होंने रास्ते पर ईंटा पत्थर डालकर बन्द कर रखा था। उधर से पुलिस अफसर आये तो उन्होंने समझा कि तोड़ फोड़ वाले सड़क रोके बैठे हैं। उन्होंने चाहा कि जल्दी मोटर दौड़ा दें इस पर पुलिस वालों ने गोली चलायी तो इंजन टूट गया पर वहां तो तोड़ फोड़ वालों की जगह पर एक पुलिस अफसर निकले।

कर्नाटक पर साढ़े तीन लाख जुर्माना हुआ। ५ व्यक्तियों को तो फांसी की सजा ही दी गयी, करीब २० जगह गोलियां चलीं। पुलिस की वर्दी छीन लेने तथा उनको निरस्त्र करने की बहुत सी घटनायें हुई थीं।

आन्ध्र केरल तामिलनाड दक्षिण की रियासतें

आन्ध्र

आन्ध्र की जनता अगस्त क्रान्ति में पीछे नहीं रही। आन्ध्र में मजदूर विद्यार्थी, किसान, महिला सभी ने गौरवमय हिस्सा अदा किया। यहां तोड़-फोड़ के कार्य भी बहुत हुए। गुंटूर जिले के टेनाली ने विशेष बहादुरी दिखलायी। विद्यार्थियों ने नेतृत्व किया। १२ अगस्त को विद्यार्थी रेलवे स्टेशन में घुस गये, और उसपर कब्जा हो गया। पुलिसवालों की पगड़ी उतार ली गयी, और बुकिंग क्लर्कों को घर जाने को कह दिया गया। तार टेलीफोन काट डाले गये। सबसे बड़ी इमारत में आग लगा दी गयी और टिकट तथा नगद उसी में झोंक दिया गया। मद्रास से उस समय एक गाड़ी आयी। उसके सब मुसाफिरों को उतारकर उसमें आग लगा दी गयी। टेनाली दुनिया से कट चुका था, पर पावर स्टेशन के तार कटे नहीं थे। उसने जिले में कोई खबर दे दी। जिला मेजिस्ट्रेट आ गये और गोली चली। कई मरे। इसपर यहाँ फौज रख दी गयी, और इस फौज ने बहुत अत्याचार किया।

कुछ कार्यक्रम था

आन्ध्र की गश्ती चिट्ठी का हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं इसलिये यहां के लोग कतई कार्यक्रमहीन थे, यह बात नहीं। इस कारण यहां तोड़-फोड़ के कार्य बहुत सफलता के साथ हुए। भीमावरम, राजमुंडी कोकनाडा कई जगह पर तोड़-फोड़ का विशेष जोर रहा। रेल की पटरियाँ मीलों तक उखाड़ी गयीं। एलोर में सबसे मजेदार बात यह हुई कि वहां नोटिस देकर तार काटा गया। क्यों न ऐसा होता जब कि आन्ध्र गश्ती चिट्ठी के कारण कांग्रेसी यह समझ रहे थे कि अब की बार नये तरीके का सत्याग्रह करना है। एलोर में आन्ध्र गश्ती चिट्ठी सार्वजनिक रूप से पढ़कर सुनायी गयी। जनता ने कई जगह पर कचहरी, थाने आदि पर झंडा लगा दिया। कहीं कहीं आग भी

चर्खा केन्द्र भी गैर कानूनी

यह एक मजे की बात है कि १९४२ में भी केरल में रचनात्मक कार्यक्रम की कथिक बला जारी रही। २० चर्खा केन्द्र चले। अवश्य ये केन्द्र देशीय महिला समाज द्वारा परिचालित थे, इस कारण क्षम्य हैं। पर सरकार इन बातों को भी बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थी, और इन केन्द्रों पर भी पुलिस ने छापा मारा, और ये केन्द्र भी गैर कानूनी करार दिये गये।

स्वतन्त्र भारतम् पत्र

इन्हीं सब कारणों से तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हुये। गोविन्द-नैयर ने लिखा है कि एक गैर-कानूनी साप्ताहिक स्वतन्त्र भारतम् नाम से चला और बराबर निकलता रहा। इस पत्र की कापी जिसके पास भी मिलती उसे सजा दी जाती। पर जनता में इस पत्र के लिए बड़ा जोश था।

तोड फोड का जोर

केरल में तोड़ फोड़ जोरों से हुआ। कई जगह सरकारी इमारतें विशेषकर कस्बों की इमारतें जैसे कुरुमद्रनद ताल्लुक की इमारतें जलायी गयीं। चोम्बल्ल नामक डिपो जलाया गया। नडूवन्नूर तथा चमनचेरी के सब रजिस्ट्री दफ्तर जलाये गये। चमनचेरी का स्टेशन जलाया गया। फेरोक के रेल वाले पुल को उड़ाने की चेष्टा की गयी। कोरायन में पटेल आफिस जला दिये गये। कालीकट और कलाई के बीच रेल का आना जाना बन्द किया गया। पल्लीकुन्नू का डाकखाना जलाया गया। इनके सम्बन्ध में बाद को तेलचरी बमकाड मुकद्दमा, तिरुवलपूर बमकांड मुकद्दमा तथा खिजरियापुर षड्यत्र चले। खिजयारी पुर में कई प्रसिद्ध व्यक्ति को १० साल की सजा हुई, जिनमें डा० के० वी० मेनन; एन० ए० कृष्णन नैयर, सी० पी० शङ्करन० नैयर, और पी० केशवन् नैयर थे। इन मुकद्दमों में जो लोग फँसे

उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया गया। लोग इतने सताये गये कि कई बीमार हो गये। गोविन्दन नैयर ने लिखा है कि कम्युनिस्टों ने लोगों को पुलिस के हवाले किया। जेल में इतना अत्याचार हुआ कि बहुत से लोग जेल में ही मर गये। ईश्वरलाल शराफ, कोम्बीकुट्टी मेनन, कुन्हीरमनन जेल में मरे। एन० एस० प्रभु जेल से बीमार होकर छूटे और मर गये।

कोचीन और ट्रावनकोर

जिस समय आंदोलन चल रहा था, उस समय केरल में कुछ प्राकृतिक प्रकोप भी हुआ, और सरकारी नीति के कारण दुर्भिक्ष तो था ही। श्रीगोविन्दन नैयर लिखते हैं कि केरल में दो देशी रियासतें कोचीन और ट्रावनकोर हैं, इनमें से ट्रावनकोर में सरकार ने शुरू से ही इतना अत्याचार किया कि लोगों को दुनिया से काट दिया गया और वहां की रियासत कांग्रेस के १०० व्यक्ति को गिरफ्तार कराके ही ठप पड़ गयी। कोचीन में १०० व्यक्ति जेलों में गये। त्रिचूर तथा एरनाकुलम के विद्यार्थियों ने बहुत अच्छा काम किया। छात्राओं ने भी अच्छा काम किया और वे भी पुलिस मार की शिकार हुईं। देशी रियासतें दमन में ब्रिटिश भारत से पीछे नहीं रहीं।

तामिलनाड

तामिलनाड में आन्दोलन बहुत सफल रहा, यहाँ भी जुलूसों तथा सभाओं से आंदोलन शुरू हुआ, साथ ही मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी। मद्रास से कलकत्ता की गाड़ी कई दिन तक नहीं चली, क्योंकि रेल कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। मद्रास में विद्यार्थी सबसे आगे रहे। नेताओं की गिरफ्तारी पर फौरन हड़ताल हो गयी। शिक्षाविभाग के अधिकारियों ने बहुत चाहा कि लोग विद्यालयों में लौट आयें, पर कोई विद्यार्थी नहीं लौटा। जब तक मद्रास के अन्दर आंदोलन चला, वह विद्यार्थियों की बदौलत ही चला। चेतपुर में विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ, भीड़ को तैश आ गया, और उसने एक दारोगा तथा चार

सिपाहियों को खूब अच्छी तरह पीट दिया। यहाँ के मजदूर बड़े क्रांतिकारी सिद्ध होते, पर कम्युनिस्टों ने उनको अपने कर्तव्य से रोका और और जितना चाहिये था वे उतना कार्य नहीं कर सके। नहीं तो मद्रास एक ऐसा प्रांत था और यहाँ के रेलवे मजदूर इतने संगठित थे कि पटरियां बिना उखाड़े ही रेलें बन्द हो जातीं।

तामिलनाड के जिले

त्रिची जिले में रेल की तोड़-फोड़ बहुत हुई। मन्नार गुड़ी स्टेशन जला दिया गया। जिस समय स्टेशन जल रहा था, उस समय उस स्टेशन की सहायता के लिये अन्य गाड़ी आयी, पर भीड़ ने उसे वापस लौट जाने के लिये विवश किया। यहां ऐसी हालत हो गयी थी कि प्रत्येक गाड़ी के साथ सशस्त्र पुलिस के दो डब्बे रखे जाते थे। रामनद जिले में पहले जुलूस तथा सभाओं से कार्य शुरू हुआ, फिर इसके बाद आंदोलन ने दूसरा रुख पकड़ा। यहां जनता की शक्ति इतनी प्रबल मालूम पड़ी कि कई थानेदार अपने थानों को खाली कर चले गये। इसके बाद लोगों का थानों पर अधिकार हो जाता था। अन्य सरकारी इमारतों पर आग लगा दी गई, और यहाँ पर जेल तोड़कर कैदियों को भी निकाल दिया गया। ७२ घंटे के लिये सरकार का कहीं पता नहीं रहा, पर धीरे धीरे फौज आयी। और फिर से सरकार का अधिकार होने लगा। लोगों के घरों में आग लगा दी गयी, गांव के गांव लूटे गये, और जिसकी चाहे इज्जत रखो और चाहे जिसकी न रखो। तंजौर जिलों के तीरुवाड़ी का मुंसिफ कोर्ट तथा अन्य सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी और उनमें जो कुछ भी मिला लूट लिया गया। कोयम्बटूर में चहरे हवाई अड्डा पर आक्रमण हुआ और उसे खतम कर दिया गया। इस कांड के बदला लेने के लिए सरकार ने आसपास के २० गांवों को बिल्कुल उखाड़ दिया। जो पुरुष मिले गिरफ्तार कर लिए गये, और जो स्त्रियां मिलीं, उनको मारा पीटा तथा उन पर अन्य अत्याचार हुए। यहाँ सरकार ने जो

अत्याचार किया वह दिल दहलाने वाला है। फिर भी जिले भर में तोड़ फोड़ का कार्य बहुत जोरों के साथ हुआ। शायद ही कोई लाइन ऐसी बची हो जो उखाड़ी न गयी हो।

अन्य जिले

कोमलकोनम, मदुरा आदि स्थानों में भी कुछ आन्दोलन हुआ पर इनमें कोई खास बात नहीं हुई। देवकोटा में अत्याचार की हद कर दी गई। यहाँ पर श्री गोपाल केशवन की फरारी के कारण उनकी स्त्री को नङ्गी करके पेड़ में बाँध दिया गया। फिर उनके ऊपर तरह तरह के अत्याचार हुए, जिसके कारण वह मर गयी।

कोल्हापुर

अगस्त आन्दोलन का प्रारम्भ होते ही कोल्हापुर की रियासत कानफरेंस ने आन्दोन की घोषणा कर दी, पर इस बीच में कुछ वार्त्ता होती रही और १९४२ के १८ अक्टूबर को ही असली संग्राम का सूत्रपात हुआ। छात्र संघ ने भी मदद दी पर आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही सब सभाये, जुलूस आदि गैर कानूनी करार दिये गये, और सब राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी हो गयी। लोगों को जेल भेजने के लिये तथा सजा देने के लिये विशेष अदालतें खोली गयीं। अब तो तोड़फोड़ के कार्य शुरू हो गये और २६ चबाडा ४ बँगले, २ दफ्तर ३ स्टेशनों पर हमले हुए। ६ डाक के थैले लूटे गये। बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर लेसलि विलसन की मूर्त्ति बिगाड़ दी गया। ८ जगह बम फटे। ४४५५० रुपये सामूहिक जुर्माना हुए। पर इससे जनता का क्रांतिकारी जोश घटा नहीं, कुछ लोग जेल से भी भाग गये। इस रियासत में १६ व्यक्ति शहीद हुए।

मिरज

मिरज में ६ अगस्त को ही आदोलन शुरू हो गया। मिस्टर चारूदत्त पटिल ने, जो प्रजापरिषद के सभापति राजा को लिख भेजा कि वे

ने सीना खोल दिया उसे गोली मार दी गयी। कुल चार छात्र मरे। एक वकील साहब जो पास से जा रहे थे, उन्होंने कुछ सहानुभूति दिखलायी, तो उनको घसीट कर जूतों से पीटा गया। शाने गुरुजी तथा उत्तम पटील और उनकी स्त्री लीला पटील के नेतृत्व में क्रान्तिकारी तोड़फोड़ हुए। लीला पटील गिरफ्तार हो गयीं, उन्हें ६ साल की सजा भी दी गयी, पर वे भाग गयीं। पति पत्नी का इस प्रकार एक साथ क्रान्तिकारी होना बहुत ही सराहनीय है। यहाँ सब तरह के तोड़ फोड़ के कार्य हुए। पुलिस के साथ कई जगह खण्ड युद्ध भी हुए।

नासिक

नासिक में आंदोलन मामूली तरीके से शुरू होकर फिर तोड़फोड़ में परिणत हो गया। सरकार यहाँ के आदोलन को भी बहुत दिनों तक दबा नहीं पायी और आदोलन वेग से चलने लगा।

कर्नाटक

कर्नाटक आदोलन में पीछे नहीं रहा, बल्कि डी० पी० कर्मकार का कहना है कि १८५७ के बाद इतना जोश कर्नाटक में कभी नहीं आया। कर्नाटक में तोड-फोड़ का कार्य बहुत अधिक हुआ। कुछ मानों में सारा कर्नाटक ही सतारा हो चुका था। सरकार को इतनी परेशानी हुई कि क्रांतिकारी नेताओं की गिरफ्तारी के लिये पाच हजार तक इनाम घोषित किया गया, पर जनता ने किसी को गिरफ्तार नहीं कराया।

तोड़-फोड़ के कार्य

हुबली में एक जुलूस पर गोली चली और एक बालक शहीद हुआ। बैलहुंगल में गोली चली, ७ मरे। निपानी में डाकखाना तथा कुछ अन्य सरकारी इमारतों में उस समय आग लगा दी गयी, जब कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चली। सौंडटी में तालुका के दफ़्तर में हमला

हुआ और एक कैदी छुड़ा लिया गया। २५ सितम्बर को एक साथ हुबली के पास चार रेल्वे स्टेशन में आग लगा दी गयी। इसके बाद पी० डब्लू० के दफ्तर तथा अन्य सरकारी इमारतों पर हमले हुए। १७ स्टेशनों को खतम कर दिया गया। जिन लोगों के पास हथियार थे छीन लिये गये। सरकारी गल्ला लूट लिया गया। बड़े संगठित तरीके से ये काम हुए और सबसे मजेदार बात यह है कि लोग चाहते तो साथ साथ अफसरों को भी खतम करते जाते पर उन्होंने भारतीय इसपेक्टर किसी को नहीं मारा। बेलगांव में बराबर तोड़ फोड़ के कार्य होते रहे। कुछ सरकारी नौकरों ने जैसे नौराव के पुलिस पटेल ने नौकरी छोड़ दी। गोकाक तालुका दफ्तर में कुछ स्त्री तथा पुरुष घुस गये और उन्होंने रिकार्ड जला डाला। बेलगांव के कड़वी शिवपुर के एक वीर ने पुलिस का हुक्म न मानकर गोली खायी। जब तक गांधी जी ने अनशन नहीं किया तब तक यहां आन्दोलन चलता रहा।

पुलिसवाले पर पुलिस की गोली

धारावार में एक पुलिस अफसर पुलिस के ही हाथों से मारे जाते जाते बच गया। पुलिसवालों ने सुन रखा था कि इधर से तोड़ फोड़ करनेवाले आने वाले हैं इसलिये उन्होंने रास्ते पर ईंट पत्थर डालकर बन्द कर रखा था। उधर से पुलिस अफसर आये तो उन्होंने समझा कि तोड़ फोड़ वाले सड़क रोके बैठे हैं। उन्होंने चाहा कि जल्दी मोटर दौड़ा दें इस पर पुलिस वालों ने गोली चलायी तो इंजन टूट गया पर वहां तो तोड़ फोड़ वालों की जगह पर एक पुलिस अफसर निकले।

कर्नाटक पर साढ़े तीन लाख जुर्माना हुआ। ५ व्यक्तियों को तो फांसी की सजा ही दी गयी, करीब २० जगह गोलियां चलीं। पुलिस की वर्दी छीन लेने तथा उनको निरस्त्र करने की बहुत सी घटनायें हुईं थीं।

आन्ध्र केरल तामिलनाड दक्षिण की रियासतें

आन्ध्र

आन्ध्र की जनता अगस्त क्रान्ति में पीछे नहीं रही। आन्ध्र में मजदूर विद्यार्थी, किसान, महिला सभी ने गौरवमय हिस्सा अदा किया। यहाँ तोड़-फोड़ के कार्य भी बहुत हुए। गुंटूर जिले के टेनाली ने विशेष बहादुरी दिखलायी। विद्यार्थियों ने नेतृत्व किया। १२ अगस्त को विद्यार्थी रेलवे स्टेशन में घुस गये, और उसपर कब्जा हो गया। पुलिसवालों की पगड़ी उतार ली गयी, और बुकिंग क्लर्कों को घर जाने को कह दिया गया। तार टेलीफोन काट डाले गये। सबसे बड़ी इमारत में आग लगा दी गयी और टिकट तथा नगद उसी में झोंक दिया गया। मद्रास से उस समय एक गाड़ी आयी। उसके सब मुसाफिरों को उतारकर उसमें आग लगा दी गयी। टेनाली दुनिया से कट चुका था, पर पावर स्टेशन के तार कटे नहीं थे। उसन जिले में कोई खबर दे दी। जिला मैजिस्ट्रेट आ गये और गोली चली। कई मरे। इसपर यहाँ फौज रख दी गयी, और इस फौज ने बहुत अत्याचार किया।

कुछ कार्यक्रम था

आन्ध्र की गश्ती चिट्ठी का हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं इसलिये यहा के लोग कत्तई कार्यक्रमहीन थे, यह बात नहीं। इस कारण यहां तोड़-फोड़ के कार्य बहुत सफलता के सा। हुए। भीमावरम, राजमुंड्री कोकनाडा कई जगह पर तोड़-फोड़ का विशेष जोर रहा। रेल की पटरियाँ मीलों तक उखाड़ी गयीं। एलोर में सबसे मजेदार बात यह हुई कि वहां नोटिस देकर तार काटा गया। क्यों न ऐसा होता जब कि आन्ध्र गश्ती चिट्ठी के कारण कांग्रेसी यह समझ रहे थे कि अब की बार नये तरीके का सत्याग्रह करना है। एलोर में आन्ध्र गश्ती चिट्ठी सार्वजनिक रूप से पढ़कर सुनायी गयी। जनता ने कई जगह पर कचहरी, थाने आदि पर झंडा लगा दिया। कहीं कहीं आग भी

लगा दी गयी। आन्ध्र पर बाद को ५½ लाख जुर्माना किया गया। १०००० हजार के करीब व्यक्ति जेल भेज दिये गये। भीमवरम में सबसे अधिक अत्याचार हुआ। यहां के लोगों पर इस तरह विशेष जुल्म इस कारण किया गया कि यहां रेवेन्यू डिविजनल आफिस पर झंडा फहराया गया था और वहां के आफिसर के द्वारा झंडे को सलाम करने तथा जनता के साथ जुलूस में चलने के लिये मजबूर किया गया था। इसके अतिरिक्त इधर तार बहुत काटे गये थे। वे किसी भी प्रकार रोके न जा सके।

केरल

नेताओं की गिरफ्तारी के ६ घण्टे के अन्दर ही करेल के प्रसिद्ध नेता के० कलपन, के० माधव मेनन गिरफ्तार हो गये। आर० राघव मेनन और गोविन्द मेनन बाद को गिरफ्तार हुये। १० अगस्त को ही केरल कांग्रेस प्रान्तीय कमेटी गैरकानूनी करार दी गयी और पुलिस ने इसके दफ्तर पर छापा मारा। किसी ने किसी को कुछ नहीं कहा, पर छात्रों ने फौरन हड़ताल कर दी। कालीकट के जमोरिन कालेज, क्रिश्चियन कालेज और अन्य हाई स्कूलों में हड़ताल हो गयी। जुलूस निकालते हुए या सभा में बोलते हुए जनाब मोईद्दू मौलवी, एम० पी० नारायण मेनन, करुणाकर मेनन, डा० चन्दू गिरफ्तार हो गये। इधर नेता गिरफ्तार होते रहे पर जनता के सामने कोई कार्यक्रम नहीं था, इस कारण लोग पिकेटिंग आदि करने लगे। कचहरियों पर पिकेटिंग हुई जिसके कारण तेलीचरी का जिला कोर्ट और कालीकोट का मुंसिफ कोर्ट, बडगरा ओट्टापलम और पालघाट बन्द हो गया। और बहुत दिनों तक बन्द रहे। मलाबार की पुलिस ने बहुत जोर का लाठी चार्ज किया। फिर भी प्रदर्शन होते रहे। १९४२ के २० अगस्त को मलाबार में जो सार्वजनिक हड़ताल हुई थी बहुत ही स्मरणीय है। पालघाट, क्विलांडी, तेलचरी सर्वत्र हड़ताल रही।

चर्खा केन्द्र भी गैर कानूनी

यह एक मजे की बात है कि १६४२ में भी केरल में रचनात्मक कार्यक्रम की कथिक बला जारी रही। २० चर्खा केन्द्र चले। अवश्य ये केन्द्र देशीय महिला समाज द्वारा परिचालित थे, इस कारण क्षम्य हैं। पर सरकार इन बातों को भी बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थी, और इन केन्द्रों पर भी पुलिस ने छापा मारा, और ये केन्द्र भी गैर कानूनी करार दिये गये।

स्वतन्त्र भारतम् पत्र

इन्हीं सब कारणों से तोड़ फोड़ के कार्य शुरू हुये। गोविन्द-नैयर ने लिखा है कि एक गैर-कानूनी साप्ताहिक स्वतन्त्र भारतम् नाम से चला और बराबर निकलता रहा। इस पत्र की कापी जिसके पास भी मिलती उसे सजा दी जाती। पर जनता में इस पत्र के लिए बड़ा जोश था।

तोड़ फोड़ का जोर

केरल में तोड़ फोड़ जोरों से हुआ। कई जगह सरकारी इमारतें विशेषकर कस्बों की इमारतें जैसे कुरुमद्रनद तालुक की इमारतें जलायी गयीं। चोम्बल नामक डिपो जलाया गया। नडूवन्नूर तथा चमनचेरी के सब रजिस्ट्री दफ्तर जलाये गये। चमनचेरी का स्टेशन जलाया गया। फेरोक के रेल वाले पुल को उड़ाने की चेष्टा की गयी। कोरायन में पटेल आफिस जला दिये गये। कालीकट और कलाई के बीच रेल का आना जाना बन्द किया गया। पल्लीकुन्नू का डाकखाना जलाया गया। इनके सम्बन्ध में बाद को तेलचरी बमकाड मुकद्दमा, तिरुवलपूर बमकांड मुकद्दमा तथा खिजरियापुर षड़यन्त्र चले। खिजयारी पुर में कई प्रसिद्ध व्यक्ति को १० साल की सजा हुई, जिनमें डा० के० वी० मेनन, एन० ए० कृष्णन नैयर, सी० पी० शङ्करन० नैयर, और पी० केशवन् नैयर थे। इन मुकद्दमों में जो लोग फँसे

उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया गया। लोग इतने सताये गये कि कई बीमार हो गये। गोविन्दन नैयर ने लिखा है कि कम्युनिस्टों ने लोगों को पुलिस के हवाले किया। जेल में इतना अत्याचार हुआ कि बहुत से लोग जेल में ही मर गये। ईश्वरलाल शराफ, कोम्बीकुट्टी मेनन, कुन्हीरमनन जेल में मरे। एल० एस० प्रभु जेल से बीमार होकर छूटे और मर गये।

कोचीन और ट्रावनकोर

जिस समय आदोलन चल रहा था, उस समय केरल में कुछ प्राकृतिक प्रकोप भी हुआ, और सरकारी नीति के कारण दुर्भिक्ष तो था ही। श्रीगोविन्दन नैयर लिखा हैं कि केरल में दो देशी रियासतें कोचीन और ट्रावनकोर हैं, इनमें से ट्रावनकोर में सरकार ने शुरू से ही इतना अत्याचार किया कि लोगो को दुनिया से काट दिया गया और वहां की रियासत कांग्रेस के १०० व्यक्ति को गिरफ्तार कराके ही ठप पड़ गयी। कोचीन में १५० व्यक्त जेलों में गये। त्रिचूर तथा एरनाकुलम के विद्यार्थियों ने बहुत अच्छा काम किया। छात्राओं ने भी अच्छा काम किया और वे भी पुलिस मार की शिकार हुईं। देशी रियासतें दमन में ब्रिटिश भारत मे पीछे नहीं रहीं।

तामिलनाड

तामिलनाड में आन्दोलन बहुत सफल रहा, यहाँ भी जुलूसों तथा सभाओं से आदोलन शुरू हुआ, साथ ही मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी। मद्रास से कलकत्ता की गाड़ी कई दिन तक नहीं चली, क्योंकि रेल कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। मद्रास में विद्यार्थी सबसे आगे रहे। नेताओं की गिरफ्तारी पर फौरन हड़ताल हो गयी शिक्षाविभाग के अधिकारियों ने बहुत चाहा कि लोग विद्यालयों में लौट आयें, पर कोई विद्यार्थी नहीं लौटा। जब तक मद्रास के अन्दर आंदोलन चला, वह विद्यार्थियों की बदौलत ही चला। चेतपुर में विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ, भीड़ को तैश आ गया, और उसने एक दारोगा तथा चार

सिपाहियों को खूब अच्छी तरह पीट दिया। यहाँ के मजदूर बड़े क्रांतिकारी सिद्ध होते, पर कम्युनिस्टों ने उनको अपने कर्तव्य से रोका और और जितना चाहिये था वे उतना कार्य नहीं कर सके। नहीं तो मद्रास एक ऐसा प्रांत था और यहाँ के रेलवे मजदूर इतने सगठित थे कि पटरियां बिना उखाड़े ही रेलें बन्द हो जातीं।

तामिलनाड के जिले

त्रिची जिले में रेल की तोड़-फोड़ बहुत हुई। मनार गुडी स्टेशन जला दिया गया। जिस समय स्टेशन जल रहा था, उस समय उस स्टेशन की सहायता के लिये अन्य गाड़ी आयी, पर भीड़ ने उसे वापस लौट जाने के लिये विवश किया। यहां ऐसी हालत हो गयी थी कि प्रत्येक गाड़ी के साथ सशस्त्र पुलिस के दो डब्बे रखे जाते थे। रामनद जिले में पहले जुलूस तथा सभाओं से कार्य शुरू हुआ, फिर इसके बाद आंदोलन ने दूसरा रुख पकड़ा। यहा जनता की शक्ति इतनी प्रबल मालूम पड़ी कि कई थानेदार अपने थानों को खाली कर चले गये। इसके बाद लोगों का थानों पर अधिकार हो जाता था। अन्य सरकारी इमारतों पर आग लगा दी गई, और यहाँ पर जेल तोड़कर कैदियों को भी निकाल दिया गया। ७२ घटे के लिये सरकार का कहीं पता नहीं रहा, पर धीरे धीरे फौज आयी। और फिर से सरकार का अधिकार होने लगा। लोगों के घरों में आग लगा दी गयी, गाव के गाव लूटे गये, और जिसकी चाहे इज्जत रखो और चाहे जिसकी न रखी। तंजौर जिलों के तीरुवाड़ी का मुंसिफ कोर्ट तथा अन्य सरकारी इमारतों में आग लगा दी गयी और उनमें जो कुछ भी मिला लूट लिया गया। कोयम्बटूर में चहरे हवाई अड्डा पर आक्रमण हुआ और उसे खतम कर दिया गया। इस कांड के बदला लेने के लिए सरकार ने आसपास के २० गांवों को बिल्कुल उखाड़ दिया। जो पुरुष मिले गिरफ्तार कर लिए गये, और जो स्त्रियां मिली, उनको मारा पीटा तथा उन पर अन्य अत्याचार हुए। यहाँ सरकार ने जो

अत्याचार किया वह दिल दहलाने वाला है। फिर भी जिले भर में तोड़ फोड़ का कार्य बहुत जोरों के साथ हुआ। शायद ही कोई लाइन ऐसी बची हो जो उखाड़ी न गयी हो।

अन्य जिले

कोमलकोनम, मदुरा आदि स्थानों में भी कुछ आन्दोलन हुआ पर इनमें कोई खास बात नहीं हुई। देवकोटा में अत्याचार की हद कर दी गई। यहाँ पर श्री गोपाल केशवन की फरारी के कारण उनकी स्त्री को नङ्गी करके पेड़ में बांध दिया गया। फिर उनके ऊपर तरह तरह के अत्याचार हुए, जिसके कारण वह मर गयी।

कोल्हापुर

अगस्त आन्दोलन का प्रारम्भ होते ही कोल्हापुर की रियासत कानफरेंस ने आन्दोलन की घोषणा कर दी, पर इस बीच में कुछ वार्ता होती रही और १६४२ के १८ अक्टूबर को ही असली संग्राम का सूत्रपात हुआ। छात्र संघ ने भी मदद दी पर आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही सब सभायें, जुलूस आदि गैर कानूनी करार दिये गये, और सब राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी हो गयी। लोगों को जेल भेजने के लिये तथा सजा देने के लिये विशेष अदालतें खोली गयीं। अब तो तोड़फोड के कार्य शुरू हो गये और २६ चवाडा ४ बंगले, २ दफ्तर ३ स्टेशनों पर हमले हुए। ६ डाक के थैले लूटे गये। बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर लेसलि विलसन की मूर्त्ति बिगाड़ दी गया। ८ जगह बम फटे। ४४५५० रुपये सामूहिक जुर्माना हुए। पर इससे जनता का क्रांतिकारी जोश घटा नहीं, कुछ लोग जेल से भी भाग गये। इस रियासत में १६ व्यक्ति शहीद हुए।

मिरज

मिरज में ६ अगस्त को ही आंदोलन शुरू हो गया। मिस्टर चारु-दत्त पटिल ने, जो प्रजापरिषद के सभापति राजा को लिख भेजा कि वे

फौरन ब्रिटिश सरकार से अपना सम्बन्ध तोड़ दें और जिम्मेदार सरकार की स्थापना करें, इसका कोई उत्तर नहीं मिला, तब आंदोलन तेजी पर कर दिया गया। शिकारे, पटिल आदि नेता गिरफ्तार हो गये। पर जनता की हालत ऐसी थी कि मिरज के राजा ने डरकर प्रजा परिषद से एक समझौता कर लिया कि जिम्मेदार सरकार की स्थापना के लिये एक कमीशन बैठाया जायगा। इस समझौते के अनुसार प्रजा-परिषद ने अपने उस अनुरोध को वापस कर लिया कि राजा ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद करे। इस समझौते के अनुसार श्री शिकारे के अतिरिक्त सभी राजनैतिक कैदी छोड़ दिये गये। श्री शिकारे ने जेल में यह माग रखकर अनशन किया कि गरीबों को कम दाम पर राजा के कोष में जमा अन्न बेच दिया जाय, और मिरज राज के छोटे कर्मचारियों को मँहगाई भत्ता दिया जाय। इस पर उन्हें मिरज जेल से नासिक जेल भेज दिया गया। इस बीच में राज्य में कुछ तोड़ फोड़ के कार्य हुए। जैसे बरसी रेल स्टेशन जला दिया गया, दिगरस में डाक का थैला लूट लिया गया, बम फटे। इस कारण फिर गिरफ्तारियां हुईं और समझौता, वह तो कहीं भी नहीं रहा।

मैसूर

मैसूर में भी आन्दोलन तेजी पर रहा। यहाँ प्रजापरिषद और मजदूर सभा करीब करीब एक होने के कारण मजदूरों ने आंदोलनों में बहुत हिस्सा लिया। मैसूर में युद्ध के उपकरण तैयार हो रहे थे, उनमें बहुत नुकसान पहुँचने लगा। इस कारण सरकार ने अधाधुन्ध दमन करना शुरू किया। जुलूसों पर गोलियाँ चलायी गयीं, और बिना किसी परवाह के एक एक अफसर पर सौ सौ आदमी मारे गये। पुलिस की सबसे बड़ी बदमाशी यह भी कि मरे हुए लोगों की लाश तक नहीं देती थी। शायद पुलिस के अधिकारी यह दिखाना चाहते थे कि उन्होंने नरमी से बर्ताव किया है। फिर भी जनता नहीं दबी और तोड़-फोड़ के कार्य जारी हो गये। तार बराबर कटते रहे। तिरुपट्टूर में

मालगाड़ी पटरी से उतार दी गयी। होतालकर, आजूर, सातापुर आदि स्टेशन जला दिये गये। रेलों को यदि चलने भी दिया गया तो उनपर लोग बिना टिकट सवारी करने लगे। विद्यार्थियों तथा मजदूरों ने बहुत आगे बढ़कर काम किया। मैसूर में शायद सब रियासतों से अधिक तोड़-फोड़ तथा क्रान्तिकारी काय अधिक हुए। साथ ही वहाँ पर अत्याचार भी अधिक हुआ। जनता को न तो कोई कार्य-क्रम दिया गया था और न तो कोई नेतृत्व ही था, ऐसी हालत में उसने जो कुछ किया उससे उसकी बहादुरी का प्रमाण मिलता है। पर साथ ही हम यह कहे बगैर नहीं रह सकते कि इससे नेताओं की अयोग्यता साबित होती है क्योंकि उन्होंने लोगों की जानों को लेकर बेकार में खेला।

फुटकर स्थानों का आन्दोलन

सारा वर्णन असम्भव

यह सम्भव नहीं है कि भारतवर्ष के प्रत्येक स्थान के आन्दोलन का पूर्ण इतिहास दिया जाय। सच कहा जाय तो भारतवर्ष में सभी जगह आन्दोलन हुआ। इसलिए थोड़े से ऐसे और फुटकर स्थानों का वर्णन करेंगे जहाँ कोई विशेषता रही। और केवल विशेषताओं का ही वर्णन करेंगे।

ग्वालियर

ग्वालियर एक हिन्दू राजा की रियासत है, पर अपने मतलब के लिए कैसे यहाँ की राज शक्ति ने हिन्दुओं को मुसलमानों के द्वारा पिटवाया यह द्रष्टव्य है। ज्योंही नेताओं की गिरफ्तारी हुई, त्योंही यहाँ की प्रजा परिषद् ने भारत छोड़ो का नारा दिया, और राजा को यह लिख भेजा कि ३० अगस्त तक ग्वालियर सरकार ब्रिटिश सरकार से अपना सम्बन्ध तोड़ दे, और रियासत में जिम्मेदार सरकार

स्थापित करे। सरकार ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इसके विपरीत नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। ११ अगस्त को विद्यार्थियों का जुलूस निकल रहा था। इस पर बोहरा मुसलमानों ने आक्रमण कर दिया। स्मरण रहे कि यह जुलूस किसी प्रकार साम्प्रदायिक नहीं था, और बोहरों के विरुद्ध तो था ही नहीं, फिर भी इस प्रकार बिना कारण आक्रमण हुआ, उसका अर्थ स्पष्ट है। यह मान लिया जा सकता है कि बोहरे पागल नहीं थे, और उन्हें उसकाया गया था तभी यह हमला हुआ। इस हमले के फलस्वरूप, या यों कहा जाय कि सरकार के षड्यन्त्र के फलस्वरूप बोहरों की दूकानें लुटने लगीं, अब सरकार को यह मौका मिल गया कि वह १४४ लगा कर सब तरह का जुलूस सभा आदि बन्द कर दे। साम्प्रदायिक मन-मुटाव बढ़ाया गया, और सब काम बन्द हो गया। इस प्रकार केवल ब्रिटिश सरकार ही नहीं भारतीय रियासतें भी जब जरूरत पड़ती है तो साम्प्रदायिक झगड़े करवाकर उनसे फायदा उठा सकती हैं।

कुछ अन्य ब्यौरे

इसपर भी १४४ तोड़कर कुछ छोटे मोटे जुलूस निकले। लश्कर में विद्यार्थियों के जुलूस पर घोड़ा दौड़ाया गया। उज्जैन में विद्यार्थियों के जुलूस पर पुलिस का हमला हुआ, कई घायल हुए। बाज़ार में लोगो को पकड़कर मारा गया। ग्वालियर में सितम्बर तक आंदोलन जोरों से चलता रहा। बाद को स्थानीय नेताओं में सब समझौता हो गया, जिसके फलस्वरूप सब राजनैतिक कैदी छोड़ दिये गये।

भूपाल

भूपाल में भी नवाब को उल्लिखित तरीके से अल्टीमेटम दिया जाता कि ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध तोड़ दो और जिम्मेदार सरकार कायम करो, पर वहाँ पर्चे पकड़ लिये गये और लोग गिरफ्तार हो गये।

इलत्ताफ मजदानी जेल में बीमार हो गये, पर छूटते ही मर गये। अन्य नेताओं की सजायें हुईं।

इन्दौर में जेल टूटा

इन्दौर में ५०० के क़रीब राजनैतिक कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर मंडलेश्वर स्थान में रखे गये। यहाँ राजनैतिक बन्दियों ने मौका पाकर जेल तोड़ डाला और लोग भाग गये। अवश्य इनमें से अधिकांश बहुत जल्दी पकड़ लिए गये, पर कुछ तोड़ फोड़ के कार्य भी हुए। अन्त में प्रजा परिषद् और महाराज में समझौता हो गया।

कोटा में जन सरकार

राजपूताने की कोटा रियासत में जनता में बहुत जोर का जोश फैला। शहर पर जनता का कब्जा हो गया। यह कब्जा कैसे हुआ इसकी कहानी यों है। १३ अगस्त को पुलिस ने कुछ नेताओं को 'मित्रतापूर्ण बातचीत' के लिए 'निमंत्रण' दिया, और नेता गिरफ्तार कर लिये गये। एक नेता की स्त्री के साथ दुर्व्यवहार किया गया और कोतवाली के सामने खड़ी कर लाठी चार्ज किया। इस पर जनता क्षुब्ध हो गई, और उसने शहर की दीवारों पर कब्जा करके शहर का रास्ता बन्द कर दिया। शहर की दीवारों के पास जो तोप रखे थे, जनता ने उन पर भी कब्जा कर लिया और कोतवाली पर तिरङ्गा फहराकर उसका नाम स्वराजभवन रख दिया। इस पर फौज आने लगी तो उसे शहर के फाटक बन्द मिले। इस पर फौज नावों पर चढ़कर नदी पारकर आने लगी। जनता ने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया, और गांधी जी की जय आदि कहकर उनका स्वागत किया। फौज से कहा गया कि वह जनता पर गोली चलावे। पर उसने ऐसा करने से इनकार किया। कोटा के राजा ने दूत भेज कर जनता से बातचीत की और अपनी सदिच्छा दिखाने के लिये फौज तथा पुलिस को शहर से वापस कर लिया। अब जनता का राज्य हो गया। मैजिस्ट्रेट, कोतवाल सब नियुक्त हुए। स्वयंसेवकों ने पुलिस की जगह ले

लीग तीन दिन तक जनता। वहाँ राज्य सभा और उसमें खूब अमन चैन रही। इसके बाद राजा के साथ बातें हुईं, जिम्मेदार सरकार का वादा हुआ, और कार्य फिर शहर महासभा को सौंप दिया गया। नेतृत्व-हीन कार्यक्रमहीन जनता से इससे अधिक क्या उम्मीद की जा सकती थी ?

८ मेवाड़

मेवाड़ के राजा को जनता की ओर से अनुरोध किया गया कि वे ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध खतम कर दें और जिम्मेदार सरकार बना दें, पर इस पर गिरफ्तारियाँ शुरू हो गयीं। विद्यार्थियों ने आगे बढ़कर काम किया। एक अँगरेज अफसर ने जुलूस से लेकर तिरङ्गे को पैर से कुचल दिया और पिस्तौल लेकर हरेक को धमकाया। कुछ कार्यक्रम न होने के कारण ५०० गिरफ्तारियों के बाद आंदोलन समाप्त हो गया। बाद को उदयपुर के राना ने धीरे धीरे कैदियों को छोड़ दिया। देहात में भी आंदोलन हुआ।

तालचेर में जनक्रान्ति

उड़ीसा की तालचर रियासत में आंदोलन का अच्छा जोर रहा। इस रियासत में खुला विद्रोह हुआ और गांधी जी के अनशन के बाद तक विद्रोह जारी रहा। यहाँ एक समान्तराल सरकार कायम कर दी गयी, और मुखियों, चौकीदारों, जिलेदारों ने आकर इस सरकार को मान लिया और पहले की पोशाक आदि अपने हाथ से जलाकर नयी सरकार के अधीन काम करने लगे। रेल लाइन काट दी गयी और यातायात के सब साधनों पर राष्ट्रीय सरकार का कब्जा हो गया। सब थानों पर कब्जा हो गया और पुलिस का हेडक्वार्टर का अफसर मारा गया। राष्ट्रीय सरकार ने फौज भी बना ली थी, देहात पर कब्जा करने के बाद यह तय हुआ कि शहर पर भी कब्जा कर लिया जाय, इस उद्देश्य से जिसको जो कुछ मिला, टोपीदार बन्दूक, तीर धनुष, तलवार लेकर

६ सितम्बर को लोग तालचर की ओर बढ़े। अब तो रियासत ने सरकार की मदद मांगी और हवाई जहाज घूमने लगे तथा पर्चे और साथ ही अश्रुगैस छोड़ा गया। सरकार ने मशीनगन भी लगा दिये थे। फिर भी जनता आगे बढ़ी तो उनपर हवाई जहाज से बम फेंका गया। इसपर जनता तितर बितर हो गयीं, इसके बाद तो भयंकर रूप से देहातों में पुलिस का अत्याचार शुरू हुआ। इसके विस्तृत वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही कहने से पता लग जायगा कि ८५००० की आबादीवाली इस रियासत से १० लाख रुपये लूट में ले लिये गये। सामूहिक जुर्माना अलग हुआ, जिसे बेरहमी से वसूल किया गया।

अन्य रियासतें

उड़ीसा के नीलगिरी रियासत में जनता ने २६ सितम्बर को थाने पर आक्रमण कर अपने एक नेता को छुड़ा लिया। नयागढ़ रियासत में तोड़-फोड़ का कार्य बहुत हुआ। सरकार की इमारतों पर आग लगा दी गयी। ढेंकनाल रियासत में २ सितम्बर को विष्णुपद नायक के नेतृत्व में चाँदपुर थाने पर आक्रमण कर सब बन्दूकें छीन ली गयीं।

१९४२ और कम्युनिस्ट पार्टी

जनता ही नेता, कोई दल नेता नहीं

जैसा मैं पहले लिख चुका हूँ इस क्रान्ति में जो कुछ किया गया, जनता द्वारा ही किया गया। यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि किसी किसी वामपक्षी पार्टी ने ही सब कुछ किया, मैं तथ्यों के आधार पर इस दावे को कतई गलत समझता हूँ। मजे की बात है कि कई पार्टी एक ही श्रेय की दावेदार है, इस प्रकार उनके दावे एक दूसरे से कट जाते हैं। जयप्रकाशनारायण जी इस क्रान्ति के नेता थे, इस सम्बन्ध में मैं अपनी राय दे चुका हूँ। जिस समय वे जेल से भाग

कर बाहर आये, उस समय तक ९० फी सदी स्थानों में क्रान्ति दबाकर परिस्थिति काबू में कर ली गई थी। अवश्य उन्होंने बाद को कुछ पर्चे लिखे जो सुन्दर थे, पर यह दूसरी बात है। इस सम्बन्ध में यह भी द्रष्टव्य है कि श्रीमती अरुणा आसफ अली तथा श्री मदनलाल बागदी आदि जिन लोगों का इस क्रान्ति में गौरवजनक भाग था, और यह बता दिया जाय कि श्री मदनलाल का भाग अधिक सक्रिय तथा गौरवजनक था, वे लोग उन दिनों कांग्रेस समाजवादी दल में नहीं थे।

कांग्रेस समाजवादी दल

फिर भी इस क्रान्ति के दौरान में कॉंग्रेस समाजवादी दल का भाग बहुत ही गौरवपूर्ण रहा, क्योंकि इसके सभी सदस्य जनता के पीछे चलने में सफल रहे। इस दल ने शुरू से ही द्वितीय महायुद्ध को साम्राज्य वादी करार दिया, और रूस पर जर्मनी द्वारा आक्रमण होने पर भी ये साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चे से च्युत नहीं हुए। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि कांग्रेस समाजवादी दल में ऐसे लोगों की संख्या यथेष्ठ थी और है जो रूस के समाजवादी होने में शक रखते हैं। सच तो यह है कि जयप्रकाश जी ने जेल से छूटने के बाद भविष्य समाज के सम्बन्ध में एक ऐसी लेखमाला लिखी, जिससे यह ज्ञात होता है कि वे सर्वहारा के अधिनायकत्व वाले समाजवादी सिद्धान्त को मानते ही नहीं और वे एक ऐसा राष्ट्र चाहते हैं जिसे इङ्गलैण्ड की लेबर पार्टी का आदर्श कहा जा सकता है। हम अपनी आलोचना से कुछ आगे बढ़ गये, हम दिखा यह रहे थे कि रूस जर्मन युद्ध में भी कांग्रेस समाजवादी दल की नीति में कोई फर्क नहीं आया।

दल की एक गलती

पर यह बहुत से लोगों को नहीं मालूम, और कांग्रेस समाजवादी दल स्वाभाविक रूप से इस बात को छिपाना चाहता है कि १९४२ के क्रिप्स प्रस्ताव के समय इसकी कार्यकारिणी ने यह प्रस्ताव किया था कि दल युद्ध के प्रति उदासीन है, बाद को चलकर दल ने इस प्रस्ताव

में संशोधन किया। उस समय तक इस दल के नेता कांग्रेस का पुछल्ला बना रहना ही अपना आदर्श बना रखे थे, इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। इस एक गलती के सिवा, और यह दल के नेताओं की सिद्धान्त सम्बन्धी अज्ञता को व्यक्त करता है, दल ने १६४२ की क्रांति में बहुत गौरवजनक हिस्सा अदा किया।

फारवर्ड ब्लाक और आर० एस० पी०

इस महायुद्ध के समय फारवार्ड ब्लाक बराबर साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चेपर डटा रहा, इसके सदस्यों का इस आंदोलन में बहुत गौरवजनक हिस्सा रहा। इसमें के बहुत से व्यक्ति इस युद्ध में जापान तथा जर्मनी की विजय चाहते थे, पर जैसा कि आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में हमने देख लिया कि जापानी संगठन के अन्तर्भुक्ति होते हुए भी वे जापानी गुलाम नहीं हुए, वैसे इनके इरादों के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। इस सम्बन्ध में आर० एस० पी० का भी यही सिद्धान्त रहा। इस दल के नेता सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता श्री योगेश चटर्जी ने पटा में अपने मुकदमे में यह कहा था कि वे उम्मीद करते हैं कि पूर्व से जापान आयेगा और पश्चिम से जर्मनी, इस प्रकार भारत स्वतन्त्र होकर रहेगा। आजाद हिंद फौज का भी यही विचार था। ये विचार कहाँ तक सही थे, और इसका राजनैतिक पहलू कहाँ तक दोषशून्य था, इसमें हमें सन्देह है। मेजर जेनरल शाहनवाज की आजाद हिंद फौज सम्बन्धी पुस्तक की भूमिका में पं० जवाहरलाल नेहरू ने आजाद हिंद फौज के लोगों की देशभक्ति की प्रशंसा करते हुए भी यह जो कहा है कि अभी इसके राजनैतिक पहलू पर विचार करने का तथा अन्तिम मत कायम करने का समय नहीं आया है, यह बहुत ही ठीक है और इस सम्बन्ध में एकमात्र सही मत है। आजाद हिंद फौज का तथा उसकी तरह विचारवालों का राजनैतिक पहलू कहाँ तक सही था, आज यह प्रश्न बहुत कुछ अवांतर है, हम इतना जानते हैं कि आजाद हिंद फौज के कारण ही भारतीय फौज की मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ।

क्रांतिकारी तब्दीली आई, जो कदाचित दूसरे तरीके से बीसियों वर्ष में आती या न आती।

योगेश चटर्जी

आर० एस० पी० के महान नेता श्री योगेश चटर्जी अनशन के कारण देवली जेल की नजरबन्दी से छूट चुके थे। वे १६४२ की क्रांति के समय बाहर मौजूद थे और उन्होंने इस क्रांति को सङ्गठित करने का एक बहुत गौरवजनक चेष्टा की। इसी सम्बन्ध में उनपर पहले एटा में एक मुकद्दमा चला और फिर वे उस षड्यन्त्र में भी नेता करार दिये गये, जो बाद को बाराबङ्की षड्यत्र मुकद्दमें के नाम से मशहूर हुआ। उन्हें अगस्त क्रांति के समय में लम्बी सजा मिली।

जनता का नेतृत्व

पर जैसा कि मैंने बार-बार कहा है कि इस क्रांति के नेता न अरुणा आसफअली थी, न जयप्रकाश थे, और न योगेश चटर्जी थे, इस क्रांति की नेत्री जनता खुद थी। फिर भी यह कहा जा सकता है कि कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त इस क्रांति के समय सभी पार्टियों का भाग गौरवजनक था। कम्युनिस्ट पार्टी का क्या भाग था, इसे समझने के लिये कुछ ब्यौरे में जाना पड़ेगा।

रूस के समाजवादी सिद्धान्त पर डटे रहे

१६१४-१८ के साम्राज्यवादी महायुद्ध में केवल रूस की बोल्शेविक पार्टी ही उन सिद्धान्तों पर डटी रही, जिनको लेकर १६१० की कोपेनहेगेन कांग्रेस में तथा बासल आदि अन्य अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी कानफरेंशों में आलोचनायें हुई थीं। इन अन्तर्राष्ट्रीय कानफरेंशों में यह तय हुआ था कि यदि लड़ाई छिड़ जावे तो मजदूरों की पार्टी की हैसियत से समाजवादी दलों को इनमें किसी प्रकार भाग लेना नहीं है, बल्कि इनका विरोध करना है; क्योंकि ये लड़ाइयाँ उपनिवेशों के बटवारे तथा अन्य साम्राज्यवादी उद्देश्यों को लेकर होती हैं, मजदूरों को

इन लड़ाइयों से कुछ फायदा नहीं है, इसलिये वे क्यों नाहक पूंजी-वादियों की इन आपस की लड़ाइयों में अपनी गर्दनें कटावें। केवल यही नहीं, लेनिन के नेतृत्व में रूसी बोल्शेविक पार्टी ने यह नारा दिया कि इस साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में परिणत कर दो, अर्थात् इस अवसर का फायदा उठाकर अपने यहाँ की तानाशाही को खतम कर दो। रूस की बोल्शेविक पार्टी की इस सही नीति का क्या नतीजा हुआ, यह सब जानते हैं। रूस के क्रान्तिकारी-गण दूसरों के दिए हुए देशरक्षा सम्बन्धी नारों में बहक नहीं गये और उन्होंने, जारशाही जो लड़ाई लड़ रही थी, उसे सचमुच गृहयुद्ध में परिणत कर दिया। इसका नतीजा रूसी मजदूर क्रान्ति है। यह क्रान्ति इतिहास में एक विशेष स्थान रखती है, किन्तु हमें यहाँ पर उसके विषय में आलोचना नहीं करनी है।

पहले नाम सोशल डिमोक्रेट था

यह महान क्रान्ति जिस पार्टी के नेतृत्व में हुई, उसका नाम पहले से ही कम्युनिस्ट पार्टी रही हो, ऐसी बात नहीं है। पहले इस पार्टी का नाम सोशल डिमोक्रेट पार्टी था। इस पार्टी के अन्दर दो गुट हो गये थे। जो गुट सुधारवादी था और यह सोचता था कि पूंजीवादी दलों की छत्रछाया में मजदूर पार्टी को चलना चाहिये तथा पगपग पर समझौते का और जरा कुछ खतरा पड़ने पर ही पार्टी के गुप्त हिस्से को तोड़ कर पार्टी को निरी कानूनी बनाने का नारा दे देती थी. उस गुट का नाम मेनशेविक था। इसके विपरीत जिस गुट के नेता लेनिन थे, जो यह समझते थे कि न केवल समाजवादी क्रान्ति में मजदूरों का नेतृत्व रहेगा, बल्कि पूंजीवादी लोकतांत्रिक क्रान्ति में भी सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व रहेगा, बल्कि पूंजीवादी लोकतांत्रिक क्रान्ति में भी सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व होगा; और किसान वर्ग सर्वहारा वर्ग का साथ देगा, वह गुट बोल्शेविक पार्टी कहलाता था। एक गुट सुधारवादी था तो दूसरा क्रान्तिकारी था। बोल्शेविक पार्टी का सारा

कार्यक्रम मजदूर और उसके मित्रवर्ग शोषित किसानों पर निर्भर था, जब कि मेनशेविक बराबर पूंजीवादी वर्ग का मुँह ताका करते थे। इसके अतिरिक्त इन दोनों गुटों में बहुत और मतभेद थे, किन्तु जहाँ भी जिन बातों में मतभेद थे, उनमें मेनशेविक हमेशा क्रान्ति-विरोधी पक्ष लेते थे, और बोल्शेविक क्रान्ति का पक्ष लेते थे। जब १९१७ की फरवरी में क्रांति हो गई और उसके फलस्वरूप जार निकोलस गद्दी से उतार दिये गये, तो इस पर मेनशेविक इतने ही से खुश हो गये और उन्होंने यह भुला दिया कि इस लड़ाई को आगे चलाने में मजदूर वर्ग का कोई हित नही है और उन्होंने अब यह नारा देना शुरू किया कि अब लड़ाई हमारी हो गई। इस प्रकार मेमनशेविकों ने इस समय यह नारा दिया कि रूस के मजदूरों को साम्राज्यवादी युद्ध में भाग लेना चाहिये; क्योंकि अब युद्ध देश की रक्षा के लिये रूसी जनता की ओर से लड़ा जा रहा है। यह ही नहीं, मेनशेविक खुल्लमखुल्ला इस विषय में रूस के पूँजीपतियों का साथ देने लगे। ऐसे समय में भी बोल्शेविक दल टस से मस नहीं हुआ। उसने कहा, यह लड़ाई हमारी नहीं है, हम रूसी पूँजीवादी वर्ग के हाथों में कठपुतले होकर नहीं लड़ सकते। फिर रूसी पूँजीवादी वर्ग तो इस समय लड़ाई के प्रश्न को अपने हित की दृष्टि से नहीं देख रहा है, बल्कि वह स्पेन, फ्रांस और इगलैण्ड के पूँजीवादी वर्गों के हाथ में कठपुतला हो रहा है!

कम्युनिस्ट पार्टी नाम पड़ा

फरवरी क्रान्ति के बाद लेनिन जब रूस में आये, (अब तक वे रूस के बाहर रहकर सारे आन्दोलन का नेतृत्व करते थे) तो उन्होंने यह अनुभव किया कि इस तमाशे का अन्त करना चाहिये। विशेषकर वे ऐसा करने के लिये इसलिये और भी उत्सुक हुए कि उन्होंने यूरोप की सोशल डिमोक्रेट पार्टियों के साम्राज्यवादी युद्ध में मदद करने तथा अन्य सुधारवादी नीतियों से अपनी पार्टियों को अलग करना

चाहा। देश में जो काम मेनशेविक कर रहे थे, वही काम यूरोप के अन्य देशों में सोशल डिमोक्रेट पार्टियाँ कर रही थीं। लेनिन इन यूरोपीय पार्टियों पर इसलिये सबसे अधिक नाराज थे कि वे समझते थे कि ये पार्टियाँ अपने देश के मजदूरों किसानों को पूँजीवादियों के निमित्त गर्दन कटाने तथा युद्ध के मैदान में अपने ही मजदूर किसान भाई का गला काटने के लिये भेज रही है। इसलिये लेनिन ने अपने मशहूर अप्रील-वक्तव्य में यह प्रस्ताव पेश किया कि पार्टी का नाम बदलकर कम्युनिष्ट पार्टी कर दिया जाय। पार्टी के लोगों ने इस प्रस्ताव को मान लिया। यहीं से रूसी बोल्शेविक पार्टी का नाम कम्युनिस्ट पार्टी हो जाता है। याद रहे कि यह नाम १९१७ में ऐन मजदूर क्रान्ति के कुछ महीने पहले ग्रहण किया गया था।

नया अन्तर्राष्ट्रीय का नारा

इसी अप्रील वक्तव्य मे लेनिन ने यह भी प्रस्ताव रखा था कि चूंकि दुनिया के समाजवादियों की जो अन्तर्राष्ट्रीय सस्था 'द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय' के नाम से मशहूर है, वह अब दुनिया के क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रति अपनी युद्ध नीति के कारण गद्दार साबित हो गया है, 'इसलिये अब उसकी जगह पर तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय या म्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय की स्थापना की जाय, किन्तु इस बीच में रूस में मजदूर क्रान्ति हो जाने से काम इतना बढ़ गया कि मार्च १९१९ के पहले यह विचार कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सका।

पहली कांग्रेस

इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय की स्थापना हुई। १९१९ वाली इस पहली काग्रेस में बहुत थोड़े ही देशों के मजदूर प्रतिनिधि मौजूद थे, किन्तु उसी समय लेनिन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि किन उद्देश्यों के लिए नये अन्तर्राष्ट्रीय की स्थापना की जा रही है। इस सम्बन्ध में उनके विचार क्या हैं ! सक्षेप में ये उद्देश्य दो थे—(१) विश्व क्रान्ति को अंजाम देना। (२) रूस की रक्षा करना।

कई वर्ष क्रान्तिकारी परिस्थिति

संदेह नहीं ये दोनों उद्देश्य बहुत महान थे, और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय या उसकी अन्तर्गत पार्टियाँ इन उद्देश्यों को लेकर चलने में असमर्थ थीं। १६१४-१८ के महायुद्ध के दौरान में जब रूस में मजदूर क्रान्ति हो गई, तो उस क्रान्ति को देखकर लेनिन का यह विचार था कि यह क्रान्ति केवल रूस तक ही नहीं रुकेगी, बल्कि यहाँ से ज्वाला सारी दुनिया में भड़क उठेगी और तमाम देशों में मजदूर-क्रान्ति होगी। यह केवल कुछ क्रान्तिकारियों का स्वप्न ही नहीं था, बल्कि हंगरी और बवेरिया में १६१६ की बसत ऋतु में समाजवादी क्रान्तियाँ हुई भी थीं; किन्तु अतर्राष्ट्रीय पूंजीवादियों ने खाना न देकर तथा अन्य उपायों से यहाँ की क्रातियों का गला घोंट दिया। सच बात तो यह है कि अतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद ने रूस की क्राति का गला घोंटने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी, रूस पर एक साथ २३ मोर्चे से हमले हुए थे, किन्तु रूस की क्रातिकारी लालसेना ने इन सब आक्रमणों को विफल कर दिया। जो कुछ भी हो विश्वक्रान्ति होने जा रही है, यह विचार इस युग के क्रान्तिकारियों में आम तरीके से फैला हुआ था। यह विचार कुछ अशों में सही था यह तो हम बवेरिया और हंगरी के दृष्टांत से देख चुके। यह क्रान्तिकारी परिस्थिति कई वर्षों तक रही

दोनों उद्देश्य सामजस्यपूर्ण

इन दो उद्देश्यों में प्रथम और द्वितीय उद्देश्य परस्पर विरोधी नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति की कल्पना ही नहीं की जा सकती, जब एक समाजवादी राष्ट्र का हित विश्व क्रान्ति के विरुद्ध जायेगा, फिर भी यह मानना ही पड़ेगा कि विश्व क्रान्ति का उद्देश्य विस्तृत है। इस लिए यह नहीं हो सकता कि केवल रूस की क्रान्ति की रक्षा के उद्देश्य से ही सारी बात सोची जाय और उतने ही में विश्व क्रान्ति का तकाजा

पूरा हो जाय। सभी क्रान्ति या रूसी मजदूर राष्ट्र की रक्षा विश्व क्रांति के अन्दर आ जाती है, किंतु केवल रूस की रक्षा का ही काम किया जाय तो विश्व क्रान्ति का सब तकाजा पूरा हो जायेगा, ऐसा समझना गलती होगा। हमें तो इस प्रकार की आलोचना ही बुरी मालूम होती है कि विश्व-क्रान्ति और रूसी क्रांति में किसी प्रकार का विरोध हो भी सकता है, किंतु हम देखेंगे कि दुनिया की कम्युनिस्ट पार्टियों ने बहुत बड़े हद तक चीजो को इतना गड़बड़ा दिया है कि हमें इस प्रकार की बाल की खाल मूलक आलोचना में प्रवृत्त होना पड़ता है। हम तो यह बहुत स्पष्ट रूप से समझते हैं कि वह व्यक्ति समाजवादी ही नहीं है जो रूसी मजदूर राष्ट्र की रक्षा अपना पवित्र से पवित्र कर्त्तव्य नहीं समझता है, किन्तु क्या एक समाजवादी का कर्त्तव्य यहीं पर खतम हो जाता है? रूस की रक्षा तो खैर किसी भी हालत में करनी ही है, किंतु अब देशों में सर्वहारा राष्ट्र स्थापित करना प्रत्येक समाजवादी का बृहत्तर कर्त्तव्य है। इसी बुनियादी बात को न समझ पाने के ही कारण कोई तो विश्वक्राति की रट लगाते-लगाते रूसी मजदूर राष्ट्र को ही लेकर बीतना चाहता है और कोई रूसी मजदूर राष्ट्र का गीत गाते गाते यह भूल गया कि रूसी क्रांति का ही यह तकाजा है कि विश्व के और देशों में रूस की तरह क्रांतियाँ हों।

संयुक्त मोर्चे का नारा

अब हम सक्षेप में यह देखेंगे कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने जिस सयुक्त मोर्चे की पालिसी को ७ वीं कांग्रेस की हिदायत समझकर कार्य-रूप में परिणत किया, उसका क्या अर्थ हुआ। क्या इसके फल-स्वरूप साम्राज्यवादी शक्तियों में एका बढ़ी, या कुछ मजबूती आयी? दूसरी बात को जाने दिया जाये, क्या इसके फलस्वरूप वामपक्षी शक्तियों का भी संयुक्त मोर्चा बना? हमें बहुत दुख के साथ इन दोनों प्रश्नों का उत्तर 'ना' में देना पड़ता है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने जबसे काग्रेस में प्रवेश किया, तब से उसने काग्रेस में फूट और बुद्धिभेद

ही उत्पन्न किया। कांग्रेस के अन्दर तथा वामपक्षियों के साथ इनकी नयी नीति का क्या असर रहा, इसे हम कुछ विस्तारपूर्वक कहेंगे, इसलिये मजदूर आन्दोलन के अन्दर इस नयी नीति का क्या असर हुआ, यह हम पहले बता दें। हमें इस बात को मानने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि ऊपर से हिदायत पाकर कम्युनिस्टों ने जो ट्रेड यूनियन के जो टुकड़े बचा रखे थे, उनको एक करने के लिये जो चेष्टायें हो रही थीं, वे एकाएक इस हिदायत के कारण मजबूत हो गयीं, और अन्त तक ट्रेड यूनियन की एक संस्था हो गयी। अवश्य इसका अर्थ यह कदापि नहीं समझना चाहिये कि भीतर से यह संस्था कुछ तगड़ी हुई, बल्कि इसके भीतर कम्युनिस्ट पार्टी के आ जाने से तरह तरह की पार्टीबाजी, एक दूसरे को लड़ाना, झूठी बातों का प्रचार इत्यादि जो बातें भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की विशेषता रही, वे उसी ओर बहुत जोरों के साथ हुई। इसके फलस्वरूप मजदूर आन्दोलन की वृद्धि में बाधा ही पहुँची न कि विशेष लाभ।

कम्युनिस्टों की अजीब नीति

कांग्रेस के अन्दर कम्युनिस्ट पार्टी को चाहिये था कि वह वामपक्ष की शक्तियों को मजबूत बनाती, और उनको एकता-सूत्र में बांधने में मदद देती। इसके विपरीत इन्होंने हमेशा दूसरे वामपक्षियों के विरुद्ध गांधीवादियों का साथ दिया, किन्तु साथ ही वे गांधीवादियों के प्रति वफादार रहे, यह बात नहीं। उन्होंने कांग्रेसवालों की आंख झपकते ही न केवल गांधीवादियों को बल्कि कांग्रेस को भी तरह तरह की गालियां दीं। इस प्रकार वे स्वयं तो कोई ताकत नहीं थे, किन्तु इन्होंने बराबर दक्षिण पंथियों का साथ देकर वामपक्ष को कमजोर करने की कोशिश की। खुद तो इनमें खैर कोई ताकत ही नहीं थी, इसलिये इनकी सारी बातों का नतीजा यही बराबर हुआ कि दक्षिण पंथी तगड़े होते गये, यह एक बहुत मजे की बात है कि कहाँ तो कम्यु-

निस्ट पार्टी वाले कांग्रेस मी झंडा लहाराने में ही अपने साम्यवाद की सीमा समझते थे, और कहा वे कांग्रेस में आये तो उसके सबसे प्रतिक्रियावादी हिस्से के कठपुतले हो गये । हम विशेषकर कम्युनिस्टों की ताजी पालिसी पर कुछ कहना चाहते हैं, इसलिये इस पर अधिक विस्तार के साथ नही लिख सकते। यहाँ पर केवल एक उदाहरण देकर ही हम इस बात को दिखायेंगे कि किस प्रकार वे हमेशा दक्षिण पथियों का साथ देते थे। हमने इस उदाहरण को चुनने में इस बात का ख्याल रखा है कि भारतीय कम्युनिस्टों में अक्सर यह आदत है कि वे जहाँ पर अपना मतलब सिद्ध होता है, दिन को रात बना देते हैं। इसलिये हमने एक ऐसा उदाहरण लिया जिसका रिकार्ड सब अखबारों तथा स्वयं संयुक्त प्रांत की कांग्रेस के रिकार्डों में है। जिस समय १६३६ के युद्ध के पहले सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता कामरेड दामोदर स्वरूप सेठ प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सभापतित्व के लिये खड़े किये गये, तो कम्युनिस्टों ने और रायवादियों ने दक्षिण पथियों के साथ मिलकर श्री कृष्णदत्त पालीवाल को वोट दिया। सेठ जी बहुत पुराने क्रांतिकारियों में से हैं। बनारस षड्यंत्र में उनको लम्बी सजा मिली थी, इसके बाद काकोरी षड्यंत्र में वे गिरफ्तार किये गये थे। किंतु बहुत ही हालत खराब हो जाने के कारण हवालात से ही रिहा कर दिये गये थे, इसके बाद वे अपने प्रांत के ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के एक प्रमुख समाजवादी नेता समझे जाते थे। किंतु फिर भी कम्युनिस्टों ने उनको वोट न देकर एक ऐसे आदमी को वोट दिलवाया जो खुल्लमखुल्ला रूस के और समाजवाद के कट्टर विरोधी हैं। ऐसा कदाचित कम्युनिस्टों ने यह सोचकर किया था कि वे इस प्रकार दक्षिण पथियों का हृदय जीत लेंगे, उनका विश्वास प्राप्त करेंगे, फिर जब इस प्रकार उनका विश्वास प्राप्त कर लेंगे तो उनको मौका पाकर उल्लू बनायेंगे। इसी उद्देश्य से वे बराबर कांग्रेस में अन्य वामपक्षियों के विरुद्ध रहे।

गलत नीति का नतीजा गलत

इस प्रसङ्ग को खतम करने के पहले कांग्रेस के अन्दर कम्युनिस्टों की पालिसी की द्योतक एक और बात का यहाँ पर हम जिक्र करेंगे। कांग्रेस के अन्दर जब वामपक्षीगण सजग हुए तो उन्होंने कांग्रेस की स्वाधीनता दिवस के अवसरों पर जो प्रतिज्ञा तैयार की गयी थी, उस पर आपत्ति कर दी। यह आपत्ति प्रतिज्ञा के उस अंश के सम्बन्ध में था जिसमें यह कहा गया था कि हम अहिंसामूलक नीति के जरिये ही काम करेंगे तथा चर्खा कातेंगे। प्रतिज्ञा के विरुद्ध इस विद्रोह में कांग्रेस समाजवादी दल के अतिरिक्त और भी कुछ अन्य दल तथा पुराने क्रांतिकारियों के प्रभाव में चलने वाली नौजवान सभायें आदि थीं, किन्तु कम्युनिस्टों ने इस विद्रोह में साथ नहीं दिया, बल्कि बराबर अपनी पार्टी को यह हिदायत देते रहे कि पूरी प्रतिज्ञा ज्यों की त्यों ली जाय। अवश्य यहाँ पर हम साफ कर दें कि केवल अहिंसा तथा चर्खा सम्बन्धी वाक्यों की जिस समय स्वाधीनता दिवस पर पुनरावृत्ति की जाती हो उस समय चुप रहने पर ही कोई दल या व्यक्ति क्रान्तिकारी या समाजवादी नहीं हो जाता, किन्तु हमें तो यहाँ केवल यह देखना है कि जब सारा वामपक्ष एक विषय पर एकमत हो रहा था तो कम्युनिस्ट पार्टी ने उस अवसर पर वामपक्ष का साथ न देकर दक्षिण पक्ष का साथ दिया। इस प्रकार न केवल उन्होंने दक्षिण पक्ष के हौसले को बढ़ाया, और उन्हें मजबूत किया, बल्कि उन्होंने मजदूर और नौजवानों में वामपक्ष के सम्बन्ध में बुद्धिभेद पैदा कर दिया। भारतवर्ष के दक्षिण पंथी इन सब बातों को देखकर यह बहुत अच्छी तरह समझ चुके हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी से उन्हें कोई खतरा नहीं है। केवल यही नहीं, वामपक्ष के साथ लड़ाई में यह पार्टी हमेशा उनके लिए सहायक सिद्ध हो सकती है। यह पुस्तक १९४७ के जून में लिखी जा रही है। कम्युनिस्ट कांग्रेस से १९४५ में ही निकाल दिये गये, और तब से बराबर

कम्युनिस्ट के प्यारे दक्षिण पंथी बराबर उन पर हमले करते जा रहे हैं, यह है गलत नीति का नतीजा।

एका की कल्पना कठिन

भारतवर्ष में वामपक्ष के एका के दो उद्देश्य हो सकते हैं, एक तो साम्राज्यवाद के विरुद्ध जो लड़ाई जारी है और उसे तेज तथा गहरा कर देना और दूसरा दक्षिण पथियों के हमलों के मुकाबिले में अपनी रक्षा करना। दक्षिण पथियों की समझौता मूलक नीति का पगपग पर पर्दाफाश करना, तथा खुद तो लड़ना ही, साथ ही दक्षिण पंथियो को साम्राज्यवाद के विरुद्ध लडने को कहना। और अगर वे ऐसा न करें तो उनकी कलई खोलना। ये उद्देश्य भी किसी कार्यक्रम को लेकर ही सिद्ध हो सकते थे। बात यह है कि वामपक्ष का एका कोई अन्तिम नारा नही हो सकता। यह एक सामयिक नारा ही हो सकता है। यह हो नहीं सकता कि सभी दल सही रास्ते पर हों, केवल एक ही दल अन्त तक सही सिद्ध हो सकता है। स्वाभाविक रुप से सभी वामपक्षी दल अपने को उस दल के रुप में कल्पना करने को बाध्य है जो अन्त में जाकर सही सिद्ध होगा। इसलिये वामपक्ष का एका किसी भी वामपक्षी दल के लिये एक सामयिक नारा ही हो सकता है। इस सामयिक एका के लिये यह भी जरुरी है कि इस प्रकार जिन दलों में एका होगा वे अपने अपने मुख्य उद्देश्य के विषय में एक हों। इसके बगैर वामपक्ष के एका के नारे का कोई अर्थ नहीं होता। उदाहरण स्वरूप जब इस द्वितीय साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान में कम्युनिस्टों ने जनता के युद्ध का नारा दिया, और बाकी दल इस युद्ध को जहाँ तक ब्रिटेन जर्मनी आदि का सम्बन्ध है, सम्पूर्ण रूप से साम्राज्यवादी बताने लगे, उस समय इन दोनों तरह के लोगों में और दलों में एका की किसी तरह कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

एका की कोशिश असफल

कुछ भी हो, इस महायुद्ध के पहले भारतीय वामपक्षियों में

ऐसा कोई मौलिक मतभेद नही था, और व्यावहारिक बहुत ही बातों पर उनका संयुक्त मोर्चा हो सकता था। जब पहले पहल १९३४ मे कांग्रेस समाजवादी दल का जन्म हुआ और इसका जन्म कांग्रेस के अन्दर के कुछ नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं के गांधीवाद के विरुद्ध असन्तोष के कारण हुआ तथा रोजमर्रे की राजनीति में गांधीवाद के मुकाबिले में एक नयी धारा पेश करने के लिए हुआ, उस समय भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने इसका स्वागत पूंजीवादी वर्ग के वामपन्थी हथकंडे के रूप में किया, याने उन्होंने यह कहा कि देश मे जो क्रान्तिकारी लहर पैदा हो रही है, उसको इस नाम की पार्टी पर एक जिरहबख्तर की तरह थाम लेने के लिए हुआ, असल में इनमें और दक्षिण पंथियों में कुछ भेद नहीं है। ऐसा उन्होंने कहा, किन्तु साथ ही जब देखा कि दल की ताकत बढ़ रही है तो उन्होंने कम से कम ऊपर से नारा बदल दिया। इस बीच में अंतर्राष्ट्रीय की सातवीं कांग्रेस का प्रभाव इनकी नीति पर शायद पड़ा। सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता कामरेड जयप्रकाशनारायण ने इस सम्बन्ध में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की जो कलाबाजियाँ हुई हैं, उन पर एक पुस्तिका ही लिख डाली है। यह पुस्तिका एक तरफ तो कम्युनिस्टों की धोखेबाजी तथा उनकी बेईमानियों का इतिहास है, साथ ही यह कांग्रेस समाजवादी दल की सरलता की गाथा भी है।

कम्युनिस्टों ने कांग्रेस समाजवादियों को उल्लू बनाया

सातवीं कांग्रेस के फलस्वरूप भारतीय कम्युनिस्टों का रुख कांग्रेस-समाजवादी दल आदि के सम्बन्ध में बदला। १९३६ की जनवरी मे मेरठ में कांग्रेस समाजवादी दल की जो कानफरेंस हुई थी, उसमें इस दल की केन्द्रीय कमेटी ने एकमत होकर यह तय किया कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को कांग्रेस समाजवादी दल के अन्दर आने दिया जाय। हम यहां पर इस विषय में आलोचना नहीं करेंगे कि एक दल के अन्दर दूसरे दल के सदस्य को लेने का कुछ अर्थ होता है भी

था नहीं, और यदि अर्थ होता है तो क्या यही अर्थ नहीं होता है कि दल ने इस प्रकार स्वय अपने को एक मच मान लिया न कि दल। हम केवल यह देखेंगे कि अपनी सरलता के कारण ही सही-कांग्रेस समाजवादी नेतागण किस हद तक सयुक्त समाजवादी दल बनाने के फेर में थे। बहुत सोच विचार के बाद लखनऊ कांग्रेस के समय कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस समाजवादी दल के द्वारा दी हुई इस सुविधा के उपयोग करने का विचार किया। बहुत से कम्युनिस्ट समाजवादी दल में शरीक हो गये। मजे की बात यह कि कांग्रेस समाजवादी दल की केन्द्रीय कमेटी ने यह तय किया था कि कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्येक सदस्य को केन्द्रीय कमेटी की अनुमति से ही पार्टी में लिया जायेगा, किन्तु व्यवहारिक रूप मे इस प्रकार की कोई रोक नहीं रखी गयी। जो होता था वही हुआ। १६३६ के आखिर में समाजवादी दल को यह ज्ञात हुआ कि कम्युनिस्ट उनकी पार्टी के अन्दर अपनी पार्टी की भर्त्ती का काम कर रहे हैं और यह कोशिश कर रहे हैं कि इस सस्था पर कब्जा किया जाय। ६३७ के अगस्त में समाजवादी दल की केंद्रीय कमेटी की बैठक हो रही थी, उसमें कम्युनिस्ट पार्टी का एक गुप्तवक्तव्य पढ़ा गया, जिसमें यह कहा गया था कि कांग्रेस समाजवादी दल समाजवादी है ही नहीं, और कम्युनिस्ट पार्टी किसी भी हालत में एक रकीब पार्टी के अस्तीत्व को सहन न करेगी। इसके साथ ही इसमे यह कहा गया था कि कम्युनिस्ट पार्टी ही एकमात्र वास्तविक समाजवादी दल है। और कांग्रेस समाजवादीदल को वामपक्षी एकता के मच के रूप में विकसित किया जायेगा।

६ महीने बाद चेते

जब रूस पर फिर भी हिटलर ने हमला बोल दिया, तो रूस को आत्मरक्षार्थ लड़ाई में आना पड़ा, और वह खूब जोरों के साथ लड़ाई में आया। अब हम इसके आगे राजनीतिक और सामरिक घटनाओं पर न जाकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने इस पर जो रुख किया, उसी पर

आयेंगे। जिस समय १९४१ में रूस पर जर्मनी का हमला हुआ था, उस समय भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वर्तमान मंत्री के अतिरिक्त सभी बड़े नेता देहली में तथा अन्य नजरबन्दी के स्थानों में बन्द थे। इस सम्बन्ध में यह बहुत ही दिलचस्प है कि बहुत पहले से कम्युनिस्ट पार्टी की समालोचना में लोग अक्सर कम्युनिस्टों से यह पूछा करते थे कि क्यों जी, यदि कोई लड़ाई हो और उसमें रूस और ब्रिटिश साम्राज्यवाद एक तरफ लड़ते हों, तो तुम लोग तो साम्राज्यवाद की तरफदारी करोगे। इस पर कम्युनिस्ट हमेशा बड़ी संजीदगी से यह कहा करते थे कि कदापि नहीं, हम उसके खिलाफ जायेंगे। जब रूस के विरुद्ध लड़ाई छिड़ी तो उन लोगों से यह प्रश्न पूछा गया और कहा गया कि अब तो तुम्हारी थिसिस बदल जायेगी। किन्तु वे बड़े जोरों से इस बात का विरोध करते रहे और जेलों में अपने साथियों से कहते रहे कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। जो लोग इन दिनों देवली में या अन्य किसी जेल मे किसी कम्युनिस्ट के साथ रहे हैं, वे इस बात को अपने तजर्बे मे तस्दीक कर सकते हैं। हमें जितनी भी जेलों की खबर मिल सकी, उनमें यही हाल रहा। इस बीच कई महीने गुजर गये। मालूम होता है कि लड़ाई की परिस्थिति में थिसिस आने में कुछ देर हो गयी, अंत में लन्दन से थिसिस आ ही गयी। पहले तो बाहर के कामरेडों ने इस पर ठप्पा लगाया, फिर तरह तरह से इस थिसिस को विभिन्न जेलों में तथा देवली में भेजा गया। यह नारा इतना आश्चर्यजनक था कि कदाचित लिखने पर लोग विश्वास नहीं करते कि जेलों के बाहर इस प्रकार का नारा बदला गया है, इसी बात से बचने के लिये कहा जाता है कि उन दिनों एक बहुत ही प्रसिद्ध कम्युनिस्ट के नेता जो फरार थे, सरकार की सहायता से देवली जेल में अपने साथियों से मिलने गये, और वहाँ लोगों को बताया कि किस प्रकार लन्दन से नया हिदायतनामा आया है। हमने यह जो लिखा

है कि भारतीय कायुनिस्ट पार्टी रूस पर जर्मनी द्वारा हमला हो जाने के बावजूद बहुत दिनों तक साम्राज्यवाद युद्ध का नारा देती रही, इसका कारण यह है कि उनके पास बाहर से हुक्मनामा नहीं पहुँचा, इसका समर्थन कम्युनिस्टों के अनन्य समर्थक सुप्रसिद्ध लेखक एडगर स्नो ने किया है। वे लिखते हैं—

Incidentally it is interesting to note that the Indian Communist Party evidently was completely cut off from the comin tern some years prior to its dissolution in 1943. This was evident in the curious deviation of the Indian party on the question of the war. Most national communist parties immediately abondened whatever qualifications they had attached to their support for the war when Hitler invaded Russia, but a full six months later the Indian party was still opposing Indian participation in it.

(Glory and Bondage P. 489)

सक्षेप में एडगर स्नो का वक्तव्य यह है कि लड़ाई के कई साल पहले से बाहर के साथ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का सम्बन्ध टूट गया था। तभी रूस पर जर्मनी के द्वारा हमला हो जाने के ६ महीने तक भी कम्युनिस्ट पार्टी साम्राज्यवादी युद्ध का राग अलापती रही। एडगर स्नो की लेखनी से यह तथ्य आने के कारण किसी कम्युनिस्ट को यह हिम्मत नहीं हो सकी कि वह इसे इन्कार करें। होते करते कोई दिसम्बर १ तक देवली तथा अन्यान्य जेलों में यह नयी थिसिस पास हो गयी। इस इतिहास को हमने इसलिये दिया कि यह ज्ञात हो जाय

कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में स्वतंत्र विचार के लिए कितनी गुञ्जाइश है।

जनयुद्ध का नारा

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने अब यह नारा दिया कि रूस के लड़ाई में आने से यह लड़ाई अब साम्राज्यवादी नहीं रह गयी, बल्कि यह जनता की लड़ाई हो गयी। फिर एक बार वे उसी गलती के शिकार हुए जिसके कुछ अपवादों के साथ वे बराबर शिकार रहे और जैसा कि हम देख चुके हैं कि ये अपवाद भी गलती के कारण ही हो गये थे। अब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल यह नारा दिया, बल्कि उन्होंने सरकार से मिलकर बराबर युद्ध में मदद देना शुरू किया। इनमें से जो लोग जेलों में थे, वे बुला-बुलाकर पुलिस अफसरों से मिले और उन्होंने कहा कि हम छूटने पर सरकार को मदद करेंगे, अतएव हमें छोड़ दिया जाय। सच बात तो यह है कि सरकार ने भी कुछ जाच पड़ताल के बाद इनको छोड़ दिया, इनमें से सिर्फ वे ही लोग जेलों में रह गये जिनके सम्बन्ध में सरकार को यह विश्वास था कि ये केवल छूटने के लिए कम्युनिस्ट हुए हैं और सही अर्थ मे अभी दिल में ब्रिटिश साम्राज्य की युद्ध चेष्टा में मदद करने के लिए तैयार नहीं हैं। इस नारा की तब्दीली के बाद ही कम्युनिस्ट पार्टी कानूनी हो गयी। कहा जाना है कि इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी पर से रोक उठा लिये जाने में कांग्रेस से सन्धिवार्त्ता करने के लिये आये हुए सर स्टेफोर्ड क्रिप्स ने बहुत भाग लिया। हमने कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय की समालोचना में जो सबसे बड़ा पहलू दिखलाया है, उसीसे हम इस अवसर पर जो गलती हुई उसे भी समझ सकते हैं। फ्रेंच में एक कहावत है कि सब कुछ समझना सब कुछ क्षमा करना है, किन्तु इस क्षेत्र में सब कुछ समझने पर हमारे मन पर उलटा ही असर होता है। आखिर जो लोग विश्व क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिये चल दिये, इनको इतना

तो समझना ही चाहिये था कि भारतवर्ष ऐसे देशों की समस्या कुछ और है, रूस की समस्या कुछ और। नात्सी जर्मन ने जब सोवियत रूस पर हमला कर दिया तो सोवियत रूस का कर्तव्य साफ था। उसने उसको बहुत बहादुरी से निभाया और अन्तर्राष्ट्रीय में जहाँ तक रूस का सम्बन्ध है साफ नाम दिया, किन्तु भारतवर्ष की समस्या रूस से बिल्कुल अलग थी। भारतवर्ष यदि साम्राज्य-वादी राष्ट्र या समाजवादी राष्ट्रों का यूनियन होता, साथ ही वह अपने अन्दर समाज भर को मजबूत बना चुका होता, यह दूसरी बात पहली बात से कम जरूरी नहीं है, तो उसके लिये कर्तव्य स्पष्ट होता, और वह कर्तव्य यह होता है कि वह रूस की मदद के लिये सक्रिय रूप से युद्ध में उतर पड़ता। यहाँ तक बात बिल्कुल साफ है। एक और काल्पनिक अवस्था भी ली जाय। मान लीजिये भारत-वर्ष समाजवादी राष्ट्र न होकर केवल लोकतांत्रिक राष्ट्र होता, और यह देखा जाता कि वह लड़ाई में उतर सकता है और उतर कर रहेगा तो उस हालत में यहाँ के समाजवादियों तथा सब प्रगतिशील उपादानों का यह कर्तव्य होता कि वे इस अवसर से वहाँ समाजवादी क्रान्ति करें, और इसी के लिये राष्ट्र पर ऐसा प्रभाव डालें कि वह रूस के पक्ष में लड़ाई में उतर पड़े। यहाँ तक भी कर्तव्य साफ है। किन्तु जब अभी भारतवर्ष स्वयं पराधीन है और साम्राज्यवाद के शिकञ्जों के अन्दर तड़फड़ा रहा है तो उसके लिये क्या कर्तव्य है? उसके लिये क्या यह कर्तव्य नहीं है कि वह जिस परिस्थिति में है, उसमें समाजवाद की ओर बढ़ने के लिये जो कुछ भी कर्तव्य है, उसी को करे और इस प्रकार समाजवाद के प्रति, अतएव रूस के प्रति अपना काम करे। यहाँ पर बहुत कर्कश होते हुए भी कुछ लोगों को यह बात याद दिलाने की जरूरत है कि हम रूस को कोई बुत नहीं बनाते अर्थात यदि बुत बनाते हैं तो उसके समाजवाद के लिये ही उसको बुत बनाते हैं। रूस की सर जमीन से या रूस के सागरों और पहाड़ों से हमें कोई विशेष प्रेम

नहीं है बल्कि रूस में जो समाजवाद की स्थापना हुए है, वहाँ पर जो मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण खतम कर दिया गया है, इसी से हमें प्रेम है, इसका हम रक्षा करना चाहते हैं, और यह हमें प्राणों से प्यारा है। इसलिये समाजवादी रूस से प्रेम रखते हुए भी हमें यह भूलना नहीं चाहिये कि विश्व में समाजवाद की स्थापना ही हमारा मुख्य कर्त्तव्य है और हम पहले ही बता चुके हैं, इस कर्त्तव्य का सम्पादन विभिन्न देश में विभिन्न रूप से होगा, क्योंकि प्रत्येक देश विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर पर स्थिति है। इसलिये उनकी समस्यायें भिन्न हैं और स्वाभाविक रूप से उनके समाधान भी भिन्न होंगे। इसी आधारगत तथ्य को न समझने के कारण विभिन्न देशों को कम्युनिस्ट पार्टियों ने एक ही तात्कालिक क 'व्य को अंजाम देने की कोशिश की और उसी में वे गुमराह हो गये।

एक नीति असम्भव

ऊपर की सब बातों को देखते हुए हम यह समझते हैं कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के युद्ध का नारा देकर यहा की स्वतन्त्रता आदोलन को अपनी तरफ से बन्दकर दिया, यही नहीं इसके विरुद्ध यह हर तरीके से गयी यह सम्पूर्ण रूप से गलत था। स्मरण रहे हमारे इस कथन का स्पष्ट अर्थ यह है जिस तरीके से एक तत्कालिक नारे के अन्दर दुनिया की सारी समाजवादी शक्तियों को पिरोकर चलने की कोशिश की गयी, वह सम्पूर्ण रूप से गलत है, और यदि अन्तर्राष्ट्रीय चलाने का यही एक मात्र तरीका है तो हम यह भी कहने का साहस करते हैं कि मार्क्स के समय तथा लेनिन के समय से परिस्थितिया बदल चुकी हैं। मार्क्स के समय तो अभी सभी देश समाजवाद से दूर थे। सबके लिये समाजवाद स्थापित करना ही समस्या थी। अतएव एक बहुत बड़ी हद तक इनका अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता था। इसी प्रकार लेनिन के जीवनकाल तक अर्थात जनवरी १९२४ तक यह परिस्थिति उस हद तो नहीं किन्तु एक हद तक मौजूद थी; क्योंकि उस

समय तक रूस के एक सोवियट राष्ट्र के रूप मे उदय हो चुकने पर भी उसकी रक्षा की समस्या तथा विश्वक्राति करने की समस्या एक ही धारा में बह रही थी। मोटे तौर पर यह परिस्थिति इसके बाद भी इसलिये कायम रही कि युद्ध के पहले कोई ऐसी क्रातिकारी परिस्थिति नहीं आई, जिसमे विभिन्न देशों की परिस्थितियों में अपने समाजवादी कर्त्तव्यों के सम्बन्ध मे इतना भारी अन्तर आ गया हो, फिर भी हम देख चुके कि जब अन्तर्राष्ट्रीय सातवीं कांग्रेस में संयुक्त मोर्चे का नारा दिया गया, उस समय यह नीति उसे सब देशों के लिये बहुत अवास्तविक हो गयी, जिनमें अभी तक समाजवादी क्राति नहीं हुई थी। यदि भविष्य मे फिर अन्तर्राष्ट्रीय चलाया जाय तो वह विद्यालय में छात्रों के के साथ जो सिद्धात करता जाता है उसी के अनुसार चल सकता है, या विभिन्न सतहों स्थित विभिन्न देशों के लिये अपने-अपने तात्कालिक कर्त्तव्यों के अनुसार विभिन्न नारा-परस्पर विरुद्ध नारा नहीं देकर ही चल सकता है।

१६४२ और मजदूर

१६४२ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में एक विराट आंदोलन देश भर में छिड़ा। हम इस आंदोलन का विश्लेषण कर चुके, केवल इतना और कहेंगे कि यह आंदोलन बहुत अंशों में १६०५ की रूसी क्राति की तरह था। यद्यपि इस आंदोलन में तथा १६०५ की क्राति में सर्वहारा ही प्रधान शक्ति थी, किंतु १६४२ की अगस्त क्राति में सर्वहारा का हिस्सा बहुत मामूली रहा। किंतु यह जो सर्वहारा का हिस्सा मामूली रहा, इसके प्रधानतम कारणों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी तथा अन्य इस प्रकार की पार्टियों की गद्दारीपूर्ण नीति थी। नहीं तो यहाँ के मजदूर इतने राजनैतिक रूप से पिछड़े न थे कि वे क्रान्तिकारी पार्टियों के नारे पर बिल्कुल न उठते। ऐसा कहने में कहीं यह गलतफहमी न हो जाय कि मजदूरों में कम्युनिस्ट तथा इस प्रकार की पार्टियों का अधिक प्रभाव था, इसलिये वे क्राति में अधिक शरीक

नहीं हुए। इसलिये यह बता देने की आवश्यकता है कि भारतीय मजदूर जो इस समय खुलकर नहीं खेले, उसका सबसे बड़ा कारण आर्थिक था। और वह आर्थिक कारण यह था कि महगाई के बावजूद मजदूर अपेक्षाकृत खुशहाल थे, उनको बराबर मंहगाई का भत्ता आदि दिया गया, तथा थोड़ा असतोष बढ़ते ही कुछ न कुछ उसकी दवा की गयी। इसके अतिरिक्त लड़ाई के कारण उद्योग धन्धों में जो वृद्धि हुई, उससे बहुत से नये मजदूरों को जगह मिल गई, ये नये मजदूर बिल्कुल क्रातिकारी इसलिए नहीं थे कि अभी ये मजदूर हो भी नहीं पाये थे, और जिस परिस्थिति में आये थे, उससे इनकी परिस्थिति अच्छी हो गयी थी। भारतीय मजदूरों की ऐसी परिस्थिति थी, इसी के कारण उन्होंने १६४२ के आन्दोलन में क्रातिकारी पार्टियों की पुकार नहीं सुनी और वे कम्युनिस्टों के गलत-सलत प्रचार कार्य के शिकार हो गये। हम इस अवसर पर एक यह जो गलतफहमी १६४२ के तजर्बे से फैल गयी है कि मार्क्सवादियों का यह कहना है कि सर्वहारा वर्ग क्राति का नेतृत्व करेगा, यह झूठा पड़ गया, इसका प्रतिवाद करना चाहते हैं। अव्वल तो यह क्राति हो नहीं पाई, दूसरे जिन कारणों से मजदूरों ने इसमें खुलकर भाग नहीं लिया, वह भी हम दिखा चुके, और यह कारण मार्क्सवाद के बाहर नहीं है, बल्कि उसी को लागू करने पर ये कारण दिखाई पड़ते हैं। इस अवसर पर एक 'असाधारण' प्रश्न और भी उठता है, वह यह है कि तो इसके मानी यह हुये कि लड़ाई के कारण कोई क्रान्तिकारी परिस्थिति उत्पन्न ही नहीं हुई। ऊपर से देखने पर यह समालोचना कटु ज्ञात होने पर भी कुछ हद तक यह समालोचना सही है और यह सही है इसलिए तो क्राति नहीं हुई। क्राति के लिए जो दृष्टगत (Subjetive) और दृश्यगत (objective) परिस्थितियाँ उत्पन्न होनी चाहिये, वे सचमुच इस समय मौजूद नहीं थीं। जहाँ तक मजदूर वर्ग का सम्बन्ध है हम उस परिस्थिति को दिखा चुके, अवश्य

अन्य वर्गों में बहुत असन्तोष था। भारतीय पूँजीवादी वर्ग भी इस अवसर से कुछ काम निकालना चाहता था। वह चाहता था कि तमाम परिस्थितियों से दबाव पड़े और उसे कुछ जबर्दस्त लाभ हो। जहाँ तक दृष्टिगत का परिस्थिति सम्बन्ध है, हमने यह लिखा है कि कांग्रेस के नेतृत्व में या उसकी पुकार पर आंदोलन का सूत्रपात्र हुआ, किन्तु उसके नेता किस प्रकार सोचते थे, और उनका असली इरादा किस प्रकार केवल धमकी देना था क्रांति करना नहीं। यह उनकी रिहाई के बाद के उनके बयानों से स्पष्ट हो चुका है। दूसरी जो समाजवादी नामधारी पार्टियाँ थीं उनमे कम्युनिस्ट पार्टी तो सरकार के साथ मिल गयी। बाकी जो पार्टियाँ बची वे भी इतनी कमजोर थीं, यहाँ तक कि एक बार चालू कर दिये जाने पर उसे जारी भी नहीं रख सकती थी फिर भी हमारा यह निश्चत मत है कि यदि कम्युनिस्ट पार्टी तथा अन्य इस प्रकार की 'जनता का युद्ध' नारा देनेवाली पार्टियाँ मजदूर वर्ग में बुद्धिभेद पैदा न करती ता वे क्रान्ति के लिये निकल पड़ते। यह बात अवश्य है कि यहाँ के मजदूरों की आर्थिक हालत इस समय इतनी गिरी हुई नहीं थी कि इसी की उत्तेजना पर वे क्रान्ति के लिये चल पड़ते। किन्तु फिर भी यदि उनमें जागृति होती तो इस कथित खुशहाली के बावजूद वे क्रान्ति में आ जाते। आर्थिक असंतोष ही सब कुछ नही है, आखिर मजदूर राजनैतिक हड़ताले आर्थिक कारण न होते हुए भी होती हैं। वहाँ का मजदूर कितना संगठित तथा वर्ग चेतनायुक्त है, यह इस बात से प्रगट होता है कि वहा का मजदूर किस हद तक अपनी संख्या तथा अपने नेताओं की पुकार पर राजनैतिक हड़ताल करने के लिये निकल पडते हैं। १६४२ में भारतवर्ष के मजदूरों में अब तक जो क्रान्तिकारी पार्टियाँ बची थीं (कम्युनिस्ट पार्टी तो पहले ही क्रान्तिकारी पार्टी की श्रेणी से खारिज हो चुकी थी) उन्होंने यही तो कहा था कि तुम लोग राजनैतिक हड़ताल करके सड़कों पर निकल पड़ो।

किन्तु वे पूर्णतया न निकले, विशेषकर कम्युनिस्ट पार्टी पर इसकी जिम्मेदारी है। भारतीय मजदूर वर्ग में इतनी चेतना १६४२ में नहीं थी कि वे आर्थिक कारणों के उत्तेजना के बिना केवल समाजवादी दलों के एक अंश की पुकार पर क्रान्ति में आये, किन्तु उनमें इतनी चेतना थी कि यदि भारतवर्ष की सब समाजवादी तथा क्रान्तिकारी पार्टियाँ मिल कर राजनैतिक हड़ताल और सड़क पर निकलने का नारा दे देती तो वे क्रान्ति में आ जाते।

लालबुझक्कड़ों का जोर

जब हिटलर ने सारे योरोप को अपने चरणों के सामने झुका दिया, उस समय उसने २२ जून १६४१ को रूस पर एकाएक हमला कर दिया। रूस पर हमला होते ही अन्तर्राष्ट्रीय का नारा बदला। रूस की परिस्थिति को देखते हुए हम समझ सकते हैं कि नारे में यह तब्दीली कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उसके लिये जीवन मरण का प्रश्न था। इस प्रकार एकाएक आक्रमण से उसने अपने को फैसीवाद के विरुद्ध किन्तु ब्रिटिश और अमेरिकन साम्राज्यवाद को एक पंक्ति में लड़ते हुआ पाया। शेषोक्त बात उसके लिये दुख की बात न होकर सुख की बात थी क्योंकि उसके दुश्मन के जितने भी अधिक दुश्मन होते, उसके लिये उतनी ही अच्छी बात थी। इस प्रकार दो साम्राज्यवादों के साथ एक पंक्ति में खड़े होकर एक दुश्मन के साथ लड़ने का यह अर्थ कदापि नहीं था कि वह अमेरिकन या ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मित्र हो गया है। फिर एक बार भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने गलत रास्ता अपनाया। सोवियट जर्मन पैक्ट का जैसे इन लालबुझक्कड़ों ने यह अर्थ लगा लिया था कि अब ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध फासीवाद और समाजवाद का संयुक्त मोर्चा कायम हो गया है, उसी प्रकार अब यह अर्थ लगाया गया कि फासीवाद के विरुद्ध साम्राज्यवाद और समाजवाद का संयुक्त मोर्चा कायम हो गया है।

इसी कारण भारतीय कम्युनिस्टों ने, और सो भी देरी में जनयुद्ध का नारा दिया।

सरकार से दोस्ती

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लोग यदि केवल अपना प्रचार-कार्य करके ही चुप रहते, तो वह बात एक हद तक सम्मान-जनक होती, किन्तु वे इतने ही से संतुष्ट न रह कर बहुत आगे बढ़ गये। हम यह नही कहते कि उन्होंने जो कुछ किया, जैसे तार काटने, पटरी उखाडने वालों को पकड़वाया, यह किसी भी तरह उनकी थिसिस के विरुद्ध था। जब उनके मतानुसार वह सारा आन्दोलन ही पाचवें दस्ते का था तो फिर वे ऐसे लोगों को गिरफ्तार क्यों न करवाते? उन्होंने इसके अलावा मजदूरों को भी बरगलाया और ऐसा सरकार से मिलकर किया जब अन्य लोगों के लिये मिल ऐरिया मे सभायें आदि करना मना हो गया, तो तब भी कम्युनिस्टों को बराबर वे रोक-टोक निषिद्ध स्थानों मे जाने की इजाजत बनी रही और इन्हें विशेष पास मिले रहे।

वे खुद नहीं लड़े

इनके सम्बन्ध में सबसे शर्म की बात यह है कि यद्यपि वे जनता को लड़ाई में भर्ती होने के लिये भड़काते रहे, पर इस पार्टी का कोई भी आदमी पार्टी के कारण लड़ाई में भर्ती नही हुआ। जब लक्ष्य इतना ऊँचा था और जनयुद्ध था, तो वे रालफ फाक्स और डेविड गैस की तरह इस लड़ाई में स्वयसेवक बनकर, क्यों शहादत नही अपनायी।

पैसे कहाँ से आये

फिर इन लोगों को लड़ाई के जमाने में इतने पैसे कहाँ से मिले कि एकाएक सैकड़ों की तादाद में पुस्तके और दर्जनों अखबार निकालने

लगे। रायवादियों के सम्बन्ध में तो चीजे खुल गयी, पर इनके सम्बन्ध में चीजे इतनी स्पष्ट नहीं हुई।

फिर भी एका कुछ सम्भव

कही इस अध्याय का गलत मतलब न निकाला जाय, इसलिये हम माफ करदें कि इन सब गलतियों के बावजूद यह भविष्य में सम्भव है कि इस दल के साथ किसी न किसी अंश मे सहयोग हो क्योंकि इसमें सन्देह नहीं कि ये समाजवादी रूस के भक्त हैं, सच तो यह है कि इसी भक्ति को ढंग से परिचालित न करने के कारण वे गुमराह हुए। मै यह समझता हूँ कि १६७२ की गलती के बाद भी कम्युनिस्ट पार्टी ने कुछ बहुत बड़ी गलतिया की है, पर उनकी बहुत सी नीति सही भी है। राजनीति में केवल पिछली बातों को लेकर नहीं चला जा सकता।

अगस्त क्रान्ति में स्त्रियों का बलिदान

अगस्त क्रान्ति की नेत्रियां—अरुणा और सुचेता

हम इस पुस्तक के पहले भाग में दिखा चुके हैं कि आतकवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन मे स्त्रियों का भाग कोई मामूली नही था, फिर १६४२ में उनका भाग प्रधान होगा इसमें आश्चर्य क्या! शायद समस्त प्रान्तों में आसाम में ही स्त्रियों का भाग सब से अधिक रहा, पर यह अधिकाश लोगों को नहीं मालूम और न किसी लेखक ने ही लिखा है कि ऐन नेताओं की गिरफ्तारी के बाद क्रान्ति को संगठित करने के लिये जो कमेटी बनी उसमें श्रीमती आसफ अली तथा श्रीमती सुचेता कृपलानी रही। किसी कारण से इन लोगों ने उसके इतिहास को नहीं लिखा, पर श्रीमती आसफअली तथा अच्युत पटवर्धन ने १६४६ के दिसम्बर में फरारी हालत से जो वृहत पत्र मौलाना आजाद को लिखा था उससे इस आन्दोलन की नेत्रियों में उनका स्थान तो ज्ञात है। पर सुचेता जी के भाग को बहुत कम लोग जानते हैं, पर

उनका भी इस अंतरग कमेटी में उतना ही भाग था जितना श्रीमती आसफ अली का था। स्मरण रहे कि इस कमेटी में कोई वामपक्षी या दक्षिणपक्षी की हैसियत से नहीं थे या थीं, सभी कांग्रेसी तथा अगस्त विद्रोही के रूप में थे या थीं। सभी फैसले में सब की राय होती थी। दुःख है कि अगस्त क्रान्ति के इस पर्दे के पीछे के इतिहास को अभी लिखने के उपादान प्राप्त नहीं हैं, कभी प्राप्त होगा कि नहीं, इसमें अभी सन्देह है। अभी तक अगस्त क्रांति के इतिहास में बटनायें ही आ रही हैं, पर इस युग में जो बुलेटिन निकले, जो पर्चे निकले, उनका कौन लेखक तथा लेखिका थी, प्रत्येक फैसले में किसका कितना हाथ रहा यह न जाना जाय, तब तक हम असली इतिहास से दूर ही होंगे, अस्तु। कुछ दक्षिणपंथी जिन्होंने वास्तविक तोड़ फोड़ में हिस्सा लिया, और खूब लिया, बाद को गांधीजी का रुख देखकर अपने कार्यों पर चुप्पी साध गये जिससे अन्तरग इतिहास लिखना बहुत ही मुश्किल है, इस कारण नेतृत्व में स्त्रियों का कितना हाथ रहा यह भी बताना मुश्किल है। कहीं गलतफहमी न हो जाय इसलिये हम यह बता दें कि अंतरङ्ग कमेटी जो भी बना हो, उसका प्रभाव प्रमुख होने पर भी मैं यह समझता हूँ कि जनता ने अपनी मौलिक क्रांतिकारी बुद्धि से काम लिया, और जैसा कि अच्युत तथा अरुणा ने अपने उल्लिखित पत्र में लिखा जो हजारों लाखों मन श्रोमाशनिक शक्तियाँ मुक्त हुई, उनकी एक आधमाशा परिचालना हमने दी'। इनका यह एक आधमाशा केवल नम्रतासूचक शब्द नहीं है। सचमुच ही इनकी आवाज बहुत दूर नहीं पहुँची। अस्तु।

सुचेताजी बाद को अलग

ऐसा सुना जाता है कि बाद को जब गाँधी जी के अनशन (१९४३ फरवरी) वाले पत्र प्रकाशित हुए, तब सुचेताजी इस अंतरङ्ग कमेटी से अलग हो गईं, और बाद को तो गिरफ्तार हो गईं। पर उस समय तक तो आन्दोलन बहुत कुछ खतम हो चुका था, फिर तो कमेटी के लोग

पर्चेबाजी करते रहे। इसलिये यह कहना अनुचित न होगा कि अन्त तक सुचेताजी इस कमेटी की उतनी ही नेत्री थीं जितनी अरुणाजी।

अन्य नेत्रियाँ

इन दोनों के अतिरिक्त इस आन्दोलन में बराबर छात्रों के साथ छात्राओं ने बहुत गौरवजनक भाग लिया। हिन्दू विश्वविद्यालय की छात्राओं ने, बम्बई की देशसेविकाओं ने तथा अन्य स्थान की स्त्रियों ने जो भाग लिया, उसका कुछ कुछ वर्णन आता गया है। मातङ्गिनी, फुलेश्वरी, कनकलता आदि का यथास्थान वर्णन आ चुका है।

स्त्रियों का त्याग पुरुषों से बहुत

पर पुरुषों के साथ-साथ सब त्याग करने पर भी, और कई क्षेत्रों में उनका त्याग अधिक गौरव होने पर भी स्त्रियों को एक त्याग पुरुषों से अधिक करना पड़ा। वह है फौजियों के तथा पुलिसों के हाथों में उनके लज्जाहानि तथा सतीत्व का नाश हुआ। कई क्षेत्रों में तो लज्जा तथा अन्य कारणों से स्त्रियाँ तथा उनके पति आदि इस प्रकार की घटनाओं को दाब गये होंगे, फिर भी सैकड़ों घटनायें प्रेस में आईं, और जितनी थोड़ी बहुत घटनाये आईं, उन्हीं से यह कहा जा सकता है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को इस क्षेत्र में नात्सीवाद के मुकाबले में झेंपने की कोई जरूरत नहीं। जिस प्रकार किराये के टट्टुओं ने हमारी माँओं तथा बहनों की इज्जत को बात की बात में नष्ट करके धर दिया, उसे पढ़कर आनेवाली सन्तानें हमेशा खून के आँसू रोयेंगी।

यहाँ हम कुछ ऐसी घटनाओं को उद्धृत कर रहे हैं—

काशीबाई की लज्जाहानि

बम्बई के प्रधान मंत्री (उन दिनों अर्थात ९ दिसम्बर १९४४ को भूतपूर्व प्रधान मंत्री) श्री बी० जी० खेर के सभापतित्व में एक जांच कमेटी ने जो नतीजे निकाले वे इस प्रकार हैं। यह घटना कोल्हापुर राज्य की पुलिस ने १९४२ के आंदोलन के सम्बन्ध में जो आतङ्कवाद

फैलाया था, उसी का अंश है। मल्लू नामक एक व्यक्ति १९४२ की क्रांति के सम्बन्ध में फरार था। उसी का पता लगाने के लिये उसकी माँ काशीबाई इनबर पर अत्याचार किये गये। यों तो पड्डीरे नामक गाँव के सभी लोगों पर अत्याचार हुए। कमेटी ने जाँच करके इस बात को प्रमाणित पाया कि काशीबाई, उसका पति, उसके छोटे बच्चे तथा दो अन्य व्यक्ति १९४४ के १९ अक्टूबर को चिखावल के पुलिस पटिल के घर पर ले जाये गये। वहाँ काशीबाई को इंगावले नामक दारोगा के सामने पेश किया गया। उससे पहला प्रश्न तो यह पूछा गया कि तुम मल्लू की माँ हो या बीबी। फिर दारोगा ने काशीबाई के बाल पकड़ लिये, उसे जमीन पर गिरा दिया गया, और उसके पति से कहा कि तुम इसे नंगी कर दो। काशीबाई नंगी की गई, और उस पर हंटर पड़ने लगे। उस पर थोड़ा थोड़ा पानी भी छिड़का गया, यह शायद इस कारण कि हंटर के दाग़ न पड़ें।

गुप्तस्थान में मिर्च की बुकनी

कमेटी के सदस्यों ने देखा कि काशीबाई के शरीर पर अब भी हंटर के दबे हुये दाग थे। चार सनदी याने इनामी जमीन प्राप्त चौकीदारों की गवाही से जो घटनास्थल पर मौजूद थे, कमेटी को यह ज्ञात हुआ कि फिर उस दुष्ट दारोगा ने काशीबाई को धमकाया कि कि यदि वह मल्लू का पता न बतायेगी तो उसके गुप्तस्थान में मिर्चों की बुकनी डाली जायगी। अन्य गवाहियों से यह साबित होता है कि मिर्चों की बुकनी या तो दारोगा ने खुद डाली, या उसके लोगों ने डाली। शुक्रवार को सबेरे फिर वह नगी की गई, और मारी गई। काशीबाई का पति, दो बच्चे तथा अन्य जो दो आदमी थे, वे भी मारे पीटे गये। एक को इतने जोर से धक्का मारा गया कि दीवारों की ईंटों में भी दाग पड़ गया। कमेटी के सदस्यों ने इस दीवार को देखा था। पटिल के घर में ही यह सब मारपीट होती रही। इन सब को जब

तक पुलिस उस गाँव में रही तब तक खाने को दाना नहीं दिया गया। बाहर लोगों ने मारपीट की आवाज सुनी। इसमें सन्देह नहीं कि काशीबाई के गुप्तस्थान में मिर्चों की बुकनी दी गई। कोल्हापुर सरकारी अस्पताल में काशीबाई का इलाज हुआ था; पर कोशिश करने पर भी डाक्टर या नर्सों को गवाही देने की इजाजत नहीं दी गई। पुलिस के इंस्पेक्टर जेनरल से इजाजत मांगी गई कि वे डाक्टर को आज्ञा दें, पर यह आज्ञा नहीं दी गई। एक स्त्री ने यह गवाही दी कि घर लौटकर काशीबाई के गुप्तस्थान से रक्तस्राव हो रहा था। स्मरण रहे कि यह अत्याचार शिवाजी के साक्षात् वंशधर कोल्हापुर के राजा के राज्य में हुआ। और उनके प्रधान मंत्री ने इस बात की पूरी चेष्टा की कि कमेटी को काशीबाई पर अत्याचार के सम्बन्ध में कोई गवाही न मिले, फिर भी चार सनदियों ने तथा पटिल ने समर्थनात्मक गवाही दी है।

सिन्धुबाला माइति पर बलात्कार

बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल इलाके के चंडीपुर मौजा के श्री अधरचन्द्र माइति की स्त्री श्रीमती सिन्धुबाला माइति ने बयान दिया था—

"मेरी उम्र १६ साल है, और मेरा एक बच्चा है। १६४३ की ६ जनवरी दिन के ९½ बजे 'एक पुलिस अफसर' कुछ फौजियों के साथ मेरे घर में दाखिल हुआ। उन लोगों ने मेरे पति को जबर्दस्ती पकड़कर अलग कर दिया, फिर मुझ पर बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई थी, बलातकृता होने का यह दूसरा मौका था।"

इस स्त्री पर १६४२ के २० अक्टूबर को एक दफे और बलात्कार किया गया था। दूसरी बार बलातकृता होने के बाद इस स्त्री को कुछ भयंकर रोग हो गया जिससे वह चल बसीं।

खुदिबाला पर बलात्कार

इसी गांव के हरिपद पंडित की स्त्री श्रीमती खुदिबाला पंडित ने यह बयान दिया था—

"मेरी उम्र २१ वर्ष है, मैं तीन बच्चों की मां हूँ। १६४३ की ६ जनवरी को सवेरे 'एक पुलिस अफसर' कुछ फौजियों के साथ मेरे घर में दाखिल हुआ। मेरे पति को गिरफ्तार कर कहीं और ले जाया गया। वह व्यक्ति फिर मेरे कमरे में आया, और उसकी हिदायत के अनुसार दो फौजियों ने मेरे मुंह को कपड़े से बाँध दिया, और उन लोगों ने धमकाया कि यदि मैं चिल्लाऊँगी तो मुझे गोली मार दी जायगी। इसके बाद उन दोनों फौजियों ने एक के बाद एक मुझ पर बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई।...होश में आने के बाद देखा कि मेरे पति लौट आये हैं, उनके शरीर पर चोटें हैं, और उन चोटों से खून टपक रहा है।"

जिस समय इस स्त्री पर बलात्कार किया गया था, वह गर्भवती थी।

सुहासिनी पर बलात्कार

इसी गांव के श्री मन्मथनाथ दास की स्त्री श्रीमती सुहासिनी दास ने यह बयान दिया—

"मेरी उम्र २० साल है, अभी कोई बच्चा नहीं है। १६४३ की ६ जनवरी को 'एक पुलिस अफसर' कुछ फौजियों के साथ मेरे घर पर आया। उन्होंने मेरे पति को पकड़कर कहीं अलग पहुँचा दिया। उस व्यक्ति के हुकम से दो फौजियों ने कपड़े के एक टुकड़े से मेरा मुंह बन्द कर दिया, और मुझे धमकाया कि यदि मैं चिल्लाऊँगी, तो मुझे गोली मार दी जायगी। उन दोनों फौजियों ने मेरे साथ जबर्दस्ती की। मैं लज्जा तथा घृणा से बेहोश हो गई।...आप लोग हमें फिर से सामाजिक बनावें।"

इस स्त्री को अभी हाल में हैजा हुआ था, और इसके तीन दिन पहले उसने स्वाभाविक खाना खाया था।

विधवा पर बलात्कार

इसी गाव के स्वर्गीय सुशील मुखर्जी की श्रीमती स्नेहबाला ने यह बयान दिया—

"मेरी उम्र २८ साल है। मेरे चार लड़के हैं। १९४३ की ९ जनवरी को 'एक पुलिस अफसर' कुछ फौजियों को लेकर हमारे घर पर आया। उनमें से कुछ ने हमारे बड़े लड़के को पकड़कर और कहीं भेज दिया। उस व्यक्ति की आज्ञा से फौजी मेरे कमरे में आये, और उन्होंने मुझे पकड़ लिया। फिर मेरे मुँह में कपड़ा ठूँसकर मुझ पर बारी बारी बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई, फिर जब होश में आई तो देखा कि लड़का लौट आया है, पर उसके शरीर पर चोटें हैं, और उनके घावों से खून जा रहा है।"

तीन फौजियों द्वारा बलात्कार

इसी थाने के डिही मसुरिया गाव के श्री गिरीश मापारू की स्त्री श्रीमती वसन्तबाला मापारू ने इसी प्रकार का बयान दिया। उस पर तीन फौजियों ने जबर्दस्ती की।

राइमणि पर बलात्कार

इसी गांव के श्री भुवन पाड़िया की स्त्री श्रीमती राइमणि पाड़िया के बयान में भी ये ही बातें थीं। उसके बयान में विशेषता यह है कि वह भागकर एक बांस के जंगल में जा रही थी, पर पकड़ ली गई, और मुँह में कपड़ा ठूँसकर उस पर बलात्कार हुआ। यह स्मरण रहे कि एक ही थानेदार ने यह सब कराया। मालूम होता है कि उस पशु ने बलात्कारों का एक कार्यक्रम बना लिया था। यदि इन निर्यातिनों के शिकार जापानी विजय चाहते भी तो बेजा न होता क्योंकि ब्रिटिश-गण पाशविकता में कम कब थे?

करीब करीब भारत भर में सर्वत्र अगस्त क्रान्ति को दबाने के लिए स्त्रियों की लज्जाहानि तथा उन पर बलात्कार किया गया।

जेलों में अगस्त-बन्दियों पर अत्याचार

जेलों में इतिहास बना

१६४२ का कोई भी वर्णन उस सम्बन्ध में राजबन्दियों पर किये गये अत्याचारों के वर्णन के बिना अधूरा रहेगा। यों तो अन्य अत्याचारों के साथ साथ जेल के अत्याचारों का कुछ वर्णन हम कर आये हैं, पर इस अध्याय में अगस्त कैदियों के साथ जेल में किये हुए दुर्व्यवहारों का कुछ वर्णन किया जाता है। सच तो यह है कि राजनैतिक कैदी जहाँ भी रहे, उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ, पर यहाँ कुछ ही जेलों का वर्णन दिया जायगा। 'हाँड़ी के चावल न्याय से' ऐसे सभी जेलों का समझा जाय।

अलीपुरम जेल की मार

पहले दक्षिण के अलीपुरम जेल से लिया जाय। यहाँ बहुत से प्रतिष्ठित राजबन्दी बन्द थे, जिनमें वकील, डाक्टर सभी तरह के लोग थ। एक राजबन्दी तथा एक वार्डर में कुछ झगड़ा हो गया था, पर वह निपट गया था, और किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया था। एकाएक सीटी बजी, और लोग राजनैतिक बन्दी-वार्ड की तरफ दौड़ते हुए देखे गए। सामने देखा गया तो जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट, जेलर तथा रिजर्व पुलिस आ गई थी। फिर सुपरिन्टेन्डेन्ट ने लाठी चार्ज का हुक्म दिया। बस क्या था, लोग बात की बात में गिरा दिये गये, जैसे जंगल में पेड़ गिरा दिये जाते हैं, और धूल कई फीट तक उड़ने लगी। लोग उठने की चेष्टा कर रहे थे, पर फौरन गिरा दिये गये और फर्श खून से लाल हो चला। कुछ राजबन्दी जो अभी बैरक के अन्दर थे, वे बचे थे, पर अधिकारियों का ध्यान शीघ्र ही उधर गया, और वे भी गिरा दिये गये। सुपरिन्टेन्डेन्ट के बायें हाथ में पिस्तौल थी। जो लोग टट्टी में बैठे थे, वे वहीं पर गिरा दिये गये थे, और उधर भी लोग कराह रहे थे।

फिर मार और ड्रिल !!!

एकाएक सब राजबन्दियों के बीच की जगह पर जाने को कहा गया। लोग बताई हुई जगह पर जाकर बैठ गये। लोग यह समझे कि अब मार हो चुकी, अब कुछ उपदेश होगा। पर यह क्या, अब फिर लाठी-चार्ज शुरू हो गया। अब तो लोग ऐसी जगह पर थे कि भाग भी नहीं सकते थे। इसके बाद लोगों को बाहर ले जाकर चार चार की कतार में खड़ा होने को कहा गया। कई तो खड़े नहीं हो सके, पर बाकी खड़े हुए। जो खड़े हुए उनसे ड्रिल करने के लिये कहा गया। पर लोग ड्रिल न कर सके तो उन पर कोड़े पड़े। कोड़ों की मार से लोगों को ड्रिल कराया गया। इस प्रकार राजबन्दियों को एक वार्डर के साथ झगड़ा करने का सबक दिया गया। यह १४ सितम्बर १९४२ की घटना है।

शिब्बनलाल पर जेल में मार

७ सितम्बर १९४२ को डि० आई० जी० मिस्टर लक गोरखपुर जेल में श्री शिब्बनलाल सक्सेना से मिले। २॥ घन्टे तक वे मिलते रहे। उसी दिन उन्होंने विलायत मे यह पत्र लिखा—

प्रियतमे,

......ट्राबटन तथा उसकी सेना परसों यहाँ से जा रही है, और उनकी जगह पर सफोक सेना आ रही है। वे बड़े काम की रहीं। कई बार ट्राबटन की सेना ने अपने अधिकार से बाहर जाकर हमारी मदद की। मुझे आशा है कि सफोक सेना भी इसी प्रकार सहायक सिद्ध होगी।..... प्रसिद्ध कांग्रेसी विद्रोही शिब्बनलाल सक्सेना जिसके लिये हम इतने दिनों तक परेशान थे, कल महाराजगंज में एक गाव के मुखिया के द्वारा पकड़ लिया गया। इससे बड़ी चिन्ता दूर हुई। यही वह आदमी है जो एरिक मास की हत्या करने की चेष्टा में लगा था, और इस जिले की तोड़फोड़ का बहुत कुछ इसी व्यक्ति ने संगठन किया

था । आज मैं उससे ७-३० से ७-४५ तक मिला । इस सूअर ने कहा, कि इसे संयुक्त प्रांत तथा बिहार में कांग्रेस विद्रोहियों के द्वारा होनेवाले तोड़फोड़ के कार्यों के सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम । मैंने उसे बतलाया कि किस प्रकार थानेदार जिन्दा जला दिये गये, इस पर उस कमबख्त ढोंगी ने कुछ घड़ियाली आँसू निकाले और कहा कि वाकई ऐसी घटनायें कांग्रेस के झंडे के लिये कलंक स्वरूप हैं, और यदि गांधी जी को ये घटनायें मालूम हो गईं तो वे इसके लिये भयंकर प्रायश्चित्त करेंगे । मुझे तो शक ही नहीं विश्वास है कि इस पाजी सूअर ने ही कई ऐसे काम कराये होंगे । कांग्रेसी देशभक्तों का यह ढोंग देखकर बदन में आग लग जाती है । सच तो यह है कि जो कुछ उपद्रव, आतंक तथा गुन्डई हुई है, उसके लिये इसे कुछ भी अफसोस नहीं था । यदि उसे अफसोस था तो इस बात पर कि और अधिक बदमाशी करने के पहले पकड़ा गया । मैंने फिर उसे जेल की कोठरी में मारते मारते करीब-करीब मार डाला । उसके पकड़े जाने पर पैट्रिक को इतनी खुशी हुई कि उसने हमें नाच में हराया । बड़ी खुशी है कि तुम खूब पार्टियों में जा रही हो, पर अधिक रात तक न जगा करो । पर मैं जानता हूँ कि तुम बहुत अच्छी हो । मेरी प्यारी जी, बहुत प्यार ।

तुम्हारा ही

जिम

१९४२ तथा उसके बाद के दिनों में लाहौर का किला अत्याचार के लिए मशहूर हुआ । वहाँ पर जयप्रकाश जी, डा० लोहिया, ज्ञान-भद्र याजी आदि कितने ही राजबन्दी रक्खे गये थे । श्री शरद बोस के भतीजे तथा अन्य लोगों के सम्बन्ध में बयान हुए । हम बाद को उन्हें उद्धृत करेंगे । पहले हम देखें कि संयुक्त प्रांत की फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल में अगस्त बन्दियों पर क्या अत्याचार हुए । लेखक वहीं पर स्वयं रहा, पर यह विवरण कानपुर स्टेशन बम कांड के श्री निरंजन सिंह (राजा कालेपानी) द्वारा संग्रह किये गये विवरण के आधार पर

है; जो लेखक के पास चोरी से लेखक के जेल रहते समय ही १-१०-४७ को दिया गया था।

फतेहगढ़ का हृदयविदारक इतिहास

फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल संयुक्त प्रांत का अंडमन है। यहीं बड़ी दयनीय परिस्थिति में क्रांतिकारी शहीद श्रीमणीन्द्रनाथ बनर्जी की मृत्यु हुई थी। यद्यपि इस बार बरैली जेल में जैसे श्री दीवानसिंह की मृत्यु हुई थी, वैसे यहाँ कोई राजबन्दी मरा नहीं, पर राजबन्दियों के साथ इस जेल में जो व्यवहार हुआ, वह हृदयविदारक है।

हर बहाने पर मार

मैनपुरी के अगस्त बन्दी बाबूराम तथा मास्टर गयाप्रसाद फतेहगढ़ आते ही चक्की पीसने के लिये भेजे गये। किसी मामूली सी बात पर मास्टर गयाप्रसाद को इतना मारा गया कि उनके बायें पैर की एक हड्डी टूट गई। और वे जीवन भर के लिये लंगड़े हो गये। इस मार के बाद उन्हें एक अँधेरी कोठरी में बन्द रक्खा गया, और उन्हें तीन दिन तक पानी नहीं दिया गया। चौथे दिन वे फिर निकाले गये और उन पर फिर तड़ी डाली गई। अब मास्टर साहब से और सहन नहीं हुआ, और उन्होंने उसी हालत में अनशन कर दिया। यह अनशन ४० दिन चला। जब ४० दिन पर उनकी हालत खराब हो गई, तब अधिकारियों ने वादा किया कि आगे उनके साथ दुर्व्यवहार न होगा, तब उन्होंने अनशन तोड़ा। इस वादे पर भी अनशन करने के ही कारण उनपर मुकद्दमा चला और उन्हें ६ महीने की सजा दी गई।

मारा भी, और मुकद्दमा भी चलाया

इसी प्रकार इटावा के कन्हैयालाल जी को पहले चक्की दी गई, फिर इतनी मार पड़ी कि खोपड़ी टूट गई, और कुर्ता तथा जाँघिया खून से लथपथ हो गये। फिर वे बेहोश हो गये। बिना कारण मार

पर उन्होंने अनशन किया, और अनशन के लिये उन पर दफा ५२ का मुकद्दमा चला। अदालत ने उन्हें बीस बेंत की सज़ा दी। इटावा के बाबूराम गुप्त और ओङ्कार सिंह तथा मैनपुरी के रामनारायण आजाद ने उनकी सहानुभूति में अनशन कर दिया, इसके लिये भी उनको भी २० बेंत की सज़ा दी गई। खैरियत यह हुई कि अपील में बेंत की सज़ा दी गई।

फालिन तथा भूखों रखना

इसी जेल में कानपुर के शिवराम सिंह, रामनाथ वर्मा, रामरतन, गाजीपुर के सिद्धिनाथ, गिरिराज, फर्रुखाबाद के हलबल, बच्चीलाल, बलिया के रामनगीना तथा मूलराज सिंह को इतना मारा गया कि उनके मुँह से तथा टट्टी से खून गया। कन्हैयालाल तथा शिवराम सिंह के कान भी फट गये। कुछ राजबन्दियों के अतिरिक्त फतेहगढ़ के सब सी श्रेणी के राजबन्दियों पर फालिन हुआ। गिरा कर टॉग उठाकर मारने को फालिन कहते हैं। जब इस प्रकार की मार से राजबन्दी बेहोश हो जाते थे तो उन्हें घसीटकर अन्धी कोठरी में बन्द कर दिया जाता था। जिस समय इन कैदियों पर फालिन होता था, उस समय गान्धी जी तथा अन्य नेताओं को गालियां दी जाती थीं। जब ये मारकर कोठरी में डाल दिये जाते थे, तो किसी नम्बरदार या मामूली कैदी को दया आ जाती थी, तो उन्हें पानी मिल जाता था। पर यदि अधिकारियों को इसका पता लग जाता था, तो उस कैदी की शामत आ जाती थी।

नमस्ते पर मार गये

राजनैतिक कैदियों पर क्यों मार पड़ती थी, यह भी देखा जाय। कुछ पर तो इस कारण मार पड़ी कि उन्होंने जेलर से; शराफत से नमस्ते कह दिया। राजनैतिक कैदी इस लायक भी नहीं समझे जाते थे कि उनका नमस्ते लिया जाय। यदि किसी का तबियत खराब हो,त

और वह खाना न खाता तो उस पर भी मार पड़ती। इलाहाबाद के जमुनाप्रसाद, रामचन्द्र, जगन्नाथ, मेरठ के मिठनलाल और कामता प्रसाद पर कई बार मार पड़ी।

काम न करने पर मारे गये

मैनपुरी के सर्दार मन्नासिंह पर इस कारण मार पड़ी कि वे जेल की मशक्कत पूरी न कर सके। इस पर प्रतिवाद में वे अनशन करते रहे। कई मौकों पर पूरी मशक्कत करनेवाले राजबन्दी भी इस कारण मारे गये कि उन्होंने खुद तो काम किया, पर अपने साथियों से काम कराने पर असमर्थ रहे।

रामदत्त शुक्ल जेलर

ये सारे अत्याचार रामदत्त शुक्ला जेलर के जमाने में हुए। मजे की बात यह है कि रामदत्त शुक्ल का छोटा भाई श्री जगदीश शुक्ल एक क्रान्तिकारी रहे। रामदत्त शुक्ल की हृदयहीनता का परिचय इसी से मिलेगा कि उसने अपने छोटे से लड़के को पुलिस की इस शिकायत पर हमेशा के लिये घर से निकाल दिया कि उसने किसी राजनैतिक जुलूस में भाग लिया था, और वह बेचारा दाने-दाने का मुहताज हो गया। रामदत्त शुक्ल के बाद अजीजनुल रहमान जेलर होकर आया पर वे भी रामदत्त की लीक पर चलते रहे।

मुफ्त में बेंत

इसी जेल में अनुशासन भंग के कारण कानपुर के शिवरामसिंह, रामराखन, मन्नालाल द्विवेदी, इटावा के राधाकृष्ण और कन्हैयालाल, बनारस के देवनन्दन दीक्षित, मिरजापुर के बिहारी राम, नैनीताल के दलीपसिंह को अनुशासन भंग पर सात सात बेंत लगे। असल में इनको बेंत इस कारण लगे कि इन्होंने जेलों के आई० जी० के आते समय परेड पर खड़े होने से इनकार किया था।

खूब मार पड़ी

झाँसी के रामेश्वर दयाल, मुन्नालाल, काशीराम, रघुनाथ, गोपाल राम, छोटेलाल, बदाऊँ के हरिनारायणसिंह, फैजाबाद के रामसुन्दर, प्रतापगढ़ के लालमाधो सिंह, पीलीभीत के पं० रामलाल शर्मा भी मारे गये। इटावा के जगदीशचंद्र यादव पर इस कारण मार पड़ी कि उन्होंने दीमक द्वारा खाये हुए कम्बल को लेने से इनकार किया। रामलाल शर्मा और प्रेम सिंह को लकड़ी ढोने को कहा गया, इससे इनकार करने पर उन पर मार पड़ी।

एक साथ पाँच पाँच सजायें

जेलर शौकत बेग ने तो अपने हुक्म से राजबन्दियों का राशन घटा दिया, कहा कि वे इतना हजम नहीं कर सकते क्योंकि वे पूरी मशक्कत नहीं कर रहे हैं। कुछ कैदियों को गैरकानूनी तरीके से ५ सजायें एक साथ दी गईं—(१) डंडा बेड़ी (२) हथकड़ी (३) कोठरी (४) कम खाना (५) कड़ी मुशक्कत। इसके अलावा मार तो बातें में पड़ती थी। झाँसी के काशीराम ने प्रार्थना की कि उनकी मुशक्कत बदल दी जाय, इस पर उन्हें गिराकर मारा गया।

स्वास्थ्य गिरा

इन कारणों से कई कैदी बीमार हो गये। पर बीमार होने पर भी अस्पताल नहीं भेजा जाता था। फिर भी इटावा के स्वामी बुद्धलाल, बदाऊँ के हरिनारायण सिंह, बलिया के हरगोविन्द सिंह तथा फर्रुखाबाद के कन्नौलाल को बराबर अस्पताल में रखना पड़ा। यही हाल इटावा के मिजाजीलाल का रहा।

सब को सी श्रेणी

अत्यन्त प्रतिष्ठित अगस्त कैदियों को भी सी श्रेणी में रखा गया। इटावा के भारतवीर श्री मुकुन्दीलाल जी काकोरी षड्यंत्र के कैदी की हैसियत से ८ साल बी श्रेणी के कैदी थे, पर अगस्त कैदी (सजा बाद

साल) की हैसियत से वे बराबर सी श्रेणी में ही रखे गये। वे ४० पौंड घट गये। जौनपुर के श्री रामबली गुप्ता के घर को लूटकर पुलिस ७२०००) रु० ले गई थी, पर वे भी बी श्रेणी के योग्य नहीं समझे गये। इसी प्रकार अन्य कैदियों की हालत रही।

द्विजेन्द्र बोस तथा मि० ऋषि का बयान

श्री शरतचन्द्र बोस के भतीजे श्री द्विजेन्द्र बोस ने, जो लाहौर के किले से रिहा किये गये थे, अपनी रिहाई के बाद लाहौर की एक विराट सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए जेल के घृणित अत्याचारों का करुणाजनक वर्णन किया। इसके साथ ही पंजाब के डाक्टर ऋषी का वक्तव्य भी हम प्रकाशित कर रहे हैं जिससे कि लाहौर के किले में राजनैतिक बन्दियों के प्रति होनेवाले घृणित व्यवहारों का पता चले।

स्वास्थ्य गिर गया

श्री द्विजेन्द्र बोस ने बतलाया कि एक बार मुझे एक ऐसे तनहाई कमरे में ले जाकर बन्दकर दिया गया, जिसमें ११६ डिग्री तक गर्मी पहुँचायी गई थी और मुझे तबतक उसमें रखा गया, जबतक कि मैं बेहोश नही हो गया।

श्री बोस इतने अधिक दुर्बल थे कि वे मंच तक भी नही आ सकते थे, और अपने भाई सुशील बोस की सहायता से मच पर आये। मच पर भी वे खड़े न रह सके, और आपने बैठे ही बैठे भाषण किया, और बीच बीच में बोलने के कारण आपको श्रम का अनुभव होने लगता था, और सुस्ताने के लिये रुक जाना पड़ता था।

गोली से उड़ाने की धमकी

आपने कहा कि मैं करीब साढ़े चार वर्ष तक जेल में बन्द रहा, और अब जाकर अंग्रेजी राज्य के कसाईखाने से छुटकारा पा सका हूँ। जब मैं लाहौर के किले में था, उस समय एक खुफिया पुलिस का अफसर मुझसे दिन रात सवाल किया करता था "क्या सुभाष बाबू महात्मा

गांधी की सलाह से हिन्दुस्तान से भागे" "क्या पंजाब के माल मंत्री सरदार बल्देवसिंह सुभाष बाबू के मित्र हैं?" "क्या सरदार बल्देव सिंह ने सुभाष बाबू को भागने में मदद दी थी?" जब मैं इन प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार कर देता था, तो धमकाया जाता कि तुम्हें गोली से उड़ा दिया जायगा।

ऋषि का बयान

पंजाब के डाक्टर शिवनन्दन ऋषि ने, जो लाहौर के किले से रिहा किये गये थे, एक वक्तव्य प्रकाशित कर लाहौर के क़िले में बन्द राजबन्दियों के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार पर प्रकाश डाला है और राष्ट्रपति आजाद से अपील की कि देश भर के जेलों में राजबन्दियों के प्रति होने वाले दुर्व्यहार की जांच के लिए कमीशन नियुक्त करें।

पृथ्वी पर नरक

आपने अपने वक्तव्य में कहा है कि श्री द्विजेन्द्र बोस इसलिए धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने लाहौर के किले के नारकीय दृश्यों को जनता के सामने उपस्थित किया। यह महत्व की बात है कि दिल्ली का किला अहमद नगर के किले, आगा खां के महल या देवली कैम्प-जेल की तरह नजरबन्द शिविर नहीं है। उस पर इंसपेक्टर जेनरल आप प्रिजन्स का कोई अधिकार नहीं है। और पुलिस वाले भी, जो कानूनी हवालातों के जिम्मेदार हैं, लाहौर के किले में कुछ नहीं कर कर सकते। यह किला पूरी तौर से पंजाब के खुफिया पुलिस विभाग के स्पेशल ब्रांच के हाथ में है जो भारत सरकार के इन्टेलिजेन्स ब्यूरो की सहायता से काम करता है। इसलिए "पृथ्वी पर इस नरक" की व्यवस्था का पूरा दायित्व खुफिया विभाग के हाथ में ही है।

बिल्कुल तनहाई कमरे में बन्द करना, छोटे से अन्धेरे कमरे में बन्द कर देना, उसी कमरे में छोटे से खुले हुए बर्तन में शौच आदि से निवृत्त होना, जिससे चौबीसो घंटे बदबू से नाक फटती है, हफ्तों

हजामत बनाने से रोककर, कपड़े साफ करने से रोककर, और नहाने से रोककर अस्वास्थ्यकर जीवन के लिए विवश करना लाहौर के किले की मामूली घटना है। इसी प्रकार गंदी भाषा का प्रयोग और गालियां भी साधारण सी बात है।

तरह तरह की यातनायें

लाहौर के किले में स्वयं अपने दो मास के बंदी जीवन में मुझे इतनी शारीरिक और मानसिक यातनायें सहनी पड़ी कि उस जीवन से मृत्यु कहीं अधिक अच्छी मालूम होती है। मुझे कड़ाके की सर्दी की तीन रातें बिना बिस्तर और ओढ़ने के बितानी पड़ी जिससे मुझे १०१ डिग्री तक ज्वर चढ़ आया, छाती में कफ इकट्ठा हो गया और कफ से साथ खून गिरने लगा, फिर भी मेरे औषधपचार की कोई व्यवस्था नहीं की गई। इसका फल यह हो गया कि दो दिन बाद मुझे निमोनिया हो गया और बहुत शोरगुल मचाने पर एक डाक्टर बुलाये गये। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उक्त डाक्टर भी एक मिक्श्चर का नुस्खा लिखकर चलने लगे। इस पर मैंने उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि बिना बिस्तरों के सीड़ में पड़े रहने से मैं कैसे अच्छा हो सकता हूँ। इसके दो एक दिन बाद किसी तरह मेरे लिये एक बिस्तर की व्यवस्था की जा सकी।

मेरे लिये सबसे अधिक शारीरिक यातना यह थी कि मुझे लगातार तीन दिन और रात सोने नहीं दिया गया। इन २४ घण्टों तक मुझे आँखें खुली रखने के लिये विवश किया गया। इस यातना की कल्पना से ही रोमांच हो जाता है।

अजीब प्रश्न

मुझसे जो प्रश्न किये जाते थे, उसका सम्बन्ध "आजाद पञ्जाब गजट" से होता था जो शिन उपनामधारी व्यक्ति के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता था और पञ्जाब के भारत छोड़ो आंदोलन से था।

नज़रबन्दी इस बात का बहुत प्रयत्न करते थे कि विध्वंसक कार्यों का सम्बन्ध कांग्रेस नेताओं से जोड़ा जाय। मैंने उन्हें बताया कि "आज़ाद पञ्जाब गज़ट" ने कभी हिंसा या विध्वंस कार्यों का प्रचार नहीं किया और पञ्जाब में सबसे पहली हिंसा तो वही है जो खास सरकार की देख रेख में लाहौर के इस किले में नज़रबन्द, असहाय, एकाकी लोगों के साथ की जा रही है।

जौनपुर जेल में दिन मारपीट से शुरू

जौनपुर जेल के सम्बन्ध में यह ज्ञात हुआ है कि अगस्त बन्दियों की दिनचर्या कुछ दिनों तक मार से ही कराई जाती थी। उन दिनों वहाँ ८०० राजबन्दी थे। यह अगस्त बन्दियों के साथ व्यवहार था, जब कि मामूली बदमाशों के साथ भी ऐसा नहीं किया जाता था।

बीस बीस बेंत

बरेली जिला जेल के क्रांतिकारी वार्ड पर सरकार की विशेष कृपा रही। वहाँ राजनैतिक कैदियों से कहा गया कि अपने कुर्तों पर नाम स्टेन्सिल करवा लो। कैदियों ने ऐसा करने से इनकार किया तो उनको गालीगुफ्ता दिया गया, इस पर उन्होंने अनशन कर दिया। इस पर आज़मगढ़ के मुक्तिनाथ उपाध्याय, फैज़ाबाद के जगदीश शुक्ल, महाराष्ट्र के विरगटा, बनारस-गाज़ीपुर के हृदयनारायण पाठक, जौनपुर के शिवव्रतसिंह, जौनपुर के दुःखहरण मौर्य, गोरखपुर के केशव पांडेय, बलिया के मृगराजसिंह, गोंडा के जगन्नाथ पुरी को बीस-बीस बेंत मारे गये। बरेली में रोज ६ बार तलाशी होती थी।

आपसी लड़ाई से सरकार को फ़ायदा

इसी जेल में १९४३ के जाड़े में विभिन्न पार्टियों के राजबन्दियों में लड़ाई हुई। कम्युनिस्ट और आर० एस० पी० वाले एक तरफ़ तथा दूसरी तरफ़ एच० एस० आर० ए० वाले थे। सी० एस० पी० का वहाँ अस्तित्व नहीं था। इस लड़ाई में तसला, स्लेट चला। इस पर पचासों

बन्दियों को तीन-तीन महीने की बेड़ी दी गई। आपसी झगड़ा था, आपस में निपट जाता, पर सरकार तो मौका ढूँढ़ा करती है। इस झगड़े के बहाने लालटेन, पुस्तक आदि छीन ली गई।

भंगियों से कहा मारो

इसके बाद जेल के भंगियों को भड़का दिया गया कि राजबन्दियों को मारो। भला इन बदमाशों को क्या चिन्ता! वे इसके लिये तैयार हो गये। इस पर राजनैतिक बन्दियों ने मौका देखकर खुदही टट्टी काटना शुरू किया, और कहा कि हमारे वार्ड में भंगियों के आने की जरूरत नहीं, हम खुद ही टट्टी काट लेंगे। तीन दिनों तक टट्टी काटना जारी रहा तब भङ्गी बदल दिये गये।

अनशन किया तो बेंत लगे

वहाँ १९४४ के २८ जनवरी को २४ राजबन्दियों ने अनशन किया। उनका अनशन दुर्व्यवहार के विरुद्ध था। उसी दिन अनशन की हालत में निम्नलिखित बन्दियों को बीस-बीस बेंत मारे गये—

(१) मिठाईलाल गुप्त
(२) रामराज यादव
(३) शिवव्रत सिंह
(४) दुखहरण मौर्य
(५) सूर्यनाथ उपाध्याय
(६) बैजनाथ सिंह
(७) दयाशंकर

(ये सातों जौनपुर के थे।

(८) हृदयनारायण पाठक
(९) कालका राय
(१०) रमाशङ्कर राय

(ये तीन गाजीपुर के थे।)

(११) शान्तिस्वरूप त्यागी (मेरठ)
(१२) नेकराम शर्मा (आगरा)
(१३) उदरेश सिंह (जौनपुर)
(१४) मृगराज सिंह (बलिया)
(१५) रामनगीना (बलिया)
(१६) शंभुनाथ (झांसी)
(१७) गणेश चतुर्वेदी (ओरई)
(१८) विरूपाक्ष (महाराष्ट्र)
(१९) बद्रीनारायण मिश्र (गोरखपुर)
(२०) केशव पांडे (गोरखपुर)

सरकार को झुकाया

इन लोगो को बेंत लगाने के बाद जो घाव हुए उनमे किसी प्रकार मरहम पट्टी नही की गई। लोगों को बेत लगाकर बैरक में घसीट कर बंद कर दिया गया। छै दिन तक कोई खबर ही नहीं दी गई। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, पर कम्बल ले लिए गये थे। कर्नल शेख आये, कहा कोठरी बन्द करो। बदी बेत तथा एक सप्ताह के अनशन से दुर्बल हो गये थे, इस कारण उन्होंने स्टेचर के बिना कोठरी जाने से इनकार किया, इस पर वे एक फर्लाङ्ग तक घसीटकर कोठरी में ले जाये गये। कैदी दृढ बने रहे, इस पर १६ फरवरी को समझौता हो गया।

अन्य अत्याचार

१९४४ के १ नवम्बर को कुंजबिहारी सिंह, हृदय पाठक, अर्जुन सिंह पर दफा ५२ चला, और उनकी सजा ६ महीने बढ़ा दी गई। इनको ६ महीनों तक एक लगोट तथा एक चादर पर रक्खा गया। इस पर उन लोगो ने प्रतिवाद में कोठरी से निकलने से इनकार किया, इस कारण ये रोज घसीटकर बाहर लाये जाते थे। गोरखपुर के हरि

प्रसाद को टट्टी फिरते समय घसीट कर लाया गया, उन पर यह अभियोग था कि वे परेड के समय टट्टी गये थे। इसके प्रतिवाद में ३४ राजबन्दियों ने अनशन किया जो ६० रोज चला। इनमें से श्री भगवान शुक्ल को १२ दिन पानी नहीं दिया गया। अनशन के जमाने में भी लोग घसीटे और मारे जाते थे।

दीवानसिंह तथा उमाशंकर

इसी जेल में दीवान सिंह मरे। अत्याचार के कारण वे घुल-कर शहीद हुए। गाजीपुर के उमाशंकर को न्युमोनिया होने पर भी वे अस्पताल नहीं भेजे गये। अन्त में उनकी हालत इतनी खराब हो गई कि उन्हें सदर अस्पताल ले जाया गया, और वे वहीं मर गये।

विष्णु कुमार द्विवेदी पर अत्याचार

लखनऊ के प्रसिद्ध अगस्त नेता श्री शिवकुमार द्विवेदी के छोटे भाई विष्णु कुमार द्विवेदी एक छोटे से स्टेशन पर पकड़े गये। कई तमंचे एक-साथ उन पर तान दिये गये थे। फिर भी उनको खूब मारा गया, और बारम्बार उठा-उठाकर पटक दिया गया। तीन दिन तक उन्हें बिना दाना पानी के एक कोठरी में बंद रक्खा गया। फिर चौथे दिन से उन्हें रोज तीन आने की खूराक दी जाती थी। इसी के बाद से उन्हें मुखबिर बनाने के लिये तरह तरह की यंत्रणा दी जाने लगी। जब इन्होंने इनकार किया, तो उन पर लाठी, जूतों, घूसों की मार पड़ी, और ये बेहोश हो गये। होश आने पर फिर मार पड़ती, और फिर पूछाई शुरू होती। जब श्री द्विवेदी ने पुलिस अफसरों से बात करने से इनकार किया तो उन्हे टांग दिया गया। रोज कई घंटे तक टांगना जारी रहा। नाखुनों में सूई चुभोई गई। उनके सीने पर कई लाठिया बिछाकर फिर दोनों तरफ कई पुलिसवाले बैठे। मार के कारण पेशाब तथा टट्टी हो जाती थी। श्री द्विवेदी बहादुरी से इन अत्याचारों को सहते रहे, पर उनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया।

वीर योगेश चटर्जी

अगस्त क्रान्ति के अन्यतम वीर नेता श्रीयोगेश चटर्जी इन अत्याचारों की बात सुनते सुनते ऊब गये, विशेषकर सब अगस्त बन्दी सी श्रेणी में रक्खे जाते थे, इसका उन्हें बहुत मलाल था, क्योंकि बन्दियों के वर्गीकरण तथा राजनैतिक कैदियों के लिये लड़कर सहूलियतें दिलाने में उनका जितना स्थान रहा, उतना किसी जीवित व्यक्ति को नहीं रहा। इस कारण उन्होंने १९४५ में आमरण अनशन शुरू कर दिया। सारे भारत में तहलका मच गया। अन्त में लोगों के आग्रह पर उन्होंने अनशन तोड़ दिया। इस प्रकार इस महावीर नेता का २१ साल जेल काटने पर भी जोश बराबर बना रहा, और वे अगस्त क्रान्तिकारियों की अगली कतार में रहे। उनके अनशन के कारण देश भर के लोगों का ध्यान अगस्त बन्दियों की दुर्दशा की ओर गया।

१९४२ की क्रान्ति पर एक रोशनी

एक प्रसिद्ध वक्तव्य

१९४२ की क्रान्ति के विषय को समाप्त करते हुए यह उचित ही है कि उसके दो वीर नेताओं ने उसके सम्बन्ध में फरारी की हालत में जो बयान दिया था, उसे उद्धृत किया जाय। १९४५ के दिसम्बर में कांग्रेस कार्य-समिति ने १९४२ पर जो प्रस्ताव किया था, उसी के फलस्वरूप श्रीमती अरुणा आसफ अली तथा श्री अच्युत पटवर्धन को यह बयान देना पड़ा था—

एक गुप्त संस्था

"हम लोगों ने अहिंसा पर २१-१२-४५ को पास किया कांग्रेस कार्य-समिति का प्रस्ताव देखा है। इस प्रस्ताव का गत तीन वर्षों की घटनाओं पर क्या असर पड़ा है तथा कांग्रेस की इस प्रस्ताव के अनुसार परिचालित होने पर आगामी आन्दोलन या संग्राम पर क्या असर पड़ सकता है, इस पर हमने खूब विचार किया है। बम्बई में आपकी

गिरफ्तारी के बाद कोई एक दर्जन बहुत जिम्मेदार कांग्रेसी मौजूद थे। इन लोगों में कुछ ऐसे साथी थे जिनके सम्बन्ध में यह सन्देह भी नहीं किया जा सकता कि वे कभी गांधी जी के सत्य और अहिंसा के प्रति विश्वासघात भी कर सकते हैं। इन साथियों के साथ हमारी यह जिम्मेदारी है कि हमने एक ऐसी संस्था संगठित की जिसके द्वारा हम उन हजारों कांग्रेसियों को तथा दूसरों को जो अब भी जेल के बाहर थे और १९४२ के ८ अगस्त के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिये उत्सुक थे, ऐसी हिदायत दी जाती थी जो जरूरी समझी जाती थी। हम इस बात की बहुत अहम जरूरत समझते थे कि जो शक्तियां मुक्त हो रही थीं, उन्हें नेतृत्व दिया जाय। करीब करीब आपकी गिरफ्तारी के तुरन्त बाद से हिदायतें, आवेदन, घोषणायें (कांग्रेस रेडियो से) समय समय पर दी जाती थी, और यह सारा कार्य अखिल भारतीय कांग्रेस के नाम से होता था। यदि हम इस सिलसिले में अपने कार्यों का उल्लेख कर रहे हैं, तो यह केवल इस कारण कि इन वर्षों के दौरान में जिस नीति का अनुसरण किया गया, उसके लिये वैयक्तिक जिम्मेदारी लेने से हम नहीं हिचकते। इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय कांग्रेस के नाम पर हमने जो जिम्मेदारी ले ली थी, कभी किसी ने हमारे हक पर प्रश्न नहीं किया। बल्कि सबने दिल खोल कर हमारी सहायता की। कांग्रेस की पुकार पर जनता ने अपने आप जवाब दिया, यह आधुनिक इतिहास की सब से बड़ी घटना है। जब जनता ने एक बार खुले विद्रोह के मार्ग में पैर रक्खा, तो उसने इसकी मांग की कि अग्रसर और साहसपूर्ण नेतृत्व दिया जाय। उन्होंने यह चाहा कि सरकारी आतंकवाद में जहाँ तक सम्भव है, वहाँ तक संगठित हुआ जाय, और कुछ समय के लिए इस सम्बन्ध में उनकी प्रतिभा विजयी रही। रेल की पटरियों को उखाड़ने, तार काटने, गुप्त कार्य, सरकारी लोगों का जोरदार बायकाट तथा अन्य बहुत से विषय में स्पष्ट निर्देश दिये गये कि क्या करना है।

अकेला संगठन सम्भव नहीं

"....कांग्रेस ने यह नारा दिया था कि अहिंसात्मक रूप से बड़े से बड़े पैमाने पर जन संग्राम जारी किया जाय। यह कहा गया था कि 'जो भी भारतीय आजादी चाहता है, और उसके लिए काम करना चाहता है, वह अपना पथप्रदर्शक बने, और विश्रामहीन रूप से कठिन मार्ग पर चले।' यह सब ठीक है, पर प्रत्येक व्यक्ति न तो उच्च मौलिक बुद्धि का ही अधिकारी हो सकता है, और न संगठित चेष्टा ही कर सकता है।

हम भगोड़े नहीं

"....आप का यह भी निश्चित कहना है कि जिस जिस प्रकार से संग्राम किया गया, वह कांग्रेस की अहिंसा नीति के विरुद्ध है, और उससे मेल नहीं खाते। इस प्रकार हमारे सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं। एक तो यह है कि जो कुछ हुआ उसे जनता का बिलकुल स्वतः स्फूर्ति विद्रोह का विस्फोटन मान लें और अपने को उसी से प्रभावित समझें, और भविष्य के लिए आपके फैसले को शिरोधार्य समझकर काम करें। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि उसमें हमारा जो भाग रहा है, हम उससे मुकर जायँ, और आपके फैसले को चुपचाप कबूल करें। पर ईमानदारी साथ ही विश्वास हमें दूसरे मार्ग को अपनाने से रोक रहे हैं। हम को बारबार यह चेतावनी दी गई थी कि हमारे कार्यों को अस्वीकार किया जा सकता है, और क्या सही प्रतिरोध तथा संग्राम है इस सम्बन्ध में हमारी व्याख्या गलत मानी जा सकती है। फिर भी हमने एक ही व्यवहारिक कसौटी का अनुसरण किया कि जिन बातों से भी प्रतिरोध तथा संग्राम की शक्ति स्थायी होती है और स्वतन्त्र होने की भावना तगड़ी पड़ती है और अधिक होती हैं, वे जायज हैं। हम आन्तरिक रूप से इस बात के लिये मजबूर हैं कि हम फिर से अपना विश्वास व्यक्त करें।

जनता से असली नेतृत्व

"हमने ऊपर से जनता पर कोई बात लादी नहीं कि ऐसा ही करो, और अवश्य करो। इसके विपरीत हमने अपनी क्षुद्र बुद्धि से जनता के तौरतरीकों को अध्ययन किया, और फिर इस बात की चेष्टा की कि दूर के विद्रोह केन्द्रों में किस बात से क्या तजर्बा हो रहा है। इन तरीकों को काम में लाते हुए हजारों ने जीवन बलिदान कर दिया। ऐसी हालत में यदि हम उनसे मुकर जावें तो वह कायरता होगी। हमारा संग्राम ब्रिटिश पद्धति के विरुद्ध सामूहिक संग्राम था, न कि यह हमारा निजी संग्राम था।"

गलती नहीं मानते

"हमारा यह वक्तव्य है कि कार्य समिति ने अपनी सुख्याति पर इस बात से बट्टा ही लगाया है कि स्वतन्त्रता के संग्राम में जो ऐतिहासिक कृत्य किये गये, उन्हें आप से आप होनेवाली भावुकतापूर्ण गलत कृतिया बतला दिया। हम अपनी गलतियों को समझने में असमर्थ हैं, यद्यपि सभी तरह के संगठनों में जिस प्रकार की औसत गलतियाँ होती हैं, वे हुई ही होंगी।

संगठन की जिम्मेदारी

"......जो लोग जनता को इस बात के लिये कहते हैं कि एकदम से विद्रोही होकर एक मुहूर्त में अपना सर्वस्व बलिदान कर दें, उन पर स्वाभाविक रूप से इस बात की जिम्मेदारी तथा मजबूरी है कि संग्राम की उपलब्ध शक्तियों को नेतृत्व दिया जाय, तथा उनमें सहयोग स्थापित किया जाय। यह बहुत ही जरूरी है, और उस हालत में और भी जरूरी हो जाता है जब कि प्रतिरोध का ढग विकेन्द्रीकृत है।

फिर वही पुराना राग

"इसी बात को न समझने के कारण हम यह देखते हैं कि संगठन की अद्भुत प्रतिभा को एक देशीय तरीके से काम में लाया जाता

है, लोगों में जोश तो पैदा किया जाता है, पर उसी के अनुपात से जोश को संगठित कर काम में लगाने की चेष्टा नहीं की जाती है। इसी नीति पर आगे भी चलते जाना इस बात को जाहिर करता है कि गत तीन वर्षों में जो तजर्बे हुए उससे इनकार किया जा रहा है। मरे हुए लोगों को वीर तथा शहीद करके तारीफ करना, साथ ही उन कार्यों की निन्दा करना जिनको उन्होंने सामूहिक रूप से निर्भय होकर किया, इसका भी वही नतीजा हुआ कि जोश को कार्य से अलग कर दिया गया। इस प्रकार की नीति के कारण भूतकाल में बहुत से अच्छे कार्यकर्ता कांग्रेस से अलग हो चुके हैं। इसलिए हमारी यह प्रार्थना है कि इन बुनी विषयों पर फिर से विचार किया जाय।

भविष्य पर बुरा असर

"इस प्रस्ताव का भूतकाल की घटनाओं तथा वर्तमान के कर्तव्यों पर जो गंभीर असर पड़ेगा, उसके अलावा भविष्य के संग्राम पर इसका असर बहुत ही और इससे कहीं भयंकर है।······इस प्रस्ताव के अनुसार आगे इस समय देश के सामने जो काम है, वह है गाँधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम है। कहने को तो धारा सभाओं का कार्यक्रम रचनात्मक कार्यक्रम की तुलना में गौण है, पर वास्तव में कुछ और ही बात है······

अहिंसा का सार

"अहिंसा के सम्बन्ध में कांग्रेस की नीति मुख्यतः परिस्थिति के अनुसार रही है। समय-समय पर कांग्रेस ने व्यवहारिकता के अन्दर अहिंसा के दायरे की परिभाषा की है। भूतकाल में भी कांग्रेस ने गांधीवादी अहिंसा के कट्टर तर्क को मानने से इनकार किया है। कांग्रेस के प्रस्तावों के द्वारा यह प्रमाणित की जा सकती है।········ अहिंसा का सार यह है कि हम यह मानते हैं कि जो लोग सरकारी

पद्धति को चलाते हैं, वे उतने नहीं जितनी कि यह पद्धति जिसको सरकार कहते हैं, सारी बातों के लिये जिम्मेदार है ....

हमारी सेवा बहुत साधारण

"हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि विपुल परिमाणों में जो औपादानिक शक्तियाँ मुक्त हुईं, उनकी अवज्ञा की जाय, और हम सारा श्रेय लें। फिर भी जो हजारों लाखों मनु औपादानिक शक्तियाँ मुक्त हुईं, उनको एक आध मात्रा परिचालना हमने दी।"

यह वक्तव्य बहुत ही सुन्दर है, पर इसमें एक त्रुटि यह है कि लेखकों ने अपने समाजवादी ध्येय को स्पष्ट नहीं किया।

आज़ाद हिन्द फौज

प्रथम आजाद हिन्द फौज

१९१४–१८ के महायुद्ध के समय भारतीय क्रान्तिकारियों ने किस प्रकार ब्रिटिश सरकार की शत्रुशक्तियों से मिलकर भारत को स्वतंत्र करने का प्रयत्न किया था, उसका विस्तृत इतिहास इस पुस्तक के प्रथम भाग में दिया जा चुका है। उस अवसर पर भी पकड़े हुए भारतीय सैनिकों को समझा बुझाकर आजाद हिन्द फौज बनाई गई थी।

जापान में रासबिहारी

इस बार भी आजाद हिन्द फौज बनी, और अब की बार इस आन्दोलन का प्रारम्भ १९१४-१८ के युग के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस के हाथों हुआ। रासबिहारी के १९१४-१८ के युग की सारी कथायें प्रथम भाग में बताई जा चुकी हैं। वे भारत से फरार होकर जापान में जाकर बस गये थे, और एक जापानी महिला से शादी कर पूरे जापानी होकर रहते थे। पर उनके मन में भारत के लिये उत्कट प्रेम बना हुआ था। इस बीच में वे अंग्रेजी तथा जापानी भाषा में भारतीय स्वतन्त्रता तथा संस्कृति पर बोलते लिखते रहते थे।

बंगला में भी उनके लेख जब तब प्रकाशित होते रहते थे। पर भारतीय रहने के साथ ही साथ वे अपनी जन्मभूमि जापान को भी प्यार करते थे, और इस प्यार के कारण उन्होंने १९३७ में जब जापान ने चीन पर बेजा तरीके से आक्रमण किया तो उन्होंने जापानी आक्रमण का समर्थन किया। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने मत का स्पष्टीकरण करते हुए भारतवर्ष में कुछ पर्चे भी भेजे।

मार्शल सुगियामा से भेंट

पूर्व में जापान की विजय का ताँता शुरू होते ही रासबिहारी जापानी सेना के इम्पीरियल जेनरल स्टाफ के प्रधान फील्डमार्शल सुगियामा से मिले, और उनसे कहा कि इस युद्ध से भारत को स्वतंत्रता मिलनी चाहिये, और यदि जापानी इसका वादा करें तो भारतीय इसमें हाथ बटा सकते हैं। उन्होंने उनको अपनी योजना समझाया। सुगियामा के दिमाग़ में यह बात नहीं आयी, और उसने कहा कि भारत सरकार से युद्ध हो रहा है, इस कारण भारतीयों के साथ शत्रुतापूर्ण बर्ताव होगा।

इन्डिपेंडेन्स लीग का गठन

रासबिहारी समझ गये कि सुगियामा का दिमाग बिलकुल कानूनी है, उसमें कोई क्रान्तिकारी योजना धस नहीं सकती, इस कारण वे उपसमरसचिव से मिले, और उनको इस सम्बन्ध में कार्य करने की सब सुविधायें दे दीं। तदनुसार इण्डियन इन्डिपेन्डेन्स लीग का जन्म हुआ, और रासबिहारी इसके सभापति हुए। यह लीग अब इस कोशिश में रहने लगी कि कैसे अंग्रेजों को नीचा दिखाकर भारत की स्वतंत्रता हासिल की जाय।

जापान सरकार और भारतीय

जब थाईभूमि पर जापानियों ने कब्जा कर लिया, तो ज्ञात हुआ कि वहाँ भी बहुत से भारतीय हैं, फिर तो स्वामी सत्यानन्द पुरी के नेतृत्व

में बैंकाक में भी इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना हुई। इस प्रकार ज्यों ज्यों जापानी सेना आगे बढ़ती गयी त्यों-त्यों इस संस्था के दूत पहुँचने लगे और इसकी शाखायें खुलने लगीं। रासबिहारी ने यह जो आंदोलन उठाया उसका भारतीयों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। एक क्रांतिकारी के रूप में उनकी प्रसिद्धि थी ही, फिर लोग यह भी जानते थे कि जापानी सरकार उन्हें बहुत मानती है। जिन देशों में जापानियों का कब्जा होता जाता था, वहाँ के लोगों के साथ बहुत बुरा बर्त्ताव होता था, वे लूटे जाते थे तथा उनकी स्त्रियों की इज्जत खराब की जाती थी। पर रासबिहारी के प्रभाव के कारण जीते हुए देश की किसी भी भारतीय स्त्री के साथ कभी भी दुर्व्यहार नहीं हुआ, मालूम होता है इस सम्बन्ध में जापानी सेना को ऊपर से कोई कड़ी हिदायत मिली हुई थी।

कैप्टन मोहनसिंह शामिल हुए

रासबिहारी इस बात की कोशिश करने लगे कि जो भारतीय सैनिक पकड़ कर आते जा रहे हैं, उनको जल्दी से जल्दी सेना के रूप में तो संगठित किया ही जाय, साथ ही साथ शत्रु सेना के अन्दर घुसकर भारतीय सैनिकों को यह समझाया जाय कि वे बेकार के लिए जापानियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं, जापानी तो हमें स्वतन्त्रता देने वाले हैं, और यदि हमें लड़ना है तो हम जापान की मदद लें। इसी उद्देश्य को लेकर बहुत से भारतीय क्रान्तिकारी अंगरेजी सेना में घुसने लगे। इसी के अनुसार श्री प्रीतमसिंह कैप्टन मोहनसिंह से मिले। कैप्टन मोहनसिंह उन दिनों अँग्रेजी सेना से अलग कटकर अलोर स्टार नामक स्थान में पड़े हुए थे। प्रीतमसिंह के बहुत समझाने पर कैप्टन मोहन सिंह ने आत्म समर्पण कर दिया और वे आजाद हिन्द फौज के सगठन में लग गये।

संख्या बढ़ती गई

इसके बाद तो बराबर जापानियों की जीत होती रही, और नवी-

नयी भारतीय फौजें जापानियों के हाथ में गिरफ्तार होती रही। शुरू में कैप्टन मोहनसिंह के दल में कुल मिलाकर २०० आदमी थे, पर धीरे धीरे इनकी संख्या ३० हजार तक पहुँच गई।

टोकियो कानफरेन्स

१९४२ के मार्च में टोकियो में इंडियन इंडिपेंडेस लीग की एक बड़ी कानफरेंस हुई, जिसमें कैप्टन मोहन सिंह के अतिरिक्त कैप्टन मोहम्मद अकराम खा, कर्नल गिल, राघवन, मेनन और गोहो गये। स्वामी सत्यानन्द पुरी और प्रीतमसिंह भी इसके लिये रवाना हुए पर वे इस कानफरेंस में पहुँच न सके, क्योंकि रास्ते में हवाई जहाज की दुर्घटना मे ये मर गये। कुछ लोगों का यह कहना है कि जानबूझकर जापानियों ने इन्हें मरवा डाला क्योंकि ये ब्रिटिश विद्वेषी होने के साथ ही साथ जापान के भी विरोधी थे।

बिदादरी सम्मेलन

टोकियो में पूरी बात न हो सकी, और यह तय हुआ कि १९४२ के जून में बैंकाक में अधिकतर प्रतिनिधिमूलक कानफरेन्स हो। यह कानफरेंस हुई, पर उसके पहले सिंगापुर में बिदादरी में १९४२ के अप्रैल में प्रधान आफिसरों की एक कानफरेंस हुई, जिसमें यह तय हुआ कि हम लोग भारतीय हैं और भारतीय स्वतन्त्रता के लिये लड़ रहे हैं, और इसी उद्देश्य से आजाद हिन्द फौज की रचना होगी।

बैंकाक कानफरेन्स

१९४२ की मई तक गिरफ्तार भारतीय अफसरों में से बहुत से लोग यह समझ गये कि जापान ईमानदारी के साथ भारतीयों की मदद करना चाहता है। यह ज्ञात हो गया कि अब यह सेना संगठित होकर रहेगी। १९४२ के १५ जून को बैंकाक में फिर एक कानफरेंस हुई, और इसमें श्री रासबिहारी बोस सभापति चुने गये। कानफरेंस में १७ प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव में रासबिहारी, कैप्टन मोहन सिंह, राघवन,

मेनन और जिलानी इस सारे आन्दोलन के परिचालक नियुक्त किये गये। यह तय हुआ कि भारत एक और अविभाज्य है। कांग्रेस एक मात्र प्रतिनिधिमूलक संस्था है। जापानी सरकार के सम्बन्ध में कानफ्रेंस ने यह निश्चय किया कि वह भारतीयों को स्वतन्त्र नागरिक समझे, पूर्वी एशिया के भारतीयों की सम्पत्ति को शत्रु सम्पत्ति न समझे। यह तय हुआ कि युद्धोपकरण आदि के रूप में भारतीय जो कुछ लेगा, उसे स्वतन्त्र भारत चुकता करेगा। निश्चय हुआ कि आजाद हिन्द फौज का बाकायदा संगठन हो, कप्तान मोहनसिंह उसके कमांडर हों, आजाद हिंद फौज धुरी शक्तियों के द्वारा एक स्वतंत्र देश की सेना के रूप में स्वीकृत हो। इस कानफरेंस ने यह भी तय किया कि श्री सुभाषचन्द्र बोस से अनुरोध किया जाये कि वे यहाँ आकर कार्य-भार संभाले।

क्रान्ति की खोज में दिवाना सुभाष

हम पहले ही बता चुके हैं कि किस प्रकार सुभाष बाबू अनशन के कारण १९४१ में जेल से छूट गये, उसके बाद वे चोरी से काबुल पहुँचे, और वहाँ से जर्मनी पहुँचे। यह एक विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि सुभाष बाबू ने जेल में जो अनशन किया था, उसी समय उनके दिमाग में यह बात थी कि अनशन के फलस्वरूप या तो हम शहीद हो जाते हैं, और क्रांति के ईंधन हो जाते हैं, और या तो सरकार हमें छोड़ देती है, और छूटते ही हम यहाँ से फरार हो जाते हैं। इन सारी बातों का इरादा करके ही वे अनशन में प्रवृत्त हुए थे। सरकार को यह हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें अनशन में मार डाले इसलिए वे छोड़ दिये गये, और छूटने के दिन से ही वे योजना बनाकर भागने की तैयारी करने लगे। कहा जाता है कि ६२ खुफिया उनके घर के इर्द-गिर्द घूमते रहते थे कि कौन उनसे बात करता है तथा मिलता है, पर उन्होंने सारा काम इस सफाई से किया कि उनके काबुल पहुँच जाने के बाद सरकार और जनता को

यह पता लगा कि वे गायब हो गये। जब से वे जर्मनी पहुँचे तब से वे बराबर इस बात का षड्यंत्र करते रहे कि भारत की आजादी की शक्तियों को संगठित किया जाय। वैयक्तिक सत्याग्रह की विफलता से वे इतने निराश हो गये थे कि उनको गाँधी जी के तरीकों पर या उनके आंदोलन पर कोई विश्वास नहीं था।

'भारतीय जापानी कठपुतली नहीं

जिस समय भारतवर्ष में अगस्त क्रान्ति का नारा दिया गया, उस समय तक पूर्वी एशिया के भारतीय बहुत कुछ संगठित हो चुके थे। ११ अगस्त को मलय में 'करो या मरो' का नारा तथा भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी की खबर पहुँची। क्वालालमपुर के भारतीयों ने यह तय किया कि उस दिन एक रैली की जाय। तदनुसार एक विराट रैली हुई, जिसमें भारतीयों के अतिरिक्त अन्य जाति के लोग भी थे। इस रैली में कैप्टन शाहनवाज ने यह बताया कि आजाद हिन्द फौज कोई जापानी कठपुतली नहीं है, इसपर लोगों ने बहुत खुशी जाहिर की, और तालियां बजायीं। भारतीय यह कभी नहीं चाहते थे कि वे जापानी कठपुतली बनें। कम से कम इसी आदर्श को लेकर भारतीय आगे बढ़े।

पत्र तथा संगठन

अब आजाद हिन्द फौज की तरफ से 'आजाद हिन्द' नाम का एक अखबार भी निकलने लगा। यह पत्र अंगरेजी, तामिल, मलयालम, रोमन, उर्दू तथा गुजराती में प्रकाशित होता था। कई इंडिपेंडेंस लीग वाले कई रेडियो स्टेशन से भारतीयों में प्रचार कार्य करने लगे। तीन रेजिमेंट बने, एक गांधीजी दूसरा मौलाना आजाद, और तीसरा पंडित नेहरू के नाम पर बना। यह न समझा जाय कि सभी भारतीय अफसर जो कैद हुए थे, वे आजाद हिंद फौज के साथ हो गये। सच तो यह है कि शुरू-शुरू में कप्तान शाहनवाज भी आजाद हिंद फौज के विरोधी थे पर बाद को वे

समझ गये, और तब से वे बराबर इसमें जी जान से काम करने लगे, और इसके नेताओं में हो गये। जो आफिसर आजाद हिंद फौज में शरीक नहीं हुए, उनके लिये एक अलग कैंप खोला गया, और वे बंदी के रूप में रखे गये। उनके लिये अलग नियम बने।

जापानियों से मनमुटाव

इस बीच में जापानी अधिकारी वर्ग तथा आजाद हिंद फौज के बीच में कई बार मनमुटाव हो गया। १९४२ के अक्टूबर में इंडिपेंडेंस लीग ने जापानी अधिकारी वर्ग के सामने यह दावा पेश किया कि बर्मा मे भारतीय जो सम्पत्ति छोड़कर चले गये हैं, वह सब आजाद हिंद फौज के सुपुर्द किया जाय। पर इस पर जापानी राजी नहीं हुए। इसकी खबर जब जेनरल मोहन सिंह को लगी, तो उन्होंने इस पर हुक्म दिया कि ऐसी हालत में बर्मा में आजाद फौज न भेजी जाय। इस पर किसी तरह एक समझौता हो गया। इसी प्रकार और भी कई एक घटनाये हुईं। मिस्टर राघवन ने एक राजनैतिक विद्यालय खोल रखा था। जापानियों ने इस पर छापा मारा और विद्यालय के कुछ लोगों को उड़ा ले गये। इस पर राघवन ने क्रोध में १९४२ के २६ नवम्बर को वह विद्यालय बंद कर दिया।

भारतीयों में असन्तोष

इन्हीं कारणों से भारतीयों की सर्वोच्च समिति ने जापानी सरकार को एक आवेदन पत्र भेजा जिसमें जापान के इरादों में अविश्वास प्रकट किया गया। इस पर तोजो ने अपने एक बयान में कहा कि भारत में जापान के राज्य विस्तार का कोई उद्देश्य नहीं है। इसके साथ ही हस्तक्षेप न करने के वादे किये गये। १९४२ के अक्टूबर में फिर एक बखेड़ा खड़ा हुआ। जो आफिसर आजाद फौज में शरीक नहीं हुए थे, जापानियों ने उनको अपने अधिकार में रखना चाहा, जेनरल मोहनसिंह ने कहा कि नहीं, वे हमारे अधिकार में रहेंगे। इधर ८

दिसम्बर को कर्नल गिल जापानियों के द्वारा शायद इस शक पर गिरफ्तार कर लिये गये कि वे ही सब बखेड़े की जड़ में हैं। इस पर भारतीय कौंसिल आफ ऐक्शन ने त्यागपत्र दे दिया।

मोहन सिंह गिरफ्तार

पहले ही बताया जा चुका है कि रासबिहारी यदि भारतीय थे, तो जापानी भी थे, उन्होंने यह कहा कि ये सब छोटे मामले हैं और जापानी सरकार के साथ बातचीत से सब मामला तय हो सकता है। पर दूसरे लोग जापान के इतने भक्त नहीं थे। रासबिहारी ने मोहन सिंह को बुलाकर समझाना चाहा, पर वे इतने नाराज थे कि उन्होंने रासबिहारी से भेंट करने से इनकार किया। इस पर रासबिहारी ने जापानी सरकार से यह अनुरोध किया कि मोहनसिंह गिरफ्तार कर लिये जांय। तदनुसार २० सितम्बर को वे गिरफ्तार किये गये।

आजाद हिन्द फौज भंग

मोहनसिंह गिरफ्तार करके पहले सिंगापुर के पास एक टापू में रखे गये, फिर सुमात्रा भेज दिये गये। उनके गिरफ्तार होते ही उन्हीं की आज्ञा के अनुसार आजाद हिन्द फौज भग कर दी गई, और उसके सारे बैज कागजात आदि जला दिये गये। साथ ही जापानी सरकार से यह कह दिया गया कि अब उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है और अब भारतीय गण युद्ध कैदी समझे जांय, पर जापानियों ने न तो इन्हें कैदी माना, और न उन्हें कहीं जाने दिया।

रासबिहारी असफल

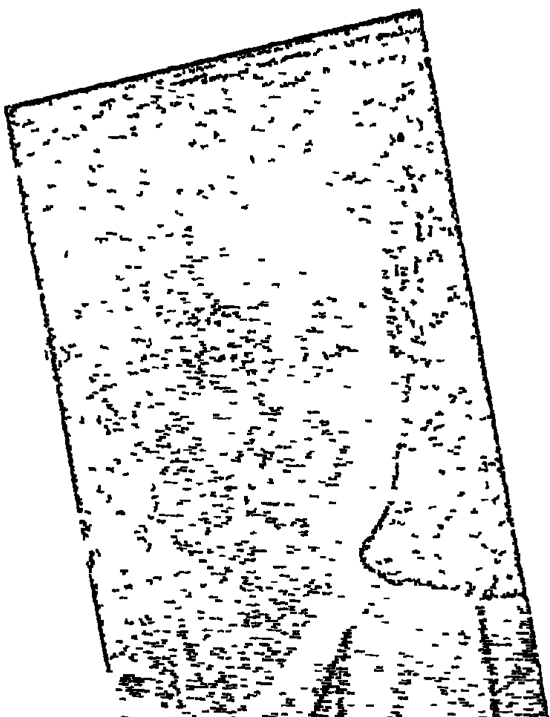
रासबिहारी बाबू ने भारतीयों से साफ माफ यह कह दिया कि उन्हीं के हुक्म से मोहनसिंह गिरफ्तार हुए थे। उन्होंने कहा कि मोहनसिंह को इस बात का कोई अधिकार नहीं था कि वे आजाद फौज को तितर बितर करें। रासबिहारी ने फौज को फिर संगठित करना चाहा, पर वे आजाद फौज संगठित करने में

भारत में सशस्त्र क्रांति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



मोहन सिंह

भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास



कैप्टन लक्ष्मी

असमर्थ रहे।

वार्ता सफल

१९४३ की फरवरी में जापानियों ने कोई ३०० आजाद हिंद फौज के अफसरों की एक कानफरेंस बुलायी, जिसमें जापानियों की तरफ से बताया गया कि किस किस प्रकार से मोहनसिंह गिरफ्तार हुए थे। मोहनसिंह को यह अख्तियार था कि वे कमाडरी से इस्तीफा दें, पर इस फौज को तितर बितर करने का उनको कोई अधिकार नही था। इस पर कप्तान शाहनवाज ने कहा कि वे जापानी कठपुतला बनने को तैयार नहीं है। उसदिन की कानफरेंस में कोई बात तय नहीं हुई। पर अगले दिन से बातचीत शुरू हुई, और यह तय हुआ कि फिर से आजाद हिंद फौज का सगठन हो।

रासबिहारी नये युग को नहीं समझे

जापानियों ने अबकी बार जो सङ्गठन किया उसमें इस बात की गुजाइश नहीं रक्खी कि एक व्यक्ति के हाथ में सब ताकत आ जाय। साथ ही साथ जापानी भीतर भीतर अपनी चलाने लगे। एक फासी-वादी शक्ति से और क्या आशा थी, पर कुछ ढग का संगठन हो सका। पर रासबिहारी चीजों को और ही तरीके से देखने के अभ्यस्त थे, वे भारतीयों की मनोवृत्ति को समझ नही पाये, पर जब १९४३ की ४ जुलाई को सुभाप बाबू आ गये, तो वे बड़ी खुशी से उनके हाथ में अपनी शक्ति देकर अलग हो गये। वे १९४५ की जनवरी में टोकियो में ही मर गये। उनकी देह जापान ही में रही। वे जापान की कबाहत देख कर नहीं मरे।

जापान में नेताजी

श्री सुभाष बोस पहले ही से एक सबमेरिन में जापान पहुँच गये थे। १९४३ के २० जून को टोकियो रेडियो ने इस बात को घोषित कर दिया कि वे अब जल्दी ही इधर के आदोलन का चार्ज लेने वाले

हैं। सुभाष बाबू एक जर्मन सबमेरिन से मडागास्कर के पास लाये गये थे, वहाँ से एक जापानी सबमेरिन उन्हें जापान ले आया। कितना जोखिम उठाकर वे आये थे, इसका अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि उन्हें यह कह दिया गया था कि शत्रुओं के पहरे से बचकर अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने की बहुत ही कम सम्भावना है, पर अकुतोभय सुभाष इससे कब डरने वाले थे! सुभाष बाबू जर्मनी में रहते समय वहाँ आजाद हिन्द फौज का सङ्गठन कर चुके थे। टोकियो में वे पहुँचे तो उनका सार्वजनिक स्वागत हुआ। सुभाष बाबू ने जापान में पहुँचते ही यह स्पष्ट कर दिया कि उनका या अन्य भारतीय क्रांतिकारियों का यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि अंग्रेजों के जुए की जगह पर जापानी जुवा आ जाय, वे तो भारत को ब्रिटिश गुलामी से मुक्त करना चाहते हैं और इस सम्बन्ध में जापान की मदद चाहते हैं।

सङ्गठन का लक्ष्य

टोकिटो के बाद सुभाषबाबू १९४३ के जुलाई को सिंगापुर पधारे। कितनी तेजी से उन्होंने काम किया यह इसी से अनुमान किया जा सकता है कि १९४३ की ५ जुलाई को आजाद हिंद फौज का बाकायदा संगठन हो गया। वे बराबर फौजियों में राजनैतिक व्याख्यान दिया करते थे, और उन्हें यह समझाया करते थे कि वे आजादी के सिपाही हैं न कि और कुछ। ९ जुलाई को अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि जेल में पड़ा रहना उनके लिये कहीं आसान होता, पर उन्होंने यह समझा कि देश की स्वतन्त्रता का तकाजा यह है कि वे विदेश जाकर संगठन करें। तदनुसार "तीन महीने तक प्रार्थना तथा ध्यान के बाद मैंने यह तय किया कि मुझमें यह शक्ति है कि अपने कर्तव्य को निभाने में जीवन की बाजी लगा दूँ। जेल से निकलना था, और इसलिये अनशन करना था, पर यह टेढ़ी खीर थी। टेरेंस मैकस्वीनी और यतीन दास अनशन में मर चुके थे, पर मैंने अनुभव किया कि मुझे

एक ऐतिहासिक कार्य करना है। मैंने अनशन किया, और जेल से छूट गया। ... मैं फिर चल दिया। मुझे जो कुछ तजरबा था, मैंने उससे यह नतीजा निकाला कि केवल भारत के अन्दर की कोशिश से काम न होगा। भारत छोड़ने में मेरा उद्देश्य यह था कि बाहर की चेष्टाओं से भीतर की चेष्टाओं को बल पहुँचाया जाय।" इस व्याख्यान से यह समझ में आता है कि उनका क्या लक्ष्य था।

सुभाष बाबू की महानता

जानकार पाठक इस बात को जानते हैं कि कांग्रेस की नेताशाही में उन्हें किस प्रकार जलील करते करते कांगरेस से निकाला था। पर इसके लिये उनके मन में कभी कोई विद्वेष नहीं था, यह इस बात से ज्ञात है कि २५ अगस्त को नेता जी ने आजाद हिंद फौज का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया, इसके कुछ दिनों बाद ही अक्टूबर को उनके नेतृत्व में गांधी जी का जन्म दिवस सारे पूर्वी एशिया में मनाया गया। इस अवसर पर नेता जी ने गांधी जी का गुणगान करते हुए यह कहा कि यदि १९२० की असहाय हालत में गांधी जी संग्राम के अपने नये तरीकों को लेकर न आते, तो भारतवर्ष शायद अब भी ज्यों का त्यों पतित होता।

आजाद हिन्द सरकार की स्थापना

१९४३ के २१ अक्टूबर को आजाद हिंद सरकार की स्थापना हुई। इस उपलक्ष्य में सिंगापुर में बहुत बड़ा समारोह हुआ और नेताजी ने एक बहुत ऐतिहासिक व्याख्यान दिया।

रासबिहारी का भाषण

सबसे पहले मंच पर श्री रासबिहारी बोस आये। भाषण मर्मस्पर्शी था। वे बोले—"इन पिछले बीस साल से मैं अपनी माँ की गोद से दूर हूँ। कितनी बार भारत मां ने हाथ बढ़ाकर मुझ जैसे जिद्दी शिशु को अपनी गोद में समेटना चाहा मगर माता के हाथों में हथकड़ियाँ

जकड़ी हुई थीं। इसलिये मैं नहीं गया। मगर आज मेरा दूसरा भाई, उम्र में छोटा, मगर लड़ाई में मुझसे आगे सुभाष, आज मसीहा बनकर इन्सानियत के घावों को आजादी के फाये से ठीक करने आया है। हम २० लाख नगे भूखे प्रवासी भारतीय स्वतन्त्रता के दूत का स्वागत करते हैं।"

कर्नल चैटर्जी का स्पष्टीकरण

उसके बाद कर्नल चटर्जी ने आकर रिपोर्ट पढ़ी। उन्होंने यह बताया कि पूर्वी एशिया में आजादी का आन्दोलन कैसे चला, भारतीय स्वतन्त्रता संघ कैसे बना, जापानियों ने सहायता के बदले रास्ते में कितनी रुकावटें डालीं, मगर आजादी के दीवाने इस तरह से नहीं झुकते, वे हर जगह, हर हालत में अपना सर ऊँचा रखते हैं।"

सुभाष का भाषण और शपथ ग्रहण

इसके बाद सुभाष आये, और उन्होंने डेढ़ घन्टे तक एक मर्म-स्पर्शी भाषण दिया। उन्होंने भारत की राजनैतिक परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि आजाद हिंद सरकार का क्या महत्व है, और आजाद हिंद फौज को आज क्या स्थान मिल रहा है। उन्होंने कहा—'मुझे इसमें रत्ती भर सन्देह नहीं है कि जब हम हिंदुस्तानी सीमा को पार कर हिन्दुस्तान के अन्दर पहुँचेंगे उस वक्त एक विशाल क्रांति होगी, जिसमें एक भी ब्रिटिश सत्ताधारी न टिक सकेगा।"

उसके बाद उन्होंने खड़े होकर शपथ ली। भयकर क्षण था वह। सारी जनता स्तब्ध थी, सन्नाटा छाया था, हिन्दुस्तान का पहला आजाद नेता मातृभूमि के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा करने जा रहा था। सुभाष अपनी कुर्सी से उठे, और सामने आये। उनके गोरे भोले भाले मुंह पर एक अजीब गम्भीरता थी, वैसी ही गम्भीरता जैसी तूफान के पहले छा जाती है। वे उठे और माइक के पास आये। बहुत गम्भीर स्वरों में उन्होंने कहा—भगवान को साक्षी कर मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि

भारत को आजाद करने के लिये अन्तिम सांस तक एक सिपाही की तरह लड़ता रहूँगा। मैं सदा भारत का सेवक रहूँगा और भारत का हित मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य रहेगा। स्वतन्त्रता मिल जाने के उपरांत भी जब कभी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये मेरी जरूरत होगी तो मैं अपने रक्त की अन्तिम बूँद तक माँ के चरणों पर चढ़ा दूंगा।"

सब का शपथ ग्रहण

इसके बाद आज़ाद हिन्द सरकार के हर अधिकारी ने आगे बढ़कर शपथ ली—"भगवान को साक्षी कर मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि भारत को स्वतन्त्र करने के लिये मैं नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस का आज्ञाकारी रहूँगा और भारत की स्वतंत्रता के लिये अपना सर्वस्व बलिदान करने में जरा भी न हिचकूँगा।"

आजाद सरकार का घोषणापत्र

उसके बाद आजाद हिन्द सरकार का घोषणापत्र पढ़ा गया। वह घोषणापत्र हरएक भारतीय के हृदय में खून के अक्षरों से अंकित रहेगा—'पलासी में १७५७ की हार के बाद १०० साल तक हिन्दुस्तानी अपनी स्वतन्त्रता के लिये बराबर लड़ते रहे। इस युग का इतिहास स्वतंत्रता की खूनी लड़ाई का इतिहास है। सिराजुद्दौला, टीपू सुल्तान, हैदरअली, अवध की बेगमें, शक्तिसिंह अटारीवाला, झांसी की रानी, ताँतियाटोपी और नाना साहब का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। अभाग्यवश हमारे पूर्वज यह नहीं समझते थे कि विजय के लिये एकता पहली शर्त है। इसलिये १८५७ में उनकी हार हो गयी। उसके बाद कायर अंग्रेजों ने भारतियों से हथियार छीन लिये। कुछ दिनों तक वे शान्त रहे, मगर १८८५ में कांग्रेस की स्थापना से एक नई जाग्रति का प्रादुर्भाव हुआ।

१९२० में जब हम निराश हो रहे थे तब गांधी जी ने असहयोग और सत्याग्रह का अस्त्र हमें सौंपा। अतः राजनैतिक चेतना के साथ

साथ हममें राजनैतिक युद्ध की भी चेतना जगी। कांग्रेस मंत्रि मंडलों के अंतिम युग के समय हमने यह भी दिखा दिया कि प्रबन्ध में हम अंग्रेजों से अधिक कुशल हैं। इस द्वितीय महायुद्ध में हमें आजादी की अंतिम लड़ाई छेड़ने का अवसर मिला है। हमें भूखे मारकर, हमें बर्बादकर ब्रिटिश सरकार ने हमसे सारी श्रद्धा छीन ली है। उस पाशविक शासन के अंतिम अवशेषों को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये एक भयानक क्रान्तिज्वाला की आवश्यकता है। आजाद हिन्द सेना उस ज्वाला को सुलगाने के लिये चल पड़ी है।

"इस स्वतंत्रता की प्रातःकाल में हमारा पहला कर्त्तव्य है कि एक आजाद सरकार की स्थापना कर उसके संरक्षण में हम आजादी की लड़ाई शुरू कर दें। यह आजादहिन्द सरकार प्रत्येक भारतीय के प्रति वफादार है, अतः प्रत्येक भारतीयों को इसके प्रति वफादार होना चाहिये। भगवान के नाम पर, आजादी के लिये मर जानेवाली पिछली पीढ़ियों के नाम पर हम अपील करते हैं कि तिरंगे झंडे के नीचे इकट्ठे होकर हम अपनी लड़ाई छेड़ दें, और तब तक लड़ें, जब तक कि दुश्मन देश से बाहर न निकल जायँ, और हम स्वतंत्र न हो जायँ।" उसके बाद सब ने मिलकर राष्ट्रीयगीत गाया, और प्रत्येक भारतीय आजाद हिन्दुस्तानी लड़ाई की तैयारियाँ करने चल दिये।

भारत के आजाद मंत्री

इस घोषणा पत्र पर आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार के सदस्यों के दस्तखत थे, दस्तखत करने वाले ये थे—सुभाषचन्द्र बोस, राष्ट्र-नायक, प्रधान मंत्री, वैदेशिक तथा युद्धमंत्री; कप्तान श्रीमती लक्ष्मी, स्त्री संगठन की नेत्री; एस० ए० ऐयर, प्रचारमंत्री; लेफ्टिनेन्ट कर्नल चटर्जी, अर्थमंत्री; ले० क० एन० एस० भगत; ले० क० जे० के० भोंसले; ले० क० गुलजारा सिंह; ले० क० एम० जेड० कियानी; ले० क० ए० डी० लोकनाथन; ले० क० एहसान कादिर; ले० क०

शाहनवाज; सेना के प्रतिनिधि, ए० एम० सहाय, मन्त्री मर्यादा विशिष्ट, सेक्रेटरी, रासबिहारी बोस प्रधान परामर्शदाता, करीम गनी, देवनाथ दास, डी० एम० खान, वाय० ऐलप्पा, जे० थिवी, सरदार ईशरसिंह, परामर्शदातागण, ए० एन० सरकार कानूनी परामर्श दाता।

क्रान्ति की गाड़ी आगे की ओर

इस सरकार की तरफ से ब्रिटेन तथा अमेरिका के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की गयी। इसके बाद से बाकायदा सरकार अपना काम करने लगी। फौज संगठन नये ढंग पर हुआ, और जनवरी १९४४ को आजाद हिंद फौज का सुभाष ब्रिगेड रंगून पहुँच गया। यह तय हुआ कि अब युद्ध में भाग लिया जाय, पर इसके पहले यह मालूम करना जरूरी था कि किस आधार पर जापानी सेना और भारतीय सेना सहयोग करें। नेता जी ने यह कह दिया कि उनकी सेना जापानी सामरिक कानून के आधीन काम करने को तैयार नहीं है। स्थानीय कमांडर ने इस पर आपत्ति की, पर टोकियो सरकार को नेता जी की बात माननी पड़ी। इसके बाद सुभाष बाबू ने यह अनुरोध किया कि भारतीय भूमि पर पहले पहल आजाद हिन्द फौज को घुसने दिया जाय। साथ ही उन्होंने यह इच्छा जाहिर की कि तिरंगे के अतिरिक्त कोई अन्य झंडा भारत पर न उड़े। यह स्मरण रहे कि आजाद हिंद फौज का सारा खर्चा भारतीय खुद बर्दाश्त करते थे। हां, वे जापानियों से युद्धोपकरण लेते थे। नेताजी को करोड़ों का दान मिला। बहुतों ने तो अपनी सारी जायदाद दे दी। दाताओं में मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक थी।

भारत की भूमि पर स्वतंत्र तिरंगा गड़ा

इसके बाद एक फौज भारत की सीमा की ओर रवाना हुई, और आजाद हिन्द फौजवालों ने १९४४ की मई में मोऊडूक (Mowdok) में प्रवेश किया। वहाँ पर बकायदा तिरंगा झंडा फहराया गया, और 'शुभ सुख चैन' गाना गाया गया।

जापानी हारने लगे

पर इतने में परिस्थिति कुछ ऐसी हो रही थी कि जापानी कुछ पीछे हटना चाह रहे थे। पर आजाद हिंद फौजवाले इसके लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने कहा कि जापानी भले ही पीछे हटें, हम तो दिल्ली के लाल किला पर झंडा चढ़ाकर ही दम लेंगे। पर इधर जापानियों की परिस्थिति बिगड़ती गयी। अमेरिका सेना की मार के सामने जापानी की एक नहीं चल रही थी। वे अपनी परिस्थिति को सम्हाल नहीं सके और १९४४ के सितम्बर को नेता जी को इम्फाल की तरफ की सेना को पीछे हटने के लिये हुकम देना पड़ा। नवम्बर १९४४ तक यह सेना रंगून पहुँच गयी। क्या करती, लाखों के मुकाबले में वह कब तक लड़ती?

आजाद हिन्द फौज पीछे हटी

१९४४ के ११ अक्टूबर को नेता जी रंगून पहुँचे। इसके बाद इन्होंने लोगों को युद्ध-परिस्थिति समझायी, जिसमें उन्होंने कहा कि कुछ देर हो जाने के कारण हम सफल नहीं हुए। अराकान, कलादान, टिड्डिम, पलेल, कोहिमा, हाका हम सर्वत्र विजयी रहे, पर कुछ तो वर्षा के कारण कुछ अन्य कारणों से हमें सफलता नहीं मिली। परिस्थिति इसके बाद और भी बिगड़ती ही गया, और नेता जी नवम्बर १९४४ में जेनरल चटर्जी, जेनरल कियानी और कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ परिस्थिति समझने टोकियो चले गये। उनकी अनुपस्थिति में कर्नल अजीज अहमद सेनापति हुए। १९४५ की जनवरी तक नेता जी फिर लौट आये, पर इस वक्त तक मेला उखड़ चुका था। अब कुछ खंड युद्ध के बाद पीछे हटने की तैयारी थी।

बर्मियों के विरुद्ध लड़ने से इनकार

१९४५ के मार्च में जिस समय यह हालत थी जापानियों ने यह कहा कि आजाद हिंद फौजवाले बर्मियों के विरुद्ध लड़ें, पर आजाद

हिन्द फौज ने यह कहकर लड़ने से इनकार कर दिया कि वे ब्रिटेन के विरुद्ध अपनी आजादी के लिये लड़ रहे हैं, वे वर्मियों के विरुद्ध कभी नहीं लड़ेंगे। उधर वर्मियों के जेनरल औंगसान ने भी इसी प्रकार का हुक्म दिया कि वर्मी आजाद हिंद फौजियों से न लड़ें।

जीत की आशा गई

इस समय तक उधर जर्मनी ने घुटना टेक दिया, और जापानी भी बुरी तरह हारने लगे। अब आजाद हिंद फौजियों के लिये भी यही परिस्थिति हुई कि अब तो जीत नहीं होती। इसके बाद कुछ आजाद हिन्द फौजियों ने लड़कर प्राण देने का तय किया तदनुसार बहुत से लोग आगे बढ़कर लड़े और वे या तो गिरफ्तार हुए या मारे गये। कुछ ने आत्मसमर्पण कर दिया। सेना के लिये दो ही गति होती है।

नेताजी का रंगून त्याग

२३ अप्रैल को जापानी रंगून छोड़कर चले गये। नेता जी से भी जापानियों ने कहा कि आप हमारे साथ चलिये पर उन्होंने कहा कि जब तक झांसी की रानी रेजिमेंट की लड़कियाँ चली नहीं जातीं, तब तक वे वहीं रहेंगे। ऐसी परिस्थिति में भी वे कर्त्तव्य न भूले। इसके बाद जब झांसी की रानी रेजिमेंट की स्त्रियां आसानी से चली गयीं तभी वे आजाद हिन्द फौजियों तथा वर्मा की भारतीय जनता के नाम संदेश देकर रंगून से चले गये। ५ हजार आजाद हिन्द फौजी मेजर जेनरल लोकनाथन के कमांड में रंगून रह गये जिससे कि वहाँ अव्यवस्था न हो।

नेताजी का महाप्रस्थान

इसके बाद भी सुभाष बाबू बराबर भारतीय परिस्थिति सैगुन रेडियो में बोलते रहे। वावेल से समझौता की निन्दा करते रहे, वे तो संग्राम के पक्ष में थे। इसके बाद अन्त तक नेताजी, कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ टोकियो के लिये रवाना हुए पर रास्ते में ही

दुर्घटना हो गयी जिससे नेताजी मर गये। कर्नल हबीबुर्रहमान के अनुसार नेताजी के सिर पर बहुत चोट आई थी और वे अस्पताल में ६ घण्टे बाद मर गये। कर्नल हबीबुर्रहमान का कहना है कि वे उस समय मौजूद थे जिस समय नेताजी चिता पर चढ़ाये गये। यदि हबीबुर्रहमान का विश्वास किया जाय तो नेताजी का देहान्त हो गया, और इस प्रकार एक अत्यन्त तूफ़ानी जीवन का अन्त हुआ। जिसने जीया तो देश के लिये जीया और मरा तो देश के लिए मरा।

बची खुची फौज का आत्म-समर्पण

जिस समय ब्रिटिश फौज का पूर्वी एशिया पर कब्जा हो गया, उस समय सिंगापुर और बैंकाक में मेजर जेनरल कियानी और मेजर जेनरल भोंसले के अधीन आजाद हिन्द फौजियों ने युद्ध के नियमों के अनुसार आत्मसमर्पण कर दिया।

रानी झाँसी रेजिमेन्ट

आजाद हिन्द फौज में स्त्रियों का जो रेजिमेन्ट झांसी की रानी रेजिमेन्ट के नाम से मशहूर हुआ, उसके सम्बन्ध में भी दो एक बात बतायी जाय। इसकी नेत्री श्रीमती लक्ष्मी एक लेडी डाक्टर थीं। इनके अधीन रेजिमेंट ने युद्ध के समय जान को जोखिम में डालकर बड़ी बड़ी सेवायें की थीं। १२ जुलाई १९४२ को सिंगापुर में यह रेजिमेंट बना था। इनको घायलों की सेवा के अतिरिक्त फौजी शिक्षा दी गयी थी, और वे बाकायदा फौजी कवायद करती थीं। जिस समय १९४४ के प्रारम्भ में आजाद हिन्द फौज की तरफ से भारत पर आक्रमण हो रहा था, उस समय इस रेजिमेंट की स्त्रियों ने नेताजी को खून से लिखकर एक दरख्वास्त दी थी जिसमें यह कहा गया था कि उन्हें इस आक्रमण में हाथ बटाने का मौका दिया जाय। नेताजी की यह इच्छा थी कि वे बाद में चलकर लड़ाई में भाग लें। पर कुछ ऐसी घटनायें हुईं जिनके कारण इनको युद्ध में भाग लेने का मौका

फरवरी से अनशन करने जा रहे हैं। यह अनशन गांधी जी के प्रथा के अनुसार २१ दिन तक चला और इस बार गांधी जी कुछ मीठे नीबू का रस पीते रहे। इस अनशन के नतीजे में मामूली जनता में कुछ जोश आया, और कुछ थोड़े बहुत उपद्रव हुए, मैं इन्हें उपद्रव इसलिये कह रहा हूँ कि अब क्रांति की शक्ल खतम हो गयी। जनता पर तो यह असर पड़ा पर कांग्रेसियों में एक तो दमन के कारण ही उत्साह कम हो रहा था तिसपर यह अनशन तथा उसके साथ के पत्र आये तो बहुत से बुद्धिमान लोग आंदोलन से अलग हो गये। साथ ही कायरों को भी मौका मिल गया और वे खुलकर अब दूसरे रूप में आ गये। कुछ स्थानों के अलावा गांधी जी के अनशनों को ही अगस्त क्रान्ति का अन्तिम विन्दु समझना चाहिये।

क्रान्तिकारी शक्तियां सुप्त

पर क्रांतिकारी शक्तियां दमन, नेतृत्व का अभाव तथा गलत नेतृत्व के कारण दब जाने पर भी वे दबी नहीं। सतारा, मेदिनीपुर आदि कई स्थानों में तो इसके बाद भी ज्वाला सुलगती रही। क्रांति अब जमीन के नीचे चली गयी। १९४४ में गांधी जी रिहा हुए, और इसके बाद १९४५ में अन्य नेता रिहा हुए। गांधी जी ने छूटते ही अगस्त क्रांति के क्रांतिकारी हिस्से की निन्दा की। जब पण्डित जवाहर लाल आदि छूटे तो उन्होंने अगस्त क्रांति के वीरों का आवाहन किया पर साथ ही क्रांति के सम्बन्ध में कहा कि इसमें बहुत कुछ बातें ऐसी थीं जिनका समर्थन नहीं किया जा सकता। कार्यसमिति के आचार्य नरेन्द्र देव ने ही १९४२ की सभी बातों की तारीफ की। गांधी जी ने तो फरारों से आत्मसमर्पण करने के लिये कहा और बहुत से फरारों ने आत्मसमर्पण कर भी दिया।

प्रचार का क्रान्तिकारी असर

१९४५ में आजाद हिन्द फौज तथा १९४२ की क्रांति की जनता

में इतनी प्रशंसा हुई कि उसका बहुत भारी क्रान्तिकारी असर हुआ। इसके लिये सबसे अधिक श्रेय पंडित जवाहर लाल नेहरू को है। जो क्रान्ति दबा दी गयी थी, उस पर इन दिनों जो प्रचार कार्य हुआ, उसका असर वैसा ही हुआ जैसे पानी के अभाव के कारण सूखे हुए पेड़ पर वर्षा का प्रभाव होता है।

२१ नवम्बर कलकत्ता

नवम्बर १६४५ में आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में सर्वत्र सभायें हो रहीं थीं। २१ नवम्बर को कलकत्ते में मिर्जापुर के छात्र फेडरेशन अर्थात् आर० एस० पी० के छात्र संगठन तथा छात्र कांग्रेस ने एक ही जगह एक ही समय में आजाद हिन्द फौज के वीरों को छुड़ाने के लिये सभा बुलायी। सभा खतम होने को थी कि यह ज्ञात हुआ कि पुलिस के इरादे अच्छे नहीं हैं। मैदान और मोतीशाल स्ट्रीट के पास जब छात्रों का गिरोह पहुँचा, तो पुलिस ने रास्ता रोक लिया। छात्र गाना गा रहे थे और बराबर नारे लगाते जा रहे थे, पर वे वहीं पर रुके पड़े रहे। इसी तरह साढ़े तीन बजे से रात हो गयी और बत्तियाँ जल गयीं। पुलिस ने पहले तो घोड़ा दौड़ाया जब उससे काम नहीं बना तो गोली चलने लगी। भगदड़ मच गयी पर हजारों छात्र डटे रहे और गोली खाते रहे। इसके बाद बकायदा जनता और पुलिस में संघर्ष चलने लगा। बहुत से पुलिस वाले मारे भी गये। उस दिन के शहीदों में श्री रामेश्वर बनर्जी थे।

आगे भी क्रान्तिकारी प्रदर्शन जारी

२२ नवम्बर को फिर छात्रों का जुलूस निकला। शहर में हड़ताल थी। कल के शहीदों के सम्बन्ध में जनता क्षुब्ध थी। भीड़ के अन्दर कांग्रेसी, लीगी, खाकसार, हिन्दूसभायी सभी थे और वे अपने अपने झंडे और नारे के साथ थे। शरत बाबू ने आकर भीड़ को लौट जाने

के लिये कहा, पर भीड़ नहीं लौटी। धर्मतल्ला स्ट्रीट में फिर गोली चली। पुलिस इस दिन डरी हुई थी क्योंकि उसने अपने सामने बैरीकेड बना रखा था। इस प्रकार कई दिन तक बराबर जनता और पुलिस में संघर्ष होता रहा। जनता ने जहाँ तहाँ पुलिस तथा मिलिटरी लारियाँ जला डालीं और पुलिसवालों को मारा। १६४२ के दृश्य ताजे हो गये।

१६४२ की क्रान्ति पर कार्य समिति

अब तो कांग्रेस के उच्च नेता घबड़ा गये और उन्होंने १६४२ तथा आजाद हिन्द फौज पर अपने मत को करते हुए अहिंसा पर जोर दिया। प्रस्ताव में कहा गया "१६४२ के अगस्त में मुख्य कांग्रेसियों की गिरफ्तारी के बाद नेतृत्वहीन जनता ने बागडोर अपने हाथों में ले ली और स्वतःस्फूर्त रूप से काम किया। यदि उनको अनेक वीरता तथा कुर्बानी के कार्यों के लिये श्रेय मिलना चाहिये जो अहिंसा के अन्दर नहीं आ सकते। इसलिये कार्य-समिति के लिये यह जरूरी हो गया है कि सबके पथ-प्रदर्शन के लिये वह इस बात को साफ कर दे कि अहिंसा के अन्दर सार्वजनिक सम्पत्ति को जलाना, तारों का काटना, गाड़ियों को पटरी से उतारना तथा भय प्रदर्शन नहीं आते।" ऐसा करने की क्यों जरुरत पड़ी, यह स्पष्ट है।

आजाद हिन्द फौज पर कार्य-समिति

आजाद हिंद फौज पर भी कार्य समिति ने कहा "कांग्रेस इस बात पर गर्वित होते हुए भी कि विदेशों में अभूतपूर्व परिस्थितियों में भी सुभाष चन्द्र बोस ने जिस आजाद हिंद फौज का संगठन किया, उसके लोगों ने कुर्बानी, अनुशासन, देशभक्ति, बहादुरी तथा अपनी सद्-भावनाओं का प्रदर्शन किया, तथा यह मानते हुए भी कि कांग्रेस के लिये यह उचित तथा ठीक ही है कि जिनपर मुकद्दमा चल रहा है, उनकी पैरवी की जाय, तथा इस फौज के ऐसे लोगों को जिनको मदद

की जरुरत है मदद दी जाय, कांग्रेसियों को यह नहीं भूलना चाहिये कि इन लोगों की पैरवी करने तथा इन लोगों को मदद देने का अर्थ हरगिज यह नहीं है कि कांग्रेस किसी भी तरह स्वराज्य प्राप्त करने की अपनी अहिंसा सम्बन्धी नीति से विचलित हो गयी है।" इस प्रस्ताव की भी क्यों आवश्यकता पड़ी यह स्पष्ट है।

फरवरी प्रदर्शन

पर इस प्रकार के प्रस्ताव क्रांतिकारी शक्तियों को रोकने में समर्थ नहीं रहे। आजाद हिन्द के कैप्टन रशीद की सजा पर कलकत्ते में दिसम्बर से बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए, और जनता ने फिर मिलिटरी मोटर लारियाँ जलायी, और अँगरेजों पर हमले किये! शहर पर फौजी राज्य हो गया और टामीगन से सुसज्जित होकर गुरखे और गोरे शहर के चारों तरफ घूमने लगे। कई दिन तक रोज बीसियों जगह पर गोलियाँ चलीं। बारबार अश्रुगैस का प्रयोग करना पड़ा। जनता गोलियाँ खाकर दबी नहीं। इस अवसर पर जो जुलूस निकले, उनमें बड़ा अजीब दृश्य दिखाई पड़ा। कांग्रेस का तिरंगा, लीग का चांद सितारा, और मजदूरों का हँसिया हथौड़ा एक साथ बांधे गये और उनके नीचे जनता का जुलूस निकला। जनता को किसी ने एका का यह तरीका नहीं सिखलाया था, पर क्रांतिकारी जनता ने क्रान्ति की जरूरत के कारण अपना एका स्थापित कर लिया था। मजे की बात है कि इस प्रकार जनता ने जिस एका को कायम किया था उसको लीग तथा कांग्रेस के नेताओं ने कुछ बहुत खुशी से नहीं देखा, उस ढर्रे पर चलने की बात तो दूर रही। जनता ने इस अवसर पर निहत्था होते हुए भी बीसियों लारी जला दी, तार आदि काट डाले। बहू बाजार, मानिकतल्ला और धर्मतल्ले में आन्दोलन सबसे तीव्र रहा। फौज ने कई बार अश्रु गैस का प्रयोग किया तो जनता ने रास्ते के गंगा पानी के नलों को खोल दिया, और इस प्रकार सड़कों में बाढ़ सी आ गयी। फौज ने गोली चलायी। कई गिरजे तथा हैटों पर आक्रमण हुए। १५

फरवरी तक ३५ आदमियों को गोली से मारे जाने की खबर थी।

जनता क्रान्ति के पथ पर

ट्राम, बस, टैक्सी बन्द हो गये। कलकत्ते में और उसके आस-पास काकीनाड़ा, श्यामरहाटी, बेलघरिया आदि स्थानों में मजदूरों ने हड़ताल की। बी०ए, ई० आई आर० की लाइनों में गड़बड़ी रही। मेन लाइन की गाड़ियों को बनगा घूमकर जाना पड़ा। लोकल गाड़ी बैरकपुर तक जा रही थी। ई० आई० आर० के सब लोकल बन्द थे। बजबज और डायमन्ड हार्बर की गाड़ियां ब्रेस ब्रिज तक जारी रहीं। १३ फरवरी को जनता ने चापाहाटी में एक गाड़ी को खड़ी करके ऊपर के दर्जे के डब्बों में आग लगा दी। जनता ने सिगनल का तार काट दिया, और कैबिन तोड़ दिया। बाटानगर के पास नुंगी से १४ फरवरी को १० हजार हड़ताली मजदूरों का जुलूस निकला। जो लोग गोलियों से मरते जाते थे, जनता उनका बराबर जुलूस निकालकर कब्रिस्तान तथा मरघट पर पहुँचाती रही। सरकार की ओर से असंभव अत्याचार हुए। मिठाई की कई दूकानें फौजियों द्वारा लूटी गयीं। होटल पर धावे हुए। रेस्तांरा में घुसकर फौजियों ने खाने वालों को निकाल दिया और खुद खाने लगे। कई दिन तक इसी प्रकार के प्रदर्शन होते रहे। नेताओं ने इसका विरोध किया पर फिर की जनता का जोश बहुत मुश्किल से घटा।

अपना रक्त देने के लिये बेताबी

पुलिस के गोलियों से जो लोग घायल हुए, यह खबर लगी कि उनके इलाज के लिए रक्त की जरूरत है, बस इतने पर हजारों की संख्या में लोग ब्लड बैंक के दफ्तर पर पहुँचे और सब काम छोड़कर घंटों कतार में खड़े रहे और जब रक्त देकर लौटे तो उनके चेहरे पर एक दिव्य ज्योति खेल रही थी। यह क्रांतिकारी सर्वस्व त्यागी जनता का चेहरा था। क्रान्ति की आभा से उज्वल हो रहा था।

नौ सैनिकों को भद्दी गालियाँ

जनता की तो यह हालत थी। वह तो क्रान्ति के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार थी। इधर भारतीय फौज भी बेचैन हो रही थी, इस युद्ध के दौरान में उन्होंने गोरों से कंधा से कंधा लड़ाकर लड़ाई की थी, पर उनकी गुलामी जैसी की तैसी मौजूद थी। विशेषकर भारतीय नौ सैनिक बेचैन थे। ११ फरवरी को तलवार नामक जहाज के कमांडर किंग नामक गोरे ने कुछ भारतीय नौ सैनिकों को कुल्ली के बच्चे तथा कुत्ते के बच्चे कहकर गालियाँ दी। लोगों में क्रोध तो भड़क ही रहा था। आखिर कब तक सहते। गत पाँच वर्षों से वे गोरों के नङ्गे-नाच को सहते चले आ रहे थे। पर और नहीं। प्याला भर चुका था। भारतीय नौ सैनिक अब इस तरह की बातों को सहने के लिये तैयार नहीं थे। फिर आजाद हिन्द फौज ने उन्हें एक मार्ग प्रदर्शित किया था। देश में आजाद हिन्द फौज की अभूतपूर्व आवभगत हुई थी, उसके कारण प्रत्येक भारतीय नौ सैनिक के मन में यही तमन्ना उठी थी कि काश मैं भी होता तो देश के लिये बलवेदी पर चढ़ता। आजाद हिंद फौज ने उनको आँख खोल दी थी। मरने से भला कौन सैनिक डरता है ! वह तो हर वक्त जान को हथेली पर लेकर के ही चलता है। अतएव यदि देश के लिये फांसी ही हो तो क्या है ? इसमें क्या डर है। उन्होंने अब कुत्ते का बच्चा तथा कुली का बच्चा रहने से इनकार कर दिया। लोगों में असन्तोष फैला।

कोई सुनाई नहीं हुई

जिन लोगों को गालियां दी गयीं थीं, उन्होंने प्रतिवाद किया, शिकायत की, अर्जियाँ लिखीं क्योंकि सेना के नियमों के अनुसार भी गोरे कमांडर को इस प्रकार गालियां देने का कोई अधिकार नहीं था। पर वहाँ कौन सुनता ! जो रक्षक था वही तो भक्षक हो रहा था। इसलिये कोई सुनाई नहीं हुई।

नाश्ता खराब से झगड़ा शुरु

१८ फरवरी को तलवार जहाज के नौ सैनिकों को जो नाश्ता दिया गया, वह बहुत ही खराब था। इस पर उस जहाज के ११०० नौ सैनिकों ने हड़ताल कर दी। इस पर कमांडर किङ्ग ने उन्हें धमकाया कि काम पर लौटो नहीं तो बहुत कड़ी सजा दी जायेगी, पर इससे इन लोगों ने दबने से इनकार किया। वे समझ गये कि लड़ाई कठिन है, इसलिये उन्होंने बाकायदा मांग बनाकर लड़ने का निश्चय किया।

नौ सैनिकों की मांगें

तदनुसार उन्होंने ये मागे बनायीं—

(१) खाना ढंग का तथा अच्छा मिले।

(२) कमांडर किंग पर कार्रवाई की जाय।

(३) गोरों और भारतीयों की तनख्वाह बराबर हो।

ये उनकी अपनी मागे थीं, पर उन्होंने केवल अपनी मांगे ही नहीं रखी जैसा कि आगे की मागों से व्यक्त हो जायेगा—

(४) सब राजनैतिक कैदी जिनमें आजाद हिंद फौज के कैदी भी हैं, फौरन रिहा कर दिये जायें।

(५) हिंद एशिया से सब भारतीय फौज वापस बुला ली जाय, और भारतीय फौज को कभी ऐसे काम में न भेजा जाय।

हड़ताल विद्रोह में परिणत

तलवार के बहादुर नौसैनिक अपने प्रण पर डटे रहे। अगले दिन फोर्ट बैरक के ८००, कैसल बैरक के २५००, अकबर, चीता, नामक जहाजों के सब नौसैनिक, कोलबा और महोल के बेतार केन्द्र के लोग मछली मार तथा हमला नामक जहाजों के नौ सैनिक सब हड़ताल में आ गये। सब समेत १०० छोटे बड़े जहाज तथा उपकूल में तैनात नौ सैनिकों ने हड़ताल कर दी। उन्होंने केवल हड़ताल ही नहीं की। सब जहाजों के अफसरों के हथियार छीन लिये गये और

जहाजों पर सैनिकों का अपना पहरा बैठ गया। वायरलेस से सब स्थान के भारतीय नौ सैनिकों को बम्बई के नौ सैनिकों ने यह खबर दी कि भाइयो हमने लड़ाई छेड़ दी, आप भी इसमें शरीक हो जायँ। कई स्थानों में क्रान्तिकारी नौ सैनिकों ने ब्रिटिश झंडा उतारकर उसकी जगह पर तिरंगा, चाँद सितारा तथा लाल झंडा लगा दिया। इन्कलाबी नारे लगने लगे। फिर वे शहर में जुलूस में निकल पड़े। आजाद मैदान में उसकी एक सभा हुई। सरकार की सिट्टी पिट्टी भूल गयी। जुलूस वालों पर लाठी चार्ज की कोशिश हुई पर एक गोरे पर ही मार पड़ी।

सरकार द्वारा हमला

बड़ी चिन्ता के बाद बम्बई के सबसे ऊँचे नौ सैनिक अफसर रियर एडमिरल रात्रे तलवार नामक जहाज में आये, और उन्होंने लोगों से यह कहा कि अपनी मांगें बतओ। इस पर पहले उनसे यह वचन कहा गया कि जो लोग मांग लेकर अगुआ बनकर उनके सामने जायँगे उनको गिरफ्तार न किया जाय, तभी मांगें बतायी जा सकती हैं। इस पर रात्रे राजी हो गये। उनको मांगें दी गयीं, उन्होंने कहा कि ४½ बजे शाम तक इसका जवाब दिया जायेगा। इसके बाद क्या हुआ पता नहीं। शायद ऊपर के अफसरों से परामर्श करने के बाद रात्रे इस नतीजे पर पहुँचे कि मांगों के सम्बन्ध में कहना गलत होगा, क्योंकि गुलामी के अनुशासन में फर्क आवेगा। इसलिए कोई उत्तर नहीं दिया गया। उल्टा 'हमला' के ३०० नौ सैनिक गिरफ्तार कर लिये गये।

संगठित लड़ाई

अब तो मालूम हो गया कि लड़ाई लम्बी है। इस कारण प्रत्येक जहाज में सेंट्रल स्ट्राइक कमेटी चुना गयी, जिससे कि अनुशासन के साथ काम हो सके। इसके बाद सरकार ने उपकूल के सारे नौ सैनिक

कैम्पों पर पहरा बैठा दिया। अवश्य समुद्र में जो जहाज थे, उनपर कोई पहरा नहीं बैठाया जा सका। इसके अतिरिक्त सरकार ने नौ सैनिकों को अपनी तरफ मिलाने के लिये जो खाने की सूचा नौ सैनिकों की ओर से दी गयी थी, उसी के अनुसार अच्छा खाना भेजना शुरू किया, पर इसमे काम न बना। फिर नौ सैनिकों की एक सभा हुई और उसमें यह तय हुआ कि युद्ध जारी रखा जाय।

लड़ाई फैली

कराची में भी जो नौसैनिकों के जहाज थे उनमें भी हड़ताल शुरू हो गयी। चमक, बहादुर, हिमालय, आदि में हड़ताल हो गयी। कलकत्ता में भी राजपुताना तथा हुगली में हड़ताल हो गयी।

सरकारी फौज पीछे हट गयी

१९४६ की २१ तथा २२ तारीख को बम्बई तथा करांची में नौ-सैनिक तथा सरकारी सेना में गोली चल गयी। नौ सैनिकों के ऊपर पहरे के लिये मराठे फौजी रखे गये थे। नौ सैनिकों ने इन मराठों से कहा कि तुम भी भारतीय हो, हम भी भारतीय हैं, फिर क्यों हम एक दूसरे पर गोली चलावें। मराठे बोले कि हमारे पास खाली कारतूस हैं। २१ के सवेरे कैमल बैरक के पास कुछ खाली कारतूस चले, और फौज नौसैनिकों के कैम्प की ओर बढ़ने लगी। अब नौसैनिकों ने फौरन रायफल, तमंचा आदि लेकर सामना करने का प्रयत्न किया इस पर सरकारी फौज पीछे हट गयी।

बकायदा लड़ाई

इसके बाद तो युद्ध ही शुरू हो गया। नौ सैनिकों ने मशीनगनों को ठीक स्थानों पर लगा दिया। सामने ही कुछ गोरी फौज खड़ी थी जिनमे यह खतरा था कि न मालूम वे कब चढ़ आवें। इसलिये उस तरफ मशीनगन चलाया गया और बम फेंका गया। कुछ गोरों को चोटें आईं और कुछ तो मरे भी। एक नौसैनिक भी मारा गया।

जो नौसैनिक मरा, उस पर बाकायदा प्रदर्शन किया गया और उस पर खून का एक क्रूस बना दिया गया।

गोरे भागे

कुछ गोरे ऊँची जगह पर खड़े होकर यह कोशिश कर रहे थे कि वहाँ से कैसल बैरक पर गोली चलायी जाय। इसको 'आसाम' और 'पंजाब' जहाज के नौसैनिकों ने देख लिया और उन्होंने उन गोरों पर गोली चलायी। फौरन गोरे भाग निकले। इस प्रकार सरकारी फौज के दांत खट्टे हो गये।

गाडफ्रे की धमकी

इसके बाद जब साम्राज्यवाद ने देखा कि इस प्रकार मामूली प्रयत्नों से लड़ाई जीती नहीं जायेगी तो उन्होंने अब इससे बड़े कदम उठाने का विचार किया। तदनुसार एडमिरल गाडफ्रे ने वायरलेस से यह धमकी दी कि यदि विद्रोहियों ने हथियार टेक कर आत्मसमर्पण नहीं कर दिया तो फौरन उन पर हमला कर दिया जायेगा और बड़ी भारी फौज की मदद से उनको बिल्कुल तबाह कर दिया जायेगा। जैसा कि स्वयं एक नौ विद्रोही ने लिखा है, और जिससे हम विवरण संकलित कर रहे हैं कि कुछ हवाई जहाज नौसैनिकों के सर पर उड़ रहे थे, इसके साथ ही कुछ बड़ी रणतरियाँ भी मौके पर आ गई थीं और वे भारतीय नौसैनिकों को सजा देने के लिए तैयार थीं।

जनता विद्रोह के साथ

पर जनता की सहानुभूति नौसैनिकों के साथ थी, जनता तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद से ऊब चुकी थी, और वह इसके विरुद्ध किसी भी विद्रोही को अभिनंदित करने के लिए तैयार थी। जनता इन विद्रोहियों को हर प्रकार की चीजें, सिगरेट, खाद्य द्रव्य, फलमूल पहुँचा

पहुँचा रही थी। जनता के साथ सेना की नाड़ी एक हो गयी थी और दोनों का हृदय साथ साथ धड़क रहा था। जनता केवल इसी बात पर अपनी सहानुभूति को सीमित नहीं रखना चाहती थी कि फलमूल दिया जाय बल्कि वह इस संग्राम में भाग लेना चाहती थी। जनता इस बात पर क्षुब्ध थी कि गोरे भारतीयों पर गोली चलाने की हिम्मत कर रहे थे।

पार्टियों से अपील

इस समय तक नौसैनिक के विद्रोहियों की एक केन्द्रीय कमेटी बन चुकी थी। यह कमेटी सारे विद्रोह को एक सूत्र तथा अनुशासन में बाँधकर चलाने का काम कर रही थी। संगठन की शक्ति का सुन्दर परिचय दिया गया। अब इस कमेटी की तरफ से देश के नेताओं तथा राजनैतिक दलों के नाम अपील की गयी, और उस अपील में कहा गया कि हम तो केवल शान्तिपूर्वक हड़ताल मात्र करना चाहते थे, पर सरकार ने हमें कुचल डालना चाहा तो हमने उससे इनकार किया, कांग्रेस लीग तथा अन्य पार्टियों के नेताओं को चाहिये कि जनता हमारे संग्राम का समर्थन करे।

हिन्दुस्तान

इस तरफ बम्बई में जो कुछ हो रहा था, हो ही रहा था उधर २१ फरवरी को साम्राज्यवाद ने एक बेलूची रेजिमेन्ट को इसलिए भेजा कि वह जाकर 'हिन्दुस्तान' जहाज पर कब्जा कर ले। पर बलूचियों ने ऐसा करने से इनकार किया। तब गोरी फौज बुलाई गयी, इसके बाद हमला हुआ। छोटे मशीनगन काम में लाये गये। तब गोरी फौज उलटे पांव भागी, पर फिर हमला हुआ। अब मशीनगन काम में लाये गये। तब गोरी फौज फिर भागी और चुप पड़ी रही।

आत्मसमर्पण

२२ तारीख को कराची में जिस समय 'हिन्दुस्तान' एक भाटे

के कारण कम पानी में फँसा हुआ था, और वह अपने मशीनगन को इस्तेमाल करने में असमर्थ था, उस समय फिर गोरों ने हमला बोल दिया। ६ मारे गये और २५ घायल हुए, तब हिन्दुस्तान ने आत्म-समर्पण कर दिया। फौरन बाकी लोग गिरफ्तार कर लिए गये। करांची में 'हिन्दुस्तान' के पराजित हो जाने से बाकी नौसैनिकों ने भी आत्म-समर्पण कर दिया। इस प्रकार करांची में आन्दोलन की समाप्ति हो गई।

विद्रोह का विस्तार

इस सैनिक विद्रोह का विस्तार कितना था यह बताने के लिए यह गिना दिया जाय कि बतायी हुई जगहों के अतिरिक्त कहाँ कहाँ विद्रोह हुये। कोचीन में ७००, विजगापट्टम में १३००, यहाँ तक कि काठियावाड़ के जामनगर में भी विद्रोह हुआ।

काठियावाड़ की वीरता

विद्रोही नौसैनिक ने अपने विवरण में लिखा है कि गुजरात के मोरवी राज्य के 'काठियावाड़' नामक छोटे से जहाज ने बड़ी वीरता दिखलाई। 'काठियावाड़' ने यह तय किया कि जब जहाज बन्दर से निकले उसी समय विद्रोह कर दिया जाय और बम्बई केन्द्र में पहुँचा जाय। दस बजे दिन जहाज छूटा, पर थोड़ी दूर जाने के बाद करांची के हिन्दुस्तान जहाज से यह संदेश मिला कि हम विपत्ति में हैं, हमारी मदद करो। तदनुसार १२० नौसैनिक वाले इस छोटे से जहाज ने बम्बई जाना स्थगित कर करांची जाने का तय किया। पर एक बजे उन्हें मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान ने आत्म-समर्पण कर दिया। इसलिये अब नौसैनिकों की सभा हुई और अब वे बम्बई के लिए फिर रवाना हो गये। इस प्रकार वह जहाज बम्बई पहुँचा और नौसैनिक-विद्रोह आमतौर से खतम हो गया तब उसने भी आत्मसमर्पण किया।

सहानुभूति में प्रदर्शन

इस विद्रोह के साथ साथ बम्बई में जनता की हड़ताल भी हुई।

जनता ने फ्लोरा फाऊंटेन इलाके पर कब्जा कर लिया। कुछ वर्दी पहने हुए गोरे जा रहे थे, उन पर लाठियों से हमला हुआ। वे भाग निकले। फ्लोरा फाऊंटेन में एक अमेरिकन झंडा जलाया गया। २२ फरवरी को लाखों मजदूर भारतीय नौसेना के साथ सहानुभूति दिखाने के लिए हड़ताल पर हो गये। कलकत्ते में भी बी० ए० आर० में हड़ताल हो गयी। चीतपुर लोकोशेड, कैरेज और वैगन और रनिंग स्टाफ में हड़ताल हुई। साथ ही डलहौसी स्क्वायर के भारतीय हवाई सेना के १५० कार्यकर्त्ताओं ने भूख हड़ताल कर दी। २३ फरवरी को बम्बई में भयङ्कर परिस्थिति हो गयी। गोलियां यत्रतत्र चलीं। दादर और मोहिम के बीच बी० बी० सी० आई० के दो ट्रेनों में आग लगाकर जला दी गयी। मोहिम स्टेशन जला दिया गया। उस दिन अस्पताल की खबरों से मालूम हुआ कि १३० से अधिक मरे और ७०० घायल हुए। २ पुलिसवाले मरे और १२७ घायल हुए। करांची में ईदगाह में सभा की चेष्टा हुई जिस पर गोली चलायी गयी। इस प्रकार जनता ने नौविद्रोह का पूरा समर्थन किया। डिलीसल रोड और डंकन रोड बम्बई में पूरी लड़ाई हो गयी।

सरदार पटेल ने आत्मसमर्पण कराया

इसके बाद सरदार पटेल तथा अन्य नेताओं के बीच में पड़ने से विद्रोह खतम हो गया। सरदार ने यह कहा था कि उनकी वाजिब मांगें मानी जायेंगी तथा उनको कोई सजा नहीं मिलेगी। पर उन्हें सजा मिली। इन नौविद्रोहियों का भारत पर क्या एहसान है, यह इससे ज्ञात होगा कि इसी नौविद्रोह के साथ-साथ क्रिप्स साहब दोबारा प्रस्ताव लेकर चले। हम अपनी क्रांतिकारी शक्ति को फिर भी नहीं पहचान पाये।

● समाप्त ●

श्री मन्मथनाथ गुप्त जी की अन्य पुस्तकें—

(१)	बिच (उपन्यास)	किताब महल	१।)
(२)	सुधार (")	"	१॥)
(३)	जययात्रा (")	"	५॥)
(४)	गृहयुद्ध (")	"	३।)
(५)	सेक्स से सुख और जीवन	"	१॥)
(६)	अपराध (विज्ञान)	"	३)
(७)	शरतचन्द्र (जीवनी और आलोचना)	"	३)
(८)	प्रेमचन्द्र (जीवनी और आलोचना)	"	४)
(९)	ऐतिहासिक भौतिकवाद	इंडियन प्रेस	६)
(१०)	अगस्त क्रांति और प्रतिक्रान्ति	केसरवानी प्रेस	२॥)
(११)	चक्की (उपन्यास)	केसरवानी प्रेस	३)
(१२)	भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास—१ भाग (यह पुस्तक ७ साल जब्त थी)		४॥)

अन्य बहुत सी पुस्तकें छप रही हैं।